ग़रीब व सादा व रंगीन है दास्ताने हरम
निहायत उसकी हसीन इब्तेदा है इस्माईल

दास्ताने करबला

लेखक

मौलाना डाक्टर

मोहम्मद आसिम आज़मी

(एम॰टी॰पी॰एच॰डी॰)

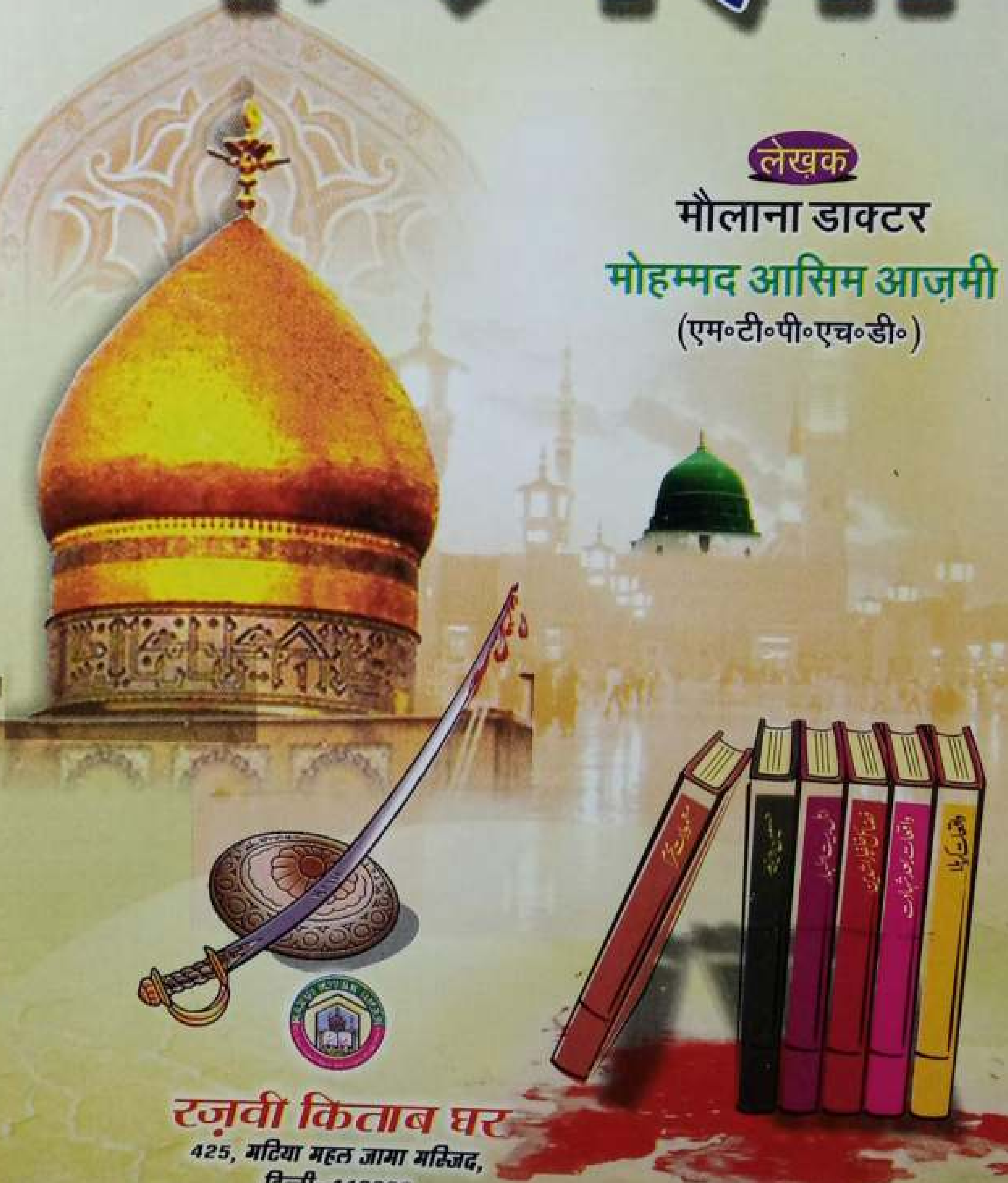

रज़वी किताब घर
425, मटिया महल जामा मस्जिद,
दिल्ली–110006

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.com

ये किताबें भी जरूर पढ़े

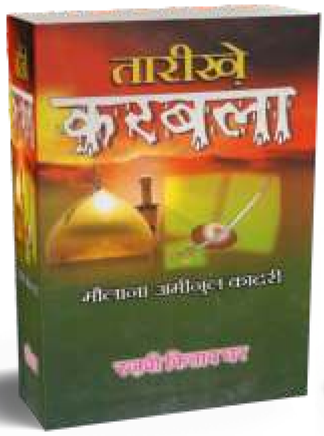
तारीख़े करबला
मौलाना अमीनुल कादरी
रज़वी किताब घर

Download

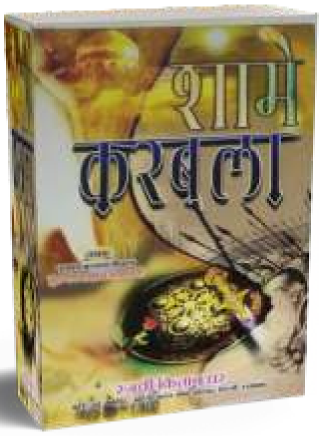
शामे करबला
रज़वी किताब घर

Download

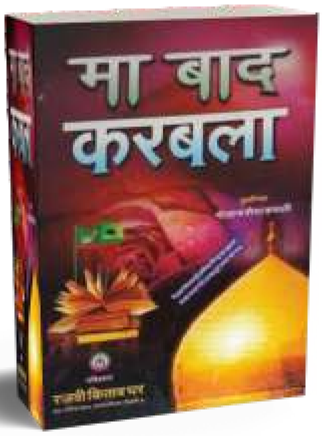
मा बाद करबला
रज़वी किताब घर

Download

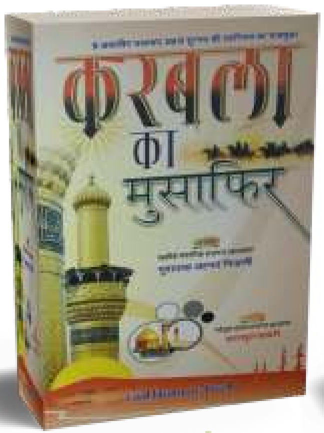

Download

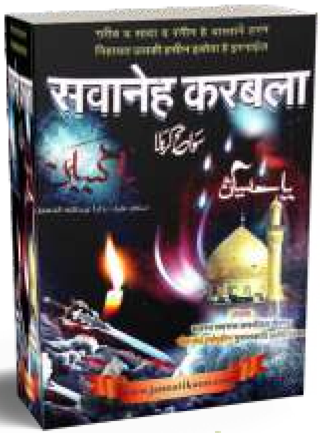

Download

Download

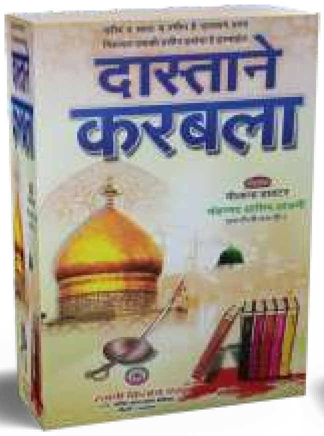

Download

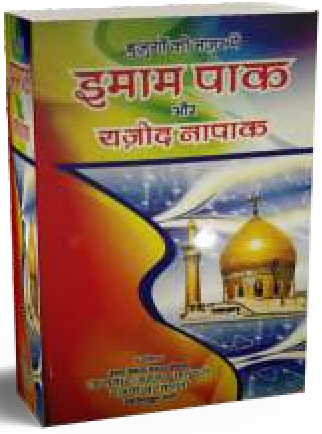
इमाम पाक
और
यज़ीद नापाक

Download

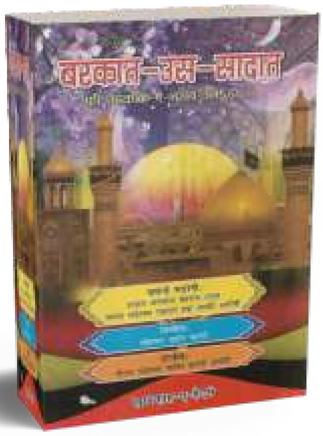

Download

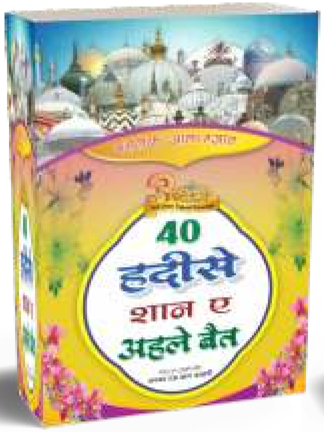
40
हदीसे
शान ए
अहले बैत

Download

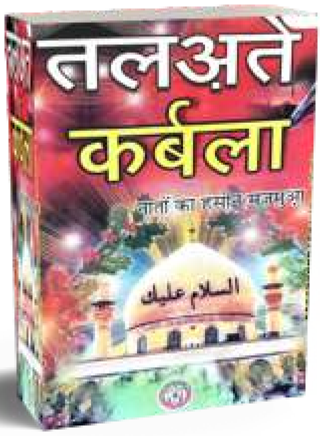
तलअ़ते
कर्बला
السلام عليك

Download

चंद
वाक़ियाते कर्बला
PUBLISHED BY
ABDE MUSTAFA OFFICIAL

Download

© रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

ISBN 81-89201-16-12

(नोट : नाशिर के बग़ैर इजाज़त किसी भी सफ़हा का अ़क्स लेना क़ानूनन जुर्म है।)

नाम किताब : **दास्ताने करबला**
लेखक : मौलाना डॉक्टर मुहम्मद आसिम आज़मी
बएहतेमाम : हाफ़िज़ मोहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी
कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
प्रूफ़-रीडिंग : मंज़ूरुल हक़ जलाल निज़ामी
हिन्दी एडीशन : पहली बार 2010
प्रकाशक : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6
तादाद : 1100
सफ़हात : 176
क़ीमत :

मिलने के पते :

रज़वी किताब घर
425, मटिया महल,
जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006
फ़ोनः नं० : 011-23264524

महाराष्ट्र में मिलने का पताः
रज़वी किताब घर
114, ग़ैबी नगर, भिवंडी,
ज़िला : थाणा (महाराष्ट्र)
फ़ोनः नं० 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, ग़ैबी पीर
रोड, भिवंडी (महाराष्ट्र)

विषय सूची

उनवानात	सफ़्हा
दीबाचा तबअ़् सानी	5
मुक़द्दमा! क़ानूने आज़माइश और सब्र व इस्तिक़ामत	8
आज़माइश की ज़रूरत	9
इंआम व आज़माइश	12
हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम	16
शुऊरे नुबुव्वत और एलाने सदाक़त	17
आग़ाज़े दावत	19
क़ौम को दावते हक़ व सदाक़त	20
बुतों की शिकस्त व रेख़्त	23
दरबारे नम्रूद और एलाने हक़	25
एक अहम इम्तिहान	28
विलादत फरज़न्दे हलीम	29
वादी ग़ैर ज़ी ज़रअ़् और क़यामे इस्माईल व हाजरा	31
इश्क़ व इख़्लास और ईसार का आख़िरी इम्तिहान	32
बैतुल्लाह की तामीर	35
आलमगीर तारीकी और बेअ़्सत ख़त्मुर्रुसुल	39
ख़िल्अते रिसालत और दावते हक़ व सदाक़त	42
महसूरी शुअ़्बे अबी तालिब	46
ताइफ	48
हिजरते मदीना	49
हक़ व बातिल के मअ़्रके	53
मअ़्रक-ए-बद्र	54
ग़ज़्व-ए-ओहद	55
ग़ज़्व-ए-अहज़ाब	59
सुलह हुदैबिया	64
फत्हे मक्का और तत्हीरे काबा	66
हुकूमते इलाहिया	68
चमनिस्ताने रिसालत का गुल सर सब्द	72
इफ़्तिराक़े उम्मत	73
बैअ़ते इमामे हसन	76
हज़रत अमीर मुआविया की वफ़ात और यज़ीद को वसीयत	79
यज़ीद का अह्दे इमारत और अह्ले हक़ की आज़माइश	80
हज़रत इमाम हुसैन दारुल–इमारत मदीना में	81
हज़रत इमाम की मदीना रवानगी	82
हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील की आमद कूफ़ा	84
क़स्रे इमारत का मुहासरा	85
कूफ़ियों की बेवफाई और शहादत मुस्लिम ब्रिन अक़ील	86
हज़रत इमाम हुसैन का सफरे कूफ़ा	90
अहबाब के मशवरे	90
फ़रज़दक़ से मुलाक़ात	93
शहादत इमाम मुस्लिम की इत्तिला	94
यजीदी लश्कर का मुकद्दमतुल-जैश	97
मक़ामे नैनवा	97
कूफ़ा से फौज की रवानगी	97
नहरे अल्क़मा पर यजीदी फौज का दस्ता	98
इब्ने सअद और हज़रत इमाम हुसैन की गुफ़्तगू	99

उनवानात	सफ़्हा
यज़ीदी फौज की पेश रफ़्त और एक रात की मोहलत	100
हज़रत इमाम का ख़िताब और जाँनिसारों की सबात क़दमी	101
क़्यामते सुग़रा	104
यज़ीदी फौज से ख़िताब	107
हुर बारगाहे इमामत में	110
आग़ाज़े जंग	111
हज़रत अली अकबर की शहादत	116
हज़रत क़ासिम बिन हसन की शहादत	116
हज़रत अली असग़र की शहादत	116
आख़िरी इम्तिहान	117
ज़ैनब बिन्ते अली मैदाने करबला से दरबारे दमिश्क़ तक	121
सरे हुसैन	122
इब्ने ज़्याद का दरबार और हज़रत ज़ैनब	123
दरबारे दमिश्क़ में	125
अह्ले बैत की मदीना रवानगी	127
मर्गे यज़ीद	128
वाक़या हुर्रा	129
मदीना पर यज़ीदी लश्कर की चढ़ाई	131
मक्का का मुहासरा	135
मुख़्तार बिन अबू उबैद सक़्फ़ी और क़ातिलीने हुसैन का अंजाम	138
इब्ने ज़ुबैर के साथ	143
मुख़्तार कूफ़ा में	144
सुलेमान बिन सर्द की नाकामी	145
मुख़्तार की गिरफ़्तारी और रिहाई	147
तहरीके मुख़्तार कामयाबी की राह पर	149
इब्राहीम बिन अश्तर मुख़्तार के साथ	150
कूफ़ा पर क़ब्ज़ा	151
बैअ़त	153
मुख़्तार के ख़िलाफ़ बग़ावत	155
मरवानियों से मुख़्तार के मअ़रके	155
कूफ़ा में बग़ावत	157
क़ातिलीने हुसैन का अंजाम	158
अमर बिन हिजाज़ ज़ुबैदी	158
शिम्र का अंजाम	158
ख़ूली का अंजाम	161
इब्ने सअद का क़त्ल	161
हकीम बिन तुफ़ैल ताई	163
यज़ीद बिन रुक़ाद	163
क़ातिलीने हुसैन के मकानों का इंहिदाम	164
उमर बिन सबीह का अंजाम	164
अश्तर की रवानगी और कुर्सी की कहानी	165
इब्ने ज़्याद का अंजाम	166
मुख़्तार सक़्फ़ी का अंजाम	170
जंगे निदार	171
जंगे हरूरह	173
क़स्र का मुहासरा और क़त्ल	174
मुख़्तार बिन अबी उबैद सक़्फ़ी क्या था	175

❖❖❖❖❖❖❖

❖❖❖❖

❖❖

❖

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

दीबाचा तबअ़ दोम

आज तक़रीबन बारह बरस क़ब्ल (पहले) यह किताब **"दास्ताने हरम इब्तिला व आज़माइश के तनाज़ुर में"** के नाम से छपी थी। रब्बे करीम के फ़ज़्ल व करम और सैय्यदुल-मुरसलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहमते बेकरां से इस हेच मदां (कम जानने वाला) की क़ल्मी काविश को आम तौर से इल्मी हल्क़ों में पसन्द किया गया। एक साल के अन्दर ही किताब के तमाम नुस्ख़े अह्ले ज़ौक़ क़ारेईन के हाथों में पहुँच गये।

अरबाबे इल्म हज़रात के तहसीन आमेज़ तअस्सुरात ने नाचीज़ की हौसला अफ्ज़ाई की और बाज़ ख़ामियों की जानिब इशारा फरमाया। तहे दिल से उनका शुक्रिया अदा करता हूँ कि उनकी निशानदेही पर उन मक़ामात की इस्लाह कर दी गई और क़ाबिले एतराज़ मुन्दरजात को ख़ारिज कर दिया गया।

चूंकि दास्ताने हरम शहादत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु पर ख़त्म कर दी गई थी, अक्सर अहबाब की ख़्वाहिश थी कि सानेहा करबला के नतीजे में जो इबरतनाक तारीख़ी वाक़ेआत वक़ूअ़ पज़ीर हुए, अगले एडीशन में उनका इज़ाफ़ा कर दिया जाए ताकि क़ारेईन की मालूमात में इज़ाफ़ा हो। चुनांचे नाचीज़ ने किताब की नज़रे सानी के वक़्त ही तारीख़ी हवालों से वाक़ेआत करबला के बाद :

(1) ज़ैनब बिन्ते अली रज़ि अल्लाहु अन्हा मैदाने करबला से दरबारे दमिश्क़ तक (2) मर्गे यज़ीद (3) मुख़्तार बिन अबी उबैद सक़्फ़ी और क़ातिलीने हुसैन का अंजाम। (4) मुख़्तार का अंजाम के उनवान से तहरीर किए इस तरह किताबत की ज़ख़ामत (मोटापा) में काफी इज़ाफ़ा हो गया।

दास्ताने हरम सर मुहम्मद इक़्बाल के इस शेअ़र –

ग़रीब व सादा व रंगीं है दास्ताने हरम
निहायत उसकी हसीन इब्दिता हैं इस्माईल

को उनवाने तहरीर बना कर लिखी गई थी, इस बिना पर शेअ्र का यह लफ़्ज़ दास्ताने हरम किताब का नाम क़रार दिया गया था। मुहिब्बे गिरामी हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अब्दुल-मुबीन नौमानी साहब क़िब्ला दारुल-उलूम क़ादरीया चिरैया कोट मऊ जिनके मशवरा पर नाचीज़ ने "ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन" लिखी, उनकी राय थी कि करबला के बाद के वाक़ेआत के इज़ाफ़ा के साथ जब किताब शाए की जाए तो उसका नाम "**दास्ताने हरम**" के बजाए "**दास्ताने करबला**" रखा जाए। हज़रत मौलाना मौसूफ़ के मशवरे की तामील में किताब का दूसरा एडीशन "**दास्ताने करबला**" के नाम से शाए किया जा रहा है।

किताब का दूसरा एडीशन बहुत पहले ही मंज़रे आम पर आ जाना चाहिए था मगर दूसरी किताबों की तैयारी और उनकी इशाअत के सबब ग़ैर मामूली ताख़ीर होती चली गई।

अब बेफ़ज़्लेही तआला किताब की इशाअत का वक़्त आ गया। अज़ीज़े गिरामी जनाब मौलाना मुहम्मद अहमद साहब वारेसी शम्सी सल्लमहू अपने एहतमाम में दास्ताने करबला का मेअ्यारी एडीशन शाए कर रहे हैं।

ख़ुदा वन्दे कुद्दूस अपने हबीब पाक साहिबे लौलाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल उनकी इस इल्मी ख़िदमत को कुबूल फरमाए और दारैन की सआदत व फलाह से हम्कनार फरमाए। आमीन!

मुहम्मद आसिम आज़मी
बैतुल-हिक्मत मुहल्ला करीमुदीन पुर घोसी
12/ज़िल-हिज्जा 1433 हिजरी 14 फरवरी 2003 ई० जुमा

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖
❖❖❖❖
❖❖❖
❖❖
❖

हर्फ़े चन्द

(दो शब्द)

1982 ई० की बात है जब नाचीज़ का एक मज़्मून "क़ानूने आज़माइश और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु" माहनामा फ़ैज़ुर्रसूल बरावँ शरीफ़ ज़िला बस्ती के मुश्तरेका शुमारा जून, जुलाई, अगस्त में शाए हुआ। दस सफ़्हात पर मुश्तमिल मज़्मून आम तौर से पसन्द किया गया। 1985 ई० में चन्द अहबाब ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि मज़्मून में मौज़ूअ् से मुतअल्लिक़ कुछ और मुस्तनद तारीख़ी वाक़ेआत शामिल करके उसे किताबी शक्ल दे दी जाए। यह वह ज़माना था जब मैं अपने तहक़ीक़ी मक़ाला की तरतबीब में मुन्हमिक था, अदीमुल-फ़ुरसती (जिसके पास समय न हो) के सबब ख़ामोश रहा। मगर जब दो साल बाद फिर इसरार बढ़ा तो लोगों के नेक जज़्बात का एहतराम अख़्लाक़ी फ़र्ज़ समझ कर इक़रार कर लिया। नवम्बर 1989 ई० में किताबें इकट्ठा कीं और मवाद की फ़राहमी का काम शुरू हुआ। ख़्याल था दो तीन माह में साठ सत्तर सफ़्ः की किताब तैयार हो जाएगी मगर अंदाज़ा ग़लत साबित हुआ। इस मुद्दत में पूरे मेटर्स भी फराहम न हो सके और दूसरी मस्रूफ़ियात दामनगीर हुईं। काम रुक गया। अप्रैल, मई 1990 ई० में दोबारा काम शुरू हुआ। मगर किताब की ज़ख़ामत इतनी बढ़ी कि तअ़तील के अय्याम (छुट्टी के दिन) गुज़र गये और काम पूरा न हो सका। जनवरी 1991 ई० में तीसरी बार मुहिब्बे मोहतरम हज़रत मौलाना मुम्ताज़ आलम साहब मिस्बाही उस्ताज़ जामिया शम्सुल-उलूम की तरग़ीब पर नज़रे सानी और बाक़ी हिस्सा की तक्मील का काम इस अज़्मे मुसम्मम के साथ शुरू हुआ कि इस बार जैसे भी काम पूरा कर दिया जाए ताकि आइंदा दूसरे काम का आग़ाज़ किया जा सके।

मौलाना मौसूफ़ ने चन्द ज़ी शुऊर तलबा को मेरी मदद के लिए मुतऐयन फरमाया जिससे मेरी मुश्किलात बड़ी हद तक आसान हो गईं। शुरू से मवाद की तफ़्तीश और मुसव्वदा की तब्ईज़ का काम शुरू हुआ। बेहम्देही तआला 4 माह की जद्दो जहद के बाद किताब "दास्ताने हरम" (इब्तिला व आज़माइश के तनाज़ुर में) मुकम्मल हुई।

नाज़ेरीने किराम की ख़िदमत में दास्ताने हरम इस एहसास के साथ पेश कर रहा हूँ कि इल्मी बे बज़ाअती, वक़्त की तंगी, मसादिर व मआख़ज़ की कमयाबी के सबब मौज़ूअ् का हक़ कमा हक़्क़ुहू अदा न कर सका। अह्ले नज़र असहाबे इल्म हज़रात की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि वह कोताहियों और ख़ामियों की निशानदेही फरमाएं ताकि आइंदा तस्हीह की जा सके।

मुहम्मद आसिम आज़मी : बैतुल-हिक्मत करीमुद्दीन पुर घोसी

◆ ◆ ◆

मुक़द्दमा

क़ानूने आज़माइश और सब्र व इस्तिक़ामत

इब्तिला व आज़माइश एक अटल क़ानूने फ़ितरत है जिस से हर साहबे ईमान को दो चार होना है। यह सुन्नते इलाहिया है कि हर दाई और मुअय्यदे हक़ (हिमायत करने वाला) को आज़माया जाता है। फ़रमाने ख़ुदावन्दी है :

तरजमा : और बेशक हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ़, भूख और मालों और जानों और फलों की कमी से। (सूरः बक़रा : 19)

दुनिया में हक़ व सदाक़त के अलम बरदारों को हर दौर में मसाइब व आलाम की दुशवार गुज़ार वादियों से गुज़रना पड़ा। मुश्किलात क़दम-क़दम पर सद्दे राह बनीं। सेमुएल अस्माइल्ज़ लिखता है।

"इंसानी तारीख़ में तरक़्क़ी का हर क़दम मुख़ालिफ़तों और मुश्किलात को बर्दाश्त करके उठाया गया है और शेर दिल और बेजिगर लोगों ने ही कामयाबी हासिल की है ख़्वाह वह नज़्रियात के मूजिद हों या इक्तिशाफ़ात (खोज) करने वाले, वह वतन दोस्त हों या ज़िन्दगी के दूसरे शोबों (विभाग) में काम करने वाले, मुश्किल ही से कोई हक़ीक़त और कोई नज़्रिया ऐसा होगा : जिसको क़ुबूले आम से पहले नफ़्रत, इल्ज़ाम और मसाइब से वास्ता न पड़ा हो।" बक़ौले हीन "कलिम-ए-हक़ के साथ ही साथ दार व रसन (फाँसी) है।" (किरदार : स० 59)

जो लोग अपनी ख़ाम ख़्याली (वहम) और कोर मग़्ज़ी के सबब यह गुमान करते हैं कि सिर्फ़ ज़ुबान से इस्लाम का दावा कर देने के बाद उन्हें आज़माइश की सऊबतों (परेशानियों) और सख़्तियों से नजात हासिल हो जाएगी और वह कामरानियों से हम्कनार हो जायेंगे, तो उनका यह ख़्याल महज़ ग़लत और बातिल है। क़ुरआने हकीम लोगों की इस ख़ाम ख़्याली की तरदीद फ़रमाता है :

तरजमा : क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी। (सूरः अंकबूत)

यह आज़माइश का क़ानून हुबूते आदम (हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जन्नत से उतारने के बाद से) से लेकर आज तक बाक़ी है। खुदावन्दे तआला ने हमेशा अपने बरगुज़ीदा अंबिया व रुसुल और बन्दगाने हक़ को मुब्तलाए मसाइब (परिशानी में डालना) किया। अशरफ़ इंसानियत और ख़्यारे उम्मत (नेक उम्मत) ने अपने अज़ीम इस्तिक़लाल और ईमान का सुबूत आज़माइशों की सख़्त व नागवार साअतों में पेश किया। और राहे तस्लीमे रज़ा में सिपुर्दगी व ईसार की ज़र्रीं मिसालें पेश कीं।

कुरआने करीम इस सुन्नते इलाहिया को इन अल्फ़ाज़ में बयान फरमाता है :

तरजमा : और बेशक हमने उन से अगलों को जांचा कि ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और ज़रूर झूठों को देखेगा। (सूरः अंकबूत)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया :

तरजमा : मोमिन मर्द और औरतों पर वक़्तन फवक़्तन आज़माइश आती रहती है, कभी खुद उस पर कभी उसकी औलाद पर यह मुसीबत आती है और कभी उसका माल तबाह होता है यहाँ तक कि जब वह अल्लाह से मिलता है तो उसके नाम-ए-आमाल में कोई गुनाह नहीं होता।

जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से राज़ी होता है तो उसको आज़माइश में डाल देता है। अगर वह सब्र करे तो अल्लाह तआला उस बन्दे को पसन्द कर लेता है और अगर वह आज़माइश पर राज़ी हो जाता है तो अल्लाह तआला उसे अपने खास बन्दों में चुन लेता है। (मुकाशिफ़तुल-कुलूब : स० 525)

आज़माइश की ज़रूरत : हकीमे मुतलक़ का कोई फेअ्ल हिक्मत व मस्लेहत से ख़ाली नहीं होता। इस हमा गीर क़ानून इब्तिला और उसके निफ़ाज़ की हमा जेहती भी अपने अन्दर बेअंदाज़ा मस्लेहतें और बेकरां हिक्मतें रखती है।

यह आज़माइश महज़ आज़माइश ही नहीं होती बल्कि अपने अन्दर बड़े ज़बरदस्त दीनी फ़वाइद भी रखती है। ज़ुबानी दावे इस्लाम में एक सच्चे मोमिन और फ़रेबकार मुनाफ़िक़ के दर्मियान तमीज़ व शनाख़्त की गुंजाइश बहुत कम होती है। हाँ जो चीज़ मुनाफ़िक़ों को अह्ले ईमान की बरगुज़ीदा जमाअत से जुदा करती और सच्चों, झूठों के दर्मियान ख़त्ते इम्तियाज़ खींचती है वह आज़माइश ही है।

आज़माइश अह्ले ईमान के गरोह से इन फासिद अनासिर को जिनके दावे महज नोके ज़ुबान से होते हैं अलग कर देती है।

इस आज़माइश व इब्तिला की कसौटी पर पहुँच कर ख़ुद अह्ले ईमान भी मुनाफ़िक़ों के मक्र व फ़्रेब और तमअ् साज़, क़बीह तीनत (बुरी आदत) से आगाह हो जाते हैं। इब्तिला व आज़माइश, दावे ईमान में सादिक़ व काज़िब दोनों के फ़िक्र व अमल में एक वाज़ेह फ़र्क़ पैदा कर देती है। जब आज़माइश आती है, सादिकुल-क़ौल मोमिन का यह अमल होता है कि वह अल्लाह व रसूल की पुकार पर हीला बाज़ी और बहाने तलाश नहीं करता और जान व माल की कुरबानी से दरेग़ नहीं करता। वह अपने ज़ाविय-ए-फ़िक्र व अमल को मस्लेहत कोशी और दुनियावी मफ़ाद से अलग करके मशीयते एज़्दी का पाबन्द बनाता है। और उसके फिक्र व अमल का यह अंदाज़ा उसके ईमान व एतक़ाद की तवानाई और कुव्वत का सबब बनता है।

तरजमा : वह जो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हुए बाद उसके कि उन्हें ज़ख़्म पहुँच चुका था उनके नेकोंकारों और परहेज़गारों के लिए बड़ा सवाब है। वह जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिए जत्था तोड़ा तो उन से डरो तो उनका ईमान और ज़ाइद हुआ, और बोले अल्लाह हमको बस है और क्या अच्छा कारसाज़। (सूरः आले इमरान)

और वह लोग जिनके दावे खोखले होते हैं वह दीन की राह में अल्लाह और उसके रसूल की दावत पर जान व माल की कुरबानी तो बड़ी चीज़ है, आँसुओं के चन्द क़तरे और पसीने की चन्द बूंदों को भी पेश करने से मुँह चुराते हैं। मुम्किन हद तक हीला व फन से ज़माना साज़ी की कोशिश करते हैं, या अपने दिल की बात ज़ाहिर करके बेनक़ाब हो जाते हैं।

आज़माइश के वक़्त अमली रवैया से क़तअ् नज़र अंदाज़ फ़िक्र में भी ज़बरदस्त तब्दीली पैदा हो जाती है। अह्ले ईमान का अंदाज़े फ़िक्र यह होता है कि वह उन आज़माइशों को अपनी मंज़िले मक़्सूद के लाज़मी मराहिल तसव्वुर करते हैं। उनका कामिल एतक़ाद होता है कि यह आज़माइश हमारे दावे ईमान की सदाक़त को परखने के लिए है। और इस इम्तिहान में कामयाबी ही हमें नजात की मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचाएगी। अह्ले ईमान इस बात का कामिल यक़ीन रखते हैं कि उन्हें ज़रूर आज़माया जाएगा। इसी लिए वह आज़माइशों के वक़्त चीं बजबीं (माथे पर [illegible] आना) नहीं होते और नामुसाअदत रोजगार का गिला नहीं करते।

बल्कि ऐसा ही किरदार पेश करते हैं जैसा कि ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़ा पर जबकि कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीने अरब की कर इस्लाम और मुसलमानों को सारी फौजी ताक़त इकट्ठा के लिए मदीना पर चढ़ आई थीं और उनकी बला ख़ेज़ मौजों का तेवर यह बता रहा था कि मदीना को ख़स व ख़ाशाक की तरह बहा ले जाएगा। ऐसे पुरआशोब माहौल और अज़ीम इब्तिला व आज़माइश की घड़ी में अह्ले ईमान ने क्या किया। क़ुरआन बयान करता है :

तरजमा : जब मुसलमानों ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले यह है वह जो वादा दिया था हमें अल्लाह और उसके रसूल ने और सच फरमाया अल्लाह और उसके रसूल ने और उस से उन्हें न बढ़ा, मगर ईमान और अल्लाह की रज़ा पर राज़ी होना। (सूरः अहजाब अ० 3)

और उनके अंदाज़े फ़िक्र व अमल का जो समरा अता किया गया वह कितना अज़ीम और कितना गिरांक़द्र था। लेकिन जो लोग अपने दावे में सच्चे नहीं होते। ईमान व एतक़ाद के मेअ्यार आज़माइश पर पूरे नहीं उतरते, उस मंज़िल पर पहुँचते ही उनकी हवास बाख़्तगी और इज़्तिराबे क़ल्ब में इज़ाफ़ा होता है। और जब आज़माइश सर पर आ जाती है तो वह अह्ले हक़ की मईयत व हिमायत से अलग हो जाते हैं –

मंज़िले दार व रसन आई तो रुपोश हुए
वह जो फिरते थे हक़ीक़त के तरफ़दार बने

आज़माइश के ज़रिया मुख़्लेसीन के मेअ्यार अख़्लाक़ व तक़्वा को बुलन्द करना मक़्सूद होता है, उनके दिलों का मैल आज़माइश की भट्ठी में जल कर ख़त्म हो जाता है, मुश्किलात व मसाइब के लगातार मुक़ाबले से ईमान की कमज़ोरियाँ तवानाइयों से बदल जाती हैं, शुकूक व शुब्हात के अंधेरों में यक़ीन व अज़ग़ान (भरोसा) की शम्एँ फिरोज़ाँ हो जाती हैं।

तरजमा : और इसलिए कि अल्लाह तुम्हारे सीनों की बात आज़माए और जो कुछ तुम्हारे सीनों की बात आज़माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे खोल दे और अल्लाह दिलों की बात जानता है। (सूरः आले इमरान)

अज़्म व इस्तिक़्लाल की तवानाई ही ईमान व अख़्लाक़ को पुख़्तगी और बुलन्दी अता करती है :

तरजमा : तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया और मआफ़ी इसलिए सुनाई कि जो हाथ से गया और जो उफ़्ताद पड़ी उसका रंज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (सूरः आले इमरान)

इसी तरह अह्ले ईमान की तवज्जोह हर हाल और हर आन ज़ाते खुदावन्दी और मशीयते खुदावन्दी की तरफ मब्ज़ूल रहती है। आज़माइश, मोमिन के सब्र व इस्तिक्लाल और मेअ्यारे तक्वा की बुलन्दी का सबब बनती है गोया यह इस्तिक्लाल बाइसे खैर होता है। (तिर्मिज़ी)

इंआम व आज़माइश : कानूने आज़माइश एक हमा गीर कानून है जिससे इंसानों के दावे ईमान व एतकाद की सेहत जांची और परखी जाती है और अह्ले ईमान के मेअ्यारे अख्लाक व तक्वा की बुलन्दी का सामान फराहम किया जाता है। आज़माइशों में कामयाब व कामरां साबित होने वालों के लिए ज़बरदस्त इंआमाते खुदावन्दी फर्द व कौम के हिस्से में आते हैं और बशारते रब्बानी उनके हक में होती है :

तरजमा : और खुशखबरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें, हम अल्लाह के माल हैं और हम को इसी तरफ फिरना है। (सूर: बकरा)

सब्र इंसानी अख्लाक का वह जौहर है जिससे फर्द की ज़ाती ज़िन्दगी में किरदार की बलन्दी मतानत, अज़्म व इस्तिक्लाल जैसी सिफाते कमालिया पैदा होती हैं उसके मुफीद और सेहत बख्श असरात इज्तिमाई जिन्दगी पर भी मुरत्तब होते हैं। एक फर्द के अन्दर इस सिफत का कमा हक्कहू वजूद उसके गर्द व पेश फैले हुए मुआशरे और माहौल को बहुत से फित्नों, शोरिशों, अदावत और मुखालिफत और जंग व जिदाल की लानतों से बहुत हद तक महफूज़ रखता है।

सब्र : सब्र आलाम व मसाइब पर बेकरारी का इज़्हार न करने और मुश्किल व दुश्वार हालात में सबात व इस्तिक्लाल के काइम रखने का नाम है। **अस्सबरुल-इम्साक फ़िज़्ज़नीन**। यानी तकाज़ों की इंफिरादी व इज्तिमाई तक्मील पर नामुसाअदते रोज़गार के बाइस आंच न आने देना, हालात की नासाज़गारी, हक परस्ती की आज़माइशों पर सख्त यल्गार में बदस्तूर शाहराहे दीन पर काइम रहने और जबीने इस्तिक्लाल पर शिकन और ज़बान पर हर्फे शिकायत न लाने को सब्र कहते हैं।

यानी अक्ल व शरअ् के मुतालिबात पर अपने आपको जमा रखने या जिन चीज़ों से रुकने का वह तकाज़ा करें उन से अपने आपको रोकने का नाम सब्र है।

दीन की राह में आज़माइशों पर सब्र का अंदाज़ा इस बात से लगाया

Y93
amera

जा सकता है कि इब्तिदा इस्लाम में नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मसाइब पर सब्र की तल्कीन इस तरह की गई :

तरजमा : (कुफ्फार) जो कुछ आप की मुख़ालिफ़त करते हैं उस पर सब्र करो और खुश उस्लोबी से उन्हें नज़र अंदाज़ कर दो। (सूरः मुज़म्मिल)

खुद मुसलमान को भी नाखुशगवार, संगीन हालात में सब्र की हिदायत की गई थी :

तरजमा : ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद चाहो, बेशक अल्लाह सब्र वालों के साथ है। (सूरः बक़रा)

मसाइब व आलाम पर सब्र व इस्तिक़ामत अह्ले ईमान की अलामत बन गई।

"आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा की एक जमाअत से पूछा तुम कौन हो? उन्होंने कहा मोमिन, आपने फरमाया, तुम्हारे ईमान की क्या अलामत है? उन्होंने कहा कि हम मसाइब पर सब्र करते हैं, फराख़ी में शुक्र अदा करते हैं और अल्लाह तआला की क़ज़ा पर राज़ी रहते हैं, आपने फरमाया रब्बे काबा की क़सम! तुम मोमिन हो।" (मुकाशिफ़ा : 525)

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ईमान के मुतअल्लिक़ पूछा गया। आपने फरमाया, ईमान सब्र और सख़ावत का नाम है। और फरमाया, सब्र जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु सब्र व ईमान के तअल्लुक़ को इस तरह बयान फरमाते हैं :

सब्र व ईमान का तअल्लुक़ ऐसा है जैसा सर का जिस्म के साथ, जिसका सर न हो उसका जिस्म भी बाक़ी न रहेगा, इसी तरह जिस में सब्र की सिफ़त नहीं है उसमें ईमान नहीं है। (कीमियाए सआदत : स० 731)

सब्र इस्लाम की ख़ालिस तालीमात में से हैं यही वजह है कि हादि-ए-आज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी हिदायत और तरग़ीब फरमाई है। सब्र के मिन्हाज पर साबित क़दम रहने का यह असर होता है कि बन्दा खुशी व ग़म, सहत व मरज़ हर हाल में खुदा से वाबस्ता रहता है, वह मसाइब व नाकामियों में शिकस्त ख़ूर्दा नहीं होता, रंज व ग़म के तसलसुल से भी उसकी जान नहीं घुलती, मुख़ालिफ़तों का तूफ़ान उसे हरासाँ नहीं करता। वह मसाइब व आलाम से आंखें मिला कर ज़िन्दगी बसर करता है, दिल शिकस्तगी उसकी कुव्वते अमल को सदमा नहीं पहुँचा सकती और वह अज़्म

व हिम्मत की मज़्बूत चट्टान बन कर साबित क़दम रहता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सिलसिला में अपने अहम इरशादात से उम्मते मुस्लेमा के अन्दर सब्र की कुव्वत को बेदार करने की कोशिश फरमाई।

❖ बन्द-ए-मोमिन का मआमला भी अजीब है उसके हर मआमला और हर हाल में उसके लिए ख़ैर ही ख़ैर है। अगर उसको खुशी और राहत व आराम पहुँचे तो वह अपने रब का शुक्र अदा करता है और यह उसके लिए ख़ैर ही ख़ैर है और अगर उसे कोई दुख और रंज पहुँचता है तो वह उस पर सब्र करता है और यह सब्र भी उसके लिए सरासर ख़ैर और मूजिबे बरकत है। (मुस्लिम)

❖ ऐ फरज़न्दे आदम! अगर तूने शुरू सदमा में सब्र किया और मेरी रज़ा और सवाब की नीयत की तो मैं नहीं राज़ी हूँगा कि जन्नत से कम और उसके सिवा कोई सवाब तुझे दिया जाए। (इब्ने माजा)

❖ जो बन्दा किसी जानी या माली मुसीबत में मुब्तला हो और वह किसी से उसका इज़हार न करे और न लोगों से शिक्वा व शिकायत करे तो अल्लाह तआला का ज़िम्मा है कि वह उसको बख़्श दे। (मोजमे औसत तबरानी)

❖ यह आज़माइशें जितनी सख़्त होंगी उसी क़द्र बुलन्दी-ए-दरजात का सबब बनेंगी, बशर्तेकि उन पर सब्र व इस्तिक़ामत का मुज़ाहरा किया जाए। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया :

आज़माइश जितनी सख़्त उतना ही बड़ा इंआम मिलेगा, बशर्तेकि आदमी मुसीबत से घबरा कर राहे हक़ से भाग खड़ा न हो।

और अल्लाह तआला जब किसी गरोह से मुहब्बत करता है तो उनको मज़ीद निखारने और साफ करने के लिए आज़माइशों में डालता है पस जो लोग खुदा के फ़ैसला पर राज़ी रहें और सब्र करें तो अल्लाह उन से खुश होता है और जो लोग उस आज़माइश में अल्लाह तआला से नाराज़ हों तो अल्लाह भी उन से नाराज़ हो जाता है।

बन्द-ए-मोमिन के लिए मामूली से मामूली आज़माइश और राहे हयात की तंगी गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस किसी मुसलमान को कोई क़ल्बी तक्लीफ़, कोई जिस्मानी बीमारी, कोई दुख और गम पहुँचता है और वह उस पर सब्र करता है यहाँ तक कि अगर उसे कांटा चुभ जाता है तो वह उसके गुनाहों की माफ़ी का सबब बनता है।

इब्तिला व आज़माइश पर सब्र व शुक्र के खुशगवार नताइज व इंआमात दुनिया की ज़िन्दगी में कामयाबी व कामरानी की सूरत में भी मयस्सर आते हैं और आख़िरत में भी बुलन्दी-ए-दरजात का सबब बनते हैं। दुनिया की अज़ीम दीनी, इल्मी, दावती शख़्सियतों की उफुक़े तारीख़ पर खींची हुई ज़र्री कहकशाँ इस अम्र की गवाह है। कभी ऐसा भी होता है कि आज़माइशें बादेयुन्नज़ (देखते ही) में इंसान की हस्ती और उसकी दौलत व सरमाया की बरबादी, नाकामी व नामुरादी का पता देती है। मगर ऐसा नहीं, इन अज़ीम इज़्ज़त मआब हस्तियों की ज़ाहिरी नाकामी व नामुरादी पर ज़रा ग़ौर व तअम्मुल से काम लिया जाए तो यह हक़ीक़त वाज़ेह हो जाती है कि इब्तिला व आजमाइश की सख़्तियों ने जिस्म व रूह का तअल्लुक़ तोड़ दिया, मगर उन्हें जो हयाते जावेदाँ अता हुई वह हज़ार साला कामयाब व कामराँ ज़िन्दगी पाने वाले के लिए भी क़ाबिले रश्क बन गई।

❖ ❖ ❖

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से इक्कीस सौ साल पेश्तर (पहले) की बात है। अपने वक़्त के जाबिर फरमां रवा नम्रूद (जिसकी राजधानी शहर उर) (बाबुल) बड़ी आबादी, तिजारत व सक़ाफ़त (कल्चर) के लिहाज़ से दुनिया के अज़ीम (बड़े) शहरों में शुमार (गिना) किया जाता था) नाज़ व तम्कुनत के तख़्त पर बैठा है। आयाने सल्तनत, वज़राए हुकूमत, ताबीर दाँ, माहिरीने नुजूम, मिज़ाज शनास शाही नदीम हैरानी व परेशानी की हालत में ख़ामोश हैं क्योंकि आज दुनिया की अज़ीम सलतनत का बादशाह ख़िलाफ़े मामूल मुतफ़क्किर (परेशान) नज़र आ रहा है। उसके सुर्ख़ व सपेद चेहरे का उड़ा हुआ रंग किसी अन्दरूनी ख़लिश का पता दे रहा है। चार सौ साला दौरे हुकूमत में नम्रूद को इस दरजा ग़म्ज़दा, परीदा रंग, उदास व मुज़्तरब (परेशान) कभी नहीं देखा गया।

नम्रूद ने अपने परस्तार वज़रा, नुदमा और मज़्हबी पेशवाओं के सामने गहरी फ़िक्र व तश्वीश के बाद होंठों को जुंबिश दी और लरज़ती, काँपती आवाज़ में कहा :

"गुज़िश्ता रात हम ने ख़्वाब देखा कि आसमान पर एक ताबनाक सितारा तुलूअ् हुआ जिसकी रौशनी के सामने शम्स व क़मर (चाँद व सूरज) की रौशनी मांद पड़ गई, इस ख़्वाब ने हमें एक अंजाने कर्ब में मुब्तला कर दिया है। नम्रूद का ख़्वाब सुन कर नुजूम व फल्कियात के माहिर ताबीर शनासों ने अपने सर जेब तफ़क्कुर में झुका लिए और इल्म व फन के मुताबिक़ हुसूले ताबीर के लिए तख़्मीन व ज़न के ताने बाने बुनने शुरू कर दिए।"

ग़ौर व तअम्मुल (सोच व फ़िक्र) के बाद मुल्क के मोबिरों ने बयक ज़बान ख़्वाब की ताबीर पेश करते हुए कहा :

हम अपने इल्म के मुताबिक़ ख़्वाब की ताबीर यह पाते हैं कि एक लड़का फलां महीना फलां सन में तुम्हारे इसी क़रिया में पैदा होगा जिसका नाम इब्राहीम होगा। जो तुम्हारे धर्म में तफ़रीक़ (फ़र्क़) डालेगा और तुम्हारे बुतों को तोड़ देगा।

ख़्वाब की ताबीर ने तमाम आयाने हुकूमत और औसान परस्त (बुत-परस्त) पिरोहितों को ग़म व इज़्तिराब में नम्रूद का सहीम व शरीक बना दिया। सबकी नुख़ुव्वत व आमरीयत ने जोश मारा, जब्र व इस्तिब्दाद के उसूलों पर क़ाइम निज़ामे आमरीयत और तागूती दस्तूरे फ़िक्र की बुनियादों पर उस्तवार होने वाली मुश्रेकाना मज़्हबीयत को मुस्तक़्बिल की शिकस्त व रेख़्त से महफ़ूज़ रखने का फ़क़त एक ही रास्ता नज़र आया। और वह यह कि सितार-ए-पुर नूर को तुलूअ़ होने से पहले ही ज़ुल्म व तशद्दुद की तारीकियों में छुपा दिया जाए।

नम्रूद का जाबेराना हुक्म सादिर हुआ। सारे हुदूदे सल्तनत में हमल शनास औरतों को मामूर कर दिया जाए। वह हामिला औरतों की तफ़्तीश करें। जो लड़का पैदा हो उसे फौरन क़त्ल कर दिया जाए।

शाही फरमान जारी होते हैं नव मौलूद बेगुनाह लड़कों के बहीमाना क़त्ल का अमल शुरू हो गया। हज़ारों बच्चे क़त्ल कर दिए गये।

इक़्तिदार व इख़्तियार के ज़ालिमाना इस्तेमाल से नम्रूद और उसके हवा ख़्वाह आने वाले ख़तरे से मुत्मइन हो गये। मगर मशीयते एज़्दी इंसानों की तदाबीर और उनकी क़द्ग़न (रोक़) से कहीं रुक सकती है? नम्रूद के एक मोतमद नदीम, शाही महन्त और माहिर बुत साज़ आज़र के घर उम्मे इब्राहीम हामिला हुईं, हमल शनास, सुराग़ रसां (का पता करने वाली) औरतें उस घर भी आईं, मगर कम सिनी के सबब उम्मे इब्राहीम का हमल शनाख़्त में न आ सका और वह नम्रूदियों की गिरफ़्त से बच गईं। जब हमल के दिन पूरे हुए। उम्मे इब्राहीम एक ग़ार में चली गईं। जहाँ हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम पैदा हुए और रुश्द व हिदायात का कौकब ताबन्दा फ़ुद्दान आराम के तारीक (अंधेरे) ग़ार में परवान चढ़ता रहा। यह माबूदे हक़ीक़ी की मशीयत के सामने माबूदे बातिल की पहली शिकस्ते फ़ाश थी।

शुऊरे नुबुव्वत और एलाने सदाक़त : आज़र कदा छोटे बड़े बेशुमार पत्थर, लकड़ी और कांसे के बुत। आज़र और क़ौम के कुछ अफ़्राद महव इबादत। यह मंज़र सलीमुत्तबअ़, बालिग़ नज़र (दूर अन्देश और तजरबाकार) इब्राहीम ने अपने घर में देखा। बुत गरी, बुत परस्ती जो फ़िक्र सही और अक़्ले सलीम के अलर्रग़्म जाहलीयत ख़ालिस की पैरवी है। सालेह फ़िक्र व शुऊर रखने वाले होनहार नव खेज़ के लिए उस पर सब्र व ज़ब्त कहाँ, जिसके बारे में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

तरजंमा : और बिला शुबह हमने इब्राहीम को अव्वल ही से रुश्द व हिदायत अता की थी और हम उसके मुआमले के जानने वाले थे। होनहार इब्राहीम ने अपने चचा और अपनी क़ौम के अफ़राद से दरयाफ़्त किया :

तरजमा : जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा यह मुजस्समे क्या हैं? जिनको तुम लिए बैठे हो कहने लगे हमने अपने आबा व अज्दाद को उन्हीं की परस्तिश करते पाया है। इब्राहीम ने कहा बिला शुबह तुम और तुम्हारे आबा व अज्दाद खुली हुई गुम्राही में थे। (सूरः अंबिया)

सदियों की मुश्रेकाना रविश और आबा व अज्दाद की कोराना तक़्लीद के ख़िलाफ़ यह ऐसी आवाज़ सदाक़त थी, जिसने नम्रूदियों को हैरत व इस्तेअ्जाब में डाल दिया। वह लोग जो उस बातिल निज़ामे दीन के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ सुनने की ताब न रखते थे उन्होंने कहा :

तरजमा : उन्होंने कहा क्या तू हमारे लिए कोई हक़ लाया है या यूंही मज़ाक़ करने वालों की तरह कहता है। (सूरः अंबिया)

इस मौक़ा पर ख़ुदाए वाहिद की रबूबियत का एलान करते हुए इब्राहीम ने कहा :

तरजमा : (इब्राहीम ने कहा) यह बुत तुम्हारे रब नहीं हैं। बल्कि तुम्हारा परवरदिगार ज़मीन और आसमान का परवरदिगार है और बेशक मैं इसी बात का क़ाइल हूँ।

शहर बाबुल (उर) के कूचा व बाज़ार में एक नौखेज़ नौजवान पत्थर और लकड़ी के बुतों को लेकर सुबह से शाम तक फिरता रहा। वह नौजवान बुत परस्तों के शहर में सदा दे रहा था, बआवाज़ बुलन्द पुकार रहा था :

ऐ अस्नाम व औसान (पत्थरों) के पुजारियो! कौन है जो ऐसे बुतों को ख़रीदेगा जो न उसे नुक़्सान पहुँचा सकते हैं और न ही उसे नफ़अ् दे सकते हैं।

शहर के ख़ुर्द व कलाँ (छोटे-बड़े) अपनी आँखों से बुतों की ज़िल्लत देखते रहे और अपने कानों से उनकी लानत का बरमला एलान सुनते रहे मगर हक़ के दाई को बुतों की एहानत से कोई बाज़ न रख सका और किसी ने इब्राहीम से बुत न ख़रीदे।

कूचा व बाज़ार में बुतों की तज़्लील व तौहीन के बाद हज़रत इब्राहीम बुतों को लिए हुए नहर पर पहुँचे।

पस बुतों के सर नहर में डिबो कर अपनी क़ौम का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा पानी पियो!

हज़रत ख़लील अपनी इस तरज़े अमल से बुतपरस्त क़ौम पर यह वाज़ेह कर देना चाहते थे कि पत्थर या लकड़ी के ख़ुद साख़्ता बुतों की परस्तिश (पूजा) इस ख़्याल से करते हो कि वह तुम्हारी हाजत रवाई या तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने की क़ुदरत रखते हैं तो अपनी आँखें खोल कर देख लो, यह मेरे हाथ में किस दरजा बेबस हैं, तुम्हारे मुश्रेकाना अक़ाइद, महज फुतूरे अक़्ल और दिमाग़ की पैदावार हैं। तुम्हें शैतान ने राहे हक़ से जुदा करके फ़रेब में फंसा रखा है।

आग़ाज़े दावत : बुतगर, सनम तराश आज़र मुल्क के सरबर आवुरदा पिरोहितों में था जो नम्रूद के मिज़ाज में बड़ा दख़ल रखता था। शिर्क व कुफ़्र के सारे मन्सूबे उसी के घर बनते। क़ौम के आम व ख़ास, हर तब्क़ा में आज़र को इज़्ज़त व वक़ार की नज़र से देखा जाता, नबी बरहक़ हज़रत ख़लील इस हक़ीक़त से बख़ूबी वाक़िफ़ थे कि मज़्हबी पेशवाओं और मअ्बद के पुजारियों को अवाम से लेकर बादशाह तक रुसूख़ हासिल है। अगर दावते हक़ पुजारियों में असर कर गई तो पूरे समाज पर खुशगवार इस्लाही तब्दीली बहुत हद तक मुम्किन हो सकेगी। चुनांचे हज़रत इब्राहीम ख़लील ने अपने घर से हक़ व सदाक़त की दावत का आग़ाज़ फरमाया। अपने चचा आज़र को फितरी दलाइल की रौशनी में बुतपरस्ती की लायानी रविश से बाज़ रहने और ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की उलूहियत व रुबूबियत के सच्चे अक़ीदे को दिल व दिमाग़ में उतारने की पैग़म्बराना कोशिश शुरू कर दी। और बार-बार गम गुश्त-ए-राह (भूली राह) आज़र को पैग़ामे हक़ सुनाते रहे।

तरजमा : और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को माबूद क़रार देते हो? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली हुई गुम्राही में देखता हूँ।

दूसरे मक़ाम पर आज़र से यूं कलाम फरमाते हैं :

तरजमा : और जब (इब्राहीम ने) अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप! तू ऐसी चीज़ की परस्तिश क्यों करता है जो न तो सुनती है और न देखती है और जो तेरे किसी काम नहीं आ सकती। ऐ मेरे बाप! इल्म की रौशनी मुझे मिल गई है जो तुझे नहीं मिली पस मेरी इत्तिबा कर, मैं तुझे सीधी राह दिखाऊंगा। ऐ मेरे बाप! शैतान की बन्दगी न कर, शैतान तो ख़ुदाए रहमान का नाफरमान हो चुका है। ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो ख़ुदाए रहमान की जानिब से तुझे कोई अज़ाब घेरे और तू शैतान का साथी बन जाए। (सूरः मरियम)

नाआक़िबत अन्देश आज़र ने जवाबन कहा :

तरजमा : (आज़र) ने कहा ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे माबूद से फिर गया है याद रख! तू ऐसी बातों से बाज़ न आया, तो तुझे ज़रूर संगसार करूंगा। अपन ख़ैर चाहता है तो जान सलामत लेकर मुझ से अलग हो जा। आज़र के तहदीदी (धमकी) जवाब पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इरशाद फरमाया :

तरजमा : हज़रत इब्राहीम ने कहा मेरा सलाम कुबूल हो (मैं अलग हो जाता हूँ) अब मैं अपने परवरदिगार से तेरी बख़्शिश की दुआ करूँगा। वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है।

क़ौम को दावते हक़ व सदाक़त : नम्रूद बिन कोश की राजधानी शहर उर (बाबुल) आज से चार हज़ार साल क़ब्ल दुनिया के अज़ीम और मुतमद्दिन (मुहज़्ज़ब) शहरों में शुमार होता था जिसकी आबादी ढाई लाख बताई जाती है। आसारे क़दीमा (पुरानी इमारतों के खण्डर) की तहक़ीक़ (जाँच) व दरयाफ़्त (पता) से इस क़दीम (पुराने) शहर के खण्डरात कूफ़ा, बसरा के दर्मियान ज़ेरे ज़मीन मदफून पाए गये हैं जो चश्मे बसीरत को इबरत व नसीहत के इशारे दे रहे हैं। उस शहर के बाशिन्दे इम्रानियात (रहन-सहन) के उसूल और मदनी ज़िन्दगी के तक़ाज़ों से पूरी तरह वाक़िफ़ थे, सनअ़त व हिरफ़त और तिजारत में अपना जवाब न रखते थे। मआ़शी ख़ुशहाली और दुनियावी हश्मत व जाह इज़्ज़त व वक़ार से हम्कनार थे। मगर तमद्दुन व सक़ाफ़त, सीम व ज़र से माला माल क़ौम हक़ परस्ती से बहुत दूर बातिल और ख़िलाफ़े अक़्ल अफ़्कार व अक़ाइद की कोराना तक़्लीद कर रही थी। माद्दी खुशहाली और उसके हुसूल की बेजा तमअ़् ने चश्मे बसीरत पर दबीज़ पर्दे डाल दिए थे। वह सरासर माद्दीयत और मज़ाहिर परस्ती की लानतों में मुब्तला हो कर हक़ तल्बी व हक़ीक़त रसी से बेनियाज़ शिर्क व गुम्राही के पर पेच तारीक वादियों में सरगरदाँ थी। लाताद बुतों की पूजा, गुम्राह पुजारियों की इताअत और नम्रूद की परस्तिश उनका शेवा बन चुकी थी।

हज़रत इब्राहीम ख़लील ने घर की चहार दीवारी से निकल कर पूरी क़ौम को ज़लालत व गुम्राही से निकाल कर दीने हनीफ़ के सालेह अफ़्कार व अक़ाइद की रौशनी में ख़ुदाए वाहिद की परस्तिश की दावत दी।

तरजमा : और सुना दे उनको ख़बर इब्राहीम की, जब कहा उन्होंने अपने

बाप और अपनी क़ौम से तुम किस को पूजते हो? वह बोले हम बुतों की परस्तिश करते हैं फिर सारे दिन उन्हीं के पास बैठे रहते हैं। फिर इब्राहीम ने कहा क्या तुम्हारा कुछ सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? तुम्हारा कुछ भला करते हैं या नुक़्सान पहुँचाते हैं? क़ौम ने कहा नहीं, पर हमने अपने आबा व अज्दाद को यही काम करते हुए पाया, इब्राहीम ने कहा क्या तुम भला देखते हो जिनको पूज रहे हो तुम और तुम्हारे बाप दादे, वह मेरे दुश्मन हैं, मगर जहाँ का रब जिसने मुझको पैदा किया, वही मुझे राह दिखाता है और वह जो मुझ को खिलाता और पिलाता है। और जब मैं बीमार हूँ तो वही शिफ़ा देता है और वह मुझे मारेगा फिर जलाएगा और जिस से मुझे उम्मीद है कि बख़्शेगा मेरी तक़्सीर (गुनाह) इंसाफ़ के दिन। (सूरः शोअ़रा)

हज़रत इब्राहीम की क़ौम दावते अस्नाम परस्ती (बुत-परस्ती) के साथ नुजूम व कवाकिब की उलूहियत (चाँद तारों की खुदाई) पर भी यक़ीन रखती थी। मुल्क का पूरा मुआशरा नुजूम व फल्कियात के माहरीन और काहिनों की गिरिफ़्त में था। उन्होंने आफ़ताब व माहताब और दीगर इजरामे समावी की कुव्वत नफ़अ़ व ज़रर और कारखान-ए-हस्ती में उनकी तस्ख़ीरी तवानाई का बातिल अक़ीदा इस तरह रासिख़ कर दिया था कि निज़ामे हयात व काइनात में उनकी असर आफ़रीनी के यक़ीन ने माद्दा परस्त क़ौम के दिल व दिमाग़ को मख़्लूकियत के दाइरे से ख़ारिज करके ख़ालक़ीयत के दरजा पर फाइज़ कर दिया था। यही वजह थी कि क़ौम के जज़्ब-ए-उबूदियत ने सितारा ज़ोहरा की तश्बीह इश्तरा के नाम से बना ली जिसे वह हुस्न व मुहब्बत की देवी कहते थे। चाँद की तम्सील नन्नार के नाम से तैयार की थी और सूरज का बुत शमूश के नाम से तराश लिया था। इन तीन अहम बुतों के अलावा आसमान के सितारों की तरह हर हर काम के लिए जुदा-जुदा अन गिनत मुजस्समे थे जिनके सामने अक़ीदत की नज़रें गुज़ारते और उनके रूबरू सरे इताअत व नियाज़ ख़म करते।

ऐसे पुरआशोब दौर में शुऊरे नुबुव्वत, क़ौम के एतक़ादी व अमली बेराह रवी और बदतरीन गुम्राही को मुशाहिदात की रौशनी में रद्द करता है और इंसानी अक़्ल व फरासत पर औहाम के पड़े हुए कसीफ़ पर्दों को उठा कर जुस्तजूए हक़ की राह आसान करता है। वहम परस्त को दिमाग़, क़ौम के सामने इस हक़ीक़त को वाशिगाफ़ करता है कि अजरामे समावी ख़ालिक़ व माबूद नहीं बल्कि मख़्लूक़ हैं। यह दुनिया को रौशनी व हरारत और

ज़ीनत देते हैं और ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के क़ाइम करदा निज़ाम के ताबेअ़ हैं। इसी के मुक़र्ररह ख़ुतूत पर शब व रोज़ गर्दिश करते हैं।

तरजमा : जब उस पर एक सितारा देखा। उसने कहा यह मेरा परवरदिगार है (कि सब लोग उसकी परस्तिश करते हैं) लेकिन जब वह डूब गया तो कहा मैं उन्हें पसन्द नहीं करता जो डूब जाने वाले हैं फिर जब ऐसा हुआ कि चाँद चमकता हुआ तुलूअ़ हुआ तो इब्राहीम ने कहा यह मेरा परवरदिगार है लेकिन जब वह भी डूब गया तो कहा अगर मेरे परवरदिगार ने मुझे राह न दिखाई होती तो मैं ज़रूर इसी गरोह से होता जो राहे रास्त से भटक गया है। फिर जब सुबह हुई और सूरज चमकता हुआ तुलूअ़ हुआ तो इब्राहीम ने कहा यह मेरा परवरदिगार है कि यह सबसे बड़ा है लेकिन जब वह भी ग़ुरूब हो गया तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम जो कुछ ख़ुदा के साथ शरीक ठहराते हो मैं उस से बेज़ार हूँ, मैंने तो हर तरफ़ से मुँह मोड़ कर सिर्फ़ उस हस्ती की तरफ़ अपना रुख़ कर लिया है जो आसमान व ज़मीन को बनाने वाली है और मैं मुश्रेकीन से नहीं। फिर क़ौमे इब्राहीम ने उस से मुबाहिसा किया तो इब्राहीम ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो हालांकि उसने मुझे राहे हक़ दिखा दी है। जिन्हें तुमने ख़ुदा का शरीक ठहरा लिया है मैं उन से नहीं डरता। मैं जानता हूँ कि मुझे कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता मगर यह कि मेरा परवरदिगार ही मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहे। मेरा परवरदिगार अपने इल्म से तमाम चीज़ों का एहाता किए हुए है फिर तुम क्यों नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (सूरः इन्आम)

देखो मैं उन हस्तियों से क्यों डर सकता हूँ जिन्हें तुम ने ख़ुदा का शरीक ठहरा लिया हैं जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि ख़ुदा के साथ दूसरों को शरीक ठहराओ जिनके लिए उसने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी।

यह वाक़या एक ख़ास मुनाज़राना नौइयत का था जिस में अजराम फ़ल्की की हक़ीक़त को वाज़ेह किया गया था और क़ौम के बातिल नज़्रिय-ए-उलूहियत पर ज़र्ब लगाई गई थी।

बातिल परस्त क़ौम हज़रत इब्राहीम की दलील से लाजवाब हो गई। मगर सदियों की बुत परस्ती और वाहिमा ने उनके अक़्लों को माऊफ़ कर दिया था। जब उन से कुछ न बन बड़ा तो आप से झगड़ने लगे। नबी-ए-बरहक़ कुफ़्र व शिर्क के नरग़े में अल्लाह की बख़्शी हुई कुव्वत व जुरअत के बाइस हेरासाँ न हुआ और तब्लीग़े हक़ के मिशन को जारी

रखा। उसने पूरी कौम के बातिल नज़्रिय-ए-बुत परस्ती को अमलन ज़र्बकारी लगाने का फैसला कर लिया है। क़ौम से ख़िताब फरमाया :

तरजमा : ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारी गैर हाज़िरी में तुम्हारे बुतों के साथ खुफ़िया चाल चलूँगा। (सूरः अंबिया)

बुतों की शिकस्त व रेख़्त : बुतों की शिकस्त व रेख़्त का मन्सूबा हज़रत इब्राहीम ने इसलिए तैयार किया कि मुश्रेकीन पर यह बात वाज़ेह कर दी जाए कि शैतानी वसवसों और नफ़्सानी वाहिमों के नतीजा में तराशे गये मुजस्समे जिन की परस्तिश सदियों से होती चली आ रही है उनमें अपने परस्तारों को नफ़अ् व मुजर्रत रसानी (नुक़्सान पहुँचाने) की कुदरत तो दरकनार, ख़ुद अपने वजूद की हिफ़ाज़त की सलाहियत भी मौजूद नहीं। यह पत्थर और धात के बेजान बुत न तो अपनी ज़ात को बचा सकते हैं न अपने दुश्मन को उसके इरादों से बाज़ रख सकते हैं। वह इसी तरह निरे पत्थर और बेजान लकड़ी हैं जिस तरह शज्र व हजर के यह देवी देवता अह्दे जुल्मत की यादगार और शैतान के फरेब ख़ूरदा मज़्हबी रहनुमाओं के बातिल तख़य्युलात की नाकारा पैदावार हैं।

एक अज़ीम क़ौमी मेले का दिन था जिस में शहर की पूरी आबादी शरीक होती। बादशाह आयाने सल्तनत, मज़्हबी पेशवा, रिआया से पूरा शहर और "उर" का बड़ा सनम ख़ाना जो शौकत व अज़्मत में शाही महल से कम न था, ख़ाली हो गया। बाज लोगों ने हज़रत इब्राहीम से भी मेले की शिरकत पर इसरार किया।

तरजमा : आपने सितारों की जानिब देखा पस कहा मैं बीमार हूँ तो लोग उन्हें (छोड़ कर) चले गये। (सूरः साफ़्फ़ात)

जब पूरी कौम शहर से बाहर मेले में ऐश व नशात में मस्रूफ़ थी, हज़रत इब्राहीम तय शुदा निज़ामे अमल के मुताबिक़ बुतखाने में दाख़िल हुए।

तरजमा : जो चुपके से उनके बुतों में जा घुसे और उन देवताओं से कहने लगे क्यों नहीं खाते? तुमको क्या हो गया है क्यों नहीं बोलते। फिर अपने हाथ से उन सब बुतों को तोड डाला। (सूरः साफ़्फ़ात)

तरजमा : पस उन बुतों को टुक्ड़े-टुक्ड़े कर दिया। उन में से बड़े देवता को छोड़ दिया ताकि (अपने अकीदा के मुताबिक़) कौम उसकी जानिब रुजूअ् करे (कि यह क्या हुआ) (सूरः अंबिया)

जब पूरी कौम दाद ऐश व तर्ब देकर वापस हुई। मअ्बद के पुजारियों

और अवाम ने अपने माबूदाने बातिल की शिकस्तगी व ज़बूंहाली का मुशाहिदा किया तो कहने लगे :

तरजमा : कहने लगे यह मुआमला हमारे माबूदों के साथ किस ने किया है बिला शुबह वह ज़रूर ज़ालिम है। उन में से बाज़ कहने लगे हमने एक जवान से सुना है जो उसका ज़िक्र कर रहा था उसका नाम इब्राहीम है।

मज़हब के ठीकेदारों ने बातिल मुअ़्तक़ेदात का जो शीश महल बनाया था वह चूर-चूर हो चुका था। यह शिकस्ता बुत ज़बाने हाल से उनकी अहमक़ाना तर्ज़े फ़िक्र व अमल की लायानियत की तक्ज़ीब कर रहे थे। ऐसी सूरत में इस बात का क़वी इम्कान था कि क़ौम के बाशुऊर अफ़राद तो हम और बातिल परस्ती के दाइरे से निकल न जाएं और सदियों में तैयार होने वाले रेत के एवाने एतक़ाद के रेज़े ख़ाके सहरा का पैवन्द न बन जाएं, चुनांचे मज़हबी रहनुमाओं और कोर मग्ज़ अफ़राद क़ौम ने एक जम्मे ग़फ़ीर के सामने हज़रत इब्राहीम को हाज़िर किया और उन से दरयाफ़्त किया।

तरजमा : बोले ऐ इब्राहीम! क्या तूने हमारे माबूदों के साथ ऐसा किया है? (सूरः अंबिया)

जिस दावती मक़्सद के पेशे नज़र हज़रत इब्राहीम ने बुतों को तोड़ा था, अब वह वक़्त आ चुका था कि पूरी क़ौम पर वाज़ेह कर दिया जाए कि मज़हबी एतक़ाद व अमल की दुनिया में तुम मुब्तलाए फरेब हो। इस अमल से ख़ुद बातिल परस्त मज़हबी रहनुमा अपनी ज़बानों से बुतों की बेहिसी और नातवानी का इक़रार कर लेंगे। चुनांचे हज़रत इब्राहीम ने मज्मा आम में मुश्तइल रहनुमाओं के सवालों का जवाब देते हुए मताबत के साथ इरशाद फरमाया :

तरजमा : (इब्राहीम) ने कहा बल्कि उन में से उस बड़े बुत ने किया है। पस अगर तुम्हारे देवता बोलते हों तो उन से पूछ लो। (सूरः अंबिया)

आज यह हक़ीक़त क़ौमे नम्रूद पर वाज़ेह हो चुकी थी कि एक फ़र्दे वाहिद की ज़र्ब से उनके देवी देवता टूट कर बिखर चुके थे और इस अन्दोहनाक मंज़र को बड़ा बुत तमाशाई बना देखता रहा। उसकी मफ़रूज़ा ताबे उलूहियत ग़ैरत में न आई और वह अपने दुश्मन को गिरफ़्तार ग़ज़ब व एताब न कर सका। मन्दिर के पुजारियों और महन्तों से भी एतराफ़े हक़ के सिवा कोई जवाब न बन पड़ा। और उन्होंने वह सच्ची बात अपनी ज़ुबान से कह दी जो दावते इब्राहीमी का मंशा थी।

तरजमा : पस उन्होंने सोचा और कहने लगे तुम्हीं ज़ालिम हो और बादे अज़ाँ अपने सरों को झुका कर कहने लगे ऐ इब्राहीम! तू ख़ूब जानता है कि यह बोलने वाले नहीं हैं। (सूरः अंबिया)

मज़हबी रहनुमा और क़ौम के बाशुऊर लोगों की आँखें कुछ देर के लिए खुल गईं। वह अपनी बातिल शिआरी का इक़रार दिलों में करने के बाद ख़ुद बोल उठे। **मा हा ऊलाइ यन्तेकून।** जब यह बुत बोल नहीं सकते, अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते, फिर भला निज़ामे हयात व काइनात में अपनी क़ुव्वते अमल से तस्ख़ीर के मजाज़ कैसे बन गये?

हुज्जते इब्राहीमी ने पूरे माहौल को दावते हक़ के लिए साज़गार बना लिया। क़ौम से ख़िताब फरमाते हुए कहा :

तरजमा : तुम अल्लाह के सिवा उन बुतों की परस्तिश क्यों करते हो? जो तुम को न नफ़अ् पहुँचा सकते हैं और न नुक़्सान, तुम पर अफसोस है और तुम्हारे उन माबूदों पर भी जिसको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते हो? (सूरः अंबिया)

तरजमा : बुत परस्ती की ला यानियत के ज़ाहिर हो जाने के बावजूद सदियों की जाहिलाना रविश, एतक़ाद व अमल की दीवारें मुतज़लज़ल तो हो गईं मगर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मुअस्सिर हिदायत का मुस्बत असर ज़ाहिर न हो सका। आबा परस्ती, दक़्यानूसी ज़हनियत, इक्तिशाफ़े हक़ीक़त के बावजूद ख़ौफ व तमअ् के हिसार से बाहर न निकल सकी।

दरबारे नम्रूद और एलाने हक़ : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावते हक़ ने मुश्रेकाना तर्ज़े फिक्र व अमल की हवा खेज़ी बराहीने क़ातेआ से इस तरह कर दी थी कि मज़हबी रहनुमा और अफ़रादे क़ौम लाजवाब व शशदर हो कर रह गये थे, उनके वह्म व पिन्दार के बुतख़ाने टूटते बिखरते और रेगे सहरा के मानिन्द उड़ते नज़र आ रहे थे, कुफ़्र व शिर्क की बुनियादों पर क़ाइम बातिल निज़ामे हयात व दीन के तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा का एक ही रास्ता नज़र आ रहा था कि ताक़त व इक़्तिदार के ज़ोर से उस सरमदी आवाज़ और पैग़ामे सदाक़त को दबा दिया जाए।

क़ौम के सरबर आवुरदह अफ़राद और पिरोहितों ने नम्रूद बिन कनआन बिन कोश को इब्राहीम ख़लील के तरज़े फ़िक्र व अमल से मुस्तक़्बिल में बातिल निज़ाम के लिए पैदा होने वाले ख़तरात से आगाह किया। नम्रूद जो महज़ एक मुतलकुल-अनान बादशाह ही न था बल्कि पूरे हुदूदे विलायत

का रब ख़्याल किया जाता था। सर ज़मीने इराक़ का मुरव्वजा इफ़्रियती निज़ाम शिर्क व कुफ्र बादशाहे वक़्त की दीनी व दुनियावी बालादस्ती का मुअय्यद था। वह नम्रूद जिसकी सलतनत की उस्अत के बारे में मुअर्रेख़ीन ने मुबालग़ा आमेज़ रिवायतें नक़्ल की हैं। अल्लामा इब्ने जरीर तबरी के मुताबिक़ :

बेशक पहला बादशाह जो पूरी रू-ए-ज़मीन के शर्क़ व ग़र्ब का हुक्मरां हुआ। नम्रूद बिन कनआन, बिन कोश बिन साम बिन नूह है। वह सलातीन जिन्होंने पूरी दुनिया पर बादशाहत की वह चार हैं : नम्रूद, सुलेमान बिन दाऊद, ज़ुल-करनैन बख़्त नस्र, उन में दो मोमिन हुए और दो काफिर।

हर चन्द तारीख़ी इक्तिशाफ़ात (खोज) की रौशनी में यह बात ग़लत साबित हो चुकी है कि नम्रूद पूरी रू-ए-ज़मीन का बादशाह था। ताहम यह अपनी जगह मुसल्लम है कि वह अपने वक़्त का अज़ीम बादशाह और वसीअ् ख़ित्त-ए-अर्ज़ का मालिक व मुख़्तार था। मगर तन्हा ख़ुदा के दाई बरहक़ के पैग़ामे सदाक से उसके इक़्तिदार व सतवत का क़िला लरज़ने लगा और वह सोचने पर मज्बूर हुआ कि अगर इब्राहीमी दावते हक़ व सदाक़त ने अवाम के बाशुऊर हल्क़ों में रसाई हासिल कर ली, और सदियों पुराने कारखान-ए-औहाम व औसान परस्ती का तिलिस्म टूट गया। तो फिर सतवत व इक़्तिदार के ज़ेरे असर मेरी रबूबियत व हाकमीयत का यह आला शीश महल शिकस्त व रेख़्त से महफ़ूज़ न रह सकेगा। इसलिए ज़रूरी है कि वह वक़्त आने से पहले ही निक्बत व ज़वाल की राहें मुसदूद कर दी जाएं।

नम्रूद का पुर शिकोह दरबार, अमाइदीने हुकूमत, उमरा व रूअसा, धर्म के ठीकेदारों से भरा हुआ था। वक़्त का जाबिर व ज़ालिम फरमां रवा किब्र व नुख़ुव्वत (घमण्ड) और फर्ज़ी जाह व जलाल का पैकर बना तख़्त पर बैठा हुआ था। ख़ुदा का ख़लील बुत शिकन इब्राहीम, दाइ-ए-हक़ व सदाक़त सरे दरबार ईमान व यक़ीन की ग़ैर मुतज़लज़ल कुव्वत के साथ खड़ा था, ताकि नम्रूद का जाह व जलाल, दुश्मनों का हुजूम, दरबार की शौकत, मर्दे हक़ को ज़रा भी मरऊब (पुराने) न कर सके।

नम्रूद ने हज़रत इब्राहीम से दरयाफ़्त किया, इब्राहीम! तू अपने आबा व अज्दाद के क़दीम (पुराने) धर्म (मज़हब) से बरगश्ता (फिरा) क्यों हो गया? बुतों की परस्तिश और उनकी कुव्वते तस्ख़ीर से इंकार क्यों है? मेरी रबूबियत व माबूदियत को तस्लीम क्यों नहीं करता? अगर तू अपने दावे में सच्चा है तो अपने उस रब जिसे तूने सबको झुठला कर माबूद तसव्वुर

किया है, उसकी दलील और निशानी बयान कर?

तरजमा : क्या तूने नहीं देखा उस शख़्स को जिसे अल्लाह ने बादशाहत अता की? जिस ने इब्राहीम से उसके रब के बारे में मुनाज़रा किया जब कहा इब्राहीम ने मेरा परवरदिगार तो ज़िन्दगी बख़्शता और मौत देता है। नम्रूद ने कहा मैं भी ज़िन्दगी बख़्शता और मौत देता हूँ। (सूरः बक़रा)

नम्रूद ने अपनी दलील में सज़ाए मौत पाने वाले दो कैदियों को तलब किया और उन में से एक को आज़ाद कर दिया और दूसरे को क़त्ल कर दिया।

हज़रत इब्राहीम ने समझ लिया कि नम्रूद मौत व ज़ीस्त (ज़िन्दगी और मौत) की हक़ीक़त से नाआशना (अनजान) है, या महज़ अपनी ज़ात को बज़अ़्म ख़्वेश रब साबित करने के लिए यह अहमक़ाना वतीरा अख़्तियार किया है कि उसकी बातिल रबूबियत का भ्रम सरे दरबार पूरी कौम पर खुल न जाए। चुनांचे हज़रत इब्राहीम ने कोर मग्ज़ ख़फ़ीयुल-अक़्ल नम्रूद से कहा :

तरजमा : इब्राहीम ने कहा बिला शुबह अल्लाह तआला सूरज को मश्रिक से निकालता है, पस तू उसे मग्रिब से निकाल कर दिखा, पस वह काफ़िर (बादशाह नम्रूद) मब्हूत (हैरान) हो कर रह गया। अल्लाह ज़ालिमों को राह याब नहीं करता। (सूरः बक़रा अ० 35)

अल्लाह के बरगुज़ीदा पैगम्बर ने दीने हक़ के मिशन को अपने घर की चहार दीवारी से शुरू किया, मगर बदबख़्त आज़र ने दुनियावी जाह व मन्सब की तमअ् (लालच) में क़ुबूले हक़ से इंकार किया। पूरी कौम को अपनी दावत का मुख़ातब बनाया। दलाइल व बराहीन से मुश्रिकाना अफ्कार व अक़ाइद की ला यानियत (बे-मक़सद) जाहिर की। खुदाए वाहिद की रबूबियत व उलूहियत का सच्चा अक़ीदा पेश किया। मगर सदियों की बातिल परस्ती ने दिलों की तारीक दुनिया में आफताबे हिदायत की शुआओं के लिए ज़रा भी गुंजाइश न छोड़ी थी। मुल्क व कौम के अकाबिर उक़ला (अक़्लमन्द) व दानिशवरों के सामने नम्रूद अपने बातिल और बेबुनियाद अक़ीदे की दीवारें ज़मीं बोस होते हुए देखता रहा। मगर सतवत व इक़्तिदार के नशा में सर मस्त रहा। बसीरत के फ़ुक़्दान ने आला व अदना किसी को तागूती निज़ामे फ़िक्र व अमल के शिकंजे से निकलने न दिया।

हाँ! जब बहस व नज़र के मैदान में जुरअत मकाल बाक़ी न रही तो दरबार के हटधर्म बे बजाअत, सुबुक सर (कमीना) महन्तों ने बादशाहे वक़्त के ताक़त व क़ुव्वत और जब्र व इस्तिब्दाद को बरू-ए-कार लाने का मशवरा दिया।

तरजमा : उन्होंने कहा इब्राहीम को जला डालो, अगर अपने देवताओं की मदद करना चाहते हो तो उनकी मदद करो। (सूरः अंबिया)

नम्रूद ने आतिश कदा तैयार करने का शाही फरमान जारी किया।

एक अहम इम्तिहान : एक वसीअ् कित्त-ए-ज़मीन को आतिश कदह के लिए तैयार कर दिया गया, हज़ारों मन लकड़ियों का अंबार इकट्ठा कर दिया गया, आग जला दी गई, अलाव तैयार होने लगा, आग के शोले आसमान से बातें करने लगे। गर्द व पेश का माहौल शोअ्लों से झुलसने लगा, परिन्दों का ऊपर से गुज़रना रुक गया, तो एक मीनार तैयार किया गया, मिंजिनीक़ नसब की गई और फिर हज़रत इब्राहीम को क़रीब लाया गया। पूरा माहौल दुश्मन था। चचा आज़र शहर के छोटे-बड़े बादशाहे वक़्त, सबकी मर्ज़ी यही थी कि दाइ-ए-हक़ को आग के हवाले कर दिया जाए। उसके वजूद को आने वाहिद (लम्हे) में राख बना दिया जाए। यह इंतिहाई सब्र आज़मा घड़ी थी, इब्तिला व आज़माइश का वह जान गुसल (मौत) वक़्त था जब दुनिया में कोई ग़म्गुसार, दादरस न था। मगर ख़लील के पाए सबात व इस्तिक़ामत में लग़्ज़िश न आई, आग के लपकते शोअ्ले उसे हरासां न कर सके, दहकते अंगारों की तपिश जिस्म में इर्तिआश (कपकपाहट) पैदा न कर सकी। आपको मिंजिनीक़ में रखा गया और दकहते हुए आतिश कदा की तरफ फेंका गया। जब फ़िज़ा में पहुँचे जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और कहा : **आलका हाजतुन।** क्या आपको कोई हाजत है? जवाब दिया। **अम्मा इलैका फला।** (इब्ने कसीर : जिल्द 1, स० 148)

हाँ इस नाजुक वक़्त में ख़लीलुल्लाह की जुबान पर यह कलिमात जारी थे :

तरजमा : ऐ माबूदे हक़ीक़ी! तू आसमान में तन्हा है और मैं ज़मीन पर अकेला हूँ, पूरी दुनिया में मेरे सिवा कोई शख़्स नहीं जो तेरी इबादत करता हो, मेरे लिए अल्लाह की मदद काफी है। (तारीख़े तबरी जिल्द 1, स० 169)

नम्रूद और पूरी क़ौम ने यह समझ लिया कि दहकती हुई आग ने इब्राहीम के वजूद को आन वाहिद में ख़ाकिस्तर (ख़त्म) कर दिया होगा। मगए कारसाज़े हक़ीक़ी ने अपने ख़लील को बचा लिया। पूरी शिद्दत के बावजूद आग इब्राहीम को जलाने की सलाहियत खो बैठी और उनके पाक जिस्म के लिए गुल्ज़ार बन गई।

तरजमा : हम ने हुक्म दिया ऐ आग! तू इब्राहीम के हक़ में ठण्डी और सलामती बन जा। (सूरः अंबिया)

ईमान व यक़ीन और इश्क़ व इख़्लास के इस अज़ीम इम्तिहान में ख़ुदा का ख़लील कामयाब व कामरान हुआ।

विलादत फ़रजन्दे हलीम : अर्ज़े मुक़द्दस (पाक ज़मीन) फिलस्तीन को अल्लाह के ख़लील ने मिस्र से वापसी के बाद अपना मुस्तक़िर (ठिकाना) बना लिया। जहाँ से दीने हक़ की तब्लीग़ व इशाअत का मुक़द्दस फरीज़ा अंजाम देते रहे। ज़िन्दगी के तक़रीबन 85 साल गुज़र चुके थे। दावते हक़ के मसाइ-ए-जमीला में उम्र का बेश्तर हिस्सा सर्फ़ करने के बाद अब हज़रत इब्राहीम को शदीद एहसास हुआ कि उनके बाद कारे रिसालत को अंजाम देने के लिए एक फरज़न्दे सालेह नागुज़ीर है जो मिल्लते इब्राहीमी की नश्र व इशाअत का फ़रीज़ा अंजाम दे।

अल्लाह के बरगुज़ीदा पैग़म्बर ने बारगाहे क़ाज़ीयुल-हाजात में बड़ी रिक़्क़त व दर्द के साथ दिल की तमन्ना का इज़्हार किया। क़ल्ब की गहराइयों से निकली हुई दुआ कुबूल हुई।

तरजमा : और कहा (इब्राहीम) ने अपने रब की तरफ जाता हूँ, वही मेरी रहनुमाई करेगा। ऐ परवरदिगार! मुझे एक बेटा अता कर दे जो सालेहीन (नेकों) में से हो। हमने उसे एक हलीम लड़के की बशारत दी।

तौरात में इस वाक़या को इस तरह बयान किया गया है :

"अब्राहम ने कहा ऐ खुदावन्द मुझे क्या देखेगा। मैं तो बेऔलाद जाता हूँ और मेरे घर का मुख़्तार अल-यग़रा है। फिर अब्राहम ने कहा तूने मुझे फरज़न्द न दिया। और देख! मेरा खानाज़ाद मेरा वारिस होगा। तब खुदावन्द का कलाम उस पर उतरा और उसने कहा कि यह तेरा वारिस नहीं होने का। बल्कि जो तेरी सल्ब (नुत्फ़ा) से पैदा हो वही तेरा वारिस होगा...और वह हाजरा के पास गया और वह हामिला हुई।" (तौरात पैदाइश बाब 5, आयत 404)

रब की बशारत पूरी हुई और हज़रत हाजरा (दुख़्तर शाहे मिस्र) के बतन से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए। उस वक़्त सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के उम्र शरीफ़ 86 साल थी मगर सारा रज़ि अल्लाहु अन्हा को तक़ज़ाए बशरी से रश्क हुआ। और उन्होंने हज़रत ख़लील से अर्ज़ किया। हाजरा और उसके बच्चे को किसी दूसरी जगह पर आबाद करें। खुद मशीयते ईज़्दी का तक़ाज़ा भी यही था।

तरजमा : हज़रत हाजरा अलैहस्सलाम के बतन से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो हज़रत सारा अलैहस्सलाम की ग़ैरते शिद्दत

अख़्तियार कर गई और आपने हज़रत ख़लील से मुतालबा किया कि वह उसके चेहरे को उनकी निगाहों से ओझल कर दें।

(अलहिदाया वन्निहाया जिल्द 1, स० 154)

शीर ख़्वार बच्चे, बूढ़े बाप और माँ, तीन अफ़राद पर मुश्तमिल एक मुख़्तसर क़ाफ़िला अर्ज़े फिलस्तीन से जुनूब के सहराई (जंगली) और कोहिस्तानी (पहाड़ी) रास्ता पर गामज़न है। सफर की मंज़िल दूर है, रास्ता पुर पेच, पुर खतर।-खुदा का बरगुज़ीदा रसूल तमानियत, सब्र व सुकून के साथ सुनसान रेगज़ारों, संगलाख वादियों से गुज़रते हुए सैंकड़ों मील की मसाफ़त तय करके ख़ुश्क सर बुलन्द पहाड़ों से घिरी हुई एक ख़ामोश ज़िन्दगी के आसार से खाली वादी में ठहर जाते हैं।

ज़िन्दगी की 86 वीं मंज़िल है, अब तक इब्तिला व आज़माइश के सैंकड़ो तूफ़ान सर से गुज़र चुके हैं। मगर इश्क़ के हर इम्तिहान में अल्लाह का ख़लील एक ग़ैर मुतज़लज़ल चट्टान की तरह अपनी जगह क़ाइम रहा। यह भी एक सख़्त इम्तिहान था जब हज़ारों उम्मीदों आरज़ुओं के बाद हासिल होने वाले समरे हयात को जो बुढ़ापे का सहारा और मिल्लते इब्राहीमी का मुबल्लिग़ बनने वाला था, माँ बाप के साथ ऐसी वादी-ए-ग़ैर ज़ी ज़रअ़ (बन्जर) में जिसके हौलनाक सुकूत और होशरुबा तपिश से पहाड़ों से जिगर फट जाएं।

मशीयते एज़दी का ताबेअ़ खलील दुनियावी अलाइक़ और मुहब्बत के रिश्तों को फरमाने खुदावन्दी की तामील में यक्लख़्त नज़र अंदाज़ कर देता है और ज़मीने काबा के क़रीब एक दरख़्त के नीचे शीर ख़्वार बच्चे और उसकी नाज़ुक अंदाम माँ को छोड़ कर फिलस्तीन की जानिब रुख़ करता है।

तरजमा : जब इब्राहीम ने इस्माईल और हाजरा को वादिए ग़ैर ज़ी ज़रअ़ (बंजर) में छोड़ा और उन से पीठ फेर कर फिलस्तीन का इरादा किया, तो हज़रत हाजरा उनकी तरफ बढ़ीं और उनके दामन से लिपट गईं और कहा ऐ इब्राहीम! आप कहाँ जा रहे हैं? और हमें यहाँ छोड़े जा रहे हैं? जबकि यहा इतने असबाबे मईशत (रोज़ी) नहीं जो हमारे लिए काफी हो सकें, इब्राहीम ने उनका जवाब न दिया, फिर हाजरा ने इसरार किया, मगर उन्होंने कोई जवाब न दिया तो हाजरा ने कहा क्या अल्लाह ने आपको इस बात का हुक्म दिया है? जवाब दिया हाँ! हाजरा बोलीं तब परवरदिगार हमें ज़ाए नहीं फरमाएगा।

मशीयत व रबूबियते इलाही पर कामिल वसूक़ व यक़ीन के बाद हज़रत हाजरा फरज़न्दे अर्जुमन्द के पास आ गईं। बाद के वाक़ेआत पर बुख़ारी शरीफ़ की एक तवील रिवायत से इस तरह रौशनी पड़ती है।

वादी-ए-ग़ैर ज़ी ज़रअ् और क्यामे इस्माईल व हाजरा : इब्राहीम अलैहिस्सलाम हाजरा और उसके शीर ख़्वार बच्चे इस्माईल को लेकर चले और जहाँ काबा है वहाँ एक बड़े दरख़्त के नीचे ज़मज़म के मौजूदा मक़ाम से बालाई हिस्सा पर उनको छोड़ गये, वह जगह वीरान और ग़ैर आबाद थी और पानी का भी नाम व निशान न था, इसलिए इब्राहीम ने एक मश्कीज़ा पानी और एक थैली खुजूर भी उनके पास छोड़ दीं और फिर मुँह फेर कर रवाना हो गये। हाजरा उनके पीछे-पीछे यह कहती चलीं ऐ इब्राहीम! तुम हमको ऐसी वादी में छोड़ कर चल दिए जहाँ न आदमी है न आदमज़ाद और न कोई मूनिस व ग़म्ख़्वार, हाजरा यह कहती जाती थीं मगर इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़ामोश चले जा रहे थे, आख़िर हाजरा ने पूछा क्या तेरे खुदा ने तुझे यह हुक्म दिया है? तो बिला शुबह वह हमें ज़ाए न करेगा। और फिर वापस लौट आएं। इब्राहीम जब एक टीला पर पहुँचे जहाँ से उनके अह्ल व अयाल निग़ाहों से ओझल हो गये। तो मौजूदा काबा की जानिब रुख़ करके यह दुआ माँगी :

तरजमा : ऐ हमारे परवरदिगार! मैंने एक ऐसी वादी में जो नाक़ाबिले काश्त (खेती) है अपनी बाज़ औलाद तेरे मोहतरम घर के पास लाकर बसाई है ताकि नमाज़ क़ाइम रखें। पस तू अपने फ़ज़्ल व करम से लोगों को उनकी तरफ माइल कर दे और उन्हें फलों का रिज्क़ अता फरमा ताकि शुक्रगुज़ार हों।

हज़रत हाजरा चन्द रोज़ तक खुजूरें खाती और पानी पीती रहीं और शीर ख़्वार बच्चे को दूध पिलाती रहीं। लेकिन वह वक़्त भी आ गया कि पानी और खुजूरें ख़त्म हो गईं भूक और प्यास के सबब दूध उतरना बन्द हो गया। तब सख़्त परेशान हुईं, जब बच्चे की हालत दिगर गूं (ख़राब) होने लगीं तो बच्चा की हालते ज़ार देखी न गई और वह अलग जा बैठीं फिर इस ख़्याल से कि कहीं कोई इंसान नज़र आ जाए, या पानी का सुराग़ लग जाए। सफा पर चढ़ीं मगर कुछ नज़र न आया, फिर दौड़ कर बच्चा के पास पहुँचीं, फिर मरवा पर चढ़ीं। जब वहाँ भी नज़र न आया तो तेज़ी के साथ वादी में बच्चा के पास गईं और इस तरह सात मरतबा किया। जब वह मरवा पर थीं तो उन्होंने एक आवाज़ सुनी, आवाज़ की जानिब ध्यान

दिया तो मालूम हुआ कि कोई पुकार रहा है, हाजरा ने कहा अगर तुम मदद कर सकते हो तो सामने आओ तुम्हारी आवाज़ सुनी गई। देखा तो ख़ुदा का फरिश्ता (जिब्रील इस्माईल के पास खड़ा है) फरिश्ता ने अपना पर उस जगह मारा (जहाँ आज बीरे ज़मज़म है) तो पानी उबलने लगा हाजरा ने बहता पानी देखा तो मिट्टी से बाढ़ बांधने लगीं। सरकार ने इरशाद फरमाया, अल्लाह उम्मे इस्माईल पर रहम फरमाए, अगर बाढ़ न बांधतीं तो ज़मज़म आज ज़बरदस्त चश्मा होता।

हाजरा ने पानी पिया, बच्चा को दूध पिलाया, फ़रिश्ता ने कहा ख़ौफ़ न कर ख़ुदा तुझ को और उस बच्चा को ज़ाए नहीं करेगा। यह मक़ामे बैतुल्लाह है इस बच्चा और इसके बाप इब्राहीम की क़िस्मत में उसकी तामीर मुक़द्दर हो चुकी है। इसलिए अल्लाह तआला इस खानदान को हलाक न करेगा।

(कुछ दिनों बाद) बनी जुरहुम का क़ाफ़िला क़रीब से गुज़रा। उसने पानी का चश्मा देखा तो उसके क़रीब सुकूनत गुज़ीं (बसने) होने की इजाज़त तलब की। हज़रत हाजरा ने फरमाया क़्याम कर सकते हो, लेकिन पानी में मिल्कियत के हक़्दार नहीं हो सकते। बनी जुरहुम ने शर्त मंज़ूर कर ली और वहीं इक़ामत गुज़ीं (बसना) हो गये। (बुख़ारी किताबुल- अंबिया)

इश्क़ व इख़्लास और ईसार व क़ुरबानी का आख़िरी इम्तिहान : वह ख़्वाब पैग़म्बरे बरहक़ का ख़्वाब जाद-ए-ज़ीस्त (ज़िन्दगी की राह) में क़दम-क़दम पर इब्तिला व आज़माइश से दो चार रहने वाले दाइ-ए-हक़ का ख़्वाब दहकते हुए अंगारों और लपकते हुए शोअ़लों में इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल के पैकर का ख़्वाब, यह ख़्वाब वहम व गुमान की पैदावार न था। एक सच्चा ख़्वाब जिसके ज़रिआ फरज़न्दे अर्जुमन्द, असाए पीरी, उमूर रुश्द व हिदायत के वारिस को राहे हक़ में क़ुरबान कर देने का ख़ुदाई फरमान था।

वह ख्वाब जिसकी अमली ताबीर से शजीअ़ व बतील (बहादुर) इंसानों के पित्ते पानी हो जाएं। ख़ुदा का ख़लील अपने रब के हुज़ूर लख़्ते जिगर की क़ुरबानी पेश करके ख़्वाब को हक़ीक़त का रूप देने के लिए आमादा।

तरजमा : फिर जब वह उसके साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे! मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं तुझे ज़बह करता हूँ पस तू देख तेरी क्या राय है?

यह आख़िरी इम्तिहान सिर्फ़ ज़ाते इब्राहीमी से मुतअल्लिक़ न था बल्कि बाप बेटे दोनों का मुश्तरेका इम्तिहान था। इसलिए हज़रत इब्राहीम ने अपने लख़्ते जिगर की राय दरयाफ़्त फरमाई। कम सिन इस्माईल जिसकी बशारत "गुलाम हलीम" के साथ दी गई थी। और वह इस अज़ीम बाप के बेटे थे जिन्होंने आलाम व मसाइब की हर मंज़िल पर सब्र व इस्तिक़ामत के रौशन मीनारे क़ाइम कर दिए थे। फरज़न्दे अर्जुमन्द ने इस सख़्त आज़माइश के लिए अपनी ज़ात को पेश करने में दरेग़ न किया और जवाब दिया :

तरजमा : कहा ऐ मेरे बाप! जिसका आपको हुक्म दिया गया है वह कर गुज़रिए इन्शाअल्लाह आप मुझे साबिर पाएंगे। (साफ़्फ़ात : अ० 3)

बेटे का जवाब सुन कर हुक्मे इलाही की तक्मील के लिए हज़रत इब्राहीम इस्माईल को लेकर वादि-ए-मिना पहुँचे। इस सख़्त आज़माइश के वक़्त न तो बाप की मुहब्बत ग़ालिब आई और न बेटे पर जाने अज़ीज़ की मुहब्बत ग़लबा पा सकी। बाप कुरबान करने के लिए और बेटा कुरबान होने के लिए हमातन तैयार।

तरजमा : तो जब दोनों ने हमारे हुक्म पर गर्दन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया। हमने निदा दी ऐ इब्राहीम! तूने ख़्वाब सच कर दिखाया, बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को बदला दिया करते हैं। बिला शुबह यह खुली हुई आजमाइश है और बदल दिया हमने उसको एक बड़े ज़ब्ह (मेंढे) के साथ और हमने आइंदा नस्लों में उसे बाक़ी रखा। इब्राहीम पर सलाम हो, हम इसी तरह नेकों को बदला देते हैं। (साफ़्फ़ात : अ० 3)

वाक़या ज़ब्हे अज़ीम से मुतअल्लिक़ रिवायात में मज़्कूर है कि हज़रत इब्राहीम ने वक़्ते ज़ब्ह अपनी आँखों पर दबीज़ पट्टी बाँध ली ताकि कहीं शफ़कते पिद्री (बाप की मुहब्बत) हाथों को छुरी चलाने से रोक न दे। चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी दानिस्त में हल्क़ूमे पिसर पर छुरी फेर चुके तो निदाए गैबी सुन कर पट्टी खोल दी। देखा तो इस्माईल खड़े हो कर मुस्कुरा रहे हैं और पीछे झाड़ी में एक दुंबा (या मेंढा) खड़ा है, हज़रत इब्राहीम ने उसे पकड़ा और अपने बेटे की जगह उसे ज़बह कर दिया।

अल्लामा इब्ने जरीर तबरी ने अपनी तफ़्सीर और तारीख़ दोनों में इस मक़ाम पर मुतअद्दिद रिवायात नक़्ल की हैं जिन में बाज़ तवील और बाज़ मुख़्तसर हैं। हज़रत इब्ने अब्बास की एक रिवायत में है :

तरजमा : कहाँ वह मेंढा जिसे हज़रत इब्राहीम ने ज़ब्ह किया, वही था

जिसे फरज़न्दे आदम (हाबील) ने कुरबानी के लिए पेश किया था। तो उसे शर्फे कुबूलियत से नवाज़ा गया।

एक बरगुज़ीदा नबी का फ़िदिया कबश कैसे हो सकता है? उलमा-ए-इस्लाम इस अम्र में मुख़्तलिफ़ हैं। जिसकी तफ़सील का मौक़ा नहीं। हक़ीक़त यह है कि जाने इस्माईल काफी अल्फ़ौर फिदिया तो कबशे जन्नत की कुरबानी था जिसे हज़रत इब्राहीम ने हुक्मे इलाही की तामील के लिए ज़ब्ह किया था, अल्लाह ने उसे एक बेनज़ीर कुरबानी की अदाइगी का वसीला बनाया। और इस सुन्नत को क़्यामत तक जारी रखने के लिए उम्मते मुस्लेमा ! हर साल इसी तारीख़ में लाज़मी शिआर की हैसियत से वाजिब क़रार दिया ताकि ईसार व कुरबानी ख़लील व ज़बीह की याद ताज़ा होती रहे।

तरजमा : हज़रत ज़ैद इब्ने अरक़म से रिवायत है वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया। ऐ अल्लाह के रसूल! यह कुरबानी क्या है? फरमाया तुम्हारे बाप इब्राहीम की सुन्नत है।

❖ ❖ ❖

बैतुल्लाह की तामीर

सफ़्ह-ए-हस्ती पर मरकज़े हिदायत बैतुल्लाह की तामीर का मुक़द्दस फ़रीज़ा हज़रत ख़लील व हज़रत ज़बीह को सौंपा गया। जिन्होंने इम्तिहान व इब्तिला की जाँ गुसल शदीद घड़ियों में साबित क़दम सब्र व इस्तिक़्लाल का मुज़ाहरा करके दुनिया के सामने रज़ाए इलाही के लिए ईसार व इख़्लास और तस्लीम व रज़ा की ज़र्री शहादत पेश कर दी थी। बाप बेटे मरकज़े तौहीद की तामीर व तासीस में मुन्हमिक हो गये।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रिवायत करते हैं कि सबसे पहले हज़रत आदम ने बैतुल्लाह की बुनियाद रखी और उसमें नमाज़ पढ़ी और तवाफ़ किया। फिर तूफ़ाने नूह आया। वह तूफ़ान क्या था, ग़ज़बे इलाही था। जहाँ यह तूफ़ान पहुँचा हज़रत आदम की औलाद ख़त्म हो गई। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम व इस्माईल को नबी बना कर भेजा। उन्होंने उसकी बुनियादों को बुलन्द किया। (तारीख़े हरमैन : स० 56)

मुहम्मद बिन इसहाक़ की रिवायत में है कि तामीरे काबा का हुक्म हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आरमीनिया में मिला था। वह मक्का तशरीफ़ लाए जहाँ हज़रत इस्माईल मौजूद थे, उनकी उम्र 20 साल हो चुकी थी, उनकी वालिदा हज़रत हाजरा रिहलत फरमा चुकी थीं। हज़रत इब्राहीम ने कहा ऐ इस्माईल! अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं उसका घर बनाऊं तो हज़रत इस्माईल ने पूछा किस मक़ाम पर? फरिश्ता ने मक़ामे काबा की जानिब इशारा किया। अज़्म रासिख़ और सई पैहम के पैकर बाप और बेटे ने बुनियादें खोदनी शुरू कर दीं। हज़रत इब्राहीम ने बनाए आदम पर बुनियाद खोदी और उस पर खान-ए-काबा तामीर किया गया। (तारीख़े हरमैन : स० 66)

कुरआने हकीम में आदम अलैहिस्सलाम की तामीरे काबा का ज़िक्र मौजूद नहीं। जबकि तामीरे इब्राहीमी का ज़िक्र पूरी वज़ाहत के साथ मौजूद है।

तरजमा : बेशक सबसे पहली इबादतगाह जो इंसानों के लिए तामीर हुई वह वही है जो मक्का में वाके है, उसको खैर व बरकत दी गई और

तमाम जहान वालों के लिए मरकज़े हिदायत बनाया गया। उसमें खुली निशानियाँ हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह है। और उसका हाल यह है कि जो उसमें दाख़िल हुआ, मामून हो गया। लोगों पर अल्लाह का हक़ यह है कि जो उस घर तक पहुँचने की इस्तिताअत रखता हो वह उसका हज करे और जो कोई इस हुक्म की पैरवी से इंकार करे तो उसे मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज़ है। (आले इमरान अ० 10)

दोनों बाप बेटे खान-ए-काबा की तामीर में इस तरह मुन्हमिक हुए कि हज़रत इस्माईल अपने कांधों पर पत्थर उठा कर लाते और हज़रत इब्राहीम दीवारें चुनते। जब दीवारें इतनी ऊंची हो गईं कि ज़मीन से तामीर नामुम्किन हो गई तो अल्लाह के ख़लील ने एक पत्थर पर खड़े हो कर दीवारें चुननी शुरू कीं। वह मुबारक पत्थर आज भी मौजूद है जिस पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दोनों क़दमों के निशानात सब्त हो गये थे। उस पत्थर की अज़्मत व रिफ़अत का अंदाज़ा इस हुक्मे ख़ुदावन्दी से लगाया जा सकता है : **वत्तख़ेज़ू मिन मक़ामे इब्राहीमा मुसल्ला।** (बक़रा) जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हजरे असवद के मक़ाम पर पहुँचे तो हज़रत इब्राहीम ने बेटे को हुक्म दिया कि ऐसा पत्थर तलाश करो जो लोगों के तवाफ़ का निशान बन जाए और जहाँ से तवाफ़े काबा का आग़ाज़ किया जाए। हज़रत इस्माईल ऐसे नुमायाँ पत्थर की तलाश करते रहे, मगर न मिला। जब नाकाम वापस आए तो हज़रत जिब्रील एक पत्थर ला चुके थे जो रुक्ने असवद पर नसब किया गया। तारीख़े हरमैन के मुसन्निफ़ ने लिखा है :

"जब अल्लाह तआला ने हज़रत नूह के ज़माना में ज़मीन को ग़र्क़ किया तो यह पत्थर जबले बू क़बीस के सिपुर्द किया गया और उसे हुक्म दिया कि मेरा ख़लील मेरे घर की तामीर करे तो उस पत्थर को बाहर निकाल दो। हज़रत इस्माईल वापस आए और हज़रत इब्राहीम के पास हजरे असवद देख कर पूछा अब्बा जान! यह कहाँ से मिला? जवाब दिया वह लाया है जिसने मुझे तेरे पत्थर पर भरोसा से बेनियाज़ कर दिया। उसे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम लाए हैं। हज़रत जिब्रील ने पत्थर उसकी जगह पर रखा तो हज़रत इब्राहीम ने तामीर के काम को मुकम्मल कर दिया। हजरे असवद उस वक़्त इतना सफेद था कि चमक रहा था। उसकी रौशनी मश्रिक़ से मग़्रिब और शुमाल से जुनूब तक पहुँची। उसके सियाह होने की यह वजह हुई कि दौरे जाहिलीयत और दौरे इस्लाम में कई दफ़ा

आग की लपेट में आया।

अगर हजरे असवद दौरे जाहिलीयत की नजासात से मुलव्विस न होता तो जब मुसीबतज़दा उसे छूता उसकी मुसीबत दूर हो जाती।"

(बहवाला तारीख़े हरमैन : 68 व तफ़्सीर इब्ने कसीर सूरः बक़रा : 189)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा पर छत नहीं डाली थी और न पत्थरों को गारे या चूने से जमाया था बल्कि सिर्फ़ पत्थर चुन दिए थे। जब हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमस्सलाम काबा की तामीर में मस्रूफ़ थे उनकी ज़ुबान पर यह दुआ थी :

तरजमा : और जब इब्राहीम खान-ए-काबा की बुनियाद चुन रहा था और इस्माईल भी उसके साथ शरीक था और ज़ुबान पर यह दुआ थी ऐ परवरदिगार! हमारा यह अमल तेरे हुज़ूर क़ुबूल हो, बिला शुबह तू ही दुआओं का सुनने वाला और जानने वाला है, ऐ परवरदिगार! हमें ऐसी तौफ़ीक़ दे कि हम मुस्लिम (तेरे हुज़ूर गर्दन झुकाने वाले) हो जाएं और हमारी नस्ल में से भी एक ऐसी उम्मत पैदा कर दे जो तेरे हुक्म की फरमां बरदार हो। खुदाया हमारी इबादत के तरीक़े बता दे और हमारी कोताहियों से दर गुज़र। बिला शुबह तू ही दर गुज़र करने वाला है। (सूरः बक़रा अ० 15)

इसी मुबारक व मस्ऊद घड़ी में अल्लाह के ख़लील ने मरकज़े तौहीद की तत्हीर और उम्मते मुस्लेमा के तज़्किय-ए-बातिन के लिए अपनी ज़ुर्रियत से एक बरगुज़ीदा रसूल की दुआ फरमाई :

तरजमा : ऐ परवरदिगार! तू उन में उन्हीं में से एक रसूल मब्ऊस फरमा, जो उन पर तेरी आयतें तिलावत करे और उन्हें किताब व हिक्मत की तालीम दे और उनका तज़्किया बातिन करे बेशक तू ही ग़लबा और हिक्मत वाला है। (सूरः बक़रा)

तामीरे काबा के बाद परवरदिगारे आलम का हुक्म हुआ।

तरजमा : और जब हमने इस (काबा) को इंसानों की गर्द आवरी का मरकज़ और अमन व हुर्मत का मक़ाम ठहराया और हुक्म दिया कि इब्राहीम के खड़े होने की जगह नमाज़ की जगह बनाई जाए और हमने इब्राहीम व इस्माईल को हुक्म दिया था कि हमारे नाम पर जो घर बनाया गया है, तवाफ़ करने वालों के लिए और ठहरने वालों और रुकूअ़ व सूजूद करने वालों के लिए पाक रखना। (सूरः बक़रा)

तरजमा : और हुक्म दिया कि लोगों में हज का एलान पुकार दे लोग

तेरे पास दुनिया की तमाम दूर दराज़ राहों से आया करेंगे, पा प्यादा और हर तरह की सवारियों पर जो (मशक़्क़त सफर से) थकी हुई होंगी, वह इसलिए आएंगे कि अपने फाइदा पाने की जगह में हाज़िर हो जाएं और हमने जो पाल्तू जानवर उनके लिए मुहैया कर दिए हैं उनकी कुरबानी करते हुए मुक़र्रह दिनों में अल्लाह का नाम लें। पस कुरबानी का गोश्त ख़ुद भी खाओ और भूखे फ़क़ीरों को भी खिलाओ। (सूरः हज)

हज़रत इब्राहीम ने बाबुल, मिस्र और फ़िलस्तीन के मुतमद्दिन ख़ित्तों पर ग़लग़ल-ए-हक़ बुलन्द करना चाहा मगर इन इलाक़ों की बदनसीबी कि उन्होंने अल्लाह के ख़लील की आवाज़े सदाक़त पर लब्बैक न कही। फिर हुक्मे ख़ुदावन्दी से हिजाज़ की इस सरज़मीन पर जिसे मुतमद्दिन दुनिया की हवा तक न लगी थी, जहाँ बज़ाहिर इंसानों की बूद व बाश के इम्कानात भी न थे, मरकज़े हिदायत की तामीर हुई। तारीख़े आलम गवाह है कि हज़रत इब्राहीम के अहद से लेकर आज तक यह मुक़द्दस घर अह्ले ईमान का क़िब्ला है और हर दौर में हज व तवाफ़ के मनासिक अंजाम दिए जाते हैं।

❖ ❖ ❖

आलमगीर तारीकी और बेअ़सत ख़त्मुरुसुल

शहरे मक्का से कुछ फासिला पर मुश्रेकीन का एक सालाना मेला जो बज़ाहिर एक मुश्रिकाना मज़्हबी रस्म की अंजाम देही का दिन। मगर फिल-हक़ीक़त शिर्क व कुफ़्र के साथ ऐश व नशात के ख़ुराफाती इज़्हारे मुसर्रत का मौक़ा था। लोग नश-ए-मय में मतवाले दादे ऐश दे रहे थे और इसी राग व रंग के माहौल में लोग एक बुत के रू-ब-रू अक़ीदत व इरादत की नज़्रें पेश कर रहे थे। कुछ अफ़राद बेहिस बुत के रू-ब-रू सर झुकाए आँखें बन्द किए मुअद्दब बैठे हुए थे, बाज़ अश्ख़ास फ़र्ते अक़ीदत से सर शार तवाफ़ कर रहे थे, बुत के नाम पर कुरबानियाँ पेश की जा रही थीं, हुसूले मक़ासिद के लिए नज़रें मानी जा रही थीं, औसान परस्ती (बुत-परस्ती) की सदहा साल पुरानी रिवायात बड़े कर्रो फर और जोश व इरादत के साथ अंजाम दी जा रही थी, कोराना तक़्लीद और आबा परस्ती की मल्ऊन रिवायत ने लोगों से नूरे बसीरत छीन लिया था, हक़ व बातिल की तमीज़ नामुम्किन हो गई थी, कुफ़्र व शिर्क और ऐश व तर्ब से मामूर उस मेले में ऐसे चार ज़ी शुऊर, रौशन दिमाग़, बेदार मग़्ज़ अफ़राद भी शरीक थे, जो बुतों की परस्तिश को दीने हनीफ़ के अलर्रग़्म लग़्व और बेमानी अमल तसव्वुर करते थे, उनकी मुज़्तरिब रूहें किसी चश्म-ए-हिदायत की जुस्तजू में थीं, जिससे उनकी रूहानी प्यास बुझ सके और वह दीने हनीफ़ की सालेह बुनियादों को पा लें। यह कुरैश के जो याए हक़ अफ़राद वरक़ा बिन नौफ़ल, अब्दुल्लाह बिन जहश, उस्मान बिन हवैरिस, ज़ैद बिन अमर थे। यह चारों हंगामों से दूर एक गोशा में बैठे महव गुफ़्तगू थे। उन्होंने कहा :

"सच्चाई का वादा करो और अपने आपस के मुआमले को एक दूसरे से छुपाओ। सबने इक़रार किया और फिर कहा, इल्म व यक़ीन की दौलत हासिल करो। खुदा की क़सम तुम्हारी क़ौम किसी सही रास्ता पर गामज़न

नहीं। वह अपने बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन को फरामोश कर चुके हैं। इस पत्थर (बुत) की हक़ीक़त ही क्या है? जिस पर नजासत डाली जाती है। न वह सुनता है, न देखता है न नफ़अ़ व ज़रर का अख़्तियार रखता है। लोगो! अपने लिए कोई दीन तलाश करो। ख़ुदा की क़सम तुम सही तरीक़ा पर नहीं। मुल्कों में तरीक़-ए-हनीफ़ा (दीने इब्राहीमी) की तलाश में फैल जाओ।" (इब्ने हिशाम : जिल्द 1, स० 247)

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद अरस-ए-दराज़ तक मिल्लते इब्राहीमी की पैरोकार रही, मगर इम्तिदादे (मुद्दत) ज़माना और दीगर अक़्वाम व मिलल (मज़हब) के इख़्तिलात (मेल) ने दीने हक़ से बरगश्ता कर दिया। कहा जाता है कि अमर बिन लह्य नामी सरदार क़ुरैश अपने एक तिजारती सफर में शाम के इलाक़ा बुलक़ा में मआब नामी एक शहर में पहुँचा जो अमालीक़ की बस्ती थी। जहाँ बुतों की परस्तिश का आम रिवाज था। अमर ने दरयाफ़्त किया, यह बुत क्या हैं जिनकी तुम परस्तिश करते हो? उन्होंने जवाब दिया। हम इन बुतों की परस्तिश इसलिए करते हैं कि जब हम उन से बारिश तलब करते हैं तो यह हमें बारिश से मुस्तफ़ीज़ (फ़ायदा) करते हैं और जब हम मदद चाहते हैं तो यह हमारी मदद करते हैं। अमर बिन लह्य ने कहा, इन बुतों में से कोई बुत तुम मुझे भी दे दो ताकि मैं उसे अरब ले जाऊं और वहाँ के लोग भी उसकी पूजा करें। उन्होंने अमर को एक हुबल नामी बुत दिया। अमर मक्का आया और हुबुल को एक मक़ाम पर नसब करके लोगों को उसकी परस्तिश की दावत दी, शैतान ने मुश्रिकाना अफ़्आल को इतनी ज़ीनत दी कि पूरा अरब औसान (बुत) परस्ती की बदतरीन लानत में गिरफ़्तार हो गया। मरकज़े तौहीद काबा को भी बुतों से आलूदा कर दिया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने एक ख़्वाब का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में फरमाया :

तरजमा : अमर बिन लह्य को देखा कि वह आस्तीन आग में घसीटे जा रहा है। मैंने उसे उन लोगों के मुतअल्लिक़ पूछा जो मेरे और उसके दर्मियान गुज़रे हैं तो उसने कहा वह हलाक हो गये। बेशक वह पहला शख़्स था जिसने दीने इस्माईल को बदल दिया और मूर्तियाँ नसब कीं फिर बुहैरा साइबा, वसीला और हामी के तरीक़े राइज किए।

हज़रत इस्माईल के बाद सदियों तक ख़ुदा के पाकीज़ा घर की अज़्मत, बाद-ए-तौहीद के मतवालों का ईमान बनी रही। दुनियाए अरब मरकज़े

हिदायत के गर्द जमा होती और अपनी रूहानी आसूदगी हासिल करती रही। सदियों के इम्तिदाद ने उन्हें दीने इब्राहीमी से दूर कर दिया और फिर वह ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की इबादत व बन्दगी से मुंहरिफ़ हो कर मज़ाहिर परस्ती की तरफ माइल हुए। अमर बिन लह्य की तहरीके बुतपरस्ती ने पूरे अरब को अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। हत्ता कि बैतुल्लाह जो अह्ले तौहीद का मरकज़ और ख़ुदाए वाहिद के परस्तारों का क़िब्ला था, माबूदाने बातिल के मजुस्समों से आलूदा कर दिया गया। बुतपरस्ती के साथ मज़्हबी, सियासी, तमद्दुनी, मुआशरती सतह पर फ़िक्र व अमल का ऐसा शदीद बुहरान पैदा हो गया कि ज़िन्दगी का कोई शोअ़्बा उस ज़द से महफ़ूज़ न रह सका।

तारीख़े आलम के पर्दे पर आज से चौदह सौ बरस पहले का मंज़र देखा जाए तो मालूम होगा कि वह कितना पुर आशोब, फित्ना अंगेज़ ज़माना था। इंसानी इक़्दार मिट चुकी थीं, इंसानियत का एहतराम रुख़्सत हो चुका था। शराफ़त व नजाबत का ख़ात्मा हो चुका था। वह तारीक दौर जब लाखों इंसान ग़ुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ दिए गए थे और उन्हें फितरी हुक़ूक़ से भी महरूम कर दिया गया था, वह रूह फरसा दौर जब सिन्फ़े नाज़ुक को फ़र्ज़ी शराफ़त का बदनुमा दाग़ तसव्वुर किया जाता था और बच्चियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देने वाले मासियत शिआर दरिन्दे, समाज के मुअज़्ज़ज़ फ़र्द तसव्वुर किए जाते थे।

वह कितना भयानक, तारीक और कितना इंसानियत सोज़ दौर था जब ज़लालत व गुम्राही और ज़ुल्म व जब्र के तेज़ व तुन्द तूफ़ान ने तमाम अख़्लाक़ी, रूहानी क़दरों को पामाल कर दिया था, मसीही तालीमात दम तोड़ चुकी थीं। वह कैसा पुर आशोब दौर था जब आलमगीर तारीकी छाई हुई थी, जिस में ज़हन व दिमाग़, फ़िक्र व शुऊर, हक़ व सदाक़त की हल्की सी लकीर भी नज़र न आती थी। तस्ख़ीरे आलम की क़ुव्वत रखने वाला इंसान अपने हाथों से तराशे हुए बुतों की परस्तिश और चन्द मौहूम रस्म व रिवाज के तिलिस्म में उलझ कर रह गया था। इंसान कुफ़्र व शिर्क की तारीक वादियों में ठोकरें खा रहा था और सितम यह कि संग राह को उसने मंज़िले मक़्सूद समझ लिया था।

जब माहौल की तारीकी हद से बढ़ गई तो वह सुबह दरख़्शाँ नमूदार हुई जिसकी आग़ोश से आफ़ताबे रिसालत व नुबुव्वत तुलूअ़् हुआ।

सर ज़मीने मक्का के एक मुअज़्ज़ज़ खानदाने कुरैश में खातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ुहूर हुआ। यह दुर्रे यतीम शिकमे मादर ही में बाप के साया से महरूम हो गया। शीर ख्वार्गी और नश्व व नुमा के दिन दाई हलीमा के आग़ोश में रह कर दीहात की हयात बख्श खुली फ़िज़ा में गुज़ारे। छः साल की उम्र में माँ का साया भी सर से उठ गया। दादा ने परवरिश व परदाख्त का ज़िम्मा लिया तो कज़ाए इलाही ने उन्हें भी आग़ोशे रहमत में पहुँचा दिया। एक चचा का सहारा था और सरज़मीने मक्का कुफ्र व शिर्क, बद अमली व नजासत से आलूदा माहौल। मगर जिस दुर्रे यतीम को मशीयते एज़्दी अपनी आग़ोशे रहमत में परवान चढ़ाए भला उसे माहौल की आलूदगी किस तरह छू सकती है।

ख़िल्अते रिसालत और दावते हक़ व सदाक़त : 40 साल की उम्र हुई तो ग़ारे हिरा में पहली वह्य **इक़्रा बिस्मे रब्बिका।** से सरफराज़ हुए। और एक नुस्ख़-ए-कीमिया ले कर बीमार कौम की तरफ आए। इब्तिदा में दावते हक़ खुफ़िया तरीके से दी जाती रही मगर कुछ अरसा बाद ज़ाते रिसालत से कुर्ब रखने वालों में तब्लीगे हक़ का हुक्म हुआ :

तरजमा : ऐ पैग़म्बर! अपने करीबी रिश्तेदारों को गुम्राही से डराइए और जो मुसलमान आपके पैरू हैं उनके लिए अपने बाज़ुओं को पस्त कीजिए यानी नर्मी और तवाज़ु से पेश आइए। अगर वह आपकी नाफ़रमानी करें तो उन से कह दीजिए मैं तुम्हारे आमाले बद से बरी हूँ, और ग़ालिब रहम करने वाले की ज़ात पर भरोसा कीजिए जो आपको उस वक्त भी देखता है जब आप उसकी बारगाह में खड़े हुआ और उस वक्त भी जब आप सज्दा करने वालों में मिल कर उसके सामने सज्दा रेज़ होते हो। बिला शुबह वह सुनने वाला, जानने वाला है।

फ़ारान की चोटी, मक्का के शरीफ व मुअज़्ज़ज़ खानदान का पाकीज़ा ख़स्लत, सादिक़ व अमीन फर्द मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह गर्द व नवाह की घाटियों में बसने वाले कबील-ए-कुरैश को आवाज़ दे रहा है : **या सबाहन। या सबाहन।** रिवायत के मुताबिक़ लोग इकट्ठा हो गये और बनू हाशिम के दुर्रे यतीम की जानिब मुतवज्जेह हुए, जिसे खल्अते नुबुव्वत व रिसालत से सरफ़राज़ किया जा चुका है। एलानिया दावते हक़ का हुक्मे इलाही नाज़िल हुआ। पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुव्वते इस्तिक्लाल को बरक़रार रखते हुए मुश्रिकीने मक्का से खिताब फरमाया :

"ऐ लोगो! अगर मैं तुम में से यह कहूँ कि उस पहाड की पुश्त पर एक लश्करे जर्रार जमा है और तुम पर हमले के लिए आमादा है तो क्या तुम मुझ को सादिक़ समझोगे? लोगों ने कहा हम ने तुमको सादिक़ व अमीन पाया है। जो कुछ कहोगे, हक और सदाकत पर मबनी होगा। तब आपने फरमाया, लोगो! मैं तुम को खुदाए वाहिद की तरफ बुलाता हूँ और अस्नाम (बुत) परस्ती की नजासत से बचाता हूँ। तुम उस दिन से डरो जब खुदा के सामने हाज़िर हो कर अपने आमाल व किरदार का हिसाब देना होगा।"

(तारीख इब्ने कसीर : जिल्द 1, स० 38)

सदियों से बुत परस्ती और आबा परस्ती में गिरफ्तार कौम ने जब अपने खानदान के एक पाकीजा खस्लत, बुलन्द किरदार फर्द से शिर्क व बुत परस्ती के खिलाफ तौहीद व हक परस्ती की बुलन्द आवाज सुनी तो वह हैरान व शश्दर रह गये। उनके दिलों की हरकत तेज़ हो गई। मगर सादिक़ व अमीन हादी के ख़िलाफ़ कुछ न कह सके। हाँ! आपके हकीकी चचा अबू लहब ने ग़ैज़ व ग़ज़ब में डूब कर कहा :

तरजमा : तू हमेशा हलाकत व रुसवाई का मुँह देखे! क्या तूने हमें इसी लिए बुलाया था?

कबील-ए-कुरैश के वह अफ़राद जो कल तक मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की शराफत, बुलन्द अख़्लाक, सदाक़त व अमानत पर नाज़ करते थे, पैग़ामे हक सुनते ही उनकी निगाहें बदल गईं और वह अपने कबीला के जिस बा-अज़्मत नौजवान के तकद्दुस और सच्चाई के काइल थे उसके पैग़ामे सदाक़त के कुबूल करने से बाज़ रहे। सिर्फ चन्द अश्खास ने पैग़ामे हक व सदाकत पर लब्बैक कही और पूरा कबीला बरगश्ता व मुन्हरिफ हो गया। यह इम्तिहान की पहली मंजिल थी। लेकिन अल्लाह का आख़िरी नबी दीने कामिल लेकर आया था। हुक्म होता है पैग़ामे हक़ व सदाकत का दाइरा वसीअ् कर दो और मक्का और अतराफे मक्का के बाशिन्दों को रुश्द व हिदायत का पैग़ाम सुनाओ ताकि हक व सदाकत की मुतलाशी रूहें चश्म-ए-हिदायत से सैराब हो सकीं।

तरजमा : और यह किताब है जिसे हमने नाज़िल किया बरकत वाली, तस्दीक करने वाली है, साबिका नाज़िल शुदा किताबों की, और इसलिए नाज़िल की ताकि तुम उम्मुल-कुरा के बाशिन्दों को और उनको जो चारों तरफ़ हैं डराओ।

रसूले हाशमी पैग़ामे हक़ मक्का के आम बाशिन्दों और अत्राफ़ व अक्नाफ़े मक्का में बसने वाले क़बाइल तक पहुँचाते हैं। मगर सदियों का बिगड़ा हुआ समाज कुफ़्र व शिर्क की मौरूसी ख़ूर रखने वाले ख़ुदा के सरमदी पैग़ाम पर लब्बैक क्या कहते हैं? उसके अलरग़्म महाज़ आराइयों करने लगे और दावते हक़ की तहरीक को रोकने की सई मुसलसल में मसरूफ़ हो गये। रसूल और मुत्तबईने रसूल का मज़ाक़ उड़ाया गया, उन्हें ईजाएँ दी गईं, डराया धमकाया गया, अल्लाह के बरगुज़ीदा रसूल को साहिर (जादूगर) व मज्नून कहा गया। मगर दाइ-ए-हक़ इशाअते दीन की राह में साबित क़दम रहा और शिर्क व बुतपरस्ती की मज़्मूम रिवायात के ख़िलाफ़ तौहीद का बरमला एलान करता रहा। कुफ़्फ़ारे मक्का की इंसिदादी कोशिशों के बावजूद आहिस्ता-आहिस्ता अहले हक़ के दाइरे में उस्अत पैदा होती गई। कुरैश या अमाइदीने मक्का हक़ व सदाक़त की जिस आवाज़ को नहीफ़ (कमज़ोर) और रुश्द व हिदायत की जिस रौशनी को कमज़ोर समझ रहे थे, उनका अंदाज़ा था कि यह आवाज़ कुफ़्र व शिर्क के मामूली शोर में दब जाएगी और ख़ौफ़ व तमअ् के गर्द व गुबार में यह रौशनी रुपोश हो जाएगी। मगर मुख़ालिफ़तों के बावजूद आवाज़ बुलन्द होती रही, रौशनी तेज़ होती गई तो उन्हें ख़ौफ़ लाहिक़ हुआ कि दीने बरक़ की यह तहरीक अगर ज़ोर पकड़ गई तो फिर हमारे सदियों पुराने ला-यानी दीन का तिलिस्म टूट जाएगा। चुनांचे उनकी मुख़ालिफ़त की वाहिद वजह यह थी कि वह जाहिलीयत के फ़ासिद निज़ाम का तहफ़्फ़ुज़ करना चाहते थे। क्योंकि उस जाहिली निज़ाम की मदद से कुरैश ने दुनियाए अरब में सालहा साल से अपने लिए एक बुलन्द मक़ामे क़्यादत हासिल कर लिया था। तमाम सियासी व मज़्हबी मनासिब उनके हाथ में थे, इक़्तिसादी व तमद्दुनी लिहाज़ से उनकी सियादत का सिक्का जारी था और उनकी यह क़्यादत व सरबराही उसी समाजी व मज़्हबी सांचे में उस्तवार (मज़्बूत) रह सकती थी, जो जाहिलाना निज़ामे हयात और बातिल परस्त धर्म ने तैयार कर रखा था।

क़ौमे इब्राहीम की तरह अपनी जाहिलीयत और ला यानी तवह्हुम परस्ती व शिर्क के तारे अंकबूत की हिफ़ाज़त व सियानत पर ही कुरैशी सरबराही व सियादत की बक़ा मुंहसिर थी।

कुरैश के सरबरआवुरदा अफ़राद अस्वद बिन मुत्तलिब, अबू जहल इब्ने हिशाम, वलीद बिन मुग़ीरा, आस इब्ने वाइल, सईद बिन सहम वग़ैरह जनाब

अबू तालिब की खिदमत में आए और पुर ग़ज़ब, तैश आमेज़ लहजा में अबू तालिब से मुखातब हुए :

"ऐ अबू तालिब! या तो तुम अपने भतीजे यानी हुज़ूर को मना कर दो कि वह हमारे बुतों को बुरा न कहे और हमारे बाप दादा को जाहिल और गुम्राह न बताए वरना हमको इजाज़त दो कि हम खुद उस से समझ लें।"
(इब्ने हिशाम : स० 86)

जब कुरैश के वफ़्द ने कई बार इसी किस्म की बातें अबू तालिब से कहीं तो अबू तालिब ने हुज़ूर के पास पैग़ाम भेजा :

"ऐ मेरे भतीजे! तुम्हारी कौम ने मेरे पास आ कर तुम्हारी शिकायतों का दफ़्तर खोला। पस मैं मुनासिब समझता हूँ कि तुम अपनी और मेरी जान के हलाक करने की बात न करो और ऐसे काम की मुझको तक्लीफ न दो जिसकी मुझ में ताकत नहीं है।" (इब्ने हिशाम : स० 86)

अबू तालिब के इस पैग़ाम का साफ मतलब यह था कि ऐ मुहम्मद! तुम अपनी दावते हक से बाज़ आ जाओ वरना मैं तुम्हारी पुश्त पनाही करने से माज़ूर हूँ। चचा के इराद-ए-बरात से दाइ-ए-हक के कदमों में ज़र्रह बराबर लग्ज़िश न आई। आपने अबू तालिब से कहा :

"ऐ मेरे चचा! अगर यह लोग मेरे दाएं तरफ सूरज और बाएं तरफ चाँद भी ला कर रख दें तब भी मैं इस काम को नहीं छोड़ सकता। यहाँ तक कि खुदा उसको पूरा कर दे या खुद मैं उस में हलाक हो जाऊं। फिर हुज़ूर के आँसू निकल आए और रोने लगे। अबू तालिब ने कहा देखो! जो तुम्हारा जी चाहे करो मैं तुमको हरगिज़ न छोडूंगा और सब को समझ लूंगा।" (इब्ने हिशाम : स० 86)

अबू तालिब के आमाद-ए-हिमायत व नुसरत होने के बाद बनू हाशिम ने मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इआनत (मदद) का फैसला कर लिया। अमाइदीने कुरैश ने बनू हाशिम और खुसूसन अबू तालिब के इस तरज़े अमल से अपनी सिफारती कोशिशों की नाकामी महसूस कर ली और उन्होंने पीरवाने इस्लाम पर ज़ुल्म व तशद्दुद का वतीरा अख़्तियार कर लिया। मुसलमानों को सख़्त ईज़ाएँ दी गईं, आज़माइश की भट्टियों में तपाया गया कि वह राहे हक से बरगश्ता हो जाएँ। मगर कलिम-ए-हक से लज़्ज़त आशना होने वालों को जब्र व ज़ुल्म की तल्ख़ी कुफ्र व शिर्क की तरफ न लौटा सकी और वह हर ज़ुल्म व सितम सह कर भी मिन्हाजे हक व सदाकत पर गामज़न रहे।

महसूरी शुअ़बे अबी तालिब : 7 ई० नब्वी है और कुरैश के नुमाइन्दा अफ़राद जमा हैं, उनके चेहरे गुस्सा व इंतिक़ाम के मिले जुले जज़्बात ज़ाहिर कर रहे हैं, इज़्तिराब व परेशानी इस्लाम के ख़िलाफ़ मुहिम में नाकामी का पता दे रही है। दावते हक़ को दबाने की हर कोशिश व तदबीर मन्फ़ी रद्दे अमल ज़ाहिर कर रही है, इस्लाम का दाइरा कामिल इंसिदादी जद्दो जहद के बावजूद वसीअ़ होता चला जा रहा है, मुसलमानों पर मसाइब व आलाम की यूरिश (हमला) उन्हें राहे हक़ से मुन्हरिफ़ नहीं करती। अबू तालिब की हिमायत ने बनी हाशिम को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ में नर्म दिल बना दिया है, मुहाजिरीने हब्शा के ख़िलाफ़ कुरैश की सिफारत नाकाम हो चुकी है, नजाशी बादशाह हब्श इस्लाम और मुसलमानों का मुआविन (मददगार) बन चुका है। कुरैश और अमाइदीने मक्का के लिए यह हालात किसी मुअस्सिर तरीक़-ए-कार की दावत दे रहे थे कि जिस से पैग़म्बरे इस्लाम और उनके हामियों को मज्बूर कर दिया जाए कि वह इस्लाम की रोज़ अफ़्ज़ूं तहरीक को रोक दें।

ग़ौर व फ़िक्र के बाद एक मुआहदा मुरत्तब किया गया जिसे मन्सूर इब्ने इकरमा ने चमड़े पर तहरीर किया :

"बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब से मुनाकहत न की जाए, न उन से ख़रीद व फरोख़्त की जाए।" (इब्ने हिशाम : स० 119)

तय किया गया कि यह मुआहदा उस वक़्त तक क़ाइम रहेगा जब तक बनी हाशिम मुहम्मद को क़त्ल के लिए हमारे हवाला न कर देंगे। अह्द नामा काबा के अन्दर आवेज़ाँ कर दिया गया। पूरे बनी हाशिम शहर की तमद्दुनी ज़िन्दगी से अलाहिदा हो कर शुअ़बे अबी तालिब में महसूरी व तंग हाली की ज़िन्दगी पर आमादा हो गये। पूरे क़बीला के लिए आलाम व मसाइब का सब्र आज़मा दौर शुरू हुआ। फ़िक्र व फ़ाक़ा की शदीद तक्लीफ़ें बनी हाशिम ने इस्तिक़्लाल और साबित क़दमी के साथ झेलीं। दरख़्तों के पत्तों पर गुज़र औक़ात किए। हज़रत सअ़द इब्ने वक़्क़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु का बयान है :

"एक दफ़ा रात को सूखा हुआ चमड़ा हाथ आ गया, उसी को पानी से धोया, आग पर भूना और पानी में मिला कर खाया।"

बच्चे भूख से रोते तो घाटी से बाहर उनकी दर्दनाक आवाज़ आती मगर संग दिल क़ुरैश उसे सुन कर मुब्तलाए कर्ब होने के बजाए ख़ुश होते।

अमाइदीने मक्का का ख़्याल था कि हमारी यह इस्कीम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह और मुसलमानों को घुटने टेकने और अपनी दावत से बाज़ रखने में मुअस्सिर साबित होगी। मगर अपनी तदबीर के मन्फ़ी नताइज ने उन्हें मज़ीद तश्वीश में मुब्तला कर दिया। चुनांचे क़बील-ए-क़ुरैश के अशराफ़ आपके पास आए और कहा, हम तुम को इस क़द्र माल देते हैं जिस से तुम तमाम मक्का में सब से बड़े दौलतमन्द हो जाओगे, तुम जिस औरत से चाहो तुम्हारी शादी कर दी जाएगी और मक्का की रियासत तुम्हारे हवाले कर दी जाएगी। मगर इस शर्त पर कि तुम हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दो। अगर तुम उसके लिए आमादा न हो तो हम तुम्हारे सामने ऐसी सूरत पेश करते हैं जिस में हमारा तुम्हारा दोनों का नफ़अ़ है। आपने दरयाफ़्त फरमाया वह क्या है? उन्होंने कहा एक साल तुम हमारे देवता लात व उज़्ज़ा की परस्तिश करो और एक साल हम तुम्हारे ख़ुदा की परस्तिश करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया मैं अपने रब के हुक्म का मुंतज़िर हूँ फिर जवाब दूँगा। उस मौक़ा पर यह सूरः लौहे महफ़ूज़ से नाज़िल हुई :

तरजमा : ऐ नबी! आप फरमा दीजिए ऐ काफिरो! मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम करते हो और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ और न मैं उसकी इबादत करने वाला हूँ जिनकी इबादत तुमने की है और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है।

तरजमा : फरमा दो! ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे हुक्म देते हो कि मैं ग़ैरुल्लाह-की इबादत करूँ?

बातिल परस्त कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ने दावते हक़ व सदाक़त को मताअ़ तिजारत समझ लिया था। इब्तिला व आज़माइश की सख़्त घड़ियों में दाई-ए-हक़ का सौदा करने आए थे। बुतों की तिजारत करने वालों ने पैग़ामे हक़ का सौदा करना चाहा मगर इस कोशिश की नाकामी ने उनके जज़्बात को सर्द कर दिया।

मशीयते ईज़दी से मुश्रेकीने मक्का के दर्मियान अह्दनामा के इन्क़िताअ़ के बाब में शदीद इख़्तिलाफ़ रूनुमा हुआ, और मोतइम बिन अदी ने मुआहदा को चाक करने का इरादा किया। तो देखा कि दीमक पूरी तहरीर

चाट गई और फ़क़त तहरीर की इब्तिदा **अल्लाहुम्मा बेइस्मेका** बाकी है। (तारीखे़ तबरी : जिल्द 2, स० 107)

इस तरह तक़रीबन तीन साल के सख़्त आज़माइशी दौर का खात्मा हो गया।

तब्लीग़े हक़ की मुहिम आज़ादाना शुरू हुई। मक्का और अतराफ़ के अलावा दूर व दराज़ इलाक़ों तक आफ़ताबे रिसालत की शुआएँ पहुँचने लगीं। दूसरी जानिब कुफ़्फ़ारे मक्का की इंसिदादी कोशिशों में इज़ाफ़ा हुआ। मुत्तबईने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जुल्म व तशद्दुद की सख़्त आज़माइशों में डाला गया। फ़रज़न्दाने तौहीद के लिए अरस-ए-हयात तंग कर दिया गया।

ताइफ़ : दो मुसाफ़िर मक्का से ताइफ़ की सर सब्ज़ व शादाब ज़मीन की जानिब संगलाख़, पुर पेच मराहिल को पा प्यादा तय करते हुए आगे बढ़ रहे हैं, यह मुसाफ़िर खुदा के बरगुज़ीदा रसूल इंसाने कामिल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ज़ैद बिन हारसा रज़ि अल्लाहु अन्हु हैं। ताइफ़ का यह सफर दावते हक़ के दाइर-ए-तब्लीग़ की उस्अत और वहाँ के मुअज़्ज़ज़ साहिबे सरवत उमरा को दाइर-ए-इस्लाम में दाख़िल करके तहरीके इस्लामी को मुस्तहकम बनाने के लिए किया गया।

पैग़म्बरे आज़म बनू सक़ीफ़ के तीन ज़ी असर सरदारों के पास तशरीफ़ ले गये। यह तीनों अमीर उमर बिन अमीर बिन औस सक़फ़ी के बेटे अब्द बिल्लैल, मस्ऊद, हबीब थे। जब हादी-ए-बरहक़ ने उन्हें तौहीद व रिसालत की दावत दी तो दुनियावी इज़्ज़त व अमारत के गुरूर ने उन्हें क़ुबूले हक़ व सदाक़त से बाज़ रखा। उन में से एक ने कहा, अगर अल्लाह ने आपको रसूल बना कर भेजा है तो मैं काबा का ग़िलाफ़ टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। दूसरे ने कहा, रसूल बना कर भेजने के लिए क्या अल्लाह तुम्हारे सिवा कोई और न मिला? तीसरे ने कहा, खुदा की क़सम मैं तुम से कभी गुफ़्तगू न करूंगा। अगर तू फ़िल-हक़ीक़त अल्लाह का रसूल है जैसा कि तू कहता है तो तू इस लिहाज़ से बड़ा ख़तरनाक शख़्स है। क्योंकि तुझ से बात करने और तेरा जवाब देने में ख़तरा है। अगर तू अल्लाह पर इफ़्तरा कर रहा है तो भी मुझे लाज़िम है कि तुझ से बात न करूं। (इब्ने हिशाम : जिल्द 1, स० 268)

दाइ-ए-बरहक़ इन तीनों के क़ुबूले हक़ से मायूस हुए तो उन से कहा। **इज़ फ़अल्तुम फक्तुमू अन्नी।** तुमने जो कुछ किया। क्या मगर जो कुछ मुझ से सुना है उसे राज़ में रखो। लेकिन इन तीनों शरपसन्द अमीरों ने

ताइफ़ के औबाश लोगों को अल्लाह के बरगुज़ीदा रसूल के खिलाफ़ मुश्तइल (भड़का) कर दिया। चुनांचे जब आँहुज़ूर ने बाज़ार ताइफ़ में अवाम के रू-ब-रू रुश्द व हिदायत की तब्लीग़ का आग़ाज़ किया तो हर चार तरफ से तअ्न व तश्नीअ् और पत्थरों की बारिश होने लगी। संग व ख़श्त की ज़र्ब से जिस्मे मुबारक लहू लहान हो गया। तूफ़ाने बदतमीज़ी के ग़ोग़ा में हक़ व सदाक़त की आवाज़ दब कर रह गई। अह्ले ताइफ़ के औबाशों ने मीलों तक जिस्मे अतहर पर संग बारी का अमल जारी रखा। सरकार ज़ख़्मों से निढाल, ख़ून में तर बतर, फ़रज़न्दाने रबीआ, उत्बा व शैबा के बाग़ में इस्तेराहत के लिए ठहर गये। फिर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबाने मुबारक से यह दुआइया कलिमात निकले :

तरजमा : इलाही अपनी कमज़ोरी व बे सरोसामानी और लोगों की निगाहों में अपनी बेक़द्री की फरियाद तुझी से करता हूँ। ऐ रहम करने वालों में सबसे बढ़ कर रहम करने वाले! तू ही दरमांदा, आजिज़ों का मालिक है और मेरा मालिक भी तू ही है मुझ को किसके सिपुर्द किया जाता है? बेगाना तुर्श-रू के या उस दुश्मन के जिसे मेरे मुआमले पर काबू हो? अगर तू मुझ से नाराज़ नहीं तो मुझे किसी मुसीबत पर कुछ परवा नहीं क्योंकि तेरी हिफ़ाज़त व आफ़ियत मेरे लिए बहुत वसीअ् है। मैं तेरी ज़ात के नूर की पनाह में आता हूँ जिससे तमाम अंधेरे उजाले बन जाते हैं, दुनिया व आख़िरत के तमाम काम संवर जाते हैं। तेरी नाराज़ी या गुस्सा मुझ पर न हो, मुझे तेरी ही रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी दरकार है, नेकी करने और बदी से महफ़ूज़ रहने की ताक़त तेरी ही तरफ़ से मिलती है। (इब्ने हिशाम जिल्द 1, स० 469-70)

हिजरते मदीना : दारुन्नदवा में मक्का के सरबर आवुरदा अफ़राद उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, अबू सुफियान बिन हर्ब, तईमा बिन अदी, जबीर बिन मुतअम, हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल, नस्र बिन हारिस बिन कुल्दा, अबुल-नजतरी बिन हिशाम, ज़मआ बिन अस्वद बिन मुत्तलिब, हकीम बिन हिज़ाम अबू जहल बिन हिशाम, मंबा और मंबा बिन हिजाज, उमैया बिन खलफ हाज़िर हैं। हाज़िरीन पर ग़ैज़ व ग़ज़ब के साथ ख़ामोशी तारी है। इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम के खिलाफ़ तक़रीबन 12 साला सरगर्मियों और तदबीरों के मनाज़िर माज़ी के झरोकों में देख रहे हैं। उनके दिल अपनी नाकामी व नामुरादी के कर्ब अंगेज़ मनाज़िर से पेच व ताब खा रहे हैं। आज उनका यह अहम इज्तिमा, यह आख़िरी और कतई फ़ैसले के

लिए मुनाकिद हो रहा है।

दारुन्नदवा के दरवाज़ा पर एक ख़ूबसूरत बूढ़ा, मोटी चादर ओढ़े बारयाबी का ख़्वास्तगार है। हाज़िरीन ने पूछा जनाब आप कौन हैं? बूढ़े ने जवाब दिया मैं शैख़े नज्दी हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि आप लोग एक अहम क़रारदाद के लिए जमा हुए हैं। मैं भी इस ग़रज़ से आ गया हूँ कि मशवरे में शरीक हो जाऊं, राय देही और ख़ैर ख़्वाही में कोताही न करूं। शुरका से इजाज़त पा कर शैख़ नज्दी के रूप में शैताने लईन अन्दर दाख़िल हुआ।

सूरते हाल पर आख़िरी फ़ैसले के लिए तबादल-ए-ख़्याल और मशवरों का लेन देन शुरू हुआ। कहा गया हाज़िरीन! आप सब इस हक़ीक़त से वाक़िफ़ हैं कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तहरीक अब मक्का से आगे बढ़ कर अरब के दूसरे इलाक़ों में फैल रही है, उसके मुत्तबईन हमारे पंज-ए-इस्तिब्दाद से निकल कर आज़ादाना दूसरे इलाक़ों में आबाद हो रहे हैं। कहीं ऐसा न हो यह लोग हम पर हमला आवर हो जाएं और हमें हमारे क़दीमी रिवायात के साथ ज़मीन का पैवन्द बना दें। एक शख़्स ने कहा, मुनासिब यह होगा कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को पा बजूलां (पाँव में ज़ंजीर) करके किसी मकान में क़ैद कर दो और उसकी मौत का इंतिज़ार करो ताकि उसकी दावते हक़ का सिलसिला ख़त्म हो जाए। ज़ुहैर और नाबेग़ा जैसे सरकश शाइरों को तुमने मौत के घाट उतारा। यही मुअस्सिर अमल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के साथ भी किया जाए।

शैख़ नज्दी ने कहा, वल्लाह! तुम्हारी यह राय ठीक नहीं, अगर हमने उसे क़ैद रखा तो उसका हुक्म बन्द दरवाज़े के बाहर उसके पीराओं के पास जाएगा। इस हालत में क़रीने क़्यास है कि वह तुम पर हमला आवर हों और उसे तुम्हारे हाथों से छीन ले जाएं। उसके ज़रिआ से वह अपनी तादाद तुम्हारे मुक़ाबला में बढ़ाएं और तुम्हारी हुकूमत पर ग़लबा हासिल कर लें। इसलिए तुम्हारी यह राय मुनासिब नहीं। कोई और तदबीर सोचो।

ग़ौर व फ़िक्र के बाद एक शख़्स ने कहा मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को हम अपनी आबादी से निकाल कर जलावतन कर दें। जब वह मक्का से चला जाएगा तो हमें उसके किसी मक़ाम पर आबाद होने की परवा न करनी चाहिए। हम आपस में दोबारा क़दीमी मुहब्बत व यगांगत क़ाइम कर लेंगे।

शैख़ नज्दी ने इंकार करते हुए कहा, वल्लाह! तुम्हारी राय मुनासिब नहीं। क्या तुमने उसकी शीरीनी गुफ़्तार, ख़ूबी कलाम और लोगों के दिलों

पर उसकी असर आफरीनी नहीं देखी? मुझे ख़ौफ़ है कि वह जलावतन हो कर अरब के जिस क़बीला में ठहरेगा, उस में अपने कलाम व गुफ़्तार से ऐसा ग़लबा हासिल कर लेगा कि वह उसके जांनिसार बन जाएंगे। फिर वह तुम पर हमला आवर होगा और तुम्हें पामाल कर देगा। कोई और राय सोचो! अबू जहल बिन हिशाम ने जेबे तफ़क्कुर से सर उठाते हुए कहा :

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे में मेरी एक तज्वीज़ यह है कि हर क़बीले में से एक जवांमर्द, नौ उम्र, क़वी, शरीफुन्नसब मुन्तख़ब कर लें और उन्हें एक-एक तल्वार दी जाए, यह सब उसके पास जाएं और तल्वारों से एक साथ इस तरह हमला हों कि गोया एक ही शख़्स का वार है। और उसे तहे तेग कर दें। इस तरह उसका ख़ून तमाम क़बीलों पर बट जाएगा। बनी अब्दे मनाफ़ अपनी क़ौम के तमाम अफ़राद से जंग न कर सकेंगे। हम से ख़ून बहा लेने पर राज़ी हो जाएंगे और हम पर ख़ून बहा आसान होगा।

शैख़ नज्दी ने कहा, यह राय सब से मुनासिब और दुरुस्त है। हाज़िरीन ने अबू जहल की क़रारदाद पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया।

अंधेरी रात है, मक्का के मुन्तख़ब नौजवानों का दस्ता तल्वारें लिए हुए काशान-ए-नुबुव्वत पर मौजूद है। अबू जहल इब्ने हिशाम ने उन नौजवानों से ख़िताब करते हुए कहा :

"मुहम्मद का दावा है कि अगर तुम उसके अहकाम की पैरवी करो तो अरब व अजम के बादशाह हो जाओगे और मरने के बाद दोबारा उठाए जाओगे, तुम्हारे लिए उर्दुन के बाग़ों जैसे बाग़ होंगे। अगर तुमने यह न किया तो तुम से क़िताल जाइज़ हो जाएगा। और जब तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो तुम्हारे लिए आग होगी जिसमें तुम जलाए जाओगे।"

(इब्ने हिशाम : जिल्द **1**, स० **531**)

इसी हाल में रसूले गिरामी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और मुट्ठी भर खाक ले कर इरशाद फरमाया :

हाँ! यह बातें कहता हूँ और तू भी एक जहन्नमी है।

सरकार ने वह खाक, बरहना शम्शीर (नंगी तल्वार) लिए हुए ख़ून के प्यासों पर डाल दी, वह उस वक़्त नूरे बसारत से महरूम हो गये और वह हुज़ूर को देख न सके।

तरजमा : और वह वक़्त याद करो जब काफिर तुम्हारे ख़िलाफ़ अपनी फरेबकारी में लगे थे ताकि तुम्हें गिरफ़्तार कर रखें या क़त्ल कर डालें या

जला वतन कर दें और वह अपनी फरेबकारी में मसरूफ़ थे और अल्लाह अपनी मख़्फ़ी तदबीरें कर रहा था और अल्लाह बेहतर तदबीर करने वाला है।

आक़ाए दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु को हम्राह लिया और मदीना की जानिब रवाना हुए। वतन अज़ीज़ को राहे हक़ में तर्क किया जा रहा है। सदियों की क़दीम मौरूसी जाइदाद छोड़ कर मदीना की तरफ हिजरत की जा रही है। बैतुल्लाह का हक़ीक़ी वारिस हालात की नामुसाइदत से दोचार मदीना की जानिब सर गरमे सफर है।

कुफ़्फ़ार की खुफ़िया साज़िशें राइगाँ गईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक्का से बाहर निकलने का यक़ीन हो गया तो उनके तेज़ रफ़्तार सवारों ने हर चार सिम्त कोहिस्तानी रास्तों पर घोड़े डाल दिए। मगर ख़ुदा की तदबीर के आगे इंसानी तदबीरों और कोशिशों को कामयाबी व कामरानी कब हासिल होती है?

सरकारे दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़द्दस वजूद से मदीना का मुक़द्दर जाग उठा। मदीना की पुर नूर गलियाँ नक़्श पाए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रश्के कहकशां बन गईं।

❖ ❖ ❖

हक़ व बातिल के अहम माऊरके

हिजरत के बाद पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और असहाबे रसूल को अम्न व सुकून की फिज़ा मयस्सर आई। उन्होंने ऐसी ज़रखेज़ ज़मीन को अपना मसकन बनाया जो शजरे इस्लाम की नशो नुमा और उसके बर्ग व बार के फैलाव के लिए बेहद साज़गार साबित हुई। मदीना दावते हक़ की इशाअत का मरकज़ बन चुका था, जहाँ से इस्लामी इंक़लाब की शुआएँ अरब के दूसरे मक़ामात तक पहुँच रही थीं, पैग़म्बरे इस्लाम इस्लामी सदाक़त से दिलों की दुनिया फतह कर रहे थे, क़बाइली इफ़्तिराक़ व इंतिशार की जगह उख़ुव्वत व मसावात (भाई चारा और बराबरी) की बुनियादों पर एक ख़ुशगवार मुआशरा तश्कील दे रहे थे। अरब के ला-क़ानूनी ग़ैर मुनज़्ज़म समाज में एक मुनज़्ज़म जम्हूरी रियासत तरतीब दे रहे थे, बेइल्मी व जिहालत के तारीक माहौल में इल्म व इरफ़ान की शम्अें रौशन कर रहे थे, शिर्क व बुत परस्ती की ला-यानियत का ख़ात्मा करके ख़ुदा परस्ती व ख़ुदा रसी का ख़ुशगवार माहौल पैदा कर रहे थे, बातिल शिआरी व बद किरदारी की तेज़ व तुन्द आंधियों में हुस्ने अख़्लाक़ के चिराग़ रौशन कर रहे थे, सदियों से तब्क़ाती कशमकश की चक्कियों में पिसने वाले पस्मांदा इंसानी तब्क़ात को इंसाफ़ और अद्ल के रास्ते पर गामज़न कर रहे थे, मदीना में इस्लाम बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ रहा था, उसकी अख़्लाक़ी व रूहानी तालीमात का सैलाब अरब के रेगज़ारों को सैराब कर रहा था।

इन हालात में बातिल परस्त, जारेह व सफ़्फ़ाक कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीने मक्का जिनके जब्र व इस्तिब्दाद का हदफ़ पैग़म्बरे इस्लाम और मुसलमान बरसों तक रह चुके थे, जिन्होंने इस्लाम के चश्म-ए-हिदायत को ख़ुश्क सराबिस्तां बनाने की अनथक कोशिश की थी, वह सैकड़ों मील के फ़ासिला पर इस्लाम की बढ़ती हुई अफ़रादी क़ुव्वत और बातिल निज़ामे हयात के मुक़ाबिल के दीन व दुनिया के क़याम का सालेह दस्तूर कैसे बर्दाश्त कर सकते थे।

इस्लाम के अस्करी निज़ाम की तश्कील और अफ़रादी क़ुव्वत के फ़रोग़

ने उन्हें बड़े-बड़े ख़तरात व ख़दशात में मुब्तला कर दिया। अब उनके लिए सिर्फ़ एक ही रास्ता था कि वह अपनी अफ़रादी कुव्वत को मुनज़्ज़म करें और अपनी फौजी ताक़त को मुस्तहकम बनायें ताकि इस्लाम की उभरती कुव्वत को बज़ोरे शम्शीर कुचल दें या कम अज़ कम अपनी हिफ़ाज़त का बन्दोबस्त कर सकें। इस ग़रज़ से कुरैश ने सबसे पहले जंगी अख़राजात के लिए एक तिजारती क़ाफ़िला शाम की तरफ़ रवाना किया और मक्का के अमाइदीन ने नौजवानों की हर्बी तर्बियत का आग़ाज़ कर दिया ताकि उनकी अस्करी तंज़ीम हर लिहाज़ से नाक़ाबिले तस्ख़ीर बन जाए और इस्लाम को सफ़्ह-ए-हस्ती से नाबूद करने की वह इम्कानी कोशिशें बरू-ए-कार ला सकें।

मअ्रक-ए-बद्र : 2 हिज. बद्र का संगलाख़ मैदान, एक जानिब पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़्यादत में 313 बेसरोसामां सरफरोशों की जम्ईयत थी। उनके पास सिर्फ़ दो घोड़े और 70 ऊंट थे, चन्द तल्वारें, कुछ नेज़े। दूसरी जानिब बातिल परस्त मुश्रेकीन का हर्बी साज़ व सामान से लैस एक हज़ार जंग जू सिपाहियों पर मुश्तमिल लश्कर, मुश्रेकीन अफ़्रादी कुव्वत के लिहाज़ से हक़ परस्तों के मुक़ाबला में तीन गुने थे।

खुले मैदान में कुफ़्र व इस्लाम की पहली जंग थी। कुफ़्फ़ारे मक्का इस अज़्म व इरादा से आए थे कि वह शमअ् हिदायत को गुल कर दें और उसके परवानों को खाके सहरा का पैवन्द बना दें। दूसरी तरफ़ ख़ुदा का बरगुज़ीदा रसूल ताईद व नुसरते खुदावन्दी पर एतमाद करते हुए क़िल-ए-बातिल की दीवारें मुन्हदिम करने और इस्लाम के क़िल-ए-अम्ज़मत व इक़्तिदार की ख़िश्ते अव्वलीन (पहली ईंट) रखने का मुतमन्नी था। मुसलमान जंग जीतने या दिफ़ा (बचाव) के लाज़मी साज़ व सामान से ख़ाली थे, अफ़्राद की क़िल्लत माद्दी वसाइल की नाक़ाबिले बयान कमी ज़ाहिर कर रही थी कि लश्करे इस्लाम कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के सैलाबे हर्ब के सामने ख़स व ख़ाशाक की तरह पामाल हो कर रह जाएगा। मगर यह जंग हक़ व बातिल की जंग थी, मुल्क गीरी या सरहदों की हिफ़ाज़त इस जंग की मत्महे नज़र न था। सूरते हाल यह थी :

तरजमा : जो लोग बाहम लड़े, तुम्हारे लिए इज़्ज़त का निशान है। एक गरोह ख़ुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुंकिरे ख़ुदा था। (आले इमरान)

यह अजब मंज़र था। वसीअ् व अरीज़ दुनिया में तौहीद और दीने बरहक़ की हिफ़ाज़त चन्द बेसरो सामां जानों पर मुंहसिर थी। सरवरे

दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह कैफ़ियत थी कि सारी रात बारगाहे खुदावन्दी में मुनाजात करते गुज़री।

तरजमा : ख़ुदाया तूने मुझ से जो वादा किया है आज पूरा कर। ख़ुदाया यह चन्द नुफूस अगर आज मिट गये तो फिर क़्यामत तक रू-ए-ज़मीन पर कोई तेरी परस्तिश न करेगा।

हक़ व बातिल का मारका गरम हुआ और ताईदी खुदावन्दी ने मुसलमानों को फत्हे मुबीन से सरफराज़ फरमाया। कुफ़्फ़ारे मक्का शिकस्ते फ़ाश से दो चार हुए। इस तरह इस आज़माइश से दाइ-ए-हक़ ओहद-ए-बरआ हुए।

तरजमा : अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद फरमाई इस हाल में कि तुम कम्ज़ोर थे। तो तुम अल्लाह से डरो उम्मीद है कि शुक्र गुज़ार हो जाओगे। (आले इमरान)

दुनिया ने देख लिया कि माद्दी साज़ व सामान पर भरोसा करने वाले बातिल परस्त अपनी बेपनाह कुव्वत के बावजूद हक़ के कम्ज़ोर व नातवां तरफ़्दारों पर हावी न हो सके। नुसरते खुदावन्दी ने रूहानियत के अलम बरदारों के ज़रिआ बातिल की तागूती तन्ज़ीम व कुव्वत को तितर बितर कर दिया।

ग़ज़्व-ए-उहुद : जंगे बद्र में कुरैश को जिस शिकस्ते फ़ाश का मुँह देखना पड़ा, बड़े-बड़े सोरमा, शह ज़ोर तहे तेग़ हुए, बेअंदाज़ा माल व दौलत का ज़याँ (नुक़्सान) हुआ। उस ने कुरैश को ऐसा ज़ख़्म कारी लगाया था जिसने नासूर की सूरत अख़्तियार कर ली। जिसके सदमा से पूरा शहरे मक्का सो गवार और घर-घर मातम कदा बन गया था।

इक्रमा बिन अबी जहल, सफ़्वान बिन उमैया, अब्दुल्लाह बिन रबीअ़, कुरैश के उन ख़ानवादों के पास जाते जिनके नौजवानों जंगे बद्र में हलाक हुए थे और वलवला अंगेज़ अंदाज़ में कहते :

"ऐ गरोहे कुरैश! मुहम्मद ने तुम्हारा क़िलअ़ कुमअ़ कर दिया है, तुम्हारे अच्छे आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। इसलिए तुम्हें चाहिए कि मुहम्मद से जंग के लिए माल व मताअ़ से हमारी मदद करो ताकि हम अपने आदमियों का बदला ले सकें।" (इब्ने हिशाम : जिल्द **2**, स० **40**)

शिकस्ते फ़ाश के कर्ब और कुरैश के इंतिक़ामी नारे ने पूरे मक्का में इंतिक़ामी जंग के लिए फ़िज़ा साज़गार कर दी और माल व मताअ़ की फराहमी का काम पूरे ज़ोर व शोर के साथ शुरू हुआ। एक रिवायत के मुताबिक़ ढाई लाख दृहम जमा हुए। पहले से कहीं ज़्यादा जोश व ख़रोश के साथ बड़े पैमाने पर जंगी तैयारियाँ शुरू हुई।

तरजमा : बेशक जो लोग कुफ़्र पर मुसिर हैं वह अपने अम्वाल को इस मक़्सद से ख़र्च करना चाहते हैं कि वह अल्लाह के रास्ते में रुकावट पैदा कर सकें। लेकिन उसका नतीजा यह होगा कि यह अपने अम्वाल का ख़र्च करके हसरत व यास के सिवा कुछ न पाएंगे और बिला शुबह जहन्नम की तरफ़ इकट्ठा किए जाएंगे।

असीरे बद्र, अह्दे शिकन अबू गुर्रा अम्र बिन अब्दुल्लाह हम्जी कुफ़्फ़ारे कुरैश को जंग के लिए वरग़लाता है :

तरजमा : मैदाने रज़्म में जम कर लड़ने वाले ऐ बनू अब्दे मनात! तुम अपने बाप दादा की तरह बड़े ज़ोर और हिमायत के आदमी हो, इस मौक़ा पर मदद करो। इस साल के बाद तुम्हें हमारी मदद व नुसरत के वादे की ज़रूरत नहीं। हमें दुश्मन के हाथ में न छोड़ो, क्योंकि ऐसा करना किसी तरह जाइज़ नहीं।

शव्वाल 3 हिजरी में कुरैश का जज़्ब-ए-इंतिक़ाम से लब्रेज़ तीन हज़ार शह ज़ोरों पर मुश्तमिल लश्कर पूरे हरबी साज़ व सामान के साथ मैदाने उहुद पहुँचा। जिस में सात सौ ज़िरहें हैं, दो सौ घोड़े, तीन हज़ार ऊंट थे।

लश्करे कुफ़्फ़ार की ख़बर मदीना पहुँची। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरादा था कि मदीना में रह कर मुदाफ़िआना जंग की जाए मगर पुरजोश जवानाने इस्लाम खुले मैदान में नबर्द आज़मा होना चाहते थे। चुनांचे रसूले आज़म व अकरम की क़्यादत में एक हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल इस्लामी लश्करे मदीना से उहुद की तरफ़ बढ़ा। अस्नाए राह में अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सौ साथियों के साथ लश्करे इस्लाम से जुदा हो गया। इस अलाहिदगी का इंतिहाई ख़तरनाक मक़्सद यह था कि इस तरज़े अमल से जां निसाराने इस्लाम के हौसले पस्त हो जाएंगे और उनमें मुश्रेकीन से मअ़रका आराई का जोश व ख़रोश बाक़ी न रहेगा और मुसलमानों के दर्मियान इंतिशार की कैफ़ियत पैदा हो जाएगी।

सात सौ मुजाहिदीने इस्लाम के साथ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैदाने उहुद में फरोकश हुए। तीन हज़ार दुश्मनों के मुक़ाबला में 650 फिदाकारों की जमीअत के साथ जो ज़ाहिरी अस्बाबे जंग और अफ़रादी कुव्वत के लिहाज़ से दुश्मन का पाँचवाँ हिस्सा थी, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़ आराई की। 50 तीर अंदाज़ों को जबले ऐनैन पर मुतऐयन फरमाया क्योंकि अक़ब से दुश्मनों के हमला का

एहतमाल था। तीर अंदाज़ों से इरशाद फरमाया :

"अगर जंग में हमारी फ़त्ह हो जाए फिर भी मोर्चा न छोड़ा जाए।"

जंग शुरू हुई, माद्दी साज़ व सामान से लदी हुई पाँच गुनी फौज ने पूरी शिद्दत के साथ परस्ताराने हक़ पर हमला कर दिया। रूहानियत और ताईदे ग़ैबी पर यक़ीने कामिल रखने वाले मुजाहिदीन ने पूरी जुरअत के साथ पेश -रफ़्त की। चन्द ही घन्टों की आवेज़िश के बाद बातिल परस्तों के क़दम उखड़े गये। वह अपना सारा साज़ व सामान छोड़ कर भागने लगे। मुश्रेकीन की शिकस्ते फ़ाश के बाद मुजाहिदीने इस्लाम माले ग़नीमत की तरफ़ मुतवज्जेह हो गये। मैदान साफ़ था। दुश्मन भाग चुका था। कोहे ऐनैन पर मामूर तीर अंदाज़ों ने जब यह सूरते हाल देखी तो अपने अमीर के हुक्म को नज़र अंदाज़ करते हुए मोर्चा से हट गये और माले ग़नीमत पर टूट पड़े।

ख़ालिद बिन वलीद (जो अभी मुशर्रफ़ ब-इस्लाम नहीं हुए थे) एक गरोह को मुनज़्ज़म करके कोहे उहुद की शुमाली जानिब मीलों का फासिला तय करके उहुद और कोहे ऐनैन के दर्मियानी हिस्सा से बेख़बर मुजाहिदीने इस्लाम पर अचानक हमला आवर हुए। कोहे ऐनैन पर रसूले गिरामी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन तीर अंदाज़ों को मुतऐयन फरमाया था उनकी अक्सरीयत वहाँ से हट चुकी थी। चन्द तीर अंदाज़ ख़ालिद बिन वलीद के पुरजोश हमले को रोकने में नाकाम रहे और शहादत पा गये ख़ालिद बिन वलीद के अक़बी हमले को देख कर बाक़ी मांदा कुफ़्फ़ार ने भी मुज्तमा (इकट्ठा) हो कर अगला मोर्चा संभाल लिया। इस तरह मुजाहिदीने इस्लाम कुफ़्फ़ार के नरग़े में आ गये। उनके औसान ख़ता कर गये। इंतिशार व इज़्तिराब की कैफ़ियत में वह सफ़ आरा ना हो सके। कुफ़्फ़ार के हमलों की ताब न ला कर बहुत से मुजाहिदीन ने मदीना का रुख़ कर लिया। इसी अस्ना में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ख़्मी हुए, ज़मीन पर गिरे। कुफ़्फ़ार ने रसूले अकरम की शहादत का एलान कर दिया। अब क्या था मुसलमानों की रही सही कुव्वत ने भी जवाब दे दिया। परागन्दा, बदहवास लश्कर की तरतीब नामुम्किन हो गई। इस तरह शानदार फ़त्ह शिकस्त में तब्दील हो गई।

इस अफ़रा तफ़री और परेशानी के आलम में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जांनिसारों की एक मुख़्तसर सी जमाअत अपने गर्द

मुज्तमा (इकट्ठा) की। रफ़्ता-रफ़्ता मुसलमान शमअ़् रिसालत के गर्द (पास) जमा होने लगे और हुज़ूर उहुद की घाटी की तरफ़ चले। उहुद की एक चट्टान पर क़याम फरमाया।

जब मैदान खाली हो गया। अबू सुफ़ियान ने पुकार कर कहा, मुसलमानो! तुम में मुहम्मद हैं? अबू बकर हैं? उमर हैं? रसूले अकरम ने जवाब से रोक दिया। ख़ामोशी देख कर अबू सुफ़ियान ने कहा कि सब मारे गये, ज़िन्दा होते तू ज़रूर जवाब देते। हज़रत उमर ज़ब्त न कर सके और कहा, दुश्मने खुदा तू झूठा है! हम सब ज़िन्दा हैं।

अबू सुफ़ियान ने ब-आवाज़ बुलन्द पुकार कर कहा, आइंदा साल उन्हीं दिनों में बद्र के मक़ाम पर फिर हमारा मुक़ाबला होगा। और पूरा लश्करे कुरैश मक्का की जानिब लौट गया।

इब्तिला व आज़माइश का यह बड़ा ही दर्दनाक मंज़र था। ताबीर के तसामुह (गलत ताबीर करने वाला) ने मुसलमानों की फतह को शिकस्त में बदल दिया था। मुश्रेकीन के शदीद हमलों से तक़रीबन **108** मुजाहिदीने इस्लाम शहादतयाब हुए। जान व माल के नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान के साथ शिकस्त, बद-दिली व बेइत्मीनानी का बाइस थी। इन हालात में यहूद और मुनाफ़िक़ीन की रेशा दवानियाँ तेज़ तर हो गईं। उनकी जानिब से अन्देशों और शुकूक के नये-नये शगूफ़े रोज़ खुलते और मुसलमानों को हक़ व सदाक़त से मुन्हरिफ़ करने की नापाक कोशिशें की जातीं।

यह जंग और उसका अंजाम एक मेअ़्यार था जिस पर खरे खोटे की तमीज़ करनी मक़्सूद थी। ईमान व ईक़ान की राह में नशीब व फराज़, सर्द गरम हर माहौल से सब्र व इस्तिक़ामत के साथ गुज़रने की तर्बियत थी।

तरजमा : और वह वक़्त याद करो जब तुम मैदाने जंग से भाग रहे थे और एक दूसरे को मुड़ कर न देखता था और हमारे रसूल तुम्हारे पीछे तुम्हें बुला रहे थे। नतीजा यह हुआ कि खुदा ने इस कमी की पादाश में तुम्हें रंज पर रंज दिया ताकि इस हादसे से इबरत पकड़ो। इस चीज़ पर ग़म न करो जो हाथ से निकल जाए और न इस मुसीबत पर ग़म करो जो तुम पर नाज़िल हो जाए। (सूरः आले इमरान)

तरजमा : हादसे से इबरत पकड़ो उस चीज़ पर ग़म न करो जो हाथ से निकल जाए और न इस मुसीबत पर ग़म करो जो तुम पर नाज़िल हो जाए। अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करे तो फिर तुम पर कोई

ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारी मदद छोड़ दे तो फिर उसके बाद कोई है जो तुम्हारी मदद कर सकता है? और मोमिन तो सिर्फ़ अल्लाह ही पर तवक्कुल करते हैं और यक़ीनन अल्लाह तआला ने तो तुम से अपना वादा सच कर दिखाया, जिस वक़्त तुम इन कुफ़्फ़ार को बहुक्मे इलाही क़त्ल कर रहे थे यहाँ तक कि जब तुम खुद कमज़ोर पड़ गये और हुक्म में इख़्तिलाफ़ करने लगे और तुमने नाफरमानी की उसके बाद कि तुम को वह बात दिखा दी जो तुम चाहते थे। तुम में से बाज़ वह लोग थे जो दुनिया को चाहते थे और बाज़ वह थे जो आख़िरत को चाहते थे फिर तुम को कुफ़्फ़ार से हटा दिया ताकि वह तुम्हारी आज़माइश करे फिर अल्लाह तआला ने तुम्हें मआफ़ भी कर दिया अल्लाह तआला मोमिनों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है। (सूरः आले इमरान)

ग़ज़्व-ए-अहज़ाब : मक्का की सरज़मीन पर मुश्रेकीने मक्का के सरदार मुज्तमा (इकट्ठा) हैं। मदीना से जलावतन क़बील-ए-नजीर के सरबर-आवुरदा अफ़राद सलाम बिन अबू हक़ीक़, हुय्य इब्ने अख़्तब, किनाना बिन अबू हक़ीक़, हौज़ा बिन क़ैस वाइली, अबू अम्मार वाइली इस्लाम के ख़िलाफ़ खुफ़िया साजिश और एक मुत्तहिदा फौजी मुहिम का मन्सूबा पेश कर रहे हैं। उन्होंने कहा :

"हम इस (मुहम्मद) के ख़िलाफ़ उस वक़्त तक तुम्हारा साथ देंगे जब तक उनका इस्तीसाल (जड़ से मिटाना) न हो जाए।"

कुरैश ने यहूद से सवाल किया, तुम पहली किताब पर ईमान रखते हो। तुम जानते हो हमारे और मुहम्मद के दर्मियान इख़्तिलाफ़ क्या है? बताओ हमारा दीन बेहतर है या मुहम्मद का?

इस्लाम दुश्मनी ने हक़ व बातिल के दर्मियान सच्चे फ़ैसले से बाज़ रखा। दुनियावी मसालेह ग़ालिब आए और बदतरीन यहूद ने जवाब दिया, नहीं नहीं तुम्हारा दीन उनके दीन से बेहतर है और तुम उनकी बनिस्बत हक़ से ज़्यादा क़रीब हो। (इब्ने हिशाम : जिल्द 1, स० 148)

तरजमा : क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला है, वह बुत और शैतान को मानते हैं और कुफ़्फ़ार की निस्बत कहते हैं कि यह लोग ब-निस्बत मुसलमानों के ज़्यादा राहे रास्त पर हैं। यह लोग वह हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने फटकार दिया है। और जिसे अल्लाह तआला फटकार दे उसका कोई हामी न पाओगे।

जंगे बद्र के इख़्तिताम पर अबू सुफ़ियान ने अगरचे अगले साल बद्र में जंग की वार्निंग दी थी मगर मक्का पहुँचने के बाद उसे हालात की नज़ाकत और जंगी एहतमाम की दुशवारियों का सख़्त एहसास हुआ और वह किसी बड़ी जंग का फ़ैसला न कर सका। बनू नज़ीर के यहूद ने कुफ़्फ़ारे मक्का के हौसले बढ़ा दिए और मक्का से मदीना तक सारी इस्लाम दुश्मन ताक़तें मुज्तमा होनी शुरू हो गईं और चमने इस्लाम को बेख़ व बन (जड़ से) से नाबूद करने के लिए एक मरकज़ पर जमा हो गईं, कुरैश, ग़त्फ़ान, बनी अस्अद, बनी सअद, बनू सलीम, बनू मर्रा, बनू नज़ीर सब इस्लाम के ख़िलाफ़ अह्दे मुवाफ़िक़त बांध कर शव्वाल 5 हिजरी में मदीना की जानिब रवाना हुए।

कम अज़ कम दस हज़ार ज़िरह पोश सिपाह पर मुश्तमिल मुत्तहिदा फौज आंधी तूफ़ान की तरह मदीना मुनव्वरा के शुमाली हिस्सा पर छा गई। मुख़ालिफ़ीन के तेवर बता रहे थे कि वह इस फ़ैसला कुन माअरका में इस्लाम की अस्करी कुव्वत को ज़ेर व ज़बर करके मदीना की इस्लामी रियासत का ख़ात्मा कर देंगे। इस तरह जज़ीरा नुमाए अरब से परस्ताराने हक़ को मिटा देंगे।

अरब की मुत्तहदा इस्लाम दुश्मन कुव्वतों की इज्तिमाई यल्ग़ार की इत्तिला मदीना पहुँची। आक़ाए दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शदीद तरीन आज़माइश के तदारुक (रोक) की तदबीरों पर ग़ौर व फ़िक्र के लिए किबारे सहाबा की मज्लिसे शोरा तलब की। दिफ़ाई तदाबीर के बाब में माहिरीने हरब ने तबादल-ए-ख़्याल किया। हज़रत सलमान फ़ार्सी की राय पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया गया कि अह्ले फारस के तरीक़-ए-दिफ़ाअ़ के मुताबिक़ शहर के शुमाली किनारे पर (जिधर से दुश्मन के दाख़िला का इम्कान है) एक इतनी लम्बी चौड़ी गहरी खन्दक़ खोदी जाए जिस से इज्तिमाई तौर पर दुश्मनों का मदीना में दाख़िल होना नामुम्किन हो जाएगा। इस तरह जंग जो अरबों को नई सूरते हाल का सामना होगा और मुसलमानों के लिए ऊंची ख़न्दक़ मज़्बूत फ़सील से कहीं ज़्यादा मुहाफ़िज़ साबित होगी।

मगर यह भी बड़ा सख़्त इम्तिहान था कि तक़रीबन साढ़े तीन मील लम्बी, दस गज़ चौड़ी और इतनी ही गहरी ख़न्दक़ उन्हीं जांनिसाराने इस्लाम को खोदनी थी। जिन्हें दुश्मनों के तेज़ व तुन्द अस्करी सैलाब का मुक़ाबला भी करना था। लेकिन ईमान व यक़ीन की कुव्वत से माला माल

होने वाले फ़रज़न्दाने तौहीद ने जनाब रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़्यादत में भूख और प्यास की शिद्दतें बर्दाश्त करते हुए अपने जज़्ब-ए-ईसार व अमल से ख़न्दक़ की तक्मील कर ली।

कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन का अज़ीम लश्कर वलवलों और ताज़ा जोश व ख़रोश के साथ मदीना के शुमाली किनारे पर ख़न्दक़ से परे फरोकश हो गया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने तीन हज़ार जाँ निसारों के साथ कोहे सलअ् के दामन में ख़न्दक़ की जानिब रुख़ करके खेमा ज़न हो गये। दोनों लश्कर मुक़ाबिल थी, बीच में ख़न्दक़ हाइल थी।

उधर मदीना में बनू क़ुरैज़ा के सरदार कअ़ब बिन असद क़र्ज़ी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अह्द शिकनी की। मुनाफ़िक़ीन ने खुल कर अपनी छुपी हुई कदूरतों का इज़्हार किया। इस सूरते हाल ने मुसलमानों को अन्दरूनी व बैरूनी दोनों ख़तरात से दो चार कर दिया था। इंतिहाई सख़्त आज़माइश थी। इस्तिक़्लाल व पामर्दी का अज़ीम इम्तिहान था।

अरस-ए-दराज़ तक मुहासरा क़ाइम रहा। कभी कभी तीर अंदाज़ी होती और कभी मुश्रेकीन के बाज़ अफ़राद जोशे जंग में ख़न्दक़ उबूर करने की कोशिश करते और उन्हें हलाक कर दिया जाता।

एक दिन अमर बिन अब्दूद बिन अबू क़ैस, इकरमा बिन अबी जहल, हबीरा बिन अबी वहब, ज़रार बिन ख़त्ताब आमाद-ए-क़िताल हुए। घोड़ों पर सवार हो कर बनू कनाना के मनाज़िल से गुज़रे और उन से कहा, बनू कनाना जंग के लिए तैयार हो जाओ! तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आज मर्दे मैदाँ कौन है? जब यह लोग ख़न्दक़ के किनारे पहुँचे तो ख़न्दक़ देख कर कहा "ख़ुदा की क़सम! यह तो वह तरकीब व तदबीर है जो अरब नहीं कर सकते थे।"

उन्होंने ख़न्दक़ की एक तंग जगह का इरादा किया, घोड़ों को ऐड़ लगाई तो वह पार थे, अब ख़न्दक़ और सलअ् पहाड़ के दर्मियान उनके घोड़े शूरा ज़ार में चक्कर लगाने लगे। हज़रत अली एक जमाअत लेकर निकले, जंग जो हरीफ़ आमने सामने थे। अमर बिन अ़ब्दूद ने पुकारा, कौन मुक़ाबला पर आएगा? हज़रत अली मुक़ाबला पर आए और उसे हलाक कर दिया। बाक़ी मुश्रेकीन ज़ख़्मी हो कर फरार हो गये।

मुहासरा की तवालत, मुसलसल कद्द व काविश (कोशिश) शब बेदारी (रात भर जागना) मुसलमानों के लिए बाइसे इज़्तिराब थी। मगर नाक़ाबिले उबूर ख़न्दक़ से दुश्मन भी सख़्त परेशान था।

महाज़ की उस्अत, मुहासरे की तवालत, तादाद और सामाने हर्ब की क़िल्लत, बे सरो सामानी, फ़ाक़ा कशी, शब बेदारियाँ, मुसलसल तग व दौ, मुनाफ़िक़ीन की अलाहिदगी, बनू क़रीज़ा की अह्द शिकनी, सामने ख़ून के प्यासे, दुश्मनों का टिड्डी दल लश्कर यक़ीनन राहे हक़ व सदाक़त का एक अज़ीम इम्तिहान और बड़ी आज़माइश थी। कुरआने अज़ीम ने जिस की इन अल्फ़ाज़ में मंज़र कशी की है :

तरजमा : याद करो जिस वक़्त दुश्मन बालाई जानिब से भी और ज़ेरीं जानिब से भी तुम्हारे जानिब बढ़े और जबकि आँखें पत्थरा गईं और कलेजे मुँह को आ गये और अल्लाह के बारे में तुम्हारे दिलों में तरह-तरह के गुमान आने लगे। (अहज़ाब : अ० 1)

यह इस्लाम के ख़िलाफ़ बातिल ताक़तों का सबसे बड़ा महाज़ था, जिसने साबेक़ा सारी आज़माइशों को भुला दिया था।

इस नाज़ुक मरहला में हादी-ए-बरहक़ ने इस्लाम की हिफ़ाज़त और दुश्मनाने इस्लाम के दर्मियान इफ़्तिराक़ व इंतिशार की दुआएँ दीं।

तरजमा : ऐ किताब के नाज़िल करने वाले खुदा, ऐ जल्द हिसाब लेने वाले! तू मुश्रेकीन की जमाअतों को शिकस्त दे, इलाही! उनको फरार कर, उनको डगमगा दे, कोई ख़ुदा नहीं अल्लाह की ज़ात के सिवा जो यक्ता है उस ने अपने लश्कर (मुसलमान) को इज़्ज़त बख़्शी और अपने बन्दा (मुहम्मद) की मदद की और यक्ता ज़ात अहज़ाब (सब जमाअतों) पर ग़ालिब है और उसके सिवा सब फानी है।

नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम पूरी दुनिया के इंसानों के लिए लेकर आए थे और उसे दुनिया में क़यामत तक बाक़ी रहना था। हक़ के परस्तार, अरब के रेगज़ारों का पैवन्द बन जाएं। यह मशीयते ईज़्दी को हरगिज़ गवारा न था। जब इम्तिहान व आज़माइश की घड़ियाँ नुक़्त-ए-उरूज को पहुँच गईं और तौहीद व रिसालत के परवानों ने इस्तिक़्लाल व सबात क़दमी दिखाई। तो दुश्मनों के उमंडते हुए सैलाब को इफ़्तिराक़ व इंतिशार से दो चार कर दिया गया। जाहलीयते खालेसा और शिर्क व कुफ़्र की बुनियादों पर मब्नी क़बाइली महाज़ बाहमी बेयक़ीनी और बेएतमादी का शिकार हो गया। जिसने कुफ़्फ़ार में कम्ज़ोरी और हज़ीमत का एहसास सख़्त कर दिया। सफर की मशक़्क़तों और माल व अस्बाब का लाहासिल ज़ियाँ, अज़ीम लश्कर की ख़ूराक व रसद का

मस्अला पेचीदगी पैदा करने लगा।

दूसरी जानिब मौसम ना साज़गार हो गया। तब्ई अवामिल ने बातिल परस्तों के सारे जज़्बात सर्द कर दिए। एक शब अचानक सख़्त तूफ़ानी आंधी चली, उसकी कुव्वत व ज़ोर ने कुफ़्फ़ार के ख़ेमे उखेड़ दिए। मवेशी और जानवर वहशतज़दा हो कर तितर बितर हो गये। इस ग़ैबी इंतिज़ाम और ज़र्बे शदीद ने इस्लाम दुश्मन अनासिर के रहे सहे हौसले पस्त कर दिए और हर तरफ़ हवास बाख़्तगी का आलम तारी हो गया। सुबह हुई तो आज़माइशों का सख़्त बादल छट चुका था और कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की फौज वापस हो रही थी।

तरजमा : ऐ ईमान वालो! रहमते ख़ुदावन्दी को याद करो जो तुम पर उस वक़्त की गई जब तुम पर मुश्रेकीन के लश्कर चढ़ते थे। पस हम ने उन पर हवा को और ऐसे लश्कर को भेज दिया जिस को तुम नहीं देख रहे थे। और जो काम भी तुम करते हो अल्लाह तआला उन कामों को देखने वाला है। (सूरः अहज़ाब)

जंगे अहज़ाब में इस्लाम दुश्मन मुत्तहेदा कुव्वतों की नाकामी ने सरज़मीने अरब पर इस्लाम की शौकत व अज़्मत का ऐसा सिक्का बिठा दिया कि फिर किसी दुश्मन को मदीना की तरफ़ आँख उठा कर देखने की जुरअत न हुई और इस्लाम का सरमदी पैग़ाम पूरी कुव्वत के साथ जज़ीरा नुमा अरब में फैलने लगा। दिलों की दुनिया मुसख़्ख़र (बदलने) होने लगी। इस्लाम दुश्मन दाइर-ए-इस्लाम में दाख़िल होने लगे।

इख़्तिताम (ख़त्म) जंग के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेशगोई इरशाद फरमाई थी : **नग़्ज़ूहुम वला यग़्ज़ूना।** अब हम पर चढ़ाई न कर सकेंगे। हरफ़ ब हरफ़ सादिक़ आई (सच हुई)।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖
❖❖❖❖
❖❖❖
❖❖
❖

सुलह हुदैबिया

ज़ी कअ्दा 6 हिजरी है। पैगबरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चौदह सौ अफ़राद पर मुश्तमिल फरज़न्दाने तौहीद की जमाअत के साथ मक्का के क़रीब फ़रोकश (उतरे) हैं। कुफ़्फ़ारे मक्का की जानिब से मुसलमानों को रोकने की जद्दो जहद फौजी पैमाने पर की जाने लगी और उन का लश्कर मक्का से बाहर फरोकश हो गया। उधर मक़्सूदे सफर सिर्फ़ मरकज़े तौहीद बैतुल्लाह का तवाफ़ और शेआरे उमरा की बजा आवरी था।

दोनों जानिब से क़ासिदों की आम्द व रफ़्त (आने जाने) का सिलसिला जारी हुआ तो बुदैल बिन वरक़ा खज़ाई बनी खुज़ाआ के चन्द मुअज़्ज़ज़ अफ़राद के साथ खिदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, आप किस काम के लिए आए हैं? हुज़ूर ने बयान किया हम सिर्फ़ काबा की ज़्यारत को आए हैं, हर्ब व जंग के लिए नहीं आए हैं। बुदैल अपने हम्राह के साथ कुरैश के पास पहुँचा और कहा ऐ कुरैश! तुम नाहक़ मुहम्मद के वास्ते जंग की तैयारी में उज्लत (जल्द बाज़ी) से काम ले रहे हो हालांकि मुहम्मद जंग के वास्ते नहीं आए। वह तो सिर्फ़ ज़्यारत के वास्ते आए हैं। कुरैश ने कहा उन से ऐसा कभी न होगा कि मुहम्मद ज़्यारत का धोखा दे कर हमारे शहर को फतह कर लें और फिर तमाम अरब में हमारी बेवकूफी और फरेब ख़ूर्दगी का शोहरा हो। (इब्ने हिशाम : स० 365)

कुफ़्फ़ारे कुरैश का यही अन्देशा था जिस ने उन्हें अपनी अस्करी कुव्वत को मुत्तहिद करने पर मज्बूर कर दिया और उनका लश्कर मक्का से बाहर मक़ामे बल्दह में मुक़ीम हो गया और ख़ालिद बिन वलीद मुक़द्दमतुल-जैश के तौर पर दो सौ सवार लेकर ग़मीम पहुँच गये। कुरैश बैतुल्लाह की ज़्यारत व तवाफ़ से फरज़न्दाने तौहीद को रोकने के लिए पूरे तौर पर मुसल्लह और आमादा थे। मगर नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल व ख़ूंरेज़ो से मुज्तनिब, (दूर रहना) हालते एहराम में पुर अमन जाइरीन की तरह मक्का में दाख़िल हो कर रुसूमे ज़्यारत बजा लाना चाहते थे। यह अजीब कश्मकश थी एँक तरफ बातिल के परस्तार कश्त व ख़ून

के लिए आमदा थे और दूसरी जानिब अह्ले हक अमन व आश्ती का पैकर बने हुए थे। अल-गरज़ फरीकैन के दर्मियान नुमाइन्दों की आम्द व रफ्त के नतीजा में सुलह के इम्कानात रौशन हुए। कुरैश ने सुहैल बिन अमर हुवैतिब बिन अब्दुल-उज़्ज़ा हफ्स को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सुलह के लिए भेजा।

बाहमी तबादल-ए-ख्याल से सुलहनामा के शराइत तय पाए और फरीकैन ने सुलह नामा पर मुहरे वफा सब्त कर दी। सुलह नामा की किताबत हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाई। जिसका मतन यह है :

तरजमा : दोनों ने इत्तिफाक कर लिया कि दस साल तक जंग बन्द रहेगी, इन दस सालों में लोग अमन की ज़िन्दगी बसर करेंगे और वह एक दूसरे से हाथ रोके रहेंगे। शर्त यह है कि कुरैश का जो आदमी अपने वली की इजाज़त के बगैर मुहम्मद के पास आएगा मुहम्मद उसे कुरैश के पास लौटा देंगे। मुहम्मद के साथियों में से जो आदमी कुरैश के पास आएगा कुरैश उसे मुहम्मद के पास वापस न करेंगे। नीज़ यह कि दिलों की अदावतें दिलों ही में रहेंगी, उन्हें जाहिर नहीं किया जाएगा, न बद अह्दी और ख्यानत की जाएगी और यह कि जो पसन्द करे मुहम्मद के अक्द व अह्द में दाखिल हो वह उसमें दाखिल हो जाए और जो पसन्द करे कि कुरैश के अक्द व अह्द में दाखिल हो, वह उनके अक्द व अह्द में दाखिल हो जाए। (इब्ने हिशाम जिल्द **2** स० **379**)

दीगर कुतुब सियर व तारीख (इतिहास की किताबें) में एक अहम शर्त और भी मज़्कूर है :

"इस साल मुसलमान मक्का में दाखिल हुए बगैर ही वापस चले जाएं। आइन्दा साल मुसलमान मक्का में बगर्ज उमरा इस तरह दाखिल हों कि उनकी तल्वारें नियाम में होंगी और तीन दिन क्याम करेंगे।"

बज़ाहिर यह सुलह के शराइत मुसलमानों की शिकस्त और मग्लूबियत पर दलालत करते हैं जो राहे हक की एक कड़ी आज़माइश थी। मगर उसके अवाकिब (नतीजे) और नताइज पर सरसरी नज़र डाली जाती है तो यही सुलह फतहे मक्का का फतह याब करती है और फतहे मुबीन का पेश खेमा बनती है। इब्ने शिहाब ज़हरी का बयान है :

"हुदैबिया की सुलह से बढ़ कर उस से पहले इस्लाम में कोई फतह नहीं हुई क्योंकि जंग मौकूफ हो गई थी और लोग गुफ्तगू और मुबाहिसा

में मश्गूल हुए थे। पस जिस में कुछ भी अक्ल का हिस्सा था वह इस्लाम कुबूल कर लेता था।" (इब्ने हिशाम : जिल्द 1, स० 371)

इस क़ौल पर इब्ने हिशाम तब्सेरा करते हुए रक़म तराज़ हैं :

ज़हरी के इस क़ौल की दलील यह बात है कि जब हुज़ूर हुदैबिया में आए तो आपके साथ चौदह सौ आदमी थे। उसके दो ही बरस बाद जब आप फतहे मक्का के वास्ते आए हैं तब आपके साथ दस हज़ार अफ़राद थे।" (ऐज़न : स० 371)

इस मक़ाम पर फ़तहे मुबीन से मुराद वाक़-ए-हुदैबिया है। सुलह हुदैबिया ने दर हक़ीक़त फ़तहे मुबीन (फ़तहे मक्का) की राह खोल दी। यह इसलिए कि जब जंग का ख़तरा दर्मियान से जाता रहा और अमन इत्मीनान की सूरत पैदा हो गई तो मक्का और मदीना के दर्मियान सिलसिल-ए-आम्दो रफ़्त बे-खौफ़ व ख़तर शुरू हुआ। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, हज़रत अमर बिन आस जैसे दिलेर और मुदब्बिर हज़रात का कुबूले इस्लाम इसी सुलह का करिश्मा है और यही असबाबे तरक़्क़ी आहिस्ता-आहिस्ता फतहे मक्का का बाइस बने। (फ़तहुल-बारी : जिल्द 7, स० 355)

फतहे मक्का और तत्हीरे कअ्बा :

सुलहे हुदैबिया के बाद दीने हक़ ताईदे खुदा वन्दी और दाइ-ए-हक़ की मसाइ-ए-जमीला से जज़ीरा नुमाए अरब में फैलता रहा, अरबी क़बाइल जूक़ दर जूक़ मुसलमान होने लगे, दावते हक़ का दाइर-ए-अरब की सरहदों से बढ़ कर बैनुल-अक़्वामी हैसियत अख़्तियार करने लगा। क़ैसर व किसरा और दीगर सलातीन व उमरा को दावते इस्लाम दी गई, अमन व सुकून के लम्हात ने इस्लाम की सतवत व क़ुव्वत में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा किया।

कुफ़्र व शिर्क की सदियों पुरानी इजारा दारी टूटने लगी, उनके मज़्बूत क़िले लरज़ने लगे, समाजी ना इंसाफी की बुनियादों पर क़ाइम निज़ामे हयात के शीराज़े अदल व मसावात की नूरानी शुआओं से मुन्तशिर होने लगे। सुलहे हुदैबिया की शर्तों पर डेढ साल तक तरफ़ैन क़ाइम रहे। मगर कुरैश के हलीफ़ बनी बकर ने मुसलमानों के हलीफ़ खुज़ाआ पर हमला कर दिया। रात की तारीकी से फाइदा उठाते हुए कुरैश ने बाहमी मशवरा से बनी बकर का साथ दिया और बनू खुज़ाआ के अफ़राद को जी खोल कर अपनी अह्दे शिकन तल्वारों का निशाना बनाया। कुरैश और उसके हलीफ़ ने बनू खुज़ाआ की क़त्ल व ग़ारत गरी में कोई दक़ीक़ा उठा न रखा।

कुफ़्फ़ारे मक्का की अह्दे शिकनी से जो दर्दनाक तबाही पैदा हुई, उसके पेशे नज़र अमर बिन सालिम एक वफ़्द के साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और क़बील-ए-ख़ुज़ाआ की तबाही व बरबादी का तज़्किरा करके इम्दाद के तालिब हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया :

ख़ुदा की क़सम! मैं जिस चीज़ को अपनी ज़ात से रोकूंगा। तुम को भी उस से ज़रूर महफ़ूज़ रखूंगा।

कुफ़्फ़ारे कुरैश ने खुद मुआहदा शिकनी की और जब इस वाक़या की इत्तिला हुई तो उन्होंने अबू सुफ़ियान को मदीना भेजा ताकि फिर से मुआहदा की तज्दीद (नया) हो जाए। मगर अबू सुफ़ियान ना मुराद लौटे। कुफ़्फ़ारे मक्का ने अह्द नामा को तोड़ दिया था। अब अह्ले इस्लाम और कुफ़्फ़ारे मक्का के दर्मियान कोई चीज़ हाइल न थी।

तारीख़े आलम का वह मुबारक दिन और तारीख़ साज़ घड़ी आई जब मक्का की शाहराहों से इस्लामी लश्कर के दस्ते शान व शौकत के साथ गुज़र रहे थे और अमन का दाई ब-आवाज़ बुलन्द पुकारता हुआ आगे-आगे जा रहा था :

"जो हथियार डाल दे, जो अबू सुफ़ियान के मकान में पनाह ले ले, जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर ले, जो हरमे काबा में पनाह गुज़ीं हो जाए उसे मुज़्द-ए-अमन व सलामती है।"

मक्का की सर ज़मीन पर दुनिया की तारीख़ हर्ब व जंग की वह दर्दनाक रिवायत दुहराई न गई जिस में फातेह क़ौम मफ़्तूह क़ौम को कुचल कर रख देती और बेगुनाह शहरियों के ख़ून नाहक़ से कूचा व बाज़ार लाला ज़ार बनाए जाते और शहर के ईंट से ईंट बजा दी जाती, दरिन्दगी के इंसानियत सोज़ मनाज़िर दिखाए जाते।

आज रहमतुल-लिल-आलमीन व दाइ-ए-अमन, मुहसिने इंसानियत का लश्कर अपने बद-तरीन दुश्मनों पर फ़तहयाब हो कर उस सर ज़मीने मक्का में दाख़िल हो रहा था जिस में उनके लिए चन्द साल पेश्तर अरस-ए-हयात तंग कर दिया गया था। राहों में कांटे बिछाए जाते थे। मगर इस्लाम शिर्क व कुफ़्र, शर व फसाद ख़त्म करने आया था। इंसान कुशी और नस्ले आदमीयत का ज़ियाँ (नुक़सान) उसका मक़सद नहीं। इसी लिए दुनिया की तारीख़ में ऐसी अनोखी पुर अमन फतह कभी न देखी गई कि

फातेह कौम मफ़्तूह कौम के लिए **ला तस्रिब अलैकुमुल-यौमा।** मर मुज़्द-ए-जाँ फज़ा सुना रहा हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हरमे काबा में तशरीफ़ ले गये, तवाफ़े काबा किया फिर उस्मान बिन तलहा कलीद बरदार (काबा की कुन्जी रखने वाले) ख़ान-ए-काबा को तलब फरमाया। मरकज़े तौहीद का दरवाज़ा खोला गया रहमते आलम अन्दर तशरीफ़ ले गये, काबा में रखे हुए बुतों को गिराते जाते और फरमाते जाते :

जा-अल-हक़ व ज़हक़ल बातिला इन्नल बातिला काना ज़हूक़ा।

तत्हीरे काबा से फ़ारिग़ होने के बाद सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाबे काबा पर तशरीफ़ लाए। एक निहायत बलीग़ खुतबा इरशाद फ़रमाया जिस में इस्लाम के बैनुल-अक़्वामी निज़ामे मसावात और तौहीदे ख़ालिस की तब्लीग़ मुअस्सिर लब व लहजा में की गई।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और कोई उसका शरीक नहीं है। उसने अपना वादा सच्चा कर दिखाया अपने बन्दे की मदद की और दुश्मन की जमाअतों को उसने ख़ुद ही शिकस्त दी। आगाह हो जाओ! तमाम फ़ज़ीलतें (जानी हो या माली) जिसका दावा किया जा सके वह सब मेरे क़दमों के नीचे हैं सिवा उन दो के यानी बैतुल्लाह की दरबानी और हाजियों को पानी पिलाना आगाह हो जाओ। क़त्ले ख़ता भी जो कोड़े या लाठी से हो वह क़त्ल अमद की तरह है, उसकी दीयत मुग़ल्लज़ा है यानी सौ ऊंट जिन में चालीस हामिला ऊंटनियाँ हैं। ऐ गरोहे कुरैश! अल्लाह तआला ने जाहिलीयत की नुख़ुव्वत और गुरूर, आबा व अज्दाद पर फ़ख़्र करने को बातिल कर दिया है। सब लोग आदम से पैदा हुए हैं और आदम मिट्टी से हैं फिर आपने यह आयत तिलावत फरमाई। ऐ लोगो! हमने तुम को मर्द और औरत के मिलाप से पैदा किया और फिर तुम को शाख़ों और खानदानों में तक़्सीम कर दिया ताकि एक दूसरे को पहचानो और हक़ीक़त में अल्लाह के नज़्दीक सब से ज़्यादा बुज़ुर्ग वह है जो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी हो अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर है।

हुकूमते इलाहिया : मक्का की फतह के बाद रसूले गिरामी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो खुतबा इरशाद फरमाया वह इस्लाम की हक़ीक़ी रूह का तरजुमान और ख़ुदाए वाहिद व यक्ता की उलूहियत और हाकमीयत आला का वह बुनेयादी तसव्वुर था जिस पर इस्लामी निज़ाम

अक़ाइद व आमाल की इमारत क़ाइम है। अब शख़्सी और खानदानी तशख़्ख़ुस व इम्तियाज़ की रिवायतें ख़त्म कर दी गई थीं। कैसर व किसरा जैसी आमरीयत के अलर्रग़्म एक ऐसा निज़ामे हुक्मरानी दुनिया को अता किया जा रहा था जिसमें इंसानियत की फ़लाह की ज़मानत थी और हाकिमे वक़्त को महज़ ख़ुदाई अहकाम के निफ़ाज़ का इख़्तियार दिया गया था।

ख़ुदा सारी काइनात का ख़ालिक़, मुदब्बिर व मुनज़्ज़म है, वही हाकिमे मुतलक़ है, उसकी बादशाही में कोई शरीक नहीं, पूरा निज़ामे आलम तबई तौर पर ख़ुदा की हाकमीयत का पाबन्द है। इसी तरह इंसानी नज़्मे मुआशरत में भी हाकिमे वक़्त अल्लाह के नाज़िल किए हुए क़ानून का पाबन्द है।

तरजमा : कहो अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है और वही यक्ता है सबको मग़्लूब करके रखने वाला है। (रअद)

तरजमा : हुक्म अल्लाह के सिवा किसी के लिए नहीं।

आप फरमा दीजिए सारे अख़्तियारात अल्लाह ही के लिए हैं।

(आले इमरान : अ. 16)

तरजमा : उसी का है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है और जो कुछ उनके दर्मियान है और जो कुछ ज़मीन की तह में है। (सूर : ताहा)

तरजमा : आसमान से ज़मीन तक दुनिया का इंतिज़ाम वही करता है।

(सूरः सजदा)

तरजमा : पैरवी करो उस चीज़ की जो तुम्हारी जानिब नाज़िल की गई तुम्हारे रब की तरफ़ से और उसे छोड़ कर दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो। (सूर : आराफ)

तरजमा : हमने जो रसूल भेजा है इस लिए भेजा है कि अल्लाह के इज़्न से उसकी इताअत की जाए। (सूरः निसा : अ. 11)

तरजमा : जिसने रसूल की इताअत की उसने दरअसल अल्लाह की इताअत की। (सूर : निसा)

तरजमा : किसी मोमिन मर्द व औरत का यह हक़ नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मुआमला का फ़ैसला कर दे तो अपने इस मुआमला में उनके लिए कोई इख़्तियार बाक़ी रह जाए और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करे वह खुली गुम्राही में है। (सूरः अहज़ाब)

तरजमा : अल्लाह जिस को चाहे अपनी हुकूमत से नवाज़े। (सूर : नूर)

जो लोग उन में से ईमान लाए और नेक काम करते रहे उन से ख़ुदा का वादा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा जैसा उन से पहले लोगों को हाकिम बनाया था। (नूर : अ. 6)

तरजमा : ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और उन लोगों की जो तुम में से ऊलुल-अम्र हैं। (निसा : अ. 7)

तरजमा : ऐ रसूल! अपने रुफ़क़ा से मशवरा करो। (आले इमरान)

तरजमा : उन मुसलमानों के मुआमलात बाहमी मशवरा से अंजाम पाते हैं। (सूर : शूरा)

अहादीसे मुबारका :

तरजमा : सालेह हुक्मरां ज़मीन में अल्लाह के अमन का साया है। जिसके दामन में बन्दों में से हर मज़्लूम पनाह पाता है। (बुख़ारी)

❖ इस्लाम और इक़्तिदार दो जुड़वां भाई हैं। दोनों में से कोई एक दूसरे के बग़ैर दुरुस्त नहीं रह सकता। इस्लाम एक इमारत है और इक़्तिदार उसका दरबान जिस इमारत की बुनियाद न हो वह गिर जाती है और जिस का कोई निगहबान न हो वह मिट जाती है। (कंज़ुल-उम्माल)

इस्लाम का नज़्मे मम्लिकत किसी एक फ़र्द या खानदान की मौरूसी (खानदानी) हाकमीयत में मरकूज़ नहीं बल्कि ख़ुदा व रसूल के क़ानून की बालादस्ती कुबूल करने वाले हर फ़र्द को इस बात का इख़्तियार है कि वह सालेह इस्लामी फ़िक्र के मिन्हाज पर चलने वाले इंसान को अपना हाकिम, बादशाह मुक़र्रर करे और इस्लामी मुआशरे पर ऐसे हाकिम की इताअत लाज़िम होगी। (सूरः निसा)

तरजमा : ऐ ईमान वालो! इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और उन लोगों की जो तुम में से साहिबे अम्र हों।

इंतिख़ाब अमीर चन्द उमूर की पाबन्दी भी नागुज़ीर होता है :

साहिबे अम्र खुद इस्लामी क़ानून का मुत्तबअ् व साहिबे ईमान हो, ज़ेहनी और जिस्मानी लिहाज़ से उसके अन्दर कारोबारे हुकूमत के अंजाम देने की पूरी सलाहियत मौजूद हो, साहिबे इल्म और मुआमला फ़हम हो, हालात के नशीब व फराज़ को समझने और वाक़ेआत की तह तक पहुँचने वाली बसीरत रखता हो, उसके अन्दर दयानत दारी और तक़्वा की सिफ़त भी हो।

इस्लाम का निज़ामे हुकूमत दीन से जुदा नहीं बल्कि अमीरुल-मुमिनीन के फराइज़ में जहाँ इंसानी मुआशरा में अद्ल व इंसाफ़ का क़्याम और

ज़ुल्म व जौर की मुदाफ़िअत है, वहीं उसकी ज़िम्मेदारी आलाए कलिम-ए-हक़ और निज़ामे दीने हक़ का क़याम, इक़ामते सलात और ईताए ज़कात भी है। चुनांचे हादि-ए-बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिहलत के बाद मुसलमानों में जो निज़ाम क़ाइम हुआ, वह इस्लाम के आईने हुक्मरानी का दरख़शन्दा अमली सुबूत था और वह अपनी ख़ुसूसियात के लिहाज़ से मुम्ताज़ व मुन्फ़रिद था। जिसने सिर्फ़ मुल्की व सियासी मुआमलात को ही अपना फ़र्ज़ मंसबी न समझा, बल्कि इस्लाम के निज़ामे अक़ाइद व अख़्लाक़ की तब्लीग़ व इशाअत के फराइज़ अंजाम दिए और नियाबते रसूले अकरम का मुक़द्दस फ़रीज़ा अंजाम देते रहे।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपनी बैअ़ते आम्मा के बाद जो ख़ुत्बा इरशाद फरमाया, उस से इस्लाम में ख़लीफ़-ए-रसूल की हैसियत और अमीर के हुदूदे इमारत व इख़्तियारात पर रौशनी पड़ती है।

तरजमा : साहिबो! मैं तुम पर हाकिम मुक़र्रर किया गया हूँ, हालांकि मैं तुम लोगों में से सबसे बेहतर नहीं हूँ। अगर मैं अच्छा काम करूं तो मेरी एआनत (मदद) करो और अगर मैं बुराई की तरफ़ जाऊं मुझे सीधा करो। सिद्क़ अमानत है और किज़्ब (झूठ) ख़्यानत है। इन्शाअल्लाह तुम्हारा ज़ईफ़ फ़र्द भी मेरे नज़्दीक क़वी (मज़्बूत) है यहाँ तक कि मैं उसका हक़ वापस दिला दूँ। इन्शाअल्लाह तुम्हारा क़वी फ़र्द भी मेरे नज़्दीक ज़ईफ़ है यहाँ तक कि मैं उस से दूसरों का हक़ दिला दूँ। जो क़ौम जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह छोड़ देती है उसको ख़ुदा ज़लील व ख़्वार कर देता है और जिस क़ौम में बदकारी आम हो जाती है ख़ुदा उसकी मासियत (गुनाह) को भी आम कर देता है। ख़ुदा और उसके रसूल की मैं इताअत करूं तो मेरी इताअत करो, लेकिन जब ख़ुदा और उसके रसूल की नाफरमानी करूं तो तुम पर मेरी इताअत नहीं। अच्छा अब नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ ख़ुदा तुम पर रहम करे। (तबक़ात इब्ने सअद जिल्द 3, स० 129)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने पहली मज्लिसे शूरा के सामने ख़ुत्बा दिया, उसके अल्फ़ाज़ यह हैं :

"मैंने आप हज़रात को जिस ग़रज़ के लिए तक्लीफ़ दी है वह इसके सिवा कुछ नहीं कि मुझ पर आपके मुआमलात की अमानत का जो बार डाला गया है उसे उठाने में आप मेरे साथ शरीक हों, मैं आप ही के अफ़राद में से एक फ़र्द हूँ और आज आप ही लोग वह हैं जो हक़ का इक़रार करने

वाले हैं, आप में से जिस का जी चाहे मुझ से इख़्तिलाफ़ करे और जिसका जी चाहे मुझ से इत्तिफ़ाक़ करे, मैं यह नहीं चाहता कि आप मेरी ख़्वाहिश की पैरवी करें।"

(किताबुल-ख़राज)

ख़िलाफ़ते राशिदा का ज़र्रीं अहद, इस्लाम के हक़ीक़ी निज़ामे हुक्मरानी का नुमाइन्दा था, जो इंसान के ख़लीफ़तुल्लाह फ़िल-अर्ज़ के तसव्वुर की अमली तस्वीर पेश करता है, तब्क़ाती कश्मकश और समाजी ना इंसाफ़ी के अलर्रग़्म के अद्ल व मसावात के ताबनाक उसूल पेश करता है, और शैतानी वसवसों के ज़ेरे असर इंसानों के खुद साख़्ता सारे इफ़रीयती (भूत परेती) निज़ामे दीन व शरीअ़त और क़ैसरी (बादशाही) अंदाज़े हुकूमत की लानतों से पाक करके दुनिया को सालेह मुआशरा और निज़ामे हुक्मरानी अता करता है।

चमनिस्ताने रिसालत का गुले सर सब्द :

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा हैं। हज़रत उम्मुल-फ़ज़ल रज़ि अल्लाहु अन्हा इज़्तिराब व तश्वीश (परेशानी) के आलम में हाज़िरे बारगाह होती हैं, रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मुल-फ़ज़ल के चेहरे पर इज़्तिराब के आसार देखे और सबब दरयाफ़्त फरमाया, उम्मुल-फ़ज़ल ने जवाब दिया, या रसूलुल्लाह! गुज़िश्ता शब मैंने इंतिहाई परेशान कुन ख़्वाब देखा है। सरकार ने इरशाद फरमाया, वह ख़्वाब क्या है? अर्ज़ किया नाक़ाबिले बयान ख़्वाब है। इरशाद हुआ बयान करो! उम्मुल-फ़ज़ल ने अर्ज़ किया :

तरजमा : मैंने ख़्वाब देखा कि आपके जिस्मे मुबारक से एक टुक्ड़ा काट कर अलाहिदा किया गया और फिर वह टुक्ड़ा मेरी गोद में डाल दिया गया।

रसूले रहमत ने ख़्वाब की ताबीर इरशाद फरमाई :

तरजमा : तूने अच्छा ख़्वाब देखा है। इन्शाअल्लाह फातिमा के यहाँ लड़का पैदा होगा जिसे तेरी गोद में दिया जाएगा।

(मुस्तदरक हाकिम जिल्द 1, स० 176)

हज़रत उम्मुल-फ़ज़ल का जवाब शअ्बानुल-मुअज़्ज़म 4 हिजरी को शर्मिंद-ए-ताबीर हुआ और बाग़े रिसालत में एक शादाब फूल खिला, जिसकी महक से चमनिस्ताने रिसालत अतर बीज़ हो गया। यह गुल सर सब्द हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा थे। जो हिल्म (नर्म दिल) व बुर्द बारी, (सब्र) शुजाअत व बसालत (बहादुरी) ईसार व अज़ीमत का

बेमिसाल पैकर बने। हज़रत हुसैन की वेलादत ने ख़ानवाद-ए-नुबुव्वत में ख़ुशी व मुसर्रत की लहर दौड़ा दी, जो भी हुसैन को देखता बेसाख़्ता प्यार करने लगता। सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर रोज़ जिगर गोश-ए-रसूल को देखने जाया करते।

एक दिन हज़रत उम्मुल-फ़ज़ल बिन्तुल-हारिस गुलशने रिसालत के गुले शादाब हुसैन को लेकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुई और आग़ोशे रिसालत में दे दिया, हुसैन आग़ोशे नुबुव्वत में थे और आंहुज़ूर की मुबारक आंखों से अश्कों (आंसुओं) के मोती झड़ने लगे। सरकार ने इरशाद फरमाया :

"मुझे जिब्रील ने ख़बर दी है कि मेरे इस बेटे को मेरी उम्मत शहीद करेगी, फिर जिब्रील ने मुझको उसकी शहादतगाह की सुर्ख़ मिट्टी दी।"

(मुस्तदरक : जिल्द 3, स० 77)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं :

"मेरे घर में हसन व हुसैन खेल रहे थे, तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया, आपके बाद आपके इस बेटे को आपकी उम्मत शहीद कर देगी। जिब्रील का इशारा हुसैन की तरफ़ था। जिब्रील ने आपकी ख़िदमत में थोड़ी सी मिट्टी पेश की, आपने उसे सूंघ कर फरमाया, इस मिट्टी से रंज व बला की बू आती है और मुझे बुला कर फरमाया, ऐ उम्मे सलमा! जब यह मिट्टी ख़ून बन जाए तो समझ लेना कि मेरा बेटा शहीद हो गया। फिर मैंने उस मिट्टी को शीशी में बन्द कर दिया।"

(दलाइलुन्नुबुव्वह : स० 484)

इफ़्तिराक़े उम्मत : हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद उम्मते मुस्लेमा जिस इफ़्तिराक़ व इंतिशार से दो चार हुई वह इस्लामी तारीख़ का बड़ा ही दर्दनाक वाक़या है। मदीना मुनव्वरा में मुहाजरीन व अंसार के इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के हाथ पर ख़िलाफ़त की बैअते आम हुई। बैअ़ते ख़िलाफ़त के वक़्त आलमे इस्लाम के हालात किस क़द्र नाज़ुक थे और शर व फ़साद कितनी सुरअत के साथ फैलता जा रहा था। उसका अंदाज़ा हज़रत अली के इस ख़ुतबा से किया जा सकता है, जो आपने बैअ़ते ख़िलाफ़त के बाद महज़रे आम में इरशाद फ़रमाया था।

अल्लाह तआला ने अपनी किताब को हादी बना कर भेजा है जो ख़ैर व शर को वज़ाहत के साथ बताती है। लिहाज़ा ख़ैर को इख़्तियार कीजिए

और शर से किनारा कश रहिए। अल्लाह तआला ने बहुत सी चीज़ों को हुर्मत का दरजा दिया है, उन में से सबसे फ़ाइके़ हुर्मत मुसलमान की है, तौहीद व इख़्लास के ज़रिआ मुसलमानों के हुकू़क़ को अल्लाह ने मज़्बूती से मरबूत कर दिया है, मुसलमान वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ से तमाम मुसलमान महफ़ूज़ रहें, मगर यह कि दीन व शरीअ़त ही का तक़ाज़ा हो कि मुसलमान का एहतसाब (जाँच) किया जाए और उस पर शरई क़ानून जारी किया जाए।

किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं है किसी किसी मुसलमान को ईज़ा पहुँचाए मगर यह कि ऐसा करना वाजिब हो। अवाम व ख़्वास दोनों के हुकू़क़ अदा करने में उजलत से काम न लीजिए। लोग आप के सामने हैं और पीछे क़्यामत है जो आगे बढ़ा रही है। अपने आपको हल्का फुल्का रखिए कि मंज़िल तक पहुँच सकें। आख़िरत की ज़िन्दगी लोगों की मुंतज़िर है।

ख़ुदा के बन्दों और उनकी सर ज़मीन के हुकू़क़ की अदाइगी के सिलसिला में अल्लाह से डरते रहिए। बहाइम (मवेशी) और ज़मीन के बारे में भी (क़्यामत के दिन) आप मस्ऊल (जवाबदेह) होंगे।

फिर मैं कहता हूँ कि अल्लाह की इताअत कीजिए और उसकी मअ़सियत (गुनाह) व ना-फ़रमानी से बचिए। अगर आप कारे ख़ैरे देखें तो उसे अख़्तियार करें और अगर शर देखें तो उसे छोड़ दें।

तरजमा : और उस (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम ज़मीन (मक्का) में क़लील (कम) और ज़ईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे और डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उड़ा (न) ले जाएं (यानी बेजान व माल न कर दें) तो उसने तुम को जगह दी और अपनी मदद से तुमको तक़्वियत बख़्शी और पाकीज़ा चीज़ें खाने को दें ताकि (उसका) शुक्र अदा करो।

(अल-बिदायह वन्निहायह 7 : स० 277)

अमीरे शाम हज़रत मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु ने क़ेसासे उसमान का दावा किया। बात इस हद तक बढ़ी कि सफ़्फ़ैन का ख़ून आशामे मारका गर्म हो गया। मुसलमानों की अस्करी कुव्वत जो कल तक आलाए कलिम-ए-हक़ और हुदूदे विलायते इस्लामी की तौसीअ़ में मसरूफ़ थी, आज वह खुद ही दस्त ब-गरीबाँ हो गई और तरफ़ैन की तल्वारें अपनी ही इस फौजी ताक़त को तबाह करने लगीं, जिसने कै़सर व किसरा की अज़ीम ताक़तों का ख़ात्मा करके इस्लामी इक़्तिदार का परचम लहराया था।

तहकीम (पंचायत) पर सफ़्फ़ैन का मअ्रका तो ख़त्म हो गया मगर दिलों के गुबार साफ़ न हुए। इसी सियासी इख़्तिलाफ़ के नतीजा में दो मज़्हबी फ़िर्क़े शीआ और ख़वारिज वजूद में आए।

तहकीम (सानी) से हज़रत अली व मुआविया की जंग तो रुक गई मगर इख़्तिलाफ़ का ख़ात्मा न हो सका। हज़रत अमीर मुआविया ने अपने आपको अमीरुल-मुमिनीन कहलाना शुरू कर दिया। शामियों की क़ुव्वत मुस्तहकम (मज़्बूत) होने लगी और हज़रत अली के हामी इराक़ियों के दर्मियान कशमकश और इख़्तिलाफ़ की ख़लीज वसीअ् होती चली गई। हालत यह हो गई थी :

उनके अमीर अली बिन अबी तालिब इस अस्र में रू-ए-ज़मीन पर बसने वाले इंसानों में सबसे आला व अफ़्ज़ल इंसान थे, सबसे ज़्यादा अल्लाह के इबादत गुज़ार और सबसे ज़्यादा दुनिया से बेग़रज़ और बेरग़बत, सबसे ज़्यादा इल्म व फ़ज़्ल के हामिल। सबसे ज़्यादा ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले इंसान थे, फिर लोगों ने उनको बेयार व मददगार छोड़ दिया, उन से किनारा कश हो गये। यहाँ तक कि अमीरुल-मुमिनीन अपनी ज़िन्दगी से उक्ता गये और मौत की तमन्ना करने लगे, कहते थे यह ......(अपनी रेश मुबारक की तरफ़ इशारा करके) उसके (अपने सर की तरफ़ इशारा करके) ख़ून से रंग दी जाएगी। और बिल-आख़िर यही हुआ।

(अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 7, स० 328)

इब्ने मुल्जिम के हाथों जब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू शदीद ज़ख़्मी हुए और उम्मीदे हयात बाक़ी न रही तो हज़रत हसन व हुसैन को वसीयत फरमाई :

"ऐ अब्दुल-मुत्तलिब के फ़रजन्दो! मुसलमानों का बेतकल्लुफ़ ख़ून न बहाना। तुम कहोगे अमीरुल-मुमिनीन क़त्ल कर दिए गये, मगर ख़बरदार! सिवाए मेरे क़ातिल के किसी और को क़त्ल न करना। देखो! अगर मैं उसके वार से मर जाता हूँ तो उस पर भी एक ही वार करना। उसका मसला न करना क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि वह फरमाते थे, ख़बरदार! किसी ज़ी रूह को मार कर उसका मिसला न किया जाए। ख़्वाह वह भोंकने वाला कुत्ता ही क्यों न हों।"

(अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 7, स० 328)

जुन्दुब इब्ने अब्दुल्लाह ने कहा :

ऐ अमीरुल-मुमिनीन! अगर आप इंतिक़ाल फरमा गये तो क्या हम हसन की बैअ़त कर लें :

जवाब दिया :

न तो मैं हुक्म देता हूँ और न ही रोकता हूँ। तुम खुद ही ग़ौर व ख़ौज़ करो।

एक दूसरी रिवायत में है लोगों ने कहा :
क्या आप अपना ख़लीफ़ा नाम्ज़द न करेंगे?

जवाब दिया :

तरजमा : नहीं, मैं काम तुम पर छोड़ता हूँ जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने छोड़ा था। लोगों ने कहा जब आप ख़ुदा के पास जाएंगे क्या जवाब देंगे? जब कि आपने हमें तन्हा छोड़ दिया। फरमाया मैं कहूँगा इलाही! तूने मुझे उनका ख़लीफ़ा बनाया जब तक तू ने मुझे चाहा, फिर तूने मुझे मौत दे दी और मैंने तेरी ज़ात को उन में छोड़ा, पस अगर तू चाहे तो उनकी इस्लाह कर और अगर तू चाहे तो उन्हें बरबाद कर।

बैअ़ते हसन : हज़रत अली की शहादत के बाद अमीर मुआविया के मक़्बूज़ा इलाक़ा के अलावा सारे आलमे इस्लाम की निगाहे इंतिख़ाब हज़रत हसन पर पड़ी जो हर लिहाज़ से हुकूमते इलाहिया की सर बराही और मंसबे ख़िलाफ़त के अह्ल थे। शहादते अली के दूसरे दिन जब आप जामे कूफ़ा में दाख़िल हुए तो एक बड़ी जमीअत ने आपको मंसबे ख़िलाफ़त कुबूल करने पर मज्बूर किया। सबसे पहले क़ैस बिन सअद ने यह कह कर बैअ़त की।

अपना हाथ बढ़ाइए मैं आप से ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ल की किताब और उसके नबी की सुन्नत और मुफ़्सिदों से जंग करने पर बैअ़त करता हूँ। हसन ने कहा :

"ख़ुदा की किताब और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर कहो। यही सब शर्तो को शामिल है।" (तारीख़े तबरी : जिल्द 4, स० 121)

अमीरे शाम हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु को जब शहादत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू और हज़रत हसन की ख़िलाफ़त का इल्म हुआ तो हज़रत हसन की नर्म खोई और सुलह पसन्दाना ख़ू को मद्दे नज़र रखते हुए फौजी सर गरमियाँ शुरू कर दीं।

अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ की सरकरदगी में एक मुसल्लह लश्कर इराक़ की जानिब रवाना कर दिया जो "आबार" होता हुआ

"मदाइन" की तरफ़ बढ़ा। उधर क़ैस बिन सअ़द और दीगर इराक़ियों ने हज़रत हसन को जंग की तैयारी के लिए उभारना चाहा। मगर आप साबेक़ा जंगों के तल्ख़ तज्रुबात की बिना पर जंग से बचना चाहते थे। जब अह्ले शाम की पेशकश और हवा ख़्वाहों का इसरार देखा तो आमादा हो गये और क़ैस बिन सअ़द को बारह हज़ार फौज के साथ अह्ले शाम से क़िताल के लिए भेजा। खुद भी एक फौज के साथ शाम की जानिब रवाना हुए, मदाइन के पास इक़ामत गुज़ीं हुए।

इराक़ी फौज में शोर व ग़ोग़ा बुलन्द हुआ कि क़ैस बिन सअ़द क़त्ल हो गये। लोग भागने लगे और एक दूसरे का सामान लूटने लगे, यहाँ तक कि हज़रत हसन का ख़ेमा उखाड़ दिया गया, जिस फ़र्श पर आप बैठते थे उसे भी खींचा जाने लगा, इस तूफ़ाने बद-तमीज़ी में हज़रत हसन भी ज़ख़्मी हुए और मैदान से उठ कर क़स्रे मदाइन में तशरीफ़ ले गए।

अल्लामा इब्ने कसीर रक़म तराज़ हैं :

"अह्ले इराक़ ने हज़रत हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा का इंतिख़ाब इस नीयत से किया था कि वह अह्ले शाम से जंग करेंगे। लेकिन उनका मक़्सद पूरा नहीं हुआ, जिसके ज़िम्मेदार खुद अह्ले इराक़ थे, क्योंकि वह खुद जंग से पहलू तही करते थे और अपने क़ाइदीन की बातें मानते न थे। अगर वह अक़्ल व शुऊर रखते तो इस नेमते खुदा वन्दी की क़द्र करते जो उन्हें सिब्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और एक अज़ीम सहाबी, और सहाबा में भी आलमे फरज़ाना, साहबे अज़ीमत शख़्सियत की बैअ़त से हासिल हुई थी।" (अल-बिदायह : जि०. **8**, जिल्द **16**)

हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जब हवा का रुख़ बदला हुआ देखा, अपने हामियों की बुज़्दिली व इंतिशार और शामियों के लश्कर की तेज़ रफ़्तार पेश क़दमी देखी तो आप ना मुसाइदत रोज़गार के बाइस मायूस हो गये। उमूरे ख़िलाफ़त से बेज़ार हो कर आपने हज़रत अमीर मुआविया इब्ने अबी सुफ़ियान को एक ख़त तहरीर फरमाया जिस में सुलह की तज्वीज़ पेश की और चन्द शर्तों के साथ उमूरे ख़िलाफ़त से दस्त बरदारी का इज़्हार फरमाया था।

दूसरी जानिब हज़रत अमीर मुआविया ने भी एक सादा काग़ज़ पर मुहर लगा कर हज़रत हसन के पास भेज दिया कि वह जो शर्तें चाहें तहरीर कर दें। मैं उन्हें तस्लीम कर लूँगा, आप मेरे हक़ में ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो जाएं।

हज़रत हसन का ज़ख़्म मुन्दल हो चुका था वह कूफ़ा पहुँचे, अमीर मुआविया भी कूफ़ा आ गये, दोनों ने बाहम सुलह कर ली और हज़रत हसन ने उम्मत को ख़ूंरेज़ी से बचाने के लिए अमीर मुआविया के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी कर ली। शराइत सुलह यह थे :

तरजमा : पस हसन ने शर्त लगाई कि वह कूफ़ा के बैतुल-माल जमा पचास हज़ार दृहम ले लेंगे और दारुल-जर्द का ख़राज उनके लिए मख़्सूस होगा और हज़रत अली को उनके रू-ब-रू गालियाँ न दी जाएं।

(अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 8, स० 14)

सुलह के शराइत पर तरफ़ैन का इत्तिफ़ाक़ हो जाने के बाद हज़रत अमीर मुआविया की ख़्वाहिश पर हज़रत हसन ने एक तक़रीर फरमाई :

"अम्मा बाद, लोगो! खुदा ने हम में से पहले शख़्स के ज़रिया से तुम्हारी हिदायत की और हम में से आख़िर शख़्स के ज़रिया से तुम को कश्त व ख़ून से बचा लिया। और सुनो! इस हुकूमत की एक मुद्दत व मीआ़द है और दुनिया दस्त बदस्त फिरा करती है। हक़ तआला अपने नबी से फरमा चुका है।"

क्या मालूम कि वह (हुकूमत) तुम्हारी आज़माइश हो और चन्द दिन की आसाइश।

इस सुलह के बाद ख़िलाफ़ते राशिदा के दौर का ख़ात्मा हो गया और मुलूकियत की दाग़ बेल पड़नी शुरू हुई।

तरजमा : हज़रत सफ़ीना से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया मेरे बाद ख़िलाफ़त तीस साल रहेगी, फिर बादशाहत क़ाइम हो जाएगी। (अल बिदायह जिल्द 8, स० 16)

इस्लाम में इस अज़ीम सुलह के बाद रसूले गिरामी वक़ार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह पेशीन गोई हर्फ़-ब-हर्फ़ सादिक़ आई, जो तक़रीबन चालीस साल क़ब्ल हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु के बारे में इरशाद फरमाई गई थी।

तरजमा : एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर जल्वा फरमा हुए और हसन बिन अली आपके पहलू में बैठे थे, सरकार कभी लोगों की जानिब निगाह करते और कभी हसन को देखते, फिर इरशाद फरमाया, एक लोगो! बेशक मेरा यह बेटा सरदार है, अन्क़रीब अल्लाह तबारक व तआला उसके ज़रिया मुसलमानों के दो अज़ीम गरोहों के दर्मियान सुलह कराएगा। (अल बिदायह जिल्द 8, स० 16)

❖❖❖

हज़रत अमीर मुआविया
रज़ि अल्लाहु अन्हु
की वफ़ात और यज़ीद की वसीयत

रजब 60 हिजरी में जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु शदीद बीमार हुए और ज़िन्दगी की उम्मीद बाक़ी न रही तो आपने अपने बेटे यज़ीद को एक मुअस्सिर (असरदार) वसीयत फरमाई और कहा :

तरजमा : बेटा! मैंने तुझे सफर की ज़हमत से बचा लिया और तेरे लिए हर अम्र (काम) को सहल (आसान) कर दिया, तेरे दुश्मनों को राम कर दिया। तेरे लिए अरब की गर्दनों को झुका दिया। (तेरे लिए मैंने जो कुछ जमा किया है वह किसी ने न किया होगा) मुझे इस बात का अन्देशा नहीं है कि अम्रे ख़िलाफ़त जो तेरे लिए मुक़र्रर हो चुका है। कुरैश में इन चार शख़्सों के सिवा तुझ से इस बाब में कोई निज़अ् न करेगा। हुसैन इब्ने अली, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर, अब्दुर्रहमान इब्ने अबी बकर। लेकिन इब्ने उमर तो उनको इबादत के सिवा किसी चीज़ से सरोकार नहीं है। जब उनके सिवा कोई बैअ़त करने से बाक़ी न रहेगा तो वह भी तेरी बैअ़त कर लेंगे, और हुसैन इब्ने अली एक सीधी साधी तबीअत के मालिक हैं मगर इराक़ी उन्हें ख़ुरूज पर आमादा करेंगे, पस अगर यह ख़ुरूज करें और तुम्हें कामयाबी हासिल हो तो दरगुज़र से काम लेना, उनका बहुत बड़ा हक़ है। (वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे हैं) और अब्दुर्रहमान इब्ने अबी बकर की कोई ज़ाती राय नहीं। उनके अहबाब जो करेंगे वह भी करेंगे, और उनकी जुरअत व हिम्मत औरतों से इख़्तिलात में है। हाँ जो शख़्स तुम पर शेर की तरह हमला करेगा और लोमड़ी की तरह चालाक है, जब कभी उसको मौक़ा मिलेगा ज़रूर हमला आवर होगा, इब्ने ज़ुबैर है, अगर वह ऐसा करे और तुम को उस पर ग़लबा हासिल हो जाए तो उसको बेदस्त व पा कर देना।"

इब्ने कसीर ने अपनी तारीख़ में यह रिवायत नक़्ल करते हुए लिखा है :

तरजमा : और सही यह है कि अब्दुर्रहमान इब्ने अबी बकर हज़रत अमीर मुआविया की मौत से दो साल क़ब्ल वफ़ात पा चुके थे।

यज़ीद का अह्दे इमारत और अह्ले हक़ की आज़माइश :

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद दमिश्क़ के तख़्त पर यज़ीद बिन मुआविया मुतमक्किन हुआ। इस तरह इस्लाम में पहली बार एक ना अह्ल, ना ख़ुदा तरस, फाजिर के हाथों इक्तिदार की बाग डोर आ गई, जिसने हमेशा के लिए इस्लामी नज़्मे मम्लिकत के शीराज़े मुंतशिर कर दिए, हलाकत व बरबादी उम्मते मुस्लेमा का मुक़द्दर बन गई।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु ने ऐसे ही साहिबे इक्तिदार अमीर के बारे में फरमाया था :

"रब्बे काबा की क़सम! मैं जानता हूँ कि अरब कब हलाक होंगे, जब उनकी क़्यादत (लीडरी) वह शख़्स करेगा जिसने जाहिलीयत का ज़माना नहीं देखा और इस्लाम में भी उसे रुसूख़ व ख़ुसूसियत हासिल नहीं।"

(अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 8, स० 232)

यज़ीद ने तख़्त नशीनी के फौरन बाद हज़रत हुसैन इब्ने अली, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर से बैअत लेने का फ़ैसला किया। उसे शाम और इराक़ के लोगों पर मुकम्मल एतमाद था, मगर अह्ले हिजाज़ की मुख़ालिफ़त से अन्देशा महसूस करता था कि कहीं हरमैन में मुक़ीम आलमे इस्लाम की मुक़्तदिर हस्तियाँ जिन्होंने उसकी बैअत नहीं की है उसकी मुख़ालिफ़त पर आमदा हो जाएं, और इस तरह उसकी इमारत व सियादत मुख़ालिफ़तों से दो चार हो जाए। चुनांचे उसने मदीना के गवर्नर वलीद बिन उतबा बिन अबी सुफ़ियान को एक ख़त लिखा :

⁂

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बेइस्मेही तआला अमीरुल मुमिनीन यज़ीद की जानिब गे वलीद बिन उत्बा के नाम। अम्मा बाद बिला शुबह मुआविया अल्लाह के बन्दे थे, अल्लाह ने उन्हें इज़्ज़त बख़्शी और उन्हें ख़िलाफ़त दी और रू-ए-ज़मीन का मालिक बनाया, तो उन्होंने मुक़र्रर मीआद तक ज़िन्दगी गुज़ारी और मुक़र्ररह वक़्त पर इंतिक़ाल फरमाया। अल्लाह उन पर रहम करे उन्होंने अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारी और नेक व मुत्तक़ी बन कर वफ़ात पाई। यज़ीद ने एक छोटे से टुक्ड़े पर जो चूहे के कान की तरह था यह तहरीर अलाहिदा (अलग से) लिख दी।

अम्मा बाद, तुम हुसैन, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर से

बैअ़त लो और अम्र (हुक्म) में कोई गुंजाइश नहीं हत्ता कि वह बैअ़त करें। वस्सलाम।

वालि-ए-मदीना को जब यज़ीद का हुक्म मिला तो उसने मुआमले की नज़ाकत को पेश नज़र रखते हुए मरवान बिन हकम को मशवरा के लिए तलब किया, सूरते हाल से आगाह किया। मरवान ने कहा, मेरी राय यह है कि इसी वक़्त उन लोगों को तलब करो और उन से यज़ीद की बैअ़त लो और इताअत का इक़रार लो, मान जाएं तो बेहतर है, इंकार करें तो सब की गर्दन उड़ा दो। उनको मुआविया के इंतिक़ाल की ख़बर न हो।

(तारीख़े तबरी जिल्द **4**, स० **25**, इब्ने ख़ल्दून जिल्द **5**, स० **61**)

उसी वक़्त दारुल-इमारत से तलबी के अहकामात जारी कर दिए गये।

हज़रत हुसैन दारुल-इमारत मदीना में : वलीद बिन उत्बा का फेरिस्तादा (क़ासिद) बेवक़्त हज़रत हुसैन के पास तलबी का पैग़ाम ले कर पहुँचा, इमाम हुसैन ने समझ लिया कि कोई अहम बात हो गई है, शायद उन्हें किसी नाक़ाबिले कुबूल बात के लिए मज्बूर किया जाए। घर आए गुलामों और बही ख़्वाहों को साथ लिया। दारुल-इमारत के दरवाज़े पर रोक कर कहा "तुम लोग यहीं रहो" अगर अन्दर से शोर व ग़ोग़ा बुलन्द हो या मैं तुम्हें पुकारूं तो फौरन अन्दर आ जाना। जब तक मैं बाहर न आ जाऊं तुम लोग यहीं रहना।

इमाम हुसैन अन्दर दाख़िल हुए। वलीद के पास मरवान मौजूद था। आप ने सलाम किया और बैठ गये। वलीद बिन उत्बा ने यज़ीद का ख़त पढ़ा, अमीर मुआविया की मौत की खबर दी और बैअ़त का मुतालबा किया। हज़रत इमाम हुसैन ने **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन**। पढ़ा और कहा, खुदा माआविया पर रहम करे फिर कहा :

मुझ जैसा शख़्स पोशीदा तौर पर बैअ़त नहीं करता, क्या बात है कि तुम मुझको इस पर मज्बूर करते हो? लेकिन जब लोग इकट्ठा हो जाएं तो तुम हम को भी उनके साथ बुलाओ, तो यह कोई बात होगी।

(अल बिदायह जिल्द **8**, स० **147**)

वलीद ने जाने की इजाज़त दे दी। मरवान ने वलीद की तरफ मुतवज्जेह हो कर कहा :

खुदा की क़सम! अगर यह इस वक़्त तुझ से जुदा हो गये तो तुम्हारे और उसके दर्मियान क़त्ल व ख़ूंरेज़ी ज़्यादा होगी, इसलिए इसको क़ैद कर लो और उसको जाने न दो, यहाँ तक कि यह बैअ़त कर ले वरना उसकी गर्दन मार दो।

मरवान की इस दरेदा ज़हनी पर हज़रत हुसैन ने इरशाद फ़रमाया :

ऐ इब्ने ज़ुरक़ा! क्या तू मुझे क़त्ल करेगा? तू झूठा है। बख़ुदा तूने गुनाह किया। (अल बिदायह वन्निहायह जिल्द 8, सं० 147)

हज़रत हुसैन दारुल-इमारत से बाहर निकले तो मरवान ने वलीद की जानिब मुतवज्जेह होते हुए कहा :

ख़ुदा की क़सम! इसके बाद तू हुसैन को कभी न देखेगा।

वलीद ने मरवान को जवाब देते हुए कहा :

तरजमा : ख़ुदा की क़ंसम ऐ मरवान मैं हुसैन के क़त्ल के एवज दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों को लेना पसन्द न करूंगा, सुब्हानल्लाह! मैं हुसैन को इस बात पर क़त्ल करूं कि वह बैअ़ते यज़ीद से इंकार करते हैं। बख़ुदा! मैं गुमान करता हूँ कि जो शख़्स हुसैन को क़त्ल करेगा वह यक़ीनन क़्यामत के दिन ख़फ़ीफ़ुल-मीज़ान होगा।

मदीना से रवानगी : दारुल-इमारत से वापसी के बाद हज़रत इमाम हुसैन ज़हनी कश मकश में मुब्तला हो गये। वह यज़ीद की बैअत को नापसन्द करते थे। उसकी ख़िलाफ़त की बैअ़त करके क़ैसरीयत की रिवायत पर मुहर तस्दीक़ सब्त करना उनके हक़ परस्त ज़मीर के ख़िलाफ़ था, साथ ही आमतुन्नास के फ़ैसला के ख़िलाफ़ तरज़े अमल से उम्मत में क़त्ल व ख़ूंरेज़ी का बाज़ार गरम करना मुनासिब न समझते थे।

दोबारा मुतालबा बैअ़त किया गया तो हज़रत इमाम ने एक रोज़ की मोहलत ली। मगर किसी फ़ैसला पर न पहुँचने के बाइस मदीना तैयबा से अपने अह्ल व अयाल, भाई, भतीजों के साथ आज़िमे सफ़र हुए कि वह अमीर मदीना की तरफ़ से मुतालब-ए-बैअ़त की सख़्ती और इंकार के नतीजा में हरमे नब्वी को क़श्त व ख़ून की आमाजगाह बनाना नहीं चाहते थे। मगर मंज़िल का तऐयुन और सिम्ते सफ़र का कोई क़तई फ़ैसला नहीं कर सके थे। मुहम्मद बिन हन्फ़ीया ने हज़रत इमाम से दौराने गुफ़्तगू फ़रमाया :

"भाई जान! तमाम ख़ल्क़ में आप से बढ़ कर किसी को मैं अज़ीज़ नहीं रखता। कलिम-ए-ख़ैर ख़्वाही आप से बढ़ कर किसी के लिए मेरे मुँह से नहीं निकलेगा। आप अपने साथियों के साथ यज़ीद बिन मुआविया और तमाम शहरियों से अलग रहिए। अपने दुआत और क़ासिद लोगों के पास भेजिए कि वह आप से बैअ़त करें। अगर लोग आप से बैअ़त कर लें तो ख़ुदा का शुक्र बजा लाइए, अगर आम मुसलमान किसी दूसरे की बैअ़त पर

मुत्तफ़िक़ हो जाएं तो उस में आपके दीन व अक़्ल, मुरव्वत और फ़ज़्ल को खुदा कोई नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा। शहरों में से किसी शहर में लोगों की किसी जमाअत में आपके जाने से मुझे यह ख़ौफ़ है कि उनमें इख़्तिलाफ़ पैदा हो। एक जमाअत आपकी हामी और दूसरी मुख़ालिफ़, फिर जब क़त्ल व ख़ूंरेज़ी की नौबत आए तो सबसे पहले नेज़ों का रुख़ आपकी जानिब हो और आप जैसा शख़्स जो ज़ाती शराफ़त और खानदानी बुज़ुर्गी में ख़ैरे उमम है, बहुत आसानी के साथ जान से हाथ धो बैठे और जुमला अह्ल व अयाल तबाही का निशाना बनें।"

हज़रत इमाम हुसैन ने पुर-खुलूस मशवरा को सुन कर फरमाया, तुम बताओ फिर मैं कहाँ जाऊं? मुहम्मद बिन हन्फ़ीया ने जवाब दिया :

"आप हरमे इलाही मक्का का रुख़ कीजिए। अगर वहाँ इत्मीनान हासिल हो जाए फ़बिहा, वरना तश्वीशनाक सूरत हो तो वहाँ से रेगिस्तानों और कोहिस्तानों की तरफ़ निकल जाइए, एक जगह से दूसरी जगह मुंतक़िल होते रहिए और देखिए हालात किस करवट क़रार पाते हैं।"

(तारीख़ तबरी : जिल्द 4, स० 253)

रजब 60 हिजरी की वह रात कितनी जाँ गुसल और सब्र आज़मा थी जब हुसैन मदीनतुर्रसूल को ख़ैर बाद कह रहे थे, भीगी हुई पल्कों के साथ नाना जान के जवारे रहमत से जुदा हो रहे थे। मगर हालात की नज़ाकत ने मदीना छोड़ने पर मज्बूर कर दिया था। हुसैन रात की तारीकी (अंधेरे) में मक्का मुकर्रमा की जानिब रवाना हुए, रास्ता में अब्दुल्लाह बिन मुतीअ् से उन्होंने दरयाफ़्त किया :

"हुसैन! मैं आप पर कुरबान हूँ किधर का इरादा है? फरमाया फिलहाल मक्का जा रहा हूँ। अब्दुल्लाह ने कहा कोई हरज नहीं। मगर खुदा के लिए कूफ़ा का क़सद न कीजिएगा, वह मन्हूस शहर है, वहाँ आपके वालिद शहीद किए गये, आपके भाई बेयार व मददगार छोड़े गये, नेज़े से ज़ख़्मी हुए जान मुश्किल से बची। आप हरम में बैठ जाएं। आप अरब के सरदार हैं हिजाज़ी, आपके मुक़ाबला में किसी का न मानेंगे। हरम में बैठ कर इत्मीनान के साथ लोगों को अपनी तरफ माइल कीजिए।" (तारीख़े तबरी : जिल्द 4, स० 261)

हज़रत इमाम हुसैन मक्का मुकर्रमा पहुँच कर शुअ्बे अबी तालिब में फरोकश हुए। अह्ले मक्का और गर्द व नवाह के इरादतमन्दों को आपके आने की ख़बर हुई। जूक़ दर जूक़ बारगाहे इमामत में हाज़िर होने लगे।

उसी दौरान अह्ले कूफ़ा के खुतूत का अंबार लग गया और उनके वफ़ूद ने आ कर कूफ़ा चलने और मसनदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने की दावत दी, यक़ीन दिलाया कि हमारी गर्दनें आपके लिए हाज़िर हैं। इमाम हुसैन ने कूफ़ियों का इश्तियाक़ और वफ़ादारियों की यक़ीन दहानी देखी तो फरमाया, मैं तुम्हारी मुहब्बत का मम्नून हूँ लेकिन फिलहाल कूफ़ा का सफर नहीं कर सकता। अपने चचाज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को तहक़ीक़े हाल के लिए कूफ़ा भेज रहा हूँ। हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील को कूफ़ा रवाना करते वक़्त इमाम हुसैन ने कहा :

तरजमा : तुम कूफ़ा का सफर करो और इस अम्र की तहक़ीक़ करो, जिसके बारे में वह मुझे लिखते हैं। पस अगर यह बात सच है तो मैं उनकी जानिब सफर करूं। (तारीखे तबरी जिल्द 4, स० 258)

मुस्लिम बिन अक़ील की आमदे कूफ़ा : यकुम ज़िल-हिज्जा 60 हिजरी को हज़रत मुस्लिम बड़ी मुश्किल से कूफ़ा में दाख़िल हुए। कूफ़ियों ने आपके हाथ पर ख़िलाफ़त हुसैन की बैअत शुरू की। तक़रीबन बारह हज़ार अफ़राद आपके गर्द जमा हो गये। वाली-ए-कूफ़ा नौमान बिन बशीर अंसारी अपनी शराफ़त ज़ाती और सुलह जो याना सिफ़ात के बाइस मुस्लिम बिन अक़ील की राह में मज़ाहिम न हुए। यज़ीद नवाज़ अनासिर ने नौमान बिन बशीर के तरज़े अमल को बुज़्दिली पर महमूल किया और कहा :

तुम कम्ज़ोर या बुज़्दिल हो, शहर तबाह व बरबाद हो गये।

नौमान ने जवाबन कहा :

तरजमा : अगर मैं कम्ज़ोर हूँ और अल्लाह की इताअत करता रहूँ तो मेरे नज़्दीक ज़्यादा पसन्दीदा है इस बात से कि मैं अल्लाह की नाफरमानी में क़वी हूँ।

नौमान का जवाब सुन कर अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम, अम्मारह बिन वलीद, अमर बिन सअद, मुस्लिम बिन अक़ील के कूफ़ा आने और लोगों को बैअते हुसैन, नीज़ नौमान के सुलह पसन्दाना रवैया की इत्तिला यज़ीद को दी और लिखा :

"अगर कूफ़ा बचाना चाहते हो तो किसी सख़्त आदमी को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर करो।"

जब यज़ीद को हालात का इल्म हुआ तो उसने मशवरा के बाद अब्दुल्लाह इब्ने ज़्याद वालि-ए-बसरा को कूफ़ा की सनद विलायत तहरीर कर दी और यह भी लिखा कि मुस्लिम बिन अक़ील को गिरफ़्तार करके

क़त्ल कर देना शहरे बद्र कर देना।

उधर मुस्लिम बिन अक़ील ने जब कूफ़ियों का वालेहाना पन देखा तो हज़रत इमाम हुसैन को लिखा कि बारह हज़ार कूफ़ियों ने बैअ़त कर ली है। आप ज़रूर तशरीफ़ लाइए।

उधर ज़्याद बसरा से कूफ़ा आया और सुबह के वक़्त मिंबर पर चढ़ कर खुतबा दिया :

"ऐ अह्ले कूफ़ा! अमीरुल-मुमिनीन ने तुम्हारे शहर, अहकामे शरई, माले ग़नीमत और बैतुल-माल का मुझे वाली मुक़र्रर किया है और मुझे तुम्हारे मज़्लूमों की दादरसी, तुम्हारे फरमां बरदारों के साथ एहसान करने और तुम्हारे नाफरमानों और बाग़ियों के गिरफ़्तार करने का हुक्म दिया है। मैं बेशक तुम में उसके अहकाम को जारी करूंगा, मैं तुम पर तुम्हारे वालिद से ज़्यादा मेहरबान रहूँगा। लेकिन जो शख़्स मेरे हुक्म की मुख़ालिफ़ करेगा उसकी गर्दन व पुश्त पर मेरी तल्वार और दुर्रा होगा।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 71)

इब्ने ज़्याद ने कूफ़ा पहुँचने के बाद हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील की क़्यामगाह और उनके हाशिया नशीनों के बारे में मालूमात फराहम करने की जद्दो जहद शुरू कर दी। उसने बनू तमीम के एक ग़ुलाम मअ़क़ल को तीन हज़ार अशर्फ़ियाँ देकर मुस्लिम बिन अक़ील की मुख़्बिरी पर मुऐयन किया। उसने हीला व फन से हज़रत मुस्लिम की क़्यामगाह मालूम कर ली और इब्ने ज़्याद को मुत्तलअ् कर दिया, और बताया कि मुस्लिम हानी बिन उरवा के मकान पर इक़ामत गुज़ीं हैं। हानी बिन उरवा क़सरे इमारत में तलब किए गये। हानी जब इब्ने ज़्याद के पास आए। उसने कहा, बताओ! मुस्लिम बिन अक़ील कहाँ है? हानी ने ला इल्मी का इज़्हार किया। इब्ने ज़्याद ने बनू तमीम के उस गुलाम को जो हानी से मिल चुका था बुलाया। उसे देखते ही हानी बिन उरवा मुतहैयर हुए और कहा........अमीर का खुदा का भला करे। वल्लाह मुस्लिम को मैंने अपने घर नहीं बुलाया, वह खुद से आए हैं। उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद ने कहा, उन्हें मेरे पास बुलाओ। हानी ने जवाब दिया, वल्लाह! अगर वह मेरे पाँव के नीचे छुपे होते तो मैं वहाँ से क़दम न हटाता। इब्ने ज़्याद ने हानी को ज़द व कोब किया और क़स्रे इमारत के एक गोशा में क़ैद कर दिया।

क़स्रे इमारत का मुहासरा : इस वाक़या की ख़बर पा कर हज़रत मुस्लिम ने हानी की रिहाई के लिए चार हज़ार मुसल्लह अफ़राद को क़सरे

इमारत के मुहासरा के लिए आमादा कर लिया, मुश्तइल अफ़राद ने गवर्नर हाउस को घेर लिया। हंगामा व आशोब की फ़िज़ा देख कर इब्ने ज़्याद सहम गया, उस ने दरवाज़ा बन्द कर लिया और रुउसाए कूफ़ा को तलब करके उन्हें क़स्र के बालाखाना पर भेजा कि वह अपने-अपने क़बीलों को समझा कर वापस कर दें। चुनांचे इब्नुल-वक़्त रुउसा ने अपने खानवादों को वक़्त की सितम ज़रीफ़ी से डराया।

कसीर बिन शिहाब ने अपनी तक़रीर में कहा :

"लोगो! अपने घरों को वापस जाओ, शर व फसाद में जल्दी न करो, ख़ुद को अपने हाथों क़त्ल न कराओ, देखो अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद की फौजें चल चुकी हैं। सुनो! अमीर ने ख़ुदा से यह अह्द कर लिया है कि अगर तुम उस से जंग पर आमादा रहे और उसी शाम को यहाँ से वापस न हुए तो तुम्हारी ज़ुर्रियत (नसल) को अता से महरूम कर देगा और तुम्हारे जंगजू लोगों को मुतफ़र्रिक़ (अलग) कर देगा। बुरे के बदले अच्छे को, ग़ाइब के बदले हाज़िर को गिरफ़्तार करेगा। जिसने नाफरमानी की है उन में से सज़ा के बग़ैर किसी को न छोड़ेगा।" (तबरी : जिल्द , स० 365)

इसी तरह की तक़रीरें दूसरे सरदारों ने भी कीं। जिन से मुतअस्सिर हो कर पूरा लश्कर आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटने लगा, गुरूबे आफताब तक पूरा मैदान साफ हो गया, सिर्फ़ तीस आदमी आपके साथ रह गये। इमाम मुस्लिम मस्जिद से निकल कर अबवाबे कुन्दा की जानिब रवाना हुए, गली कूचों के मोड़ पर एक-एक करके सब साथी छूट गये और आप तन्हा रह गये।

कूफ़ियों की बेवफ़ाई और शहादत मुस्लिम बिन अक़ील : यह वही मुस्लिम बिन अक़ील थे जिनके साथ बारह हज़ार वफ़ादार कूफ़ियों की जमीअत (भीड़) थी और जिन के अदना से इशारा पर चार हज़ार जांबाज़ फ़िदाकारों ने क़स्रे इमारत का मुहासरा करके इब्ने ज़्याद जैसे शातिर गवर्नर के होश उड़ा दिए थे। महसूस होता था कि दम ज़दन में क़सरे इमारत की ईंट से ईंट बजा दी जाएगी और कूफ़ा से यज़ीद की अल्मदारी का ख़ात्मा हो जाएगा। मगर खौफ़ व तमअ् (लालच) की एक झलक ने कूफ़ियों की क़सम और बैअत व वफ़ादारी की तिलिस्म तोड़ दिया। मुस्लिम बिन अक़ील कूफ़ा की गली कूचों से गुज़र रहे हैं, वही शहर जिसके चप्पे-चप्पे से उनके लिए फ़िदाकारी व जांनिसारी के जज़्बात उमड रहे थे। अब यहाँ का एक-एक ज़र्रा उनका दुश्मन या उनके लिए अजनबी बन चुका है।

कूफ़ियों की बेवफ़ाई का ग़म, बिगड़े हुए माहौल में हुसैन बिन अली की आमद का ख़ौफ़, प्यास के ग़लबा से निढाल हो कर तौआ नामी एक औरत के दरवाज़े पर बैठ गये, उस से पानी तलब किया, पानी पी कर वहीं बैठे रहे, तौआ बाहर आई और उसने कहा, बन्द-ए-ख़ुदा! तुम यहाँ क्यों बैठे हो? उठो अपने घर जाओ। उस ने तीन बार यही कहा मगर मुस्लिम बिन अक़ील ख़ामोश रहे। तौआ ने कहा तुम अपने घर जाओ, तुम्हारा यहाँ बैठना मुझे पसन्द नहीं, हज़रत मुस्लिम ने सर्द आह खींची और कहा :

उस क़ौम ने मुझ को झुठलाया, मुझे फ़रेब दिया, इस शहर में न मेरा कोई मकान है और न कोई अज़ीज़।

तौआ ने दरयाफ़्त किया क्या आप मुस्लिम बिन अक़ील हैं? जवाब दिया हाँ! तौआ ने कहा मेरे घर में आ जाओ।

तौआ का बेटा हिलाल मुहम्मद बिन अशअश का खानाज़ाद था, सुबह को उसने इब्ने अश्अश को मुस्लिम बिन अक़ील की अपने मकान में रूपोशी की इत्तिला दी। उस ने उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद को ख़बर दी। उबैदुल्लाह ने अपने साहिबे शर्त अमर बिन हरीस मख़्ज़ूमी को तीस आज़मूदा कार सिपाहियों के साथ तौआ के मकान पर मुस्लिम की गिरफ़्तारी के लिए रवाना किया और अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन अश्अश को भी साथ कर दिया। मुस्लिम को ख़बर हुई कि सिपाहियों ने उनकी गिरफ़्तारी के लिए मकान का मुहासरा कर लिया है। तल्वार लेकर बाहर आए और बरसरे पैकार हुए और कई बार हमला आवरों को पस्पा कर दिया, मगर वह बार-बार आपकी तरफ़ बढ़ते रहे, उसी दौरान तल्वार के एक वार से आपका होंठ कट गया। मुख़ालिफ़ों ने मुस्लिम को क़ाबू में करने के लिए पत्थरों की बारिश की, मगर मुस्लिम बदस्तूर शम्शीर बकफ़ लड़ते रहे। यह हाल देख कर मुहम्मद बिन अश्अश ने चिल्ला कर कहा, मुस्लिम! तुम न लड़ो। तुम्हें अमान दी जाती है। आप यह शेअर पढ़ते हुए शम्शीर बकफ़ आगे बढ़ते रहे।

मैंने क़सम खाई है कि मैं शरीफ़ ही किया जाऊंगा, अगरचे मैं मौत को नापसन्दीदा शय समझता हूँ।

हर शख़्स एक दिन मौत के पंजा में गिरफ़्तार होगा, मुझे ख़ौफ़ है कि मैं झुठलाया जाऊंगा या धोखा दिया जाऊंगा।

मुहम्मद बिन अश्अश ने कहा तुम न झुठलाए जाओगे और न तुम को लोग धोखा देंगे। पत्थरों की ज़द से जिस्म निढाल हो चुका था। इसलिए

मुस्लिम एक दीवार का सहारा लेकर बैठ गये, सबने अमान का एलान किया। तल्वार ले ली और खच्चर पर बिठा कर दारुल-इमारत की जानिब ले चले, मगर मुस्लिम को इस अम्र का यक़ीन था कि उन के साथ दग़ा की जा रही है, वह फ़र्ते अलम से रो पड़े और मुहम्मद बिन अश्अश की तरफ़ मुख़ातब हो कर कहा :

"मैं देखता हूँ कि तुम मुझे अमान देने से मज्बूर हो। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ। क्या तुम यह कर सकते हो कि किसी शख़्स के ज़रिया हुसैन के पास मेरी ख़बर भेज दो और मेरी तरफ़ से यह कहला भेजो कि अपने अह्ले बैत के साथ वापस लौट जाओ, यह अह्ले कूफ़ा हैं जो तुम्हारे बाप अली के दोस्त और हवा ख़्वाह थे। जिन से फ़िराक़ के ख़्वास्तगार वह मौत या क़त्ल से थे।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 79)

मुहम्मद बिन अश्अश ने इक़रार कर लिया और शहादते मुस्लिम के बाद हुसैन बिन अली को सारे वाक़ेआत से मुत्तलअ् कर दिया। मुस्लिम बिन अक़ील इब्ने ज़्याद के पास पहुँचे तो उसे सलाम न किया। ख़बीस तीनत ने कहा, तुम ने अमीर को सलाम क्यों नहीं किया? फरमाया अगर यह मुझे क़त्ल का इरादा रखता है तो मेरा सलाम ही क्या है। और अगर मेरे क़त्ल का इरादा नहीं है तो बहुत सलाम हो जाएंगे।

इब्ने ज़्याद ने कहा "मैं तुम्हें ज़रूर क़त्ल करूंगा।"

मुस्लिम ने कहा, मैं भी ऐसा ही समझता हूँ। अच्छा तुम मेरी क़ौम के किसी फ़र्द को इजाज़त दो, मैं तख़्लिया (एकान्त) में कुछ बातें कहना चाहता हूँ। इजाज़त के बाद आप ने हाज़िरीन पर नज़र डाली, अमर बिन सअद पर नज़र डालते हुए कहा, मेरी और तुम्हारी अज़ीज़दारी है, मैं तन्हाई में कुछ बातें करना चाहता हूँ। इब्ने ज़्याद की इजाज़त पर इब्ने सअद मुस्लिम बिन अक़ील के साथ तन्हाई में गया। मुस्लिम बिन अक़ील ने कहा :

"मैंने कूफ़ा में फ़लां शख़्स से सात सौ दृहम क़र्ज़ लेकर सर्फ़ (ख़र्च) करे हैं। तुम उसको मेरी तरफ़ से अदा कर देना। मेरे क़त्ल के बाद मेरी लाश इजाज़त लेकर दफन कर देना और हुसैन इब्ने अली के पास किसी को भेज देना कि वह कूफ़ा न आएं।"

अमर बिन सअद ने सारी बातें इब्ने ज़्याद से कह दीं। इब्ने ज़्याद ने कहा तुम अमीन हो इसमें ख़्यानत न करो, माल की बाबत तुम मुख़्तार हो। हुसैन की निस्बत मैं यह कहता हूँ कि अगर वह मेरी तरफ़ आने का इरादा

न करेंगे तो मैं भी उनका क़सद न करूंगा। लाश के बारे में तुम्हारी सिफ़ारिश न सुनी जाएगी।

इब्ने ज़्याद ने मुस्लिम बिन अक़ील को ख़िताब करते हुए कहा :

तरजमा : तुमने कूफ़ा में आ कर गरोह बन्दी की, लोगों को हमारी मुख़ालिफ़ पर मुज्तमा (इकट्ठा) किया और उन में निफ़ाक़ (तफ़रक़ा) डालने की कोशिश की।

इब्ने अक़ील ने जुरअत व बेबाकी के साथ जवाब दिया :

तरजमा : हरगिज़ ऐसा नहीं हुआ लेकिन यहाँ के बाशिन्दों ने ख़्याल किया था कि तुम्हारे बाप ने अच्छों को मार डाला है। ख़ूंरेज़ी की है, उनके साथ क़ैसर व किसरा जैसे बर्ताव किए हैं। हम उनके बुलाने से उनके पास इस ग़रज़ से आए थे कि उन में अद्ल व इंसाफ़ क़ाइम करें और किताब व सुन्नत पर अमल की हिदायत करें।

कुछ देर मुकालमा के बाद **इब्ने** ज़्याद ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि मुस्लिम को क़स्रे इमारत की छत पर ले जा कर सर तन से जुदा कर दो और लाश नीचे डाल दो।

मुस्लिम बिन अक़ील ज़ीना तय करते जाते और तस्बीह व सलात पढ़ते जाते और इस्तिग़्फ़ार करते जाते, और कहते जाते :

"ख़ुदाया! हमारा उन लोगों का इंसाफ़ तेरे हाथ में है जिन्होंने धोखा दिया है। हम से झूठ बोले।" (तबरी जिल्द **4**, स० **294**)

क़सरे इमारत के बालाई (ऊपरी) हिस्सा पर ले जा कर बुकैर बिन हम्रान ने हज़रत मुस्लिम की मुबारक गर्दन तन से जुदा कर दी, इस तरह हक़ व सदाक़त के पैग़ाम रसाँ को हमेशा के लिए ख़ामोश कर दिया गया और यज़ीदी जब्र व इस्तिब्दाद (ज़ुल्म व ज़्यादती) ने कूफ़ा के बाशिन्दों को ख़ाइफ़ व तरसां (ख़ौफ़ज़दह) बना कर हक़ की हिमायत से रोक दिया।

⁂

इमाम हुसैन
रज़ि अल्लाहु अन्हु
का सफरे कूफ़ा

अहबाब के मशवरे : हज़रत इमाम हुसैन को मुस्लिम बिन अक़ील का ख़त मिला कि अब तक मेरे हाथ पर बारह हज़ार आदमियों ने बैअत कर ली है और रोज़ बरोज़ हामियों की तादाद बढ़ती जा रही है। आप जल्द कूफ़ा तशरीफ़ लाएं। इस पैग़ाम के बाद हज़रत हुसैन ने कूफ़ा का अज़्मे मुसम्मम कर लिया। जब दूर अन्देश मुआमला फ़हम (समझदार) अश्ख़ास (लोग) को हज़रत हुसैन के सफरे कूफ़ा की इत्तिला हुई तो ख़िदमत में हाज़िर हो कर इराद-ए-सफर से बाज़ रहने की कोशिश की, उमर बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी ने कहा :

"मैं सुनता हूँ आप इराक़ की तरफ़ जाना चाहते हैं। इस सफर में आपके लिए अन्देशा है। आप उस शहर में जा रहे हैं जिस में ओहदेदार उमरा हैं। उनके पास ख़ज़ाने है। लोग दीनार व दृहम के ग़ुलाम हैं। मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि जिन लोगों ने आप से नुसरत (मदद) का वादा किया है वही आप से आमद-ए-पैकार न हो जाएं।"

इमाम हुसैन ने इरशाद फरमाया :

"बरादर! ख़ुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर अता फरमाए। ख़ुदा की क़सम मुझे यक़ीन है कि तुम ने ख़ैर ख़्वाही की बात कही। मुक़द्दर में जो है हो कर रहेगा। मैं तुम्हारी राय पर अमल करूं या न करूं मगर तुम को अपना बेहतरीन मुशीर और हवा ख़्वाह समझता हूँ।" (तबरी : जिल्द 1, स० 287)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास आए और कहा :

"मैं तुम को कूफ़ा जाने से रोकता हूँ। तुम वहाँ उस वक़्त तक न जाओ जब तक अह्ले कूफ़ा अपने अमीर को क़त्ल न कर डालें। अगर उनके बुलाने पर जा रहे हो और उनका अमीर उन में मौजूद है तो यक़ीन कर लो कि तुम्हें जंग के लिए तलब कर रहे हैं। मुझे अन्देशा है कि तुम को वह

लोग धोखा देंगे झुठलाएंगे, और तुम्हारे सबसे बड़े दुश्मन साबित होंगे।"

(इब्ने ख़ल्दून जिल्द **5**, स० **83**, अल-बिदायह : जिल्द **8**, स० **159**)

हज़रत इमाम हुसैन ने जवाब दिया, मैं आज रात इस्तेख़ारा करूंगा। देखिए हुक्मे इलाही क्या होता है। दूसरे दिन फिर इब्ने अब्बास आए और कहा :

"बरादरे मन! मुझे बग़ैर नसीहत किए सब्र नहीं आता। इस राह में मुझे तुम्हारे हलाक होने का ख़ौफ है। अह्ले इराक़ बेवफ़ा अह्द शिकन हैं। तुम उनके क़रीब न जाओ! इसी शहर में क़याम करो। तुम उनके सरदार हो। अगर तुम मक्का से जाना ही चाहते हो तो यमन की तरफ़ चले जाओ। वह बहुत वसीअ़ सर ज़मीन है। यहाँ घाटियाँ बकसरत हैं वहाँ से तुम अपने दाई अतराफ़ व जवानिब में रवाना करो और लोगों से बैअ़त लो।" इमाम हुसैन ने जवाब दिया, मैं पुख़्ता इरादा कर चुका हूँ किसी तरह नहीं रुक सकता।

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **83**)

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हाज़िर हुए और कहा :

"आप कहाँ जा रहे हैं? उस कौम के पास जिसने आपके बाप को शहीद किया और आपके भाई को तअ़्ना दिया। बेहतर होता कि आप हिजाज़ में क़याम करते और इस काम को यहीं से अंजाम देते।"

आपने जवाबन इरशाद फरमाया :

"मेरे जद्दे अम्जद ने इरशाद फरमाया है कि एक मेंढे की बदौलत काबा की बेहुरमती होगी। मुझे मंज़ूर नहीं कि वह मेंढा मैं ही बनूं।

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **52**)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर हाज़िर हुए और कहा :

"तुम बैअ़त लेने और इमारत हासिल करने के लिए मक्का से बाहर न जाओ। अल्लाह जल्ला शानुहू ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया व आख़िरत दोनों में से किसी एक के इंतिख़ाब का अख़्तियार दिया। आपने आख़िरत को क़ुबूल किया। चूंकि तुम आंहुज़ूर के जुज़ हो। दुनिया की तलब न करो, न उसके गर्द व ग़ुबार से अपने मुबारक दामन को आलूदा करो। यह कह कर इब्ने उमर रो पड़े। हज़रत हुसैन भी अश्कबार हो गये।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **82**, अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द **8**, स० **160**)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने नसीहत फरमाते हुए कहा : "ऐ अबू अब्दुल्लाह (हुसैन) मैं आपका ख़ैर ख़्वाह और आपका शफ़ीक़

हूँ, मुझे ख़बर मिली है कि आपके पास आप के हामियों ने कूफ़ा से ख़ुतूत लिखे हैं वह आपको अपने पास बुला रहे हैं। तो आप उनके पास न जाएं। मैंने आपके वालिद को सर ज़मीने कूफ़ा में कहते सुना, ख़ुदा की क़सम! उन्होंने मुझे रंजीदा किया और उन्होंने मुझे सताया और मुझ पर ग़ज़ब किया। उन लोगों में हरगिज़ वफ़ा नहीं।" (अल-बिदायह वन्निाहयह : जिल्द 8, स० 161)

हज़रत इमाम हुसैन कूफ़ा का पुख़्ता इरादा कर चुके थे। इसलिए 8 जिल-हिज्जा 60 हिजरी को अपने अह्ल व अयाल, अफ़राद खानदान और आवान व अंसार के साथ मक्का से रवाना हुए।

फरज़दक़ से मुलाक़ात : मक़ामे सफ़्फ़ाह में अरब के मशहूर शाइर फ़रज़दक़ से मुलाक़ात हुई। आपने उस से पूछा, अह्ले कूफ़ा का क्या हाल है? अर्ज़ की, ख़ुदा की क़सम! आपने वाक़िफ़कार मुस्तहिक़ ही से इस्तिफ़सार (पूछना) फरमाया है। मैं अर्ज़ करता हूँ, लोगों के कुलूब (दिल) आपके साथ हैं और उनकी तल्वारें, बनू उमैया कि साथ। क़ज़ा आसमान से उतर रही है और अल्लाह जो चाहता है करता है। हज़रत इमाम हुसैन ने फरमाया, तू सच कहता है अल्लाह ही सारे उमूर का मालिक है। वह जो चाहता है करता है। अगर हुक्मे इलाही हमारी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ सादिर हुआ तो हम उसकी नेमतों का शुक्रिया अदा करेंगे। हालांकि वह अदाए शुक्र से मुस्तग़ना (बे परवा) है और अगर क़ज़ाए ख़ुदावन्दी ख़िलाफ़े तवक़्क़ु नाज़िल हुई तो हम सब्र कर लेंगे। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 84)

मक़ामे तन्ईम पर अब्दुल्लाह बिन जाफर का ख़त मिला जिस में तहरीर किया गया था :

"बरादरे मन! ख़ुदा के वास्ते तहरीर देखते ही वापस आ जाओ। मैं तुम को इसलिए नसीहत करता हूँ कि इस सफर में तुम्हारी हलाकत और तुम्हारे अह्ले बैत की बरबादी है। अगर ख़ुदा नख़्वास्ता आप शहीद हो गये तो दुनिया तारीक हो जाएगी। तुम मुसलमानों की उम्मीदगाह और पेशवा हो। उज्लत न करो। मैं ख़त के बाद भी तुम्हारे पास आ पहुँचता हूँ।"

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 85)

इस ख़त के बाद अब्दुल्लाह बिन जाफर और यहिया बिन अमर हाकिमे मक्का अमर बिन सईद का मक्तूब लेकर हज़रत हुसैन के पास पहुँचे जिस में लिखा गया था :

"मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह तुम को उस रास्ता से फेर दे

जिधर तुम जा रहे हो। मैं तुम को ख़ुदा का वास्ता दिलाता हूँ कि इफ़्तिराक़ से बाज़ आओ। उसमें तुम्हारी हलाकत है। मैं तुम्हारे पास अब्दुल्लाह बिन जाफर और अपने भाई को भेजता हूँ तुम उनके साथ लौट आओ। मैं तुम को अमान देता हूँ और मैं तुम्हारे साथ सुलह रहमी और भलाई से पेश आऊँगा, तुम्हारी मदद करूंगा, तुम मेरे जवार में निहायत इत्मीनान और राहत के साथ रहोगे। इस तहरीर पर ख़ुदा वकील और शाहिद है।"

हज़रत हुसैन ने इस ख़त को पढ़ने के बाद फरमाया, मैंने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यारत का शर्फ़ हासिल किया, उस में आपने मुझे एक हुक्म दिया है जिस की तामील मैं हर हाल में करूँगा, अंजाम चाहे कुछ भी हो।"

अब्दुल्लाह और यहिया ने ख़्वाब दरयाफ़्त किया तो जवाब दिया, मैंने उसे न किसी से बयान किया है और न मरते दम तक बयान करूंगा।

फिर अमर बिन सईद के ख़त का जवाब लिखा :

"जो शख़्स अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की तरफ़ बुलाता है, अमले सालेह करता है और अपने इस्लाम का मोतरिफ़ है वह ख़ुदा और उसके रसूल से इख़्तिलाफ़ क्योंकर कर सकता है? तुमने मुझे अमान, भलाई और सिलह रहमी की दावत दी है। पस बेहतरीन अमान अल्लाह तआला की अमान है। जो शख़्स दुनिया में ख़ुदा से नहीं डरता ख़ुदा क़्यामत के दिन उसको अमान नहीं देगा। इसलिए मैं दुनिया में ख़ुदा का ख़ौफ़ चाहता हूँ ताकि क़्यामत के दिन उसकी अमान का मुस्तहिक़ रहूँ। अगर ख़त से तुम्हारी नीयत वाक़ई मेरे साथ सिलह रहमी और नेकी की है तो ख़ुदा तुम को दुनिया व आख़िरत दोनों में जज़ाए ख़ैर अता फरमाए। वस्सलाम!"

(तबरी : जिल्द **4**, स० **214**)

शहादते मुस्लिम की इत्तिला : इमाम हुसैन कूफ़ा की जानिब बढ़ रहे थे, उन्हें मक़ामे सअ्लबिया पर एक असदी शख़्स से जो कूफ़ा से आ रहा था। हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील और हानी बिन उरवा की शहादत की ख़बर मिली, जिस से यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो गई कि अह्ले कूफ़ा ने ख़ौफ़ व तमअ् (लालच) से मुतअस्सिर हो कर ग़द्दारी की है। ऐसे माहौल में कूफ़ा जाना दानिश मन्दी न थी। आपके साथियों ने मुराजअत (वापसी) का मशवरा दिया। हज़रत हुसैन भी लौटना चाहते थे मगर मुस्लिम बिन अक़ील के भाईयों ने कहा :

"वल्लाह! जब तक हम मुस्लिम का इंतक़ाम न ले लें या सब क़त्ल न हो जाएं वापस न जाएंगे।"

हज़रत इमाम हुसैन ने कहा, तुम्हारे बाद ज़िन्दगी का मज़ा नहीं।

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 86)

चन्द लोगों ने कहा :

"वल्लाह! आप मुस्लिम बिन अक़ील जैसे नहीं हैं। आप जूं ही कूफ़ा पहुँचेंगे सब लोग आपके मुतीअ् हो जाएंगे।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 86)

यज़ीदी लश्कर का मुक़द्दमतुल-जैश : दो पहर का वक़्त, तपता हुआ सहरा, मक़ामे शराफ़ दूर से गर्द व गुबार का बादल देख कर लोगों ने नअ्र-ए-तक्बीर बुलन्द किया। वजह दरयाफ़्त की गई तो कहा गया कि हमें गुंजान (घना) दरख़्तों का बाग़ दिखाई देता है। हज़रत हुसैन ने कहा, यह बाग़ नहीं सवारों की पेश रफ़्त की गर्द (धूल) है।

बनी असद के दो शख़्सों ने कहा, इस मैदान में कहीं बाग़ नहीं। फिर हुसैन मल्जा व मामन (पनाह) की तलाश में चले, मगर अभी मक़्सूद तक पहुँचने न पाए थे कि एक हज़ार सवारों पर मुश्तमिल यज़ीदी लश्कर का हर अव्वल दस्ता हुर्र बिन यज़ीद तमीमी यरबूई की क़्यादत में सामने आ पहुँचा। जुहर का वक़्त हुआ। अज़ान दी गई। हज़रत इमाम हुसैन खुले मैदान में तशरीफ़ लाए, और इरशाद फरमाया :

"ऐ लोगो! मैं तुम्हारे पास अज-खुद नहीं आया। अब अगर तुम लोग अपना इक़रार पूरा करो तो मैं तुम्हारे शहर चलूं और अगर तुम्हारे शहर में मेरे दाख़िल होने से तुमको नफ़्रत हो तो इजाज़त दो कि मैं जिस शहर से आया हूँ वहीं वापस जाऊं।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 88)

किसी ने कुछ जवाब न दिया। इक़ामत हुई, हुर्र ने अपने साथियों के साथ आप की इक़्तिदा में नमाज़ अदा की, आप क़्याम गाह पर वापस आए और हुर्र अपनी फ़रोदगाह (ठिकाने) की जानिब रवाना हुए। अस्र की अज़ान के बाद जब हुर्र और उनके हम्राही नमाज़ के लिए आए तो हज़रत इमाम हुसैन ने ख़िताब फरमाया :

"ऐ लोगो! अगर तुम अल्लाह से डरो और हक़ को पहचानो तो खुदा वन्द तआला की खुशनूदी हासिल करोगे। उन ज़ालिमों, नाहक़ शनासों से जो मुद्दई इमारत हैं हम ज़्यादा मुस्तहिक़े ख़िलाफ़त हैं। और अगर तुम यह बात नागवार समझते हो और तुम हमारे हुक़ूक़ को भुला बैठो और तुम्हारी

वह राय बदल जाए जिसको तुमने अपने क़ासिदों और ख़ुतूत के ज़रिया से ज़ाहिर किया था तो हम वापस जाएं।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 6, स० 88)

हुर्र ने जवाब दिया, ख़ुदा की क़सम! हमें उन क़ासिदों और ख़ुतूत की इत्तिला नहीं जिनका तुम बार-बार ज़िक्र रहे हो।

हज़रत हुसैन ने जवाब में ख़ुतूत से भरी हुई दो थैलियाँ निकालीं और खोल कर ख़ुतूत को ज़मीन पर फैला दिया। हुर्र ने कहा, हम ने यह ख़ुतूत नहीं लिखे हम को तो यह हुक्म दिया गया है कि तुम से अगर मुलाक़ात हो जाए तो हम तुम को उस वक़्त तक न छोड़ें जब तक कि तुम्हें उबैदुल्लाह बिन ज़्याद अमीरे कूफ़ा के पास न ले जाएं।

(अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 8, स० 172)

हुसैन बिन अली ने कहा, उस से मौत भली है और अपने हम्राहियों को वापस जाने का हुक्म दे कर सवार हुए। हुर्र ने रोका और उबैदुल्लाह बिन ज़्याद के पास कूफ़ा चलने पर मज्बूर किया और कहा, आप यज़ीद को लिखिए और मैं इब्ने ज़्याद को लिखता हूँ। शायद अल्लाह तआला कोई ऐसी राह पैदा कर दे जिस से आप मुब्तलाए मसाइब न हों। फिर हुसैन ने अपने साथियों को जाने का हुक्म दिया तो हुर्र ने दाएं बाएं से रोकना शुरू किया। हज़रत हुसैन ने फिर लोगों के रू-ब-रू एक बलीग़ ख़ुतबा इरशाद फरमाया :

"ऐ लोगो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि जिस शख़्स ने किसी ज़ालिम बादशाह को देखा कि वह अल्लाह तआला के मुहरिमात को हलाल करता है, उसके अह्द को तोड़ता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी नहीं करता है, ख़ल्क़ुल्लाह में ज़ुल्म व गुनाह के काम करता है, फिर उसने किसी क़िस्म की क़ौली या अमली दस्त दराज़ी न की तो अल्लाह तआला उसको भी उसके साथ शुमार करेगा।

आगाह हो जाओ! उन लोगों (यज़ीद और उमराए यज़ीद) ने अल्लाह तआला की ताअत छोड़ कर शैतान की ताबेदारी शुरू की है, फित्ना व फसाद बरपा कर दिया है, हुदूदे शरई से दस्तकश हो गये हैं, माले ग़नीमत को अपना माल समझ लिया है, हलाल को हराम और हराम को हलाल कर दिया है। मैं उन लोगों से ज़्यादा साहिबुल-अम्र होने का मुस्तहिक़ हूँ। तुम्हारे ख़ुतूत और क़ासिद मेरे पास आए और तुमने मुझ को बैअत करने के लिए बुलाया। अब तुम मुझे रुसवा न करो। अगर अपनी बैअत व इक़रार

पर क़ाइम रहोगे तो राहे हक़ पा जाओगे. मैं हुसैन! अली, फातिमा बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लड़का हूँ। मेरी जान तुम्हारी जान के साथ और मेरे अह्ल व अयाल तुम्हारे अह्ल व अयाल के साथ हैं। तुमको मेरे साथ भलाई करनी चाहिए और अगर तुमने ऐसा न किया और अह्द शिक्नी की तो यह कोई तअज्जुब खेज़ बात नहीं है। तुमने मेरे बाप, मेरे हकीकी भाई हसन और अम्म (चचा) ज़ाद मुस्लिम बिन अक़ील के साथ भी बद अह्दी की है। अफसोस है कि तुम लोग मुझ को धोखा दे कर अपना हक और हिस्सा दीन दारी ज़ाए कर रहे हो। पस जो बद अहदी करेगा वह अपने लिए करेगा और अल्लाह तआला मुझ को तुम से बेपरवाह करेगा।"

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स. 89)

हुर्र ने कहा, मैं क़सम खा कर कहता हूँ। अगर तुम ने जंग की तो बिला शुबह मारे जाओगे। हज़रत हुसैन ने कहा, क्या तुम हम को मौत से डराते हो और यह अश्आर पढ़े :

तरजमा : मैं तो अपना मक़सद पूरा करूंगा, जवान मर्द मौत से आर नहीं करता। जब कि उस ने नेकी की नीयत की और मुसलमान हो कर जद्दो जहद की, अच्छे लोगों से बज़ातेही मुहब्बत पैदा की, गर्दन ज़दनी लोगों की मुख़ालिफ़त की और बाग़ियों का साथ छोड़ दिया। पस अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मुझे निदामत न होगी और अगर मर गया तो मुझे ज़रा भी सदमा न होगा। तेरे लिए इतना ही काफी है कि तू ज़लील व रुसवा हो कर उम्र बसर करेगा।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 90)

हुर्र ख़ामोश रहे मगर साथ न छोड़ा और इधर उधर से रास्ता रोकते रहे। हज़रत इमाम ने हुर्र का यह अंदाज़ा देखा तो फरमाया : **सकिल्तुका उम्मुका माज़ा तुरीद?** तेरी माँ तुझ पर रोए तेरा क्या इरादा है? हुर्र ने कहा खुदा की क़सम! आपके अलावा कोई दूसरा यह बात कहता तो मैं उसको दन्दाने शिकन जवाब ज़रूर देता। मगर आपकी मोहतरम माँ का ज़िक्र तो भलाई के अलावा किसी और तरीक़ा से करना सख़्त गुनाह है। हुर्र ने संजीदा अंदाज़ में कहा हुसैन! मुझे आपके साथ जंग करने का हुक्म दिया गया है और मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है कि आपको न छोड़ूँ यहाँ तक कि आपको इब्ने ज़्याद के पास कूफ़ा ले जाऊं, मगर मैं जब सो जाऊं तो रात की तारीकी में आप वह रास्ता अख़्तियार करें जो न कूफ़ा को जाता हो और न मदीना को। फिर आप यज़ीद के पास लिखें और मैं इब्ने ज़्याद

को तहरीर करूं। मुम्किन है कि खुदा कोई ऐसी सूरत पैदा करे जिस में हमारी आफ़ियत हो। (अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 8, स० 173)

बाज़ रिवायात में है कि हज़रत इमाम हुसैन रात भर सहरा में फिरते रहे मगर सुबह हुई तो उसी मक़ाम पर थे जहाँ से सफर का आग़ाज़ किया था।

हज़रत हुसैन अज़ीब पहुँचे तो कूफ़ा से चार आदमी आए। आपने उन से कूफ़ा वालों का हाल दरयाफ़्त फरमाया। मज्मा बिन अब्दुल्लाह अल-आइज़ी ने जवाबन अर्ज़ किया :

"शुरफ़ाए कूफ़ा की रिश्वतख़ोरी में इज़ाफ़ा हो चुका है। दुनिया की तमअ् में पड़े हुए हैं। वह एक ज़ुबान हो रहे हैं। बाक़ी रहे अवामुन्नास तो उन के कुलूब तुम्हारी तरफ़ माइल हैं। लेकिन उनकी तल्वारें कल तुम पर नियाम से बाहर आएंगी।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 90)

मक़ामे नैनवा : 1 मुहर्रम 61 हिजरी को इमाम हुसैन मक़ामे नैनवा पहुँचे। बताया गया कि यह करबला है। इरशाद फरमाया **करबुन व बलाउन।** उसी मक़ाम पर इब्ने ज़्याद का क़ासिद हुर्र के पास पैग़ाम लेकर पहुँचा :

"हुसैन को एक मैदान में ठहराओ जहाँ न पानी हो और न कोई महफ़ूज़ मक़ाम हो।"

कूफ़ा से फौज की रवानगी : नैनवा की सर ज़मीन पर क़ाफ़िला अह्ले बैते रसूल फरोकश (ठहरा) था, शहरे कूफ़ा में उबैदुल्लाह बिन ज़्याद, हज़रत हुसैन पर लश्कर कुशी की और सिपह सालार लश्कर के तऐयुन के बारे में ग़ौर व फ़िक्र कर रहा था। अमर बिन सअद बिन अबी वक़ास जो उन दिनों दैलमियों की सरकूबी पर मामूर था उसे कूफ़ा तलब किया गया। इब्ने ज़्याद ने कहा, इब्ने सअद! हुसैन का मुक़ाबिला सबसे मुक़द्दम है। फिर तुम अपने ओहद-ए-इमारत **"रय"** के लिए जाना। अमर बिन सअद ने कहा, अगर तुम हुसैन के मुक़ाबले के लिए न जाओगे तो तुमको **"रय"** की हुकूमत न मिलेगी। इब्ने सअद ने एक रात की मोहलत तलब की और क़्यामगाह पर आ कर अपने अहबाब और हाशिया नशीनों से मशवरा लेना शुरू किया। तमाम हवा ख़्वाहों ने हज़रत हुसैन के मुक़ाबला पर जाने की मुख़ालिफ़त की। ख़ूने हुसैन का बार उठाने की इजाज़त किसी ने न दी। हम्ज़ा बिन मुग़ीरा को मालूम हुआ तो इब्ने सअद से कहा, मामूं जान! मैं आपको क़सम दिलाता हूँ कि आप हुसैन के मुक़ाबला पर जा कर गुनाह अपने सर न लीजिए और क़तअ् रहम न कीजिए। खुदा की क़सम अगर

आपकी दुनिया, आपका माल, आपकी हुकूमत सब हाथों से निकल जाए उस से कहीं बेहतर है कि आप ख़ुदा से मिलिए और आप के हाथ हुसैन के ख़ून बेगुनाही से आलूदा न हों। इब्ने सअद ने कहा इन्शाअल्लाह तुम्हारे मशवरा पर अमल करूँगा।

अम्मार इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने यसार जहनी अपने बाप से रिवायत करते हैं कि वह इब्ने सअद के पास गये जब कि उन्हें हुसैन के मुक़ाबला का हुक्म दिया जा चुका था। इब्ने सअद ने कहा, मुझे हुसैन की तरफ़ पेश रफ़्त का हुक्म दिया गया मगर मैंने इंकार कर दिया। अब्दुल्लाह ने कहा ख़ुदा तुम को नेक हिदायत दे तुम कभी भी ऐसा न करना और हरगिज़ न जाना।

फिर उन्हें मालूम हुआ कि इब्ने सअद हुसैन के मुक़ाबिला के लिए जा रहा है। दोबारा गये मगर इस मरतबा इब्ने सअद ने अब्दुल्लाह को देख कर मुँह फेर लिया। अब्दुल्लाह उसका नज़्रिया समझ कर लौट आए।

हुकूमते **"रय"** का लालच, दुनियावी जाह व मंसब की चमक दमक ने इब्ने सअद के ज़मीर को सुला दिया। अहबाब के मश्वरा से सिर्फ़ नज़र करके उस ने ख़ूने हुसैन से अपने दामन को आलूदा करने का फ़ैसला किया और चार हज़ार लश्कर ले कर करबला पहुँचा। (तबरी : जिल्द 4, स० 310)

इब्ने सअद ने हज़रत हुसैन से कूफ़ा की जानिब पेश रफ़्त का सबब दरयाफ़्त किया। हुसैन ने इरशाद फरमाया, कूफ़ा के शुरफ़ा व रुउसा ने मुझे तलब किया। अगर तुम मेरा आना पसन्द नहीं करते तो मुझे वापस जाने दो। इब्ने सअद ने इब्ने ज़्याद के पास तहरीर किया। जिसके जवाब में इब्ने ज़्याद ने लिखा :

"हुसैन से यज़ीद की बैअत लो! अगर वह बैअत कर लें तो जो मुनासिब होगा किया जाएगा और अगर बैअत से इंकार करें तो बिला तअम्मुल जंग करो और उन पर और उनके हम्राहियों पर पानी बन्द करो।"

(इब्ने खल्दून : जिल्द 5, स० 93)

नहर अल्क़मा पर यज़ीदी फौज का दस्ता : इस हुक्म के आते ही अमर बिन सअद ने अमर बिन हिजाज़ की सरकरदगी में पाँच सौ सवारों को फ़ुरात की शाख़ नहर अल्क़मा पर मुतऐयन कर दिया, जो हुसैन और नहरे अल्क़मा के दर्मियान हाइल हो गये। इस तरह साक़ी कौसर का नवासा और अह्ले बैते रसूल पानी की एक-एक बूंद के लिए महरूम कर दिए गये। इब्ने ज़्याद ने नहर पर क़दग़न (पाबन्दी) लगा कर सफ़्फ़ाकी

(ज़ुल्म) व बेरहमी की एक नई तरज़े सितम ईजाद (पैदा) की।

वह हुसैन जिस के नाना जान ने क़हत के ज़माना में उस वक़्त के बदतरीन दश्मने इस्लाम अबू सुफ़ियान की दरख़्वास्त पर बारगाहे इलाही में दुआ फरमाई थी। अबरे करम झूम कर मक्का की फ़िज़ाओं पर छा गया था और सात रोज़ तक सिलसिल-ए-बाराँ जारी रहा था और सालहा साल तक के लिए खुश रेगज़ार सैराब हो गया था। नबी-ए-रहमत ने उस वक़्त अबू सुफ़ियान से न तो क़ुबूले इस्लाम का वादा लिया था और न ही आइंदा मुसलमानों पर हमला न करने की शर्त रखी थी। मगर आज अबू सुफ़ियान के पोते यज़ीद की बैअ़त के लिए नवास-ए-रसूल पर पानी बन्द किया जा चुका है। शर्त यह है कि हुसैन पहले यज़ीद की बैअ़त करें फिर वह पानी से सैराब हों।

इब्ने सअद और हज़रत हुसैन की गुफ़्तगू : हज़रत इमाम हुसैन ने अमर बिन सअद के पास पैग़ाम भेजा कि मैं रात में दोनों लश्करों के दर्मियान तुम से कुछ बातें करना चाहता हूँ, इब्ने सअद बीस सवारों के साथ रात की तारीकी में मुक़र्ररह मक़ाम पर पहुँचा। हज़रत हुसैन भी वहाँ पहुँच गये। दोनों अपने हम्राहियों से अलग हो कर काफी देर तक महवे गुफ़्तगू रहे मगर किसी को गुफ़्तगू का क़तई इल्म न हो सका। मुख़्तलिफ़ क़्यासात तारीख़ों में मौजूद हैं। दोनों की बाहमी गुफ़्तगू का तख़्मीना बाद के वाक़ेआत से लगाया जाता है। इब्ने ख़ल्दून ने एक रिवायत के मुताबिक़ हुसैन और इब्ने सअद की गुफ़्तगू का खुलासा मक्तूब इब्ने सअद बनाम इब्ने ज़्याद में इस तरह तहरीर किया है :

"हुसैन ने तीन दर्ख़्वास्तें पेश की हैं। वह जहाँ से आए हैं वहीं वापस कर दिए जाएं। जिस सरहद की तरफ़ चाहें उनको भेज दें। या उनको अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद के पास ले जाएं। उसमें हमारी खुशनूदी और उम्मते मुहम्मदिया की रज़ामन्दी है।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 94)

इब्ने सअद जिसने दुनियावी जाह व अज़्मत की तमअ़ (लालच) में हज़रत हुसैन से जंग पर आमादगी का इज़्हार कर लिया था। मगर उसके दिल में अब भी हुसैन के लिए नर्म गोशा मौजूद था। जाह व हश्म के ख़ाकिस्तर में दबी हुई हक़ीक़त पसन्दी की चिंगारी उसके निहाँ ख़ान-ए-दिल में कभी-कभी चमकती थी और क़त्ले हुसैन में आलूदा हो कर दीन व ईमान की ग़ारतगरी और आख़िरत के अज़ाब व ख़ुसरान (नुक़सान) से बचने की

तल्क़ीन करती थी। हुसैन इब्ने अली की वह अज़ीम शख़्सियत थी जिस पर हाथ उठाना एक अदना मुसलमान भी पसन्द न करता था। इब्ने सअद तो ज़ाते नब्वी से क़राबत के बाइस हुसैन का अज़ीज़ था। इसलिए उसकी दिली ख़्वाहिश यही थी कि वह हुसैन से जंग न करे। मुसालेहत की कोई सूरत पैदा हो जाए।

इसी जज़्बा के तहत इब्ने सअद ने इब्ने ज़्याद को ख़त तहरीर किया था। जब क़सरे इमारत कूफ़ा में इब्ने सअद का ख़त पढ़ा गया तो अमीरे कूफ़ा इब्ने ज़्याद ने कहा :

"मैं उसे मन्ज़ूर करता हूँ। यह ख़त ऐसे शख़्स का है जो अमीर व रईयत का ख़ैर ख़्वाह और मुश्फ़िक़ (मेहरबान) है।"

शिम्र बिन ज़िल-जौशन ने उठ कर कहा :

"आप इस दरख़्वास्त को क़ुबूल कर लेंगे? हुसैन तुम्हारे मुल्क में आ गया है। बख़ुदा अगर वह यहाँ से निकल गया और उस ने तुम्हारे हाथ पर बैअत न की तो वह तुम से ज़्यादा क़ुव्वत व शौकत वाला हो जाएगा और उस से मुक़ाबला न कर सकोगे। मैं यही मुनासिब समझता हूँ कि तुम उसको हुक्म के मानने पर मज्बूर करो। हुक्म अदूली की सूरत में उन को सज़ा देने का हक़ तुम्हें हासिल है। वल्लाह मुझे यह ख़बर पहुँची है कि हुसैन और इब्ने सअद तमाम रात दोनों गुफ़्तगू करते रहे हैं।"

इब्ने ज़्याद की निख़वत (घमण्ड) व अना ने जोश मारा और उस ने फ़ौरन इब्ने सअद को एक तहदीदी (धमकी) ख़त लिखा :

"मैंने तुम को इसलिए नहीं भेजा है कि तुम ढील देते रहो और दिन बढ़ाते चले जाओ और हुसैन के सिफ़ारिशी बन कर उनकी बक़ा व सलामती की तमन्ना करो। तुम हुसैन और उनके साथियों से मेरा हुक्म मानने के लिए कहो। अगर मान जाएं तो सबको हमारे पास भेज दो, वरना फ़ौरन हमला कर दो। अगर यह काम तुम से न हो सके तो फ़ौज शिम्र बिन ज़िल-जौशन के हवाले करके अलग हो जाओ। हम अपना हुक्म ज़रूर पूरा करेंगे।" (तारीख़े तबरी : जिल्द 4, स० 36)

यह पैग़ाम शिम्र ज़िल-जौशन और अब्दुल्लाह बिन अबी अल-मुहल के ज़रिया इब्ने सअद के पास भेजा।

यज़ीदी फ़ौज की पेश रफ़्त और एक रात की मोहलत : इब्ने ज़्याद के इस हुक्म ने इब्ने सअद को एक बार सख़्त तश्वीश और कर्ब में मुब्तला कर दिया। उसका ज़मीर मलामत करता रहा, मगर दूसरी जानिब **"रय**

की हुकूमत गरीबाँ गीर थी। फिक्र व तश्वीश, लैता व लअल्ला (टाल-मटोल) के अन्देशों का शिकार रहने के बाद दुनिया दीन पर गालिब आ गई और वह हुसैन से जंग का फैसला करने पर मज्बूर हो गया।

नवीं मुहर्रम 61 हिजरी को अस्र के वक्त इब्ने सअद ने यजीदी फौज के एक दस्ता के साथ हुसैनी खेमों की तरफ पेश रफ्त की। इमाम हुसैन ने अब्बास बिन अली को इब्ने सअद के पास पेश क़दमी का सबब दरयाफ्त करने के लिए रवाना किया। अब्बास ने इब्ने सअद से पूछा, तुम हमारी तरफ किस लिए बढ़ रहे हो? इब्ने सअद ने अमीरे कूफा इब्ने ज़्याद का खत पढ़ कर सुना दिया और कहा हम अमीर के हुक्म की तामील के लिए आए हैं। अब्बास इमाम हुसैन के पास आए, सूरते हाल से आगाह किया। हजरत इमाम ने फरमाया, तुम इब्ने सअद से कहो वह हमें रात भर की मोहलत दे ताकि हम दुआ व इस्तिगफार और कुरआने हकीम की तिलावत करें, नमाजें अदा करें। सुबह वह होगा जो होने वाला है। अब्बास ने इब्ने सअद से कहा, इस वक़्त तुम लोग वापस चले जाओ सुबह तक हमें मोहलत दो। इन्शाअल्लाह कल जो मुनासिब होगा किया जाएगा।

हज़रत इमाम का खिताब और जांनिसारों की सबात कदमी : इब्ने सअद ने मुशीरों से मश्वरा के बाद एक रात की मोहलत देने का फैसला कर लिया।

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी तारीफ करता हूँ कि तू ने हमारे जद्दे अम्जद को नुबुव्वत से सरफराज फरमाया और हम को गोश (कान) व चश्म (आँख) और कुलूबे (दिल) इनायत किए। कुरआन की तालीम और दीन का फहम (समझ) अता फरमाया। पस हम तेरा शुक्र अदा करते हैं। मैं अपने हम्राहियों से ज़्यादा किसी को बावफा और बेहतर नहीं समझता। मेरे अह्ले बैत से ज़्यादा नेक और रिश्ता का लिहाज़ रखने वाला कोई दूसरा नहीं। आगाह हो जाओ! मुझे यकीन हो गया है कि कल यह आदा (दुश्मन) मुझ से जरूर लड़ेंगे। मैं तुम को बखुशी इजाजत देता हूँ कि रात की तारीकी में जिसका जिस तरफ जी चाहे चला जाए। उस पर मेरा कुछ हक नहीं है। अपने-अपने शहरों और मुल्कों की तरफ मुंतशिर हो कर चले जाओ। शायद अल्लाह तआला तुम को इस जुल्म से बचा ले। क्योंकि शामी मेरे खून के प्यासे हैं। अगर मुझे पा जाएंगे तो दूसरे की जुस्तजू न करेंगे।"

इस खुतबा के बाद इमाम हुसैन खामोश हो गये। तमाम आवान व

अन्सार बयक ज़ुबान बोले :

आपके बाद हमारी ज़िन्दगी बेकैफ़ होगी। खुदा हमें वह चीज़ न दिखाए जिसे हम नापसन्द करते हैं। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 97, अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 8, स० 176)

ख़ानवाद-ए-हाशिम के एलाने वफ़ादारी के बाद मुस्लिम बिन औसजा असदी ने अपनी वफ़ादारी व जाँ निसारी का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में किया :

"खुदा की क़सम उस वक़्त तक आपका साथ न छोड़ूंगा जब तक दुश्मनों के सीना में नेज़ा न तोड़ डालूं और तल्वार न चला लूँ। खुदा की क़सम! अगर मेरे पास अस्लेहे न होते तो दुश्मनों पर पत्थर बरसाता और आप पर कुरबान हो जाता।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 98)

सअद बिन अब्दुल्लाह हन्फ़ी ने कहा :

"बखुदा हम आप को छोड़ कर न जाएंगे। दुनिया यह देख ले कि रसूलुल्लाह की ग़ैबत (पीछे) में हम ने आपकी कैसी हिफ़ाज़त की। वल्लाह मैं जानता कि क़त्ल हो जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं फिर ज़िन्दा जला दिया जाऊं। फिर मेरी राख उड़ा दी जाए। सत्तर मरतबा यही हालत मुझ पर गुज़रे फिर भी आपकी नुसरत (मदद) में जब तक मुझे मौत न आ जाए आप से जुदा न होता। और अब तो एक ही बार क़त्ल होना है। इस में वह शर्फ़ करामत है जिसे अबद तक ज़वाल नहीं। फिर मैं उसे क्यों न हासिल करूं।" (तारीख़ तबरी : जिल्द 4, स० 365)

हम्राहियों को रुख़्सत करने के बाद हज़रत इमाम तन्हाई में यह रिक़्क़त अंगेज़ अश्आर पढ़ने लगे :

ऐ नापाइदार ज़माने! तुझ पर वाए (अफ़सोस) हो तो कितना बुरा दोस्त है? कि हर सुबह व शाम किसी दोस्त या दुश्मन को हलाक करता है। तू एक के एवज़ में दूसरे को कुबूल नहीं करता। यह सारे उमूर हुक्मे इलाही से अंजाम पाते हैं और हर ज़ी रूह को इसी राहे फना पर गामज़न होना है।

हुज़्न व ग़म की मारी ज़ैनब बिन्ते अली ने मोहतरम भाई हुसैन की ज़ुबान से यह अश्आर सुने। मुस्तक़्बिल के दिल्दोज़ मनाज़िर आंखों के सामने रक़्स करने लगे, ज़ब्त न कर सकीं, फ़र्त व अलम में उठीं, ग़म गुसार भाई के पास पहुँचीं और रोते हुए फरमाया :

"हाए अफसोस! काश आज की ज़िन्दगी को मेरी मौत फना कर देती। मेरी माँ फातिमा मर गईं, मेरे बाप अली मुझ से जुदा हो गये, मेरा भाई हसन

जाते रहे। ऐ ख़लीफ़ा! ऐ सर परस्त बाक़ी!"

हज़रत इमाम हुसैन ने अज़ीज़ बहन का दर्द अंगेज़ कलाम सुना तो फरमाया :

"बहन! क्या कह रही हो, तुम्हारे सब्र व तहम्मुल को क्या हो गया? अल्लाह तआला से डरो और उसके हुक्म पर साबिर व शाकिर रहो, और यह जान रखो कि ज़मीन के सारे बाशिन्दे मर जायेंगे, आसमान वाले भी बाक़ी न रहेंगे। बेशक ज़ाते इलाही के अलावा सारी काइनात फना होने वाली है। मेरे बाप मुझ से बेहतर थे, मेरी माँ मुझ से अफ़ज़ल थीं, मेरे भाई मुझ से ज़्यादा नेक थे। मुझ को और उनको और तमाम मुसलमानों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करनी है। वह भी इस दुनिया से उठ गये तो हम किस शुमार में हैं? ऐ मेरी बहन! मैं तुम्हें क़सम दिलाता हूँ कि कल अगर मैं मारा जाऊं तो जामादरी (दामन पकड़ना) न करना, नौहा व मातम न करना। ऐ बहन! यही दिन सबको पेश आने वाला है। सब्र करना, सब्र का अज्र अल्लाह तआला अता फरमाएगा।"

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **98, 99**, तबरी जिल्द **4**, स० **368**)

सारी रात हुसैनी क़ाफ़िला के अफ़राद ने दुआ व इस्तिग़फ़ार, नमाज़ व तिलावत में गुज़ार दी। हुज़ूरे इलाही में तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहे और आलाम व मसाइब का क़ाफ़िला लेकर नमूदार होने वाली सबुह क़्यामत के इंतिज़ार में बेदार रहे।

❖ ❖ ❖

क़यामते सुग़रा

दसवीं मुहर्रम 61 हिजरी की क़यामत खेज़ सुबह के आसार उफ़ूक़े मश्रिक़ पर ज़ाहिर हुए, नसीमे सहरी के झोंके हज़रत हुसैन और उनके क़ुदसी सिफ़ात वफादार, जांनिसारो को आख़िरी सलाम करते हुए आगे बढ़ रहे थे, इबादत व इताअते इलाही, ज़िक्र व इस्तिग़फ़ार में पूरी रात गुज़र चुकी थी। अब इब्तिला व आज़माइश का क़ाफ़िला लेकर आफ़ताब तुलूअ़ होने वाला था। अज़ान दी गई। खुले मैदान में इमाम हुसैन ने आख़िरी नमाज़ बाजमाअत अदा फरमाई।

दूसरी जानिब यज़ीदी लश्कर में जंग की तैयारियाँ शुरू हुईं। पाँच हज़ार का मुसल्लह लश्कर इब्ने सअद की क़यादत में इस तरह आगे बढ़ा कि मैमना पर अमर बिन हुज्जाज, मैसरा पर शिम्र ज़िल-जौशन रिसाला अज़ीज़ा बिन क़ैस की सरकरदगी में और शबश बिन रिब्ई प्यादों का अफ़्सर था। यज़ीदी लश्कर शराफ़त व इंसानियत के पैकर 72 नुफ़ूसे क़ुदसीया की तरफ़ तूफ़ाने बला खेज़ की तरह बढ़ा। मुलूकीयत व क़ैसरीयत के दुनियादार हवा ख़्वाहों का लश्कर दावत व अज़ीमत, हक़ व सदाक़त के अलम बरदारों का ख़ात्मा करके ज़ुल्म व जोर के ख़िलाफ़ उठने वाली आवाज़ को हमेशा के लिए दबा कर यज़ीदीयत का ग़लग़ला बुलन्द करने के लिए बातिल क़ुव्वत व जोश के साथ आगे बढ़ा।

अज़ीमत व इस्तिक़ामत के पैकरे रूहानी ने सैलाबे बला सामने अपने वफ़ा शिआर अफ़राद को इस तरह मुरत्तब फरमाया, मैमना पर ज़ुहैर बिन क़ैस, मैसरा पर हबीब इब्ने मज़ाहिर को मुतऐयन फरमाया, अल्म अब्बास बिन अली को दिया और ख़ेमों को पुश्त पर रखा।

हज़रत इमाम हुसैन ने जब मैदाने जंग का क़सद किया क़ुरआन को सामने रखा और दोनों हाथ उठा कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में दर्दनाक आवाज़ में यह दुआ इरशाद फरमाई :

तरजमा : ख़ुदाया! तू हर मुसीबत में मेरा भरोसा और हर तक्लीफ़ में मेरा आसरा है मुझ पर जो वक़्त आए उन में तू ही मेरा पुश्त व पनाह था। बहुत से ग़म व अन्दोह ऐसे हैं जिन में दिल कम्ज़ोर पड़ जाता है, कामयाबी की तदबीरें कम हो जाती हैं और रिहाई की सूरतें घट जाती हैं, दोस्त उस

में छोड़ देते हैं और दुश्मन शमातत (ख़ुश) करते हैं, लेकिन मैंने इन तमाम क़िस्म के नाजुक औक़ात में सबको छोड़ कर तेरी तरफ़ रुजूअ़ किया, तुझी से उसकी शिकायत की, तू ने इन मसाइब के बादल छांट दिए और उनके मुक़ाबले में मेरा सहारा बना, तू ही हर नेमत का हामिल और भलाई का मालिक और हर आरज़ू और हर ख़्वाहिश का मुन्तहा है।

जब पाँच हज़ार यज़ीदी लश्कर और 72 अफ़राद पर मुश्तमिल भूखा प्यासा हक़ परस्तों का गरोह मक़ाबिल हुआ। जंग यक़ीनी थी, ख़ून का दरिया बहने वाला था, दिल धड़क रहे थे, फ़िज़ा ख़ामोश थी। हज़रत इमाम हुसैन इस्लामी आईने ख़िलाफ़त के बरअक्स यज़ीदी क़ैसरीयत को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। इस्लाम में मुलूकियत की फासिद रिवायात को रिवाज देकर इस्लाम की जम्हूरी इक़्दार को फना करना पसन्द करते थे। इसलिए वह यज़ीद जैसे फासिक़ व फाजिर, ना ख़ुदातरस, मुहरिमात को हलाल करने वाले, आज़ादी-ए-राय और अद्ल व इंसाफ़ का गला घोंटने वाले के हाथ पर हाथ देकर अपनी अज़ीमत मआब शख़्सियत को मजरूह करना गवारा न करते थे और क़ैसर व किसरा के तरज़ पर क़ाइम होने वाली जाबिराना तरज़े हुकूमत पर मुहरे तस्दीक़ सब्त करना किसी हाल में जाइज़ न समझते थे। दूसरी जानिब यज़ीदियों का कहना था कि दो ही राहें हैं। या तो इमाम हुसैन यज़ीद के हाथ पर बैअत करके उसकी ख़िलाफ़त और ख़िलाफ़े इस्लाम बद-तरीन कारनामों की तौसीक़ कर दें या फिर सर ज़मीने करबला को अपने और अपने अहबाब व अंसार के ख़ून से लाला ज़ार बनाने के लिए तैयार हो जाएं और करबला की खाक को अपनी अबदी अरामगाह बना कर यज़ीदियत के ख़िलाफ़ तहरीक का ख़ात्मा कर दें।

आग़ोशे रिसालत के तर्बियत याफ़्ता हुसैन, अली शेरे ख़ुदा के फ़रजन्द, फातिमा ज़हरा के लख़्ते जिगर, यज़ीद के हाथों पर बैअत करके दीन व ईमान का सौदा न कर सकते थे। क्योंकि क़ुरआन व सुन्नत की रूह उनकी रग-रग में पैवस्त थी, क़ुरआन ने अद्ल व इंसाफ़ पर मब्नी निज़ामे हुक्मरानी का हुक्म दिया है। नाना जान ने इस्लाम के रूहानी निज़ाम दीन व शरीअत की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ के लिए मआंदीने इस्लाम की कुछ परवाह न की थी। कुफ़्र व शिर्क, शर व फ़साद से भरे हुए जज़ीरा नुमाए अरब में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सदाए हक़ व सदाक़त को दबाने के लिए मुश्रेकीने मक्का ने लाख जतन किए मगर नाकामी हुई। एक बार अबू तालिब की बारगाह में हाज़िर हो कर दावते हक़ व सदाक़त से बाज़ रखने के लिए धमकी दी गई तो मुश्फ़िक़ व मेहरबान चचा अबू तालिब से इरशाद फरमाया :

"चचा मोहरतम! अगर यह लोग मेरे एक हाथ पर आफ़ताब और दूसरे हाथ पर माहताब रख दें तब भी मैं अपने फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा, या खुदा उस काम को पूरा करेगा या खुद मैं उस पर निसार हो जाऊंगा।"

कुफ़्फ़ारे मक्का की तहदीदी (धमकी) कोशिश नाकाम रही तो सरकार की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा, ऐ मुहम्मद! तुम क्या चाहते हो? मक्का की रियासत, किसी बड़े खानदान में शादी या दौलत का ज़ख़ीरा? हम सब कुछ मुहैया कर सकते हैं। मगर तुम अपनी तहरीक से बाज़ आ जाओ। जवाब में हुज़ूर रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते करीमा तिलावत फरमाई थी :

तरजमा : ऐ मुहम्मद! आप उन लोगों से कह दें कि तुम लोग खुदा का इंकार करते हो, उसने दो दिन में ज़मीन पैदा की और उसका शरीक ठहराते हो। खुदा सारी काइनात का परवरदिगार है।

इमाम हुसैन की रगों में रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ून गर्दिश कर रहा था। वह हक़ व सदाक़त के अलर्रग़म यज़ीदी मुराआत और शाही नवाज़िशात से बहरा मन्द होना पसन्द न करते थे। दुनिया का ऐश व तर्ब उन्हें कुबूल न था वह दीने हक़ की सर बुलन्दी के लिए इब्तिला व आज़माइश की सख़्तियों से गुज़रना, करबला के तप्ते हुए सहरा में अपने जिगर गोशों के तड़पते लाशे देखना, अपने आवान व अंसार का लहू लहान हो कर जुदा होना, अपने जिस्म पर तीर व तबर, शम्सीर व सिनान के ला तादाद ज़ख़्म और गर्दन पर ख़ंजर आबदार का चलना ज़्यादा महबूब रखते थे।

सूरज ने ज़मीने करबला पर ख़ून आलूद किरनें बिखेरीं, यज़ीदी लश्कर को जुंबिश हुई और हज़रत हुसैन चन्द अहबाब व अइज़्ज़ा और जाँनिसारों को ख़ून में नहलाने के इरादे से आगे बढ़े। इम्तिहान व आज़माइश का यह ऐसा वक़्त था जब हुसैन अपनी जान बचाने और हयाते मुस्तआर की चन्द रोज़ा बक़ा के लिए यज़ीदी बैअ़त पर रज़ामन्द हो कर दुनिया की आसाइशें अपने दामन में समेट सकते थे। मगर हुसैन ख़ून के दरिया से गुज़र कर हयाते जावेदाँ हासिल करना और चमनिस्ताने रिसालत के नौ निहालों के ख़ून से दीन के चेहरे का गुबार धोना, बातिल की तमर्रुद (गुस्ताख़ी) पसन्दी और क़ैसरी निख़वत का सर हमेशा के लिए नीचा करना अपना फर्ज़े मन्सबी समझते थे।

हुसैन इस मरहल-ए-आज़माइश में मशीयते ईज़्दी पर बरज़ा व खुशी सर कटाने के लिए आमादा हो गये, दुनिया की तरफ़ आंख उठा कर न

देखा। हुसैन सफ़ से निकल कर यज़ीदी लश्कर के सामने आए और दुनिया की जाह व हशमत के लिए दीन फ़रोख़्त करने वाले नाम निहाद मुसलमानों के सामने तमाम हुज्जत के लिए एक मुअस्सिर तक़रीर फरमाई ताकि आने वाला मुअर्रिख़ हुसैन की सीरत व किरदार को यह कह कर दाग़दार न कर सके कि हुसैन ने अपने नाना जान की तरह तब्लीग़े हक़ न की, ज़ुल्मत व तारीकी में भटकने वालों को शमअ़े हिदायत न दिखाई, मिन्हाजे राह दीन व शरीअ़त, ख़ौफ़ व खुदा मुआख़ज़ा आख़िरत की तरग़ीब व तल्क़ीन न फरमाई। वरना यज़ीदियों के सख़्त दिल मोम हो जाते और फिर तारीख़े इस्लाम का यह अज़ीम अन्दोहनाक वाक़या पेश न आता कि रसूलुल्लाह के कलिमा ख़्वान, अह्ले बैते रसूल और उनके चहेते नवासे का सर अपनी तल्वारों से क़लम करते।

हुसैन तो उस रसूले आज़म व अकरम के नवासे थे जो मक्का की सर ज़मीन पर कुफ़्फ़ार कुरैश के सख़्त तरीन मज़ालिम और उनकी इस्लाम दुश्मन रेशा दवानियों के बावजूद दीने हक़ की तब्लीग़ करते रहे। हुसैन ने भी आख़िर वक़्त में जब कि जंग नागुज़ीर थी तब्लीग़ी मिशन को जारी रखा और इरशाद फरमाया :

यज़ीदी फौज से ख़िताब :

तरजमा : लोगो! मेरी बात सुन लो मेरे साथ जल्दी न करो! जो बातें तुम से कहनी ज़रूरी हैं मुझे कह लेने दो और तुम लोगों के पास आने का उज़्र मुझे कर लेने दो। अगर तुम मेरा उज़्र मान लोगे, मेरी बात सच समझोगे, मेरे साथ इंसाफ़ करोगे तो तुम नेकी हासिल करोगे और फिर मुझ पर इल्ज़ाम न लगा सकोगे अगर मेरी सुनोगे खुश क़िस्मत होगे और तुम्हारे लिए मेरी मुख़ालिफ़त की कोई सबील बाक़ी न रहेगी अगर तुम ने मेरा उज़्र कुबूल न किया और इंसाफ़ से काम न लिया तो पस तुम और तुम्हारे शरीक सब मिल कर अपनी एक बात ठहरा लो, ताकि तुम्हारी वह बात तुम से किसी के ऊपर मख़्फ़ी (छुपी) न रहे। तुम मेरे साथ जो करना चाहते हो कर डालो और मुझे मोहलत न दो। मेरा निगहबान ख़ुदा है, जिसने किताब नाज़िल की और वही सालेहीन का वली होता है।

हज़रत इमाम उस मक़ाम तक पहुंचे थे कि ख़ेमागाह इमामत में नौहा व मातम बरपा हो गया। ख़्वातीन की आवाज़ गिरिया व ज़ारी सुन कर आपने अब्बास बिन अली को भेजा कि जाकर उन्हें ख़ामोश करो, सब्र की तल्क़ीन करो। मेरी ज़िन्दगी की क़सम! अभी उनको बहुत रोना है। सुकूत के बाद सिलसिल-ए-तक़रीरी जारी करते हुए फरमाया :

तरजमा : लोगो! मेरी निस्बत पर गौर कर, मैं कौन हूँ? फिर अपने गरीबान में मुंह डाल कर अपने को मलामत करो। ख़्याल करो कि मेरा क़त्ल और मेरी इज़्ज़त व हुर्मत को पामाल करना तुम्हारे लिए ज़ेबा है? क्या मैं तुम्हारे नबी की बेटी का लड़का और उसके वसी इब्ने अम, ख़ुदा पर सब से पहले ईमान लाने वाले उसके रसूल और उसकी किताब की तस्दीक़ करने वाले का फरज़न्द नहीं हूँ? क्या सैय्यदुश्शोहदा हम्ज़ा मेरे बाप के चचा और जाफ़र तैयार ज़ुल-जनाहैन मेरे चचा न थे? क्या तुमको मालूम नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे और मेरे भाई के बारे में फरमाया, यह दोनों नौजवानाने जन्नत के सरदार हैं। अगर मैं सच कहता हूँ और यकीनन सच कहता हूँ क्योंकि जब से मुझे मालूम है कि झूटे पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल होता है उस वक़्त से मैं अमदन (जान बूझ कर) झूठ नहीं बोला। और अगर मुझे झूठा समझते हो तो तुम में उसके जानने वाले मौजूद हैं। उन से उसकी तस्दीक़ कर लो। जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अंसारी, अबू सईद खुदरी, सहल बिन सअद साअदी, ज़ैद बिन अरक़म, अनस बिन मालिक अभी ज़िन्दा हैं उन से पूछो! यह तुम्हें बतायेंगे कि उन्होंने मेरे और मेरे भाई के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या सुना है? मुझे बताओ! क्या इस फरमान में मेरी ख़ूंरेज़ी के लिए कोई रोक नहीं? खुदा की क़सम! आज मश्रिक़ से लेकर मग्रिब तक रू-ए-ज़मीन में तुम में और किसी ग़ैर क़ौम में भी मेरे सिवा कोई नबी का नवासा नहीं है। मैं खास तुम्हारे नबी की लड़की का बेटा हूँ। मुझे बताओ! तुम लोग मेरे ख़ून के ख़्वास्तगार क्यों हो? क्या मैंने किसी को क़त्ल क्या है? किसी का माल ज़ाए किया है? किसी को ज़ख़्मी किया है? लोग खामोश रहे किसी ने कुछ जवाब न दिया।

फिर हज़रत इमाम ने पुकार कर कहा ऐ शीस बिन रिब्ई! ऐ हज्जार बिन अल-जब्ज! ऐ कैस बिन अश्अस! ऐ यज़ीद बिन हारिस! क्या तुम ने मुझ को नहीं लिखा था?

'फल पक चुके हैं, खुजूरें सरसब्ज़ हैं, दरिया जोश में हैं, फौजें तैयार हैं तुम फौरन आओ!

उन लोगों ने जवाब दिया, हमने आपको खुतूत तहरीर नहीं किए थे।

फरमाया सुब्हानल्लाह, खुदा की क़सम! तुम ने लिखा था।

लोगो! अगर तुमको मेरा आना नागवार है तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी पुर अमन खित्त-ए-ज़मीन की तरफ़ चला जाऊं। इब्ने अश्अस ने कहा, तुम अपने बनी अम का कहना क्यों नहीं मान लेते? उनकी राय तुम्हारे

ख़िलाफ़ न होगी। उनकी तरफ़ से कोई नारवा सुलूक न किया जाएगा। हज़रत हुसैन ने फरमाया क्यों नहीं! आख़िर तुम भी तो अपने भाई के भाई हो तुम क्या चाहते हो? कि बनू हाशिम मुस्लिम बिन अक़ील के ख़ून के अलावा तुम से और दूसरे ख़ून के बदला का भी मुतालबा करें? ख़ुदा की क़सम मैं ज़लील की तरह उसके हाथ में अपना न दूँगा और गुलाम की तरह उसका इक़रार न करूंगा। फिर कुरआने हकीम की यह आयतें पढ़ीं :

तरजमा : मैं पनाह लेता हूँ अपने और तुम्हारे रब की उस से कि तुम मुझे संगसार करो। (कंज़ुल-ईमान)

तरजमा : मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूँ, हर मुतकब्बिर से कि हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता। (कंज़ुल-ईमान)

हज़रत इमाम हुसैन इत्मामे हुज्जत कर चुके और अश्क़िया (बेरहम) पर आपके फ़सीह व बलीग़ हक़ाइक़ पर मब्नी ख़िताब का असर न हुआ। वह जंग के लिए आगे बढ़ने लगे तो जांनिसारे हुसैन जुहैर बिन क़ैस आगे बढ़े और एक मुअस्सिर तक़रीर फरमाई :

तरजमा : ऐ अह्ले कूफ़ा! ख़ुदा के अज़ाब से डरो! हर मुसलमान का यह फ़र्ज़ है कि अपने दूसरे मुसलमान भाई को नसीहत करे। अभी तक हम आपस में भाई-भाई हैं एक मज़्हब और एक मिल्लत के मानने वाले हैं जब तक हमारे दर्मियान तल्वार न उठ जाए उस वक़्त तक हम को तुम्हें नसीहत करने का हक़ है, जब आपस में तल्वारें उठ जाएंगी। ख़ुदा ने हम को और तुम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुर्रियत औलाद के बारे में आज़माइश में मुब्तला किया है कि हम उनके साथ कैसा बर्ताव करते हैं। मैं तुम को उनकी नुसरत (मदद) और उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद का साथ छोड़ देने की दावत देता हूँ, इसलिए तुम को उन से सिवाए बुराई के कुछ हासिल न होगा। वह तुम्हारी आंखों में गरम-सलाइयाँ फेरेंगे, तुम्हारे हाथ पाँव काटेंगे, तुम्हारा मिस्ला करेंगे, तुमको खुजूर की शाख़ों पर लटकाएंगे। हजरत इब्ने अदी और हानी इब्ने उरवा की तरह तुम्हारे मुम्ताज़ लोगों को क़त्ल करेंगे।

जुहैर इब्ने क़ैस की तक़रीर सुन कर संगदिल कूफ़ियों ने गालियाँ दीं और इब्ने ज़्याद की तारीफ़ करते हुए कहा, ख़ुदा की क़सम! हम और उनके साथियों को क़त्ल या उन्हें गिरफ़्तार करके अमीर इब्ने ज़्याद के पास पहुँचाए बग़ैर नहीं टल सकते। इस सख़्त जवाब के बावजूद जुहैर ने अपना कलाम जारी करते हुए फरमाया :

तरजमा : ख़ुदा के बन्दो! फातिमा का फ़रज़न्द इब्ने सुमैया (इब्ने ज़्याद) के मुक़ाबला में इम्दाद व इआनत का ज़्यादा मुस्तहिक़ है। अगर तुम

उनकी मदद नहीं करते तो ख़ुदा के लिए उन्हें क़त्ल न करो, उनके मुआमला को उनके और उनके इब्ने अम यज़ीद पर छोड़ दो। ख़ुदा की क़सम! वह हुसैन को क़त्ल न करने की सूरत में से ज़्यादा रज़ामन्द होगा। (तारीख़े तबरी : जिल्द 4, स० 324)

शिम्र ज़िल-जौशन ने ज़ुहैर इब्ने क़ैस को एक तीर मारा और कहा, ख़ामोश रहो! ज़ुहैर ने कहा इब्ने बुवाद! तुझ से कौन ख़िताब करता है? तू जानवर है। शिम्र ने कहा, ख़ुदा तुझ को और तेरे साथी को एक साथ हलाक करे। ज़ुहैर ने कहा तू मौत से डराता है। ख़ुदा की क़सम! हुसैन के साथ जान देना मुझे तेरे साथ दाइमी ज़िन्दगी से ज़्यादा पसन्द है। फिर कूफ़ियों से ख़िताब करते हुए कहा, जो लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद और उनके अह्ले बैत का ख़ून बहाएंगे वह क़्यामत के दिन आपकी शफ़ाअत से महरूम रहेंगे।

हुर बारगाहे इमामत में : हज़रत इमाम हुसैन और ज़ुहैर की तक़रीरों ने यज़ीदी लश्कर के बहुत से संजीदा अफ़राद को कश्मकश में मुब्तला कर दिया था। उनके ज़मीर पुकार-पुकार कर कह रहे थे, हुसैन और अह्ले बैते नुबुव्वत को क़त्ल करके आख़िरत की रुसवाई मोल लेना और चन्द रोज़ा दुनियावी ऐश की तरफ़ माइल होना ख़ुदा और रसूल के हुक्म की वाज़ेह ख़िलाफ़ वर्ज़ी है। मगर उनके नफ़्स दुनियावी जाह व हश्म के हुसूल की तरग़ीब दिला रहे थे और हुसैन और उनके जांनिसारों के ख़ून से अपने दामन आलूदा करके इब्ने ज़्याद और क़ैसरे दमिश्क़ की ख़ुश्नूदी हासिल करने की जानिब माइल कर रहे थे।

नफ़्स व ज़मीर की कश्मकश का शिकार होने वालों में यज़ीदी लश्कर के मुक़द्दमतुल-जैश का अमीर हुर भी था, जो हज़रत हुसैन को घेर कर मैदाने करबला तक लाया था, ख़ुश बख़्ती आख़िरत की कामरानी चूंकि उसका मुक़द्दर बन चुकी थी इसलिए ऐन उस वक़्त जब कि मैदाने कारे ज़ार गर्म होने वाला था, तबले जंग पर चोप पड़ने वाली थी, हुर्र का बेदार ज़मीर सियाह नफ़्स पर ग़ालिब आ गया और उसने यज़ीद की हिमायत व नुसरत से अलाहिदगी अख़्तियार करके हुसैन की इम्दाद व नुसरत का अह्द कर लिया। हुर्र बिन यज़ीद अमीरे लश्कर इब्ने सअद के पास पहुँचा और उस से मुख़ातब हो कर कहा, ख़ुदा तेरा भला करे क्या तू हुसैन से लड़ने लगा? इब्ने सअद ने जवाब दिया, हाँ! वल्लाह लड़ना भी ऐसा लड़ना जिस में कम से कम इतना होगा कि सर उड़ेंगे और हाथ क़लम होंगे। हुर्र ने कहा, क्या तुम उनकी बातों में कोई बात न मानोगे? इब्ने सअद ने कहा,

वल्लाह! अगर मेरा अख़्तियार होता तो मैं ऐसे नहीं करता लेकिन तेरा अमीर उसे नहीं मानता।

हुर्र लरज़ते हुए दिल और लड़ खड़ाते हुए क़दमों के साथ हज़रत इमाम हुसैन की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, मेरी जानिब से जो गुस्ताख़ियाँ और बद उनवानियाँ हो चुकीं वह हो चुकीं अब अपनी जान ग़म गुसारी के लिए हाज़िर करता हूँ, उम्मीद कि अभी तौबा का दरवाज़ा खुला होगा।

हज़रत हुसैन ने इरशाद फरमाया, तुम्हारी तौबा कुबूल होगी। तुम को बशारत हो कि तुम दुनिया व आख़िरत दोनों में हुर्र (आज़ाद) हो।

हज़रत हुर्र शामी फौज के सामने आए और बआवाज़ बुलन्द इरशाद फरमाया :

तरजमा : लोगो! जो बातें हुसैन ने पेश की हैं, उन में से किसी बात को तुम क्यों नहीं मान लेते कि खुदा तुम को उनके साथ जंग व जिदाल में मुब्तला होने से बचा ले।

इब्ने सअद ने कहा, बखुदा मैं दिल से यही चाहता हूँ मगर उसकी कोई सबील नहीं निकलती। हुर्र ने सिलसिल-ए-कलाम जारी रखते हुए कहा :

तरजमा : ऐ अह्ले कूफ़ा! खुदा तुम को हलाक और तबाह करे। तुम ने उन्हें बुलाया और जब वह चले आए तो उन्हें छोड़ दिया। तुम यह ख़्याल करते रहे कि उनकी हिमायत में लड़ोगे फिर उनके मुख़ालिफ़ हो गये और अब उनके क़त्ल के दरपे हो, उन्हें हर तरफ़ से घेर लिया है और खुदा की वसीअ् ज़मीन में किसी तरफ़ उनको जाने नहीं देते कि वह और उनके अह्ले बैत किसी पुर अमन मक़ाम पर चले जाएं। उस वक़्त उनकी हालत क़ैदी जैसी हो रही है जो अपनी ज़ात को न फाइदा पहुँचा सकता है और न नुक़्सान से बचा सकता है। तुमने उन पर नहरे फ़ुरात का पानी बन्द कर दिया है जिस पानी को यहूदी, नसरानी, मजूसी सब पीते हैं और दीहात के सुव्वर और कुत्ते तक उस में लोटते हैं, उसके पानी के लिए हुसैन और उनके अह्ल व अयाल तिश्ना लब तड़पते हैं। तुमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उनकी औलाद का क्या ख़ूब लिहाज़ किया! अगर तुम तौबा करके अपनी रविश तर्क न करोगे तो खुदा तुम्हें क़्यामत के दिन प्यासा तड़पाएगा।

जनाब हुर्र की तक़रीर बेअसर रही। यज़ीदी लश्कर की आंखों पर पर्दे पड़ चुके थे, उनके ज़मीर सो चुके थे। नफ़्स अपनी तमाम तर शिक़ावतों (पत्थर दिल) के साथ बेदार हो चुका था।

आग़ाज़े जंग : अमीरे लश्कर इब्ने सअद ने हुसैनी लश्कर की तरफ़

तीर फेंक कर आग़ाज़े जंग किया और कहा, लोगो! गवाह रहना सब से पहले मैंने ही हुसैन पर तीर चलाया है। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 106)

हालात की नीरंगी देखिए हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने कुफ़्र व इस्लाम के मारके में आक़ाए दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दीने हक़ की हिमायत व नुसरत में पहला तीर चलाया था। उनका बयान है, मैं पहला मर्द हूँ जिस ने अल्लाह के रास्ते में ख़ून बहाया और मैं ही पहला मर्द हूँ जिसने अल्लाह के रास्ते में पहला तीर फेंका। (तिर्मिज़ी : जिल्द दोम)

आज करबला के मैदान में हज़रत सअद का पिसर (बेटा) नाख़लफ़ क़ुद्सी सिफ़ात हुसैनियों पर पहला तीर फेंक कर अपनी बातिल परस्ती और सदाक़त कुशी का एलान कर रहा है।

यज़ीदी लश्कर के मुश्तइल अफ़राद आगे बढ़े। जाँनिसाराने हुसैन भी फ़िदाकारी के जज़्बात से सरशार हो कर आगे बढ़े। इब्तिदा में इंफ़िरादी जंग हुई। हुसैनियों ने जुरअते मरदाना और जोशे ईमानी में सरशार हो कर अपने मुक़ाबिल यज़ीदी लश्कर के सूरमाओं को तहे तेग़ करना शुरू कर दिया। यज़ीदी लश्कर का जो मबारिज़ आगे बढ़ता हुसैनी मुजाहिद उसे गर्म-गर्म ख़ाके सहरा का पैवन्द बना देते। अब्दुल्लाह बिन उमर ने यसार व सालिम को जहन्नम रसीद किया। बरीर बिन हज़ीर ने यज़ीद बिन मअ्क़ल को तहे तेग़ कर डाला। हुर बिन यज़ीद ने यज़ीद बिन सुफ़ियान को एक वार में ठिकाने लगा दिया, नाफ़ेअ् बिन हिलाल ने मज़ाहिम बिन हरीस को चश्म ज़दन में क़त्ल कर दिया, हुर्र और नाफ़ेअ् बिन हिलाल अपने मुबारिज़ तलब करते रहे और शामी फौजी अपने मश्हूर शहसवारों को ख़ाके करबला पर तड़पता हुआ देखते रहे, कसरत के बावजूद उनके हौसलों पर ओस पड़ने लगी। किसी की हिम्मत न हुई कि सफ़ से निकल कर हुसैनी शेरों से नबर्द आज़मा हो। यह हालत देखी तो अमर बिन हुज्जाज ने चिल्ला कर कहा :

"ऐ लोगो! तुम्हारे मुक़ाबले पर आदमी ही हैं, यह शेर नहीं हैं, जो तुम को मैदाने जंग में जाते ही फाड़ डालेंगे। बड़े अफ़सोस की बात है कि तुम लोग इस कसरत के बावजूद हिम्मत हारते जा रहे हो। तुम्हारे मुक़ाबिल की तादाद इस क़द्र कम है कि अगर तुम लोग उन पर एक-एक कंकरी भी फेंको तो उनकी मौत के लिए काफी है। ऐ अह्ले कूफ़ा! अपने अमीर की इताअत करो। जमाअत से अलाहिदा न हो। देखो! अब तुम इंफिरादी तौर पर जंग के लिए मैदान में न जाओ वल्कि सब के सब झुरमुट बांध कर

मज्मूई हैसियत से हमला करो।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 109)

सालारे लश्कर इब्ने हुज्जाह की इस राय को पसन्द किया और तन्हा-तन्हा जंग करने से रोक दिया। सब से पहले अमर बिन हुज्जाज ने फ़ुरात की जानिब से जाँनिसाराने हुसैन पर हमला कर दिया।

हुसैनी लश्कर के शहसवारों ने इज्तिमाई हमला का जवाब बड़ी जुरअत व हिम्मत से दिया, ख़ून आशामे मअ्रका गर्म हुआ, हुसैनी जांबाज़ जिस तरफ़ रुख़ करते यज़ीदियों को पीछे हटने पर मज्बूर कर देते, उनकी ख़ारां शिगाफ़ तल्वारें बिजली की तरह कोंदतीं और दमज़दन में चन्द यज़ीदियों की गर्दनें साफ़ कर देतीं, या उनके शाने काट कर शदीद मज्रूह कर देतीं। यज़ीदियों ने दूसरा महाज़ खोलने की कोशिशें कीं मगर वह नाकाम रहे और तिश्ना लब हुसैनियों की दादे शुजाअत ने उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया।

यह दुनिया की अजीब व ग़रीब जंग थी। यज़ीदी लश्कर ताग़ूती निज़ामे हुक्मरानी के तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा के लिए सुल्हाए उम्मत को पैवन्दे खाक बना देना और आवाज़े हक़ व सदाक़त को दबा कर बातिल का ग़लग़ला बुलन्द करना चाहता था। बातिल परस्तों के हौसलों को क़ुव्वते सर्फ़ इसलिए हासिल थी कि उनके मुक़ाबिल बहुत ही क़लील थे। भूखे और तिश्ना काम थे। इसलिए शेरों के हमलों से बार-बार पीछे हटने के बावजूद आगे बढ़ते रहे। दूसरी जानिब हक़ व सदाक़त के अलम्बरदार बातिल निज़ामे फ़िक्र व अमल के ख़िलाफ़ सिर्फ़ हक़ की हिमायत के लिए शुजाअत के जौहर दिखते रहे, सर हथेलियों पर लेकर आगे बढ़ते रहे, उनकी जवाँमर्दी रुस्तम व सोहराब वक़्त के हौसले पस्त करी रही थी। इन वफ़ा शिआर हुसैनियों को यक़ीने कामिल था कि बिल-आख़िर उन्हें शहीद कर डाला जाएगा, लाशें घोड़ों से रौंदी जाएंगी, सर तन से जुदा किए जाएंगे। माल व मताअ् ग़ारत कर दिया जाएगा। मगर वह राहे हक़ में दादे शुजाअत देकर शहादत का जाम शीरीं नोश करना चाहते थे, अपने जिस्म का आख़िरी क़तर-ए-ख़ून हिमायत व नुसरते हुसैन में बहा कर करबला की प्यासी ज़मीन को सैराब करके जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द करना अपनी सब से बड़ी कामयाबी तसव्वुर करते थे। वह दुनियावी माल व मताअ् और हयाते मुस्तआर के पुर तअय्यश लम्हात के बजाए हुसैन के क़दमों पर जान निछावर कर देना ही हासिले ज़िन्दगी समझते थे। जान देने वाले बहत्तर (72) नुफ़ूस और जान लेने वाले पाँच हज़ार मुसल्लह अफ़राद मगर उन्हें अपनी ज़िन्दगी अज़ीज़ थी, वह मअ्रक-ए-करबला में कामयाबी का इंआम अपने जाबिर हुक्मरानों से हासिल करके बागे हयात को नुज्हते बहार और

रंग बूए गुल से माला माल करना चाहते थे। इसलिए हर यज़ीदी अपनी जाने अज़ीज़ की मुहाफ़िज़ अपना फ़र्ज़ समझता था, मरदाने दिलावर के सामने आने से कतराता था।

जमाअते हुसैन के सवारों ने यज़ीदियों के छक्के छुड़ा दिए। वह जिधर जाते यज़ीदी लश्कर काई की तरह फट जाता। गुर्रा बिन कैस ने जंग का नक़्शा देखा तो अमर बिन सअद के पास पैग़ाम भेजा कि मअ़्दूदे चन्द सवारों ने कूफ़ियों को परागन्दा और कम हौसला कर दिया है। अगर यही नक़्श-ए-जंग रहा तो उनके पाँव मैदाने जंग से उखड़ जाएंगे। मुनासिब है कि तीर अंदाज़ों और प्यादों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया जाए। हिसीन बिन नुमैर ने इब्ने सअद के हुक्म से पाँच सौ तीर अंदाज़ों को आगे बढ़ाया और हुसैनी लश्कर पर बेतहाशा तीरों की बारिश कर दी। थोड़ी देर में हुसैनी लश्कर के अक्सर घोड़े ज़ख़्मी हुए और उन में सवारों को संभालने की सलाहियत बाक़ी न रही तो सवारों ने घोड़ों से उतर कर पा प्यादा जंग शुरू कर दी। कुव्वत व कसरत के बावजूद हौसलामन्द जाँ फरोशों ने यज़ीदी फौज के सारे हमले नाकाम बना दिए और वह हमला करने से जी चुराने लगे। दोपहर तक बड़ी सख़्त मअ़्रका आराई (लड़ाई) होती रही। अमर बिन सअद ने ख़ेमों की तनाबें काटने का हुक्म दिया। मगर जितने यज़ीदी इस हरकते शनीअ़ (बुरे काम) के लिए आगे बढ़ते वापस न जाते। यह हाल देख कर इब्ने सअद ने ख़ेमों पर आग बरसानी शुरू की ताकि ख़ेमे जल उठें और हुसैनी लश्कर दूसरी जानिब मुतवज्जेह हो जाए और जंग जल्द तर तमाम हो जाए। हज़रत इमाम हुसैन ने पुकार कर कहा :

"तुम लोग मुझ से लड़ते हो तो मुझसे लड़ो, ख़ेमों में औरतों और बच्चों के सिवा कोई मर्द नहीं है। वह ग़रीब निकल कर न भाग सकेंगे और न हम ख़ेमों में आतिश ज़दगी के बाइस तुम से लड़ सकेंगे।"

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 111)

जंगे शबाब पर थी मगर क़लील जमाअत से एक दो का शहीद होना भी कमी नुमायाँ कर देता था। यज़ीदी लश्कर में कसरत के बाइस पाँच दस की हलाकत महसूस न होती थी। शामियों ने पुर आशोब हमलों, तीर बारियों से हुसैनी जाँ निसारों को एक-एक करके जामे शहादत पिलाना शुरू कर दिया। इश्क़ व इख़्लास, ईसार व कुरबानी, फिदाकारी व जाँ निसारी की अय्यार आज़माइश पर वह खरे साबित होते रहे। अब हुसैनी जाँबाज़ों की तादाद काफ़ी घट चुकी थी वह यक़ीन कर चुके थे कि इस सैलाब के सामने हम बन्द बांध कर हुसैन को बचा नहीं सकते। चुनाँचे

उन्होंने तय कर लिया कि जाते इमाम पर आँच आने से पहले वह अपनी कुरबानियाँ पेश कर दें और हज़रत इमाम हुसैन के कदमों पर जानें निसार कर दें।

तमाम फिदायाने अह्ले बैत एक-एक करके परवाना वार लश्करे शाम की तरफ़ बढ़ने लगे, बेजिगरी के साथ दादे शुजाअत दी। लड़ते-लड़ते अपने आक़ा पर जानें कुरबान कर दीं, सुवेद बिन अबी अल-मुतआ के अलावा सारे आवान व अंसारे हुसैन ने शहादत पाई। उनकी शहादत के सदमात ने क़ल्बे हुसैन को छलनी कर दिया। ग़म व अन्दोह के सबब चश्मे इमामत नम्नाक हो रही थी।

अली अकबर : आवान व अंसार अपनी जानें निसार कर चुके। अब औलादे अली की बारी आई, सबसे पहले चमनिस्ताने हुसैन के गुले शादाब, नौजवान अली अकबर ने हज़रत हुसैन से मैदाने कारे ज़ार में दादे शुजाअत लेकर अपनी जान की कुरबानी पेश करने का इज़्न तलब (इजाजत माँगना) किया। हुसैन सुबह से अपने फिदाकारों के लाशे उठा रहे थे, शिद्दते गम से दिल पाश-पाश हो रहा था। ऐसे आलम में लख़्ते जिगर, शबीहे पैग़म्बर, जाने अज़ीज़, पाए इमामत पर जांनिसार करने की इजाजत माँग रहे हैं। बड़ा ही सब्र आज़मा वक़्त है। इस सख़्त आजमाइश में भी हुसैन ने सुन्नते इब्राहीमी की याद ताज़ा की। रियाज़े अली के गुल तर, तस्कीने क़ल्ब व नज़र हज़रत अली अकबर को सफ़े आदा के सामने जाने की इजाज़त दे दी। हाशमी नौजवान तन्हा सुफूफे अश्क़िया के सामने यह रज्ज़ पढ़ता हुआ जा रहा है :

तरजमा : मैं हुसैन इब्ने अली का बेटा अली हूँ। खान-ए-काबा के रब की क़सम की हम नबी के कुर्ब के ज्यादा मुस्तहिक़ हैं। खुदा की क़सम! नामालूम बाप का बेटा हम पर हुकूमत न कर सकेगा।"

अली अकबर दुश्मनों पर बिजली की तरह हमला आवर होते, आपकी बर्क़ रफ़्तारी और जोशे शुजाअत ने शामियों को दम-ब-खुद कर दिया। उन्हें आप पर हमला करने की हिम्मत न हुई। इसी अस्ना में आप मुर्रा बिन मुंकिज़ तमीमी के सामने से गुज़रे। मुर्रा आजमूदा कार सिपाही था। उसने ताक कर नेज़े से हमला किया। नेज़ा जिस्म में पैवस्त हो गया। हर तरफ़ से शामियों ने नेज़ों और तल्वारों की बारिश कर दी। नाज़ुक जिस्म ज़ख़्मों से चूर-चूर हो गया। हज़रत इमाम बादीद-ए-नम लख़्ते जिगर की लाश उठाने गये। हजरत जैनब ने अज़ीज़ भतीजे की लाश देखी, फर्ते ग़म से बाहर आईं और ग़श खा कर अली अकबर की लाश पर गिर पड़ीं। इमाम हुसैन बहन का हाथ पकड़ कर खेमा में ले गये।

यह अजीब बेकसी और कसमपुर्सी (परेशानी) का आलम था, सारे अइज़्ज़ा व अक्रेबा ने जानें कुरबान कर दी हैं, जाँनिसारों की तड़पती हुई लाशों का मंज़र, लख़्ते जिगर अली अकबर का ज़ख़्मों से पाश-पाश जिस्म, बहन की हालते ज़ार, रंज व महन और दर्द व करब की कैफ़ियत में हज़रत हुसैन कभी फ़रज़न्द की लाश पर निगाह डालते हैं और कभी आसमान की तरफ़ देखते हैं। ज़ुबाने हाल से कह रहे हैं, इलाही! मैंने तेरी राह में अपना सबसे बड़ा मताअ् हयात कुरबान करके तेरे ख़लील की सुन्नत पूरी कर दी है तू उसे कुबूल फरमा!

ज़ुबाने मुबारक से इरशाद फरमाया :

"ऐ फरज़न्द! जिन लोगों ने तुझे क़त्ल किया खुदा और रसूल पर उनकी जुरअत किस क़द्र बढ़ी हुई है। तेरे बाद दुनिया पर खाक है।"

(तबरी : जिल्द 4, स० 340)

बूढ़े हुसैन ने हज़रत अली अकबर की शहादत के बाद फरज़न्दाने ज़ैनब औन व मुहम्मद की ख़ून में नहाई हुई लाशें देखीं। मुस्लिम बिन अक़ील के फ़रज़न्द अब्दुर्रहमान और जाफर की खून में तड़पती हुई लाशों का कर्ब अंगेज़ मंज़र देखा।

क़ासिम बिन हसन की शहादत : हज़रत हसन की निशानी जनाब क़ासिम चचा पर अपनी जान कुरबान करने के लिए मैदान की तरफ़ बढ़े। अमर बिन सअद बिन नुफ़ैल ने नाजुक जिस्म पर तल्वार का भर पूर वार किया। क़ासिम बिन हसन या अमाह! कह कर जमीन पर गिर पड़े, हज़रत हुसैन आगे बढ़े अमर पर वार किया। उसका हाथ कट गया। यजीदियों ने उसे बचाना चाहा मगर उन्हीं के घोड़ों ने रौंद कर उसे हलाक कर दिया। फर्त रंज व अलम में हज़रत हुसैन क़ासिम के सरहाने खड़े हो कर फरमा रहे थे :

"कितनी बुरी वह कौम है जिस ने तुझे क़त्ल किया है। कल रोजे क़्यामत तुम्हारा मुआमला अहकमुल-हाकिमीन के रू-ब-रू पेश किया जाएगा। तुम्हारे चचा पर कैसा वक़्त आ गया है कि तुम मदद को पुकारते हो और वह तुम्हारी मदद के लाइक़ नहीं। खुदा की क़सम! आज के दिन तुम्हारे चचा के दुश्मन ज़्यादा हैं और मुईन व मददगार कम हैं।"

(तबरी : जिल्द 4, स० 241)

कासिम ने चचा के क़दमों पर जान कुरबान कर दी। पैकरे रंज व गम हुसैन अजीज भतीजे की लाश उठा कर खेम-ए-इमामत के सामने लाए और शुहदाए खानवाद-ए-अबी तालिब की लाशों के पास लिटा दिया।

अली असगर की शहादत : करबला की ज़मीन पर खानवाद-ए-रिसालत

पर ज़ुल्म व सितम और जब्र व तशद्दुद के जो पहाड़ तोड़े गये उसकी मिसाल तारीखे ज़ुल्म व सितम में कहीं और नज़र नहीं आती। बूढ़े हुसैन पर इब्तिला व आज़माइश की सख्तियाँ उफ! चश्मे फ़लक ने ऐसे दिल्दोज़ मनाज़िर शायद कभी न देखे हों। शश माहा (छेः महीना) अली असग़र बूढ़े बाप की आग़ोश में है, सुकूने क़ल्ब व जिगर को हुसैन मुस्हिफ़ (किताब) की तरह हाथों पर उठाए हुए हैं। इतने में हुर्रमला का सनसनाता हुआ ज़हर आलूद तीर हल्क़ूमे असग़र में पैवस्त हो गया। खूने का फव्वारा छूटने लगा। खून अली असग़र से करबला की प्यासी ज़मीन आसूदा हो गई और तिश्ना लब अली असग़र ने तड़प कर बाप की आग़ोशे शफ़क़त में जान दे दी। शिद्दते कर्ब में आसमान की तरफ़ सर उठा कर हज़रत हुसैन ने फरमाया :

"ऐ रब! अगर तू ने हम से मदद रोक ली तो जो मुनासिब हो वह कर और उन ज़ालिमों से इंतिक़ाम ले।" (इब्ने खल्दून : जिल्द 5, स० 117)

यह अनोखा और निराला इम्तिहान, यह कर्बनाक आज़माइश, जिस का ज़िक्र सुन कर कलेजा मुँह को आता है। लेकिन हज़रत हुसैन ने उस इम्तिहान में सबात क़दमी और इस्तिक्लाल का जो सबूत पेश किया वह उन्हीं का हिस्सा था।

आख़िरी इम्तिहान : इब्तिला व आज़माइश की सख्त मंज़िलें तय कर चुकने के बाद हज़रत इमाम हुसैन अपने ख़ून से चमनिस्ताने इस्लाम की आबयारी और एवाने शरीअत के इस्तिहकाम व बक़ा के लिए आमादा हुए। आह! दुनिया की नीरंगी वह हुसैन जिस के नाना के आस्तान-ए-करम की निगहबानी मलाइका किया करते थे। आज वह करबला के तप्ते हुए मैदान में नरग़-ए-आदा में बेयारो मददगार खड़ा है, आवान व अंसार, अहबाब व अक़ारिब क़त्ल किए जा चुके हैं, उनकी तड़पती हुई लाशों का जाँ गुदाज़ मंज़र निगाहों के सामने है, हुसैन मज़्लूम सुफ़ूफ़े आदा में तन्हा हैं, उनका कोई मुहाफ़िज़ नहीं, यज़ीदी लश्कर में रहम व मुरव्वत का नाम व निशान नहीं कि वह नवास-ए-रसूल के क़त्ल से दर गुज़र करें। जिसके नाना ने फ़त्हे मक्का के दिन अपने और इस्लाम के बदतरीन दुश्मनों को जो जान के ख़ौफ़ से लरज़ा बर-अन्दाम थे, मक्का की सरज़मीन उनके लिए तंग हो रही थी, नवेदे अमन देते हुए फरमाया : **ला तस्रीबा अलैकुमुल-यौमा।** अमन व आश्ती के मुनादी ने जानी दुश्मनों को अफ़्व दर गुज़र का सरमदी पैग़ाम सुनाया था। मगर आज वही उम्मते मुहम्मद नवास-ए-मुहम्मद के ख़ून से अपने हाथ रंगीन करना चाहती है। कोई हुसैन का यार व मददगार

नहीं। वहूश व तुयूर (जंगली जानवर व परिन्दे) के लिए तो अमान थी मगर जिगर गोश-ए-रसूल के लिए अमान न थी। कितना इबरतनाक और दिल्दोज़ था यह मंज़र, दोपहर का वक़्त है ज़मीने करबला अंगारों की तरह तप रही है। सूरज आग के शोअ्ले बरसा रहा है, बादे सुमूम के तेज व तुन्द झोंके चल कर जिस्मों को झुल्सा रहे हैं साक़ी-ए-कौसर का नवास-ए-तिश्ना लब है काम व दहन सूख कर कांटा हो चुके हैं।

7 तारीख़ से ही नहरे अल्क़मा पर सख़्त पहरा बिठा दिया गया था ताकि हुसैनी ख़ेमों में पानी की एक बूंद जाने न पाए। चरिन्द व परिन्द, इंसान व हैवान सब तो इस नहर के शफ़्फ़ाफ़ पानी से सैराब हो सकते हैं, मगर वह हुसैन इस से महरूम है जिस के नाना के हाथों में कौसर व तस्नीम का छलकता हुआ जाम है। शर्त यह है कि मुलूकियत व क़ैसरीयत के मुअस्सि्स व बानी के हाथों पर बैअ़त करो फिर नहरे अल्क़मा से सैराब होने की इजाज़त दी जाएगी।

वह हुसैन जिस पर ग़म व अन्दोह, ज़ुल्म व सितम के अज़ीम पहाड़ तोड़े जा चुके हैं। तन्हाई व दर.मांदगी के आलम में दुश्मनों की सफ़ों पर बिजली की तरह हमला आवर होते हैं और इम्तिहान व आज़माइश के आख़िरी मरहला में पूरी जांबाज़ी व शुजाअत का मुज़ाहरा करते हैं। जिधर से गुज़रते हैं सफ़े आदा छटने लगती है। शेरे ख़ुदा का फरज़न्द जिधर शम्शीरे बकफ़ जाता है, लोग कतरा जाते हैं।

हुसैन शेरों की तरह शामियों पर हमला आवर होते और प्यादों की सफ़ों को अपने जुम्लों से दरहम बरहम कर देते थे और बार-बार यह फरमाते थे :

"क्या तुम लोग मेरे ही क़त्ल के लिए मुज्तमा हुए हो, अल्लाह की क़सम! मेरे क़त्ल करने से अ़ल्लाह तआला सख़्त नाराज़ होगा, मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरे क़त्ल से तुमको सुर ख़ुरूई न हासिल होगी। बेशक अल्लाह तआला तुम से मेरे ख़ून का ऐसा बदला लेगा कि तुम को उसकी ख़बर तक न होगी। वल्लाह! अगर तुम लोग मुझे क़त्ल कर डालोगे तो तुम में ख़ूंरेज़ी का दरवाज़ा खुल जाएगा और तुम पर अल्लाह तआला अपना अज़ाब नाज़िल करेगा। तुम लोग नाहक़ अपने हाथों को मेरे ख़ून से न रंगो देखो! मैं बेगुनाह हूँ। मेरा क़त्ल करना तुमको रवा नहीं है।"

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 119)

किसी में जुरअत न हुई कि वह हुसैन के सामने आए और वह उन पर तल्वार से हमला करे। सरदाराने लश्कर के उभारने और लल्कारने पर तीरों से जिस्मे हुसैन को ज़ख़्मी किया जाने लगा मगर हुसैन जिधर झपटते शामी

काई की तरह फट जाते।

शिम्र ज़िल-जौशन ने यज़ीदी फौज का यह रंग देखा तो चिल्ला कर कहा, तुम्हारी माएँ मर जाएं! तुम लोग एक प्यादा को नहीं मार सकते। तुम्हारी मर्दानगी पर तुफ़ है! तुम अगर एक कंकरी फेंको तो हुसैन दब कर मर जाएं। बढ़ो! अपने नाम और खानदान को रुस्वा न करो। शिम्र के पुर जोश फ़िक्रों से यज़ीदियों में जोश पैदा हुआ। प्यादों ने हर तरफ़ से हुसैन पर तीरों, तल्वारों और नेज़ों से शदीद हमला किया। ज़ख्मों से पैकरे इमामत छलनी हो चुका है, ज़ईफ़ व नातवानी ने हमला की सकत बाक़ी न रखी है। एक मक़ाम पर इश्क़ व इख़्लास और ईसार व कुरबानी के इम्तिहान आख़िरीं के लिए ठहर जाते हैं। शामियों के पुर आशोब हमलों का शोर सुन कर हज़रत ज़ैनब शिद्दते कर्ब में ख़ेमा से बाहर आईं। भाई के बर सरोसामानी का हाले ज़ार देखा न गया। कहा काश! आसमान ज़मीन पर टूट पड़ता। इत्तिफ़ाक़न अमर बिन सअद! आ पहुँचा, फरमाया : क्यों इब्ने सअद अबू अब्दुल्लाह हुसैन इस बेकसी से मारे जाएं और तुम देखते रहो? अगरचे अमर बिन सअद की आंखों पर हिर्स व तमअ् और दुनियावी जाह व अज़्मत का दबीज़ पर्दा पड़ चुका था। मगर ख़ूने क़राबत ने जोश मारा। ज़ैनब के इस फ़िक़रा से उसकी आंखों का पैमाना छलक उठा। रुख़्सारों और दाढ़ी आंसुओं से नम हो गये। कुछ जवाब न दे सका। हज़रत ज़ैनब की तरफ़ से रुख़ फेर लिया। (अल-बिदायह वन्निहायह : जिल्द 8, स० 188)

तल्वारों और नेज़ों के शदीद हमलों से जिस्मे हुसैन बिल्कुल ख़स्ता व नातवाँ हो गया, क़दम लड़ खड़ाने लगे, आज़ा जवाब दे गये। अब खड़ा रहना भी दुश्वार था, खड़े होते फिर गिर जाते। इसी हालत में सिनान बिन अनस ने ऐसा नेज़ा मारा कि इमादे इमामत, मीनार-ए-सब्र व इस्तिक़ामत ज़मीन बोस हो गया। ख़ौली बिन यज़ीद सर तन से जुदा करने के लिए आगे बढ़ा लेकिन हाथ काँप गये। पीछे हट गया। फिर सिनान बिन अनस ने सर इमाम को जिस्म पाक से जुदा कर दिया। इश्क़ व इख़्लास का आख़िरी इम्तिहान पूरा हुआ। आज गुलशने रिसालत का गुले शादाब मुरझा गया, रियाज़े अली उजड़ गया। ख़ान-ए-फातिमा बेचिराग़ हो गया।

हुसैन ने करबला के सहरा में अज़्म व इस्तिक़्लाल, सब्र व इस्तिक़ामत, ईसार व कुरबानी की जो ज़र्री और दरख़शन्दा यादगार क़ाइम की, उस पर क़्यामत तक अह्ले हक़ धड़कते हुए दिल और छलकती हुई आंखों के साथ बारगाहे हुसैनी में इस तरह नज़रान-ए-अक़ीदत पेश करते रहेंगे –

⁂

⁂

दीन का पास्बां कौसर का धनी ज़िन्दाबाद
अज़्मते वारिसे मीरासे नबी ज़िन्दाबाद
कुफ़्र ग़ारत हुआ बातिल का जनाज़ा निकला
ज़ब्त व इक़्दामे हुसैन इब्ने अली ज़िन्दाबाद
शाह अस्त हुसैन बादशाह हस्त हुसैन
दीन हस्त हुसैन व दीं पनाह हस्त हुसैन
सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा की बेनाए लाइलाहा हस्त हुसैन
तारीख़ दे रही है यह आवाज़ दम बदम
दस्त सेबात व अज़्म है दश्ते बला व ग़म
सब्रे मसीह व जुरअते सोक़रात की क़सम
इस राह में है सिर्फ़ इक इंसान का क़दम
जिसकी रगों में आतिशे बद्र व हुनैन है
उस सोर्मा का इस्मे गिरामी हुसैन है

⁂

ज़ैनब बिन्ते अली

रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु

मैदाने करबला से दरबारे दमिश्क़ तक

दुनिया की तारीख़ में शायद ही किसी मुअज़्ज़ज़ ख़ातून ने इंक़लाबे रोज़गार के ऐसे ख़ूनीन मनाज़िर देखे हों। जिसने बरादर ज़ादों, जिगर के टुकड़ों, मोहतरम सर परस्त भाई की ख़ाक व ख़ून में तड़पती हुई लाशें, कटे हुए सर, पामाल जिस्म सुबह से लेकर दोपहर तक देखे हों और दश्त गुरबत और दयारे बला में उसके ख़ेमे लूटे गये हों, ख़्वातीन के सरों से रिदाएं (चादरें) छीनी गई हों और उन्हें बेहिजाब किया गया हो।

हुसैन ने इब्तिला व आज़माइश के आख़िरी इम्तिहान में कामयाबी हासिल कर ली मगर ग़म्ज़दा, हुज़्न (ग़म) व दर्द की मारी बहन ज़ैनब के इम्तिहान सब्र व ज़ब्त का सिलसिला हुनूज़ जारी है। क़ल्ब व जिगर पाश-पाश हो चुके हैं।

दसवीं मुहर्रम 61 हिजरी का आफताब उफुक़ पर ख़ून की बारिश करता हुआ डूब गया, हुसैनी कारवां ताराज हो चुका है 72 नुफूसे क़ुदसीया की लाशें दश्त नैनवा में बेगोर व कफन पड़ी हुई हैं, ज़ैनब बिन्ते फातिमा मुक़ैयद (क़ैद) हैं, रोते-रोते आंसू ख़ुश्क हो चुके हैं, यह शाम कितनी इबरतनाक है। गुलशने रिसालत पामाल हो चुका है, ख़्वातीने हरम यज़ीदी लश्कर के क़ैद में हैं। मुरब्बी (सरपरस्त) और सालारे कारवाँ शहीद हो चुका है। अब हुसैनी क़ाफ़िला की क़यादत ज़ैनब के सर है।

मुहर्रम की ग्यारहवीं तारीख़, करबला का मैदान, खानदाने रिसालत की मुअज़्ज़ज़ ख़्वातीन पा बजूला (पांव में ज़ंजीर) यज़ीदी लश्कर के हिसार में, ऊंटों पर सवार कूफ़ा की जानिब रवाँ दवाँ हैं, बेरहमी व शक़ावत के मन्हूस पैकर लुटे हुए हुसैनी क़ाफ़िला को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। मैदाने जंग से गुज़र हुआ, आवान व अंसार अह्ले बैत, ख़्वेश व अक़ारिब, भाई भतीजे और बेटों की बेगोरो कफ़न लाशें देखते ही इफ़्फ़त मआब दुख़्तराने इस्लाम का पैमान-ए-सब्र

लब्रेज़ हो गया, ज़ब्त व तहम्मुल का दामन हाथ से छूट गया, बेअख़्तियार नौहा व मातम, नाला व फ़ुग़ां का शोर उठा। हज़रत ज़ैनब जब भाई के सर बरीदा पामाल, बरहना लाश के सामने आईं तो दर्द भरे अंदाज़ से फ़रमाया :

वा मुहम्मदाह वा मुहम्मदाह! मलाइका आसामनी का दरूद व सलाम आप पर नाज़िल हो हुसैन मैदान में पड़े हुए हैं, ख़ून में डूबे हुए हैं, तमाम आज़ा पारा-पारा हैं, या मुहम्मदाह! आपकी बेटियाँ क़ैद कर ली गई हैं, आपकी ज़ुर्रियत (औलाद) क़त्ल की जा चुकी है, उनकी लाशों पर हवा खाक डाल रही है।

दर्द व ग़म की मारी ज़ैनब के मुँह से यह कलिमात कुछ इस तरह अदा हुए कि पत्थर के जिगर भी मोम हो गये और संगदिल ज़ालिमों की आंखें अश्कबार हो गईं।

सरे हुसैन दारुल-इमारते कूफ़ा : उबैदुल्लाह बिन ज़्याद शाने इमारत के साथ सद्र नशीं हाशिया नशीं, मुशीर और अमाइदीने शहर मौजूद। मुहर्रम 61 हिजरी की ग्यारह तारीख़ ख़ौली बिन यज़ीद, हमीद बिन मुस्लिम यज़्दी ने सरे हुसैन को तश्त में रख कर इब्ने ज़्याद के सामने पेश किया, यज़ीदी हवा ख़्वाहों के लिए फ़त्ह व नुसरत की नवेद इब्ने ज़्याद ने ग़ुरूर व तम्कुनत और झूठी फतह के नशा में चूर हो कर, अपनी छड़ी से शफ़्फ़ाफ़ सिल्क गुहर दन्दाँ मुबारक को खटखटाया और बोसागाहे रिसालत मुक़द्दस लबों को छेड़ा। देर तक वह उस नाशाइस्ता हरकत में मसरूफ़ रहा। बूढ़े सहाबी-ए-रसूल हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से यह मंज़र देखा न गया, इब्ने ज़्याद को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया :

तरजमा : इस छड़ी को इन मुबारक दाँतों से हटा। ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की क़सम! मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने होंट उन दाँतों पर रख कर बोसा देते हुए देखा है। (तबरी जिल्द 4, स० 348)

साथ ही ज़ैद बिन अरक़म फूट-फूट कर रोने लगे।

इब्ने ज़्याद ने कहा, ख़ुदा तुझे रुलाए अगर तू पीर फ़रतूत न होता (जिसकी अक़्ल जाती रही है) तो ख़ुदा की क़सम मैं तेरी गर्दन उड़ा देता। इब्ने ज़्याद का नारवा जवाब सुन कर हज़रत ज़ैद दारुल-इमारत से यह कहते हुए बाहर निकले :

तरजमा : ग़ुलाम ने ग़ुलाम को हाकिम बना दिया उसने तमाम बन्दगाने हक़ को अपना खानाज़ाद बना लिया है। ऐ गरोहे अरब! तुम लोग सख़्त नालाइक़ हो कि इब्ने फ़ातिमा को शहीद करके इब्ने मरजाना को अपना

हाकिम बना लिया। जो सुलहा अख़्यारे उम्मत को क़त्ल कर रहा है और शरीर लोगों को गुलाम बना रहा है। तुम ने ज़िल्लत को गवारा कर लिया। जिस ने ज़िल्लत को गवारा कर लिया ख़ुदा उसे हलाक करे।

इब्ने ज़्याद का दरबार और हज़रत ज़ैनब : अह्ले बैते रसूल का लुटा हुआ क़ाफ़िला कूफ़ा के गवर्नर हाउस में ज़ैनब बिन्ते अली, बोसीदा (फटे पुराने) लिबास, गुबार आलूद मुज्महल (उदास) चेहरा, हुज़्न व ग़म की तस्वीर चन्द कनीज़ों के साथ एक तरफ़ बैठी हैं। इब्ने ज़्याद ने आपको देख कर पूछा, कौन औरत है? आपने जवाब न दिया। जब इब्ने ज़्याद ने चार मरतबा अपना सवाल दोहराया तो एक कनीज़ ने कहा, यह ज़ैनब बिन्ते अली हैं। इब्ने ज़्याद ने तंज़ व तअ्रीज़ के तीर व नश्तर से ज़ैनब के मज्रूह क़ल्ब व जिगर पर इस तरह वार किए, कहा :

ख़ुदा का शुक्र है जिसने तुम लोगों को ज़लील किया, क़त्ल किया, तुम्हारी कहानियों को झूठा कर दिया है :

आपने पूरी जुरअत व जसारत के साथ जवाब दिया :

तरजमा : ख़ुदा का शुक्र है जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबब से हम सब को इज़्ज़त दी, हम को तैयब व ताहिर किया। ऐसा नहीं जो तुम कह रहे हो। रुसवा और झूठा वह होता है जो फासिक़ व फाजिर हो।

इब्ने ज़्याद ने कहा :

तुमने देख लिया कि तुम्हारे खानदान वालों से खुदा ने क्या सुलूक किया?

आपने फिर जवाब दिया :

उनके मुक़द्दर में क़त्ल होना था वह अपनी क़त्लगाह की तरफ़ चले आए। अब तू भी और वह लोग भी खुदा के सामने जाएंगे वहीं तुम लोग अपने-अपने निज़अ् व खुसूसियत को पेश करोगे।

बाज़ रिवायतों में है कि हज़रत ज़ैनब ने यह भी फरमाया :

"तुम देखो उस दिन नजात किस की हिस्सा होगी ऐ पिसरे मरजाना! तेरी माँ तुझे रोए।"

इस बात ने इब्ने ज़्याद को आतिश ज़ेरपा कर दिया और उसने आपको क़त्ल करने का इरादा किया। अमर बिन हरीस ने कहा, ऐ इब्ने ज़्याद! यह औरत है, कोई शख़्स औरतों की बात पर मुआखज़ा नहीं करता। इस तरह इब्ने ज़्याद इराद-ए-क़त्ल से बाज़ आया।

इब्ने ज़्याद आबिद बीमार अली बिन हुसैन की जानिब मुतवज्जेह हुआ।

दरयाफ़्त किया तुम कौन हो? जवाब दिया मैं अली बिन हुसैन हूँ। इब्ने ज़्याद ने कहा क्या अल्लाह ने अली इब्ने हुसैन को हलाक नहीं किया? ज़ैनुल-आबेदीन यह सुन कर ख़ामोश रहे। इब्ने ज़्याद ने पूछा तुम ख़ामोश क्यों हो, जवाब नहीं देते? इरशाद फरमाया, मेरा एक भाई अली बिन हुसैन था जिसे लोगों ने शहीद कर दिया। इब्ने ज़्याद ने तंज़ आमेज़ लेहजा में हंस कर कहा, हाँ उसे अल्लाह ने मार डाला। ज़ैनुल-आबेदीन ख़ामोश हो गये। इब्ने ज़्याद ने कहा, तुम्हें क्या हो गया है ख़ामोश रहते हो बोलते नहीं? आपने फरमाया :

तरजमा : खुदा वन्दा तआला ही नफ़्सों को मौत देता है। जब उनकी मौत का वक़्त आ जाता है किसी नफ़्स की यह मजाल नहीं कि इज़्ने इलाही के बग़ैर मर जाए।

इब्ने ज़्याद ने कहा खुदा की क़सम! तू भी उन्हीं में है। मेरा ख़्याल है कि यह बालिग़ हो चुका है। तफ़्तीशे हाल की नारवा जसारत मुरी बिन मुआज़ ने की और कहा हाँ बालिग़ हो चुका है। इब्ने ज़्याद ने कहा उसकी गर्दन मार दो। ज़ैनुल-आबेदीन ने फरमाया : **मन तवक्कला बेहाऊलाइ अन्निस्वते।** इन ख़्वातीन का कफ़ील मेरे बाद किसे बनाओगे?

ज़ालिम व सफ़्फ़ाक इब्ने ज़्याद का हुक्म सुन कर हज़रत ज़ैनब तड़प गई। दर्द भरे लहजे में फरमाया ऐ इब्ने ज़्याद!

तरजमा : अभी तक तुम हमारे ख़ून से आसूदा नहीं हुए? क्या तुम हमारा कोई आसरा बाक़ी न रखोगे? क्या तुम ने हम में से किसी को बाक़ी रखा है? इब्ने ज़्याद! मैं तुझे ख़ुदा का वास्ता देती हूँ! अगर तू मोमिन है तो उसके साथ मुझे भी क़त्ल कर दे।

ज़ैनुल-आबेदीन बेख़ौफ़ व ख़तर शहीद होने के लिए आमादा थे। इब्ने ज़्याद से ख़िताब किया :

तरजमा : ऐ इब्ने ज़्याद (अगर तुम मुझे क़त्ल ही करना चाहते हो) अज़ीज़दारी व क़राबतदारी का पास व लिहाज़ करके इतना करो कि किसी परहेज़गार शख़्स को इन औरतों के साथ कर दो जो मुसलमानों की तरह उनके साथ रहे। (और मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचा दे)

संगदिल इब्ने ज़्याद देर तक हज़रत ज़ैनब और अली बिन हुसैन को देखता रहा। तारीक दिल में रहम व मुरव्वत की किरन फूटी लोगों से मुख़ातब हो कर कहा :

"मुझे अपने जज़्ब-ए-रहम पर हैरत है ख़ुदा की क़सम! अगर मैं उस

लड़के को क़त्ल करता तो उस (ज़ैनब) को भी तहे तेग़ कर डालता। उस शख़्स को औरतों के साथ छोड़ दो।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **123**)

जुहर बिन क़ैस यज़ीद के दरबार में नवेद फ़त्ह व नुसरत लेकर पहुँचा। बड़े इंआम व सिला की तमअ़ के ख़्याल से सानह-ए-करबला को बयान करते हुए कहा :

मैं अमीरुल-मुमिनीन को फ़तह व नुसरत की बशारत देता हूँ। हुसैन बिन अली **18** अह्ले बैत **60** मुआवनीन व अंसार की मईयत में वारिदे कूफ़ा हुए. हम उनकी जानिब बढ़े (करबला के मैदान में) उनके सामने दो तज्वीज़ें पेश कीं। अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद की बैअ़त करें या जंग के लिए तैयार जो जाएं। हुसैन ने दूसरी शक़ अख़्तियार की। हम ने भी जंग की तैयारी की। आफ़ताब बुलन्द होते ही हम ने उन पर चारों तरफ़ से हमला कर दिया। जब चमकती हुई तल्वारों और नोकदार नेज़ों से उनको अपने मुहासरा में ले लिया तो जान बचा-बचा कर गढ़ों, टीलों और दरख़्तों की तरफ़ भागने लगे। जिस तरह बाज़ के ख़ौफ़ से कबूतर भागता है। उनका फ़रार व गुरेज़ उन्हें न बचा सका। हमारी तेज़ तल्वारों ने उनको फ़र्श ज़मीन पर मौत की नींद सुला दिया। उनकी लाशें बेगौर व कफ़न मैदान में पड़ी हैं, उनके जिस्मों पर न कोई कपड़ा है और न साया, अगर यह साया है तो आफ़ताब का और कपड़ा है तो रेगे सहरा का। बयाबान की तेज़ व तुन्द हवायें उन्हें उलट पलट रही हैं, उनकी ज़्यारत करने वाले वहशी और दरिन्दे जानवर हैं, उन पर रहम करने वाले कुर्ब व जवार के कुत्ते और गिध हैं।

यज़ीद यह रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान सुन कर अश्कबार हो गया। अमर बिन सअद इब्ने ज़्याद और मअ्रका करबला में हुसैन और आवाने हुसैन के ख़ून से खेलने वाले शहज़ोरों की तहसीन आफरीन और मुज़्द-ए-फतह व नुसरत सुनाने वाले जुहर बिन क़ैस को अल्ताफ़ खुसरवी से नवाज़ने के बजाए उसने कहा :

क़त्ले हुसैन के बग़ैर भी मैं तुम लोगों से राज़ी हो जाता। इब्ने सुमैया (इब्ने ज़्याद) पर ख़ुदा की लानत हो। ख़ुदा की क़सम! अगर मैं उसकी जगह होता तो मैं हुसैन से दर गुज़र कर जाता। अल्लाह तआला हुसैन पर अपनी रहमत नाज़िल फरमाए। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **124**)

दरबारे दमिश्क़ : यज़ीद बिन मुआविया का पुर शिकोह दरबार। उमरा, अमाइदीन और हाशिया नशीनों का मज्मा, पा बजूला इमाम

ज़ैनुल-आबेदीन और तबाह हाल मस्तूराते अह्ले बैत सरे हुसैन के साथ पेश किए गये। यज़ीद ने शौकते इक्तिदार के नशा में मस्त हो कर कहा :

तरजमा : ऐ अली ज़ैनुल-आबेदीन! तुम्हारे बाप (हुसैन) ने मुझ से रिश्त-ए-क़राबत को क़तअ् किया, मेरे हक़ को न जाना और मेरी सलतनत को मुझ से छीनना चाहा देखो ख़ुदा ने उन से क्या सुलूक किया।

अली बिन हुसैन ने सब्र व तहम्मुल और पूरी मतानत के साथ जवाब दिया :

तरजमा : जितनी मुसीबतें रू-ए-ज़मीन पर और ख़ुद तुम पर नाज़िल होती हैं वह सब हम ने उनके पैदा करने से पहले किताब में लिख रखी हैं।

यजीद ने अह्ले बैते नुबुव्वत की परेशान हाली और परागन्दगी को देख कर कि :

तरजमा : ख़ुदा इब्ने मरजाना का बुरा करे अगर इसमें और तुम में क़राबत और रिश्ता होता तो वह तुम से ऐसा सुलूक न करता और तुम्हें इस हालते ज़ार के साथ न भेजता।

फातिमा बिन्ते अली को देख कर एक सुर्ख़ रंग शामी खड़ा हुआ और यज़ीद से मुख़ातब हो कर कहा : **हब ली हाज़ा।** तुम इस औरत को मुझे अता कर दो। नाहंजारी शामी ने मुक़द्दस अह्ले बैत को जिहाद में असीर होने वाली औरत समझ रखा था। हज़रत ज़ैनब बिन्ते अली ने सर दरबारे हक़ गोई व बेबाकी का सुबूत देते हुए हिसारे आदा में सदाक़त की एक सुनहरी मिसाल क़ाइम करते हुए कहा :

तरजमा : नहीं ख़ुदा की क़सम न तुम्हें उसका हक़ है और न उसको मगर जब वह अल्लाह के दीन से निकल जाए।

इब्ने ख़ल्दून की एक रिवायत के मुताबिक़ फातिमा बिन्ते हुसैन ने यज़ीद के दरबार में उस से ख़िताब करते हुए कहा, क्या यही मुनासिब है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नवासियाँ क़ैदी बनाई जाएं? यज़ीद ने कहा नहीं बल्कि वह आज़ाद ख़्वातीन हैं। तुम अपने चचा की लड़कियों के पास जाओ। तुम देखोगी कि उन्होंने भी ग़मे हुसैन में अपना हाल तुम जैसा कर लिया है।

ख़्वातीने अह्ले बैत यज़ीद के महल सरा में दाख़िल हुईं। पूरे महल में कोई ऐसी ख़ातून न थीं जिस की आँख पुरनम न हो।

जब मुक़द्दस ख़्वातीने अह्ले बैत हरम शाही में चली गईं, इमाम ज़ैनुल-आबेदीन बदस्तूर पाबा ज़ंजीर और तौक़ दर गुलो खड़े थे। यज़ीद से ख़िताब करते हुए फरमाया :

अगर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम को इस हालत में मुलाहिज़ा फरमाते तो वह हम को ज़हमते क़ैद से आज़ाद फरमा देते। यज़ीद ने कहा बेशक तुम सच कहते हो। उसी वक़्त हुक्म हुआ। पाँव की बेड़ियाँ काट दी जाएं। हाथ की हथकड़ियाँ खोल दी जाएं। गले से तौक़ उतार लिया जाए। हुक्म की तामील की गई और आप मुशक़्क़ते क़ैद से आज़ाद कर दिए गये। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 125)

यज़ीद ने इ़ज़्ज़त व एहतराम के साथ अह्ले बैत के ताराज कारवाँ को मेहमान रखा, हुस्ने सुलूक और शफ़्क़त व मुरव्वत का बर्ताव किया। सरे हुसैन ख़्वाहिश के मुताबिक़ हज़रत ज़ैनब के हवाले कर दिया गया। यज़ीद के तागूती निज़ामे हुकूमत की राह में हाइल होने वाली सबसे बड़ी रुकावट ख़त्म हो चुकी थी। हुसैन और आवाने हुसैन की अलम अंगेज़ शहादत मुख़ालेफ़ीने यज़ीद के लिए नक़्शे इबरत बन चुकी थी, कूफ़ा से लेकर दमिश्क़ तक सरे हुसैन की तश्हीर ने क़ैसरी अंदाज़े हुक्मरानी का दबदबा क़ाइम कर दिया था। अब यज़ीद की बनाए सल्तनत बज़ाहिर मुस्तहकम हो चुकी थी इसलिए मुअज़्ज़ज़ असीराने ख़ानवाद-ए-रिसालत के साथ मज़ीद बेरहमी व शक़ावत का सुलूके नारवा करने की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं थी। अब ज़रूरत थी कि मज्रूहे क़ल्ब व जिगर पर हुस्ने सुलूक और वास्त-ए-क़राबत का मरहम रखा जाए।

अह्ले बैत की रवानगी मदीना : यज़ीद ने हज़रत नौमान बिन बशीर अंसारी को हुक्म दिया कि वह ख़ानवाद-ए-रिसालत को इज़्ज़त व एहतराम के साथ बहिफ़ाज़त तमाम मदीना पहुँचाने का बन्दो बस्त करें। चुनांचे चन्द मुतदैय्यन मुसलमानों की मईयत में क़ाफ़िला अह्ले बैत दमिश्क़ से इस तरह रवाना हुआ कि उनके लुटे हुए माल से कहीं ज्यादा साज़ व सामान मुहैया कर दिए गये।

रवानगी के वक़्त यज़ीद ने अली बिन हुसैन (ज़ैनुल-आबेदीन) को अपने पास बुला कर कहा :

इब्ने मरजान पर अल्लाह तआला की लानत हो। वल्लाह! अगर मैं उस जगह पर होता तो जो दर्ख़्वास्त हुसैन पेश करते मैं कुबूल करता और उनकी मुसीबत और तंगी को हत्तल-वसअ् दफ़अ् करता लेकिन ख़ुदा को जो मंज़ूर था वह हुआ। ऐ साहबज़ादे तुम को आइंदा जो ज़रूरतें पेश आएं मुझे लिखना। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 126)

❖❖❖

मर्गे यज़ीद

करबला का दर्दनाक सानेहा गुज़र गया। शख़्सी इक़्तिदार के ताग़ूत ने बज़ाहिर रूहानियत व सदाक़त के नक़ीब पर ग़लबा पा लिया, सफ़्फ़ाक व ज़ालिम दुनियादार यज़ीदी लश्कर ने मुट्ठी भर हुसैनी क़ाफ़िले को ताराज कर डाला, बूढ़े, जवान, शीर ख़्वार बच्चे शम्शीर व सिनान व तीर का निशाना बनाए गये। पाँच हज़ार वहशी दरिन्दों ने भूखे प्यासे 72 नुफ़ूसे कुदसीया को करबला के तप्ते हुए मैदान में मौत की गहरी नींद सुला कर अपनी शुजाअत व शहज़ोरी व दुनिया दारी व हिर्स की बदतरीन मिसाल क़ाइम कर दी।

नेज़ों पर नसब करके शुहदाए करबला के सरों की तश्हीरे कूफ़ा के कूचा व बाज़ार में कराई गई, यह जुलूस दमिश्क़ के दरबार तक उसी शान से पहुँचा। अह्ले बैते रसूल की मोहतरम ख़्वातीन को बेहिजाबाना ऊंटों पर सवार करके करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से दमिश्क़ ले जाया गया। शख़्सी इक़्तिदार व सतवत का रुअब दिलों पर क़ाइम कर दिया गया। इस्लाम में कैसर व किसरा की मौरूसी तरज़े जहांबानी के पहले ताग़ूत की शौकते इक़्तिदार मुसल्लत कर दी गई। जब्र व तशद्दुद के अंदाज़े जदीद की बुनियादें उस्तवार कर दी गईं, ख़ानवाद-ए-रिसालत के ख़ून से यज़ीदी क़सरे इमारत की बुनियादें मुस्तहकम कर दी गईं। यज़ीदीयत ने बज़अ़्म ख़्वेश समझ लिया कि ख़ानवाद-ए-रिसालत का बेदरेग़ क़त्ल और उसकी खोंचकान दास्तानें अह्ले हक़ को मरऊब कर देंगी, ज़ुल्म व जोर के ख़िलाफ़े हक़ व सदाक़त का परचम अब लहराने वाला मर्दे हक़ पैदा न होगा। दुनियावी जलाल व जबरुत के साया में यज़ीद और उसकी नस्ल, आले सासान और कियान की तरह सदियों दमिश्क़ के तख़्त पर बैठ कर सिंध से लेकर सूडान तक फैली हुई तवील व अरीज़ इस सलतनत पर जिसे मिल्लते इस्लामिया के बरगुज़ीदा जांबाज़ मुजाहिदों ने ख़ालिस आलाए कलिम-ए-हक़ और अद्ल व मसावात की बुनियाद पर क़ाइम किया था, हुक्मरानी करते रहेंगे।

यह नफ़्स का फ़रेब और वक़्ती फत्ह व नुसरत का बातिल ज़अम था। अभी इंसानियत बाक़ी थी इस्लाम की अख़्लाक़ी क़द्रें हुनूज़ ज़िन्दा थीं, सीनों में ईमान व इख़्लास की तपिश मौजूद थी, जहाँ से अह्ले बैत का ताराज कारवां गुज़रा, जिस जगह सानह-ए-करबला की खोंचकां दास्तान सुनाई गई, आंखें अश्कबार हुई, ज़ुबानों ने यज़ीदी सतवत व इक़्तिदार पर लानतें कीं। दिलों में यज़ीदीयत के ख़िलाफ़ जज़्बात बर अंगेख़्ता हुए। जल्द ही यज़ीद को अपने क़सरे इमारत की बुनियादें मुतज़लज़ल नज़र आने लगीं और वह कफ़े अफ़्सोस मल मल कर कहता :

तरजमा : उस ने हुसैन को क़त्ल करके मुसलमानों की नज़र में दुश्मन बना दिया और उनके दिलों में मेरी दुश्मनी का बीज बो दिया। अब मुझे हर नेक व बद अपने लिए मुझे मब्ग़ूज़ (क़ाबिले नफ़रत) समझेगा। क्योंकि आम लोगों की निगाह में मेरा हुसैन को क़त्ल करना बहुत बड़ी शक़ावत है। हाय अफ़्सोस! मेरा और इब्ने मरजाना का अंजाम क्या होगा?

वाक़-ए-हुर्रा : शहादते हुसैन के बाद यज़ीद ने लोगों की दिल्दारी और अपने हक़ में राय आम्मा को उस्तवार रखने के लिए दाद व दहिश (इनाम) और जूद व सख़ा का सहारा लिया, ज़ख़्मों पर बख़्शिश व अता का मरहम रखने की पालीसी अपनाई मगर जो ज़ख़्म नासूर बन चुका हो वह ज़ाहिरी मरहम से कहाँ मुन्दमिल हो सकता है। गवर्नर मदीना उस्मान बिन मुहम्मद बिन अबी सुफ़ियान ने अह्ले मदीना का एक वफ़्द यज़ीद के पास दमिश्क़ रवाना किया, उस वफ़्द में अब्दुल्लाह बिन हंज़ला अंसारी, अब्दुल्लाह बिन अमरे मख़्ज़ूमी, मुंज़िर बिन ज़ुबैर और दीगर अशराफ़े मदीना शरीक थे। उस्मान का ख़्याल था कि यज़ीद का इंआम व इकराम अशराफ़े मदीना को उसका गिरवीदा बना देगा। जब अशराफ़े मदीना का वफ़्द दमिश्क़ पहुँचा यज़ीद ने पज़ीराई की, इज़्ज़त व एहतराम का बर्ताव किया और वक़्त रुख़्सत इंआम व इकराम और बेश बहा तहाइफ़ से सबको हैसियत के मुताबिक़ माला माल कर दिया, वफ़्द जब मदीना पहुँचा, लोग मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुए और दरबारे दमिश्क़ और यज़ीद के कवाइफ़ व हालात को दरयाफ़्त किया तो अब्दुल्लाह बिन हंज़ला ने फरमाया :

"बेशक हम ऐसे शख़्स के पास से आए हैं जो कोई दीन ही नहीं रखता, शराब पीता है, तंबूर बजाता है, उसकी सोहबत में गाने वालियाँ गाया बजाया करती हैं, वह कुत्तों से खेलता है, मर्द लड़कों और लौंडियों से

सोहबत रखता है।" (तारीख़ुल-उमम : जिल्द 4, स० 368)

हाज़िरीन ने दरयाफ़्त किया, हम ने सुना है कि यज़ीद ने तुम्हारी बड़ी क़द्र व मंज़िलत की, ख़िल्अत और हिदाया अता किए? अब्दुल्लाह ने कहा हाँ उस ने ऐसा ही किया है। लेकिन हम ने उसकी दाद व दहिश को इस ग़रज़ से कुबूल कर लिया है कि उसके मुक़ाबला की हम में कुव्वत आ जाए। अह्ले मदीना रोज़े अव्वल ही से यज़ीद की ख़िलाफ़त से नाराज़ थे। सानह-ए-करबला ने उन्हें यज़ीद से मुतनफ़्फ़िर कर दिया था। वफ़्द के बयानात ने अमाइदीने मदीना को मुश्तइल कर दिया। अब्दुल्लाह बिन हंज़ला ने कहा : हम तुम्हें गवाह बनाते हैं कि हम ने उसे (यज़ीद) मअ्ज़ूल किया। लोगों ने अब्दुल्लाह बिन हंज़ला को अपना अमीर मुक़र्रर करके उनके हाथ पर बैअ़त की। (ऐज़न)

मदीना के गवर्नर उस्मान बिन मुहम्मद ने जब इन हालात से यज़ीद को आगाह किया। यज़ीद ने अह्ले मदीना के नाम तहदीद (धमकी) आमेज़ मक्तूब इरसाल किया, जिस से लोगों के जज़्बात और ज़्यादा मुश्तइल हो गये। कुरैश ने अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ और अंसार ने अब्दुल्लाह बिन हंज़ला को अपना अमीरे लश्कर मुक़र्रर कर लिया और सब ने यक्जा हो कर यज़ीदी गवर्नर अमान बिन मुहम्मद बिन अबी सुफ़ियान और उसके तमाम साथियों पर हमला किया, यह लोग मरवान बिन हकम के मकान में पनाह के लिए जमा हो गये, अह्ले मदीना ने ख़ान-ए-मरवान का मुहासरा कर लिया। मरवान ने यह सूरते हाल देख कर हबीब बिन कुरह को बुलाया और यज़ीद के नाम एक ख़त तहरीर किया :

"हम लोग मरवान बिन हकम के मकान में महसूर कर दिए गये हैं, हम पर शीरीं पानी बन्द कर दिया गया है और अनाज (ग़िज़ा) को हम ख़ुद फेंक आए हैं। फरियाद है फरियाद है। (तबरी : जिल्द 4, स० 370)

इब्ने कुरह ख़त लेकर जब दमिश्क़ पहुँचा। यज़ीद एक तश्त में पाँव लटका कर बैठा था, दर्द नुक़्रस (पाँव के अंगूठे में दर्द) में मुब्तला था। ख़त पढ़ कर उस ने यह शेअ़्र पढ़ा :

तरजमा : लोगों (अह्ले मदीना) ने मेरे तबई हुक्म को बदल डाला, पस मैंने भी अपनी क़ौम के लिए नर्मी को सख़्ती से बदल दिया।

यज़ीद ने क़ासिद से दरयाफ़्त किया, बनी उमैया और उनके आवान व अंसार की तादाद मदीना में क्या होगी? जवाब मिला एक हज़ार। यज़ीद

ने कहा, क्या उन लोगों से इतना भी न हो सका कि पल भर मदीना वालों से लड़ते? क़ासिद ने कहा अमीरुल-मुमिनीन! सारी ख़िल्क़त ने मुश्तइल हो कर उन पर हुजूम कर लिया, वह उन से जंग न कर सके। यज़ीद ने अमर बिन सईद को बुला कर हालाते मदीना से आगाह करते हुए कहा, लश्कर लेकर मदीना जाओ! अमर ने जवाब दिया :

"मैं शहरों-शहरों तेरी हुकूमत का सिक्का बिठा चुका। तमाम उमूर को तेरे लिए मुस्तहकम कर चुका लेकिन अब यह नौबत पहुँची कि क़ुरैश के ख़ून से ज़मीन रंगीन की जाए, यह मुझ से न होगा। वही शख़्स यह काम करेगा जो उन से तअल्लुक़ न रखता हो।" (तबरी : जिल्द **4**, स० **271**)

यज़ीद ने मुस्लिम बिन उक़्बा मरी को बुलाया। मुस्लिम ने यज़ीद से ख़िताब करते हुए कहा, अमीरुल-मुमिनीन! यह (मरवान और बनी उमैया के महसूर अफ़राद) बड़े ज़लील लोग हैं, उनकी नुसरत (मदद) न करनी चाहिए। वह इतना भी न कर सके कि एक दिन, एक पहर या एक साअत, क़िताल करते। बस उन्हें इसी तरह छोड़ दीजिए कि अपनी ख़ानदानी सल्तनत के लिए दुश्मनों से लड़ें ताकि मालूम हो जाए कि कौन लोग आपकी जानिब से क़िताल करते हैं और कौन लोग इताअत के लिए सरे ख़म करते हैं। (ऐज़न) यज़ीद ने कहा, तुम्हारा भला हो, उनके बाद ज़िन्दगी का क्या मज़ा? उठो! लोगों को लेकर रवाना हो जाओ। बारह हज़ार का लश्कर मुस्लिम बिन उक़्बा की क़्यादत में तैयार हो गया।

मक्का मुकर्रमा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने अपनी ख़िलाफ़त पर बैअत लेनी शुरू कर दी थी, लोग जूक़ दर जूक़ उनके साथ हो रहे थे और उनकी ख़िलाफ़त मुस्तहकम होती जा रही थी, यज़ीद को सख़्त तश्वीश थी, चुनांचे उस ने मक्का पर फौज कुशी के लिए उबैदुल्लाह बिन ज़्याद को हुक्म भेजा जो उस वक़्त बसरा में था। सानह-ए-करबला के बाद इब्ने ज़्याद की माँ मरजाना अक्सर कहा करती थी : तेरा बुरा हो! तूने यह क्या किया और तूने कैसी हरकत की। माँ की तंबीह ने इब्ने ज़्याद की आंखें खोल दी थीं। चुनांचे यज़ीद के जवाब में उस ने कहा :

उस फासिक़ के लिए मैं अपने सर दो-दो अज़ीम गुनाह न लूँगा। एक तो यह कि नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करूं, दूसरे ख़ान-ए-काबा पर हमला करूं।

मदीना पर यज़ीदी लश्कर की चढ़ाई : शामी लश्कर अरज़े मुक़द्दस

की पामाली के लिए आगे बढ़ा। यज़ीद कुछ दूर सालारे लश्कर के साथ चला और उसे चन्द हिदायत देते हुए कहा :

"अगर तुम को कोई ज़रूरत पेश आए तो हिसीन बिन नुमैर को मुक़र्रर करना, अह्ले मदीना को तीन रोज़ ग़ौर व फ़िक्र की मोहलत देना। अगर इस अस्ना में वह इताअत कुबूल कर लें तो दर गुज़र करना, वरना जंग करने में तअम्मुल न करना। जब उन पर कामयाबी हासिल हो जाए तो तीन रोज़ तक क़त्ले आम का हुक्म जारी रखना, माल व अस्बाब जो कुछ लूटा जाए वह सब लश्करियों की मिल्क होगा। अली बिन हुसैन से तअर्रुज़ न करना क्योंकि हमें यक़ीनी तौर पर मालूम हो गया है कि उनको इस मुआमला में कुछ दख़ल नहीं।" (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **128**)

मुस्लिम बिन उक़्बा जब वादियुल-कुरा पहुँचा तो बनी उमैया के शहर बदर अफ़राद से मुलाक़ात हुई। बाज़ उमैयों ने मदीना के ताज़ा हालात से मुस्लिम को आगाह किया, वह वादियुल-कुरा से कूच करके ज़ी नख़्ला होता हुआ मदीना के क़रीब पहुँच गया। उस ने यज़ीदी हुक्म के मुताबिक़ अह्ले मदीना के नाम यह पैग़ाम भेजा :

"ऐ अह्ले मदीना! अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद का यह ख़्याल है कि तुम लोग असल हो, तुम्हारा ख़ून बहाना मुझे गवारा नहीं। तुम्हारे लिए तीन दिन की मुद्दत मैं मुक़र्रर करता हूँ। जो तुम में से कोई बाज़ आ जाएगा और हक़ की तरफ़ रुजूअ् करेगा हम उसका उज़्र कुबूल कर लेंगे और यहाँ से वापस चले जाएंगे, उस मुल्हिद इब्ने ज़ुबैर की तरफ़ से जो मक्का में है मुतवज्जेह होंगे और अगर तुम न मानोगे तो यह समझ लो कि हम हुज्जत तमाम कर चुके।" (तबरी : जिल्द **4**, स० **374**)

अह्ले मदीना पर इस पैग़ाम का मुतलक़ असर न हुआ। उन्होंने जंग को तरजीह दी। बिल-आख़िर सफ़ आराई हुई, अब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर बिन औफ़ खन्दक़ पर मुतऐयन किए गये, अब्दुल्लाह बिन मुतीअ् कुरैश की एक जमाअत के साथ मदीना की एक सिम्त पर मुक़र्रर हुए, मअ़क़ल बिन सिनान अश्जई मुहाजिरीन की एक जमाअत के साथ दूसरी जानिब मामूर हुए, सिपहसालारी व अफ़्सरी अब्दुल्लाह बिन हंज़ला के हाथ रही, उन्होंने एक बड़ी जम्ईयत के साथ शाहराहे कूफ़ा की नाका बन्दी कर दी। मुस्लिम बिन उक़्बा अपने आरास्ता लश्कर के साथ हुर्रा की जानिब से मदीना मुनव्वरा पर हमला आवर हुआ। ज़िल-हिज्जा **63** हिजरी में ख़ूंरेज़ मअ़रका

पेश आया, अब्दुल्लाह बिन हंज़ला मुस्लिम बिन उक़्बा के मुक़ाबले पर आए। अह्ले मदीना ने पूरे जोश व ख़रोश के साथ दादे शुजाअत दी। शामी लश्कर पीछे हटा। फ़ज़ल बिन अब्बास बिन रबीआ बिन हारिस ने एक दस्ता के साथ इतना सख़्त हमला किया कि यज़ीदी फौज का नज़्म व नस्क़ दरहम बरहम हो गया, शामी मैदान छोड़ कर भागने लगे, मुस्लिम के गर्द सिर्फ़ पाँच सौ प्यादे रह गये। फ़ज़ल ने अलम बरदार फौज को सालारे लश्कर समझ कर हमला किया, उसे तहे तेग़ करने के बाद जोश में कहा वल्लाह! मैंने गुम्राह क़ौम के सरदार को क़त्ल कर डाला, मुस्लिम बिन उक़्बा ने कहा तुम ने फ़रेब खाया, अलम बरदार एक रूमी ग़ुलाम था। मुस्लिम की लल्कार पर शामी लश्कर चारों तरफ़ से फ़ज़ल पर टूट पड़ा। फ़ज़ल ने जांबाज़ी के जौहर दिखाते हुए शहादत पाई, फ़ज़ल की शहादत के बाद मुस्लिम बिन उक़्बा हिसीन बिन नुमैर, अब्दुल्लाह अफ़ाह अश्अरी अपनी ज़ेरे क़्यादत टोलियाँ लेकर अब्दुल्लाह बिन हंज़ला की तरफ़ बढ़े। अब्दुल्लाह बिन हंज़ला ने अपने दस्ता को जोश दिलाते हुए कहा :

जो शख़्स तेज़ी के साथ जन्नत में दाख़िल होना चाहता है वह इस अल्म के साथ हो जाए। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 130)

यह सुनते ही लोग दौड़ पड़े और जज़्ब-ए-शहादत में इतनी सख़्त जंग की जिस की मिसाल कम ही मिलती है, इब्ने हंज़ला के तमाम लड़के, उनके भाई शहीद हुए और आख़िर में बातिल के ख़िलाफ़ हक़ का परचम बुलन्द करने वाला मर्दे हक़ हज़रत हंज़ला ग़ुसैलुल-मलाइका का जरी फरज़न्द भी शहीद हो गया, उनके अलावा मुहम्मद बिन साबित बिन कैस बिन शमास, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम, मुहम्मद बिन अमर बिन हज़्म अंसारी, उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब, वहब बिन अब्दुल्लाह बिन ज़म्आ, अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन ख़ातिब, ज़ुबैर बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़, अब्दुल्लाह बिन नौफ़ल बिन हारिस, मैदाने जंग में शरबते शहादत नोश करके मौत की गहरी नींद सो गये। आयाने मदीना की शहादत से लश्करे मदीना की हिम्मत टूट गए, आज़ा जवाब देने लगे, बाक़ी मांदा लश्करे मदीना की जानिब फरार हो गया। मुस्लिम बिन उक़्बा क़त्ल व ग़ारत गरी करता हुआ मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुआ, तीन दिन तक नबी मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हरमे पाक ज़ालिम शामियों की ताख़्त व ताराज का निशाना बना रहा, बेक़ुसूर व बेगुनाह बाशिन्दगाने मदीना का

ख़ून मुबाह था। शहरे अमन के गली कूचे ख़ून से लाला ज़ार बना दिए गये, लोगों के असासे लूट लिए गये, दरिन्दगी और सफ़्फ़ाकियत का बोल बाला रहा, तीन शबाना रोज़, रहम व मुरव्वत, अफ़्व दर गुज़र का नाम व निशान न रहा, ख़्यारे उम्मत अस्हाबे रसूल इस शोरिश व हंगामा से सख़्त इज़्तिराब में थे। मशहूर सहाबी रसूल हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु शहर से निकल कर पहाड़ के एक ग़ार में रूपोश हो गये। एक शामी बरहना तल्वार लिए हुए ग़ार में पहुँच गया। अबू सईद ने भी तल्वार संभाल ली। मगर शामी जब बिल्कुल क़रीब आ गया तो आपने तल्वार फेंक दी और फरामाया :

तरजमा : अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए दस्त दराज़ी करेगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए हाथ न बढ़ाऊंगा, मैं परवरदिगारे आलम से डरता हूँ।

शामी ने पूछा आप कौन हैं? जवाब दिया मैं अबू सईद ख़ुदरी हूँ, शामी ने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं? जवाब में इरशाद फरमाया, हाँ, वह यह सुन कर चला गया।

जब यज़ीदी लश्कर शहरे अमन को ताराज कर चुका और मुस्लिम बिन उक़्बा का जोशे इंतिक़ाम ज़रा सर्द हुआ तो उस ने क़त्ले आम और ग़ारत गरी को मौक़ूफ़ करके अह्ले मदीना को बैअ़त के लिए जमा किया यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ज़म्आ, मुहम्मद बिन अबी हजम बिन हुज़ैफ़ा अददी, मअ़क़ल बिन सिनान तीनों इब्ने उक़्बा के पास लाए गये जिनके हक़ में अमान तलब की गई थी, तीनों से बैअ़त के लिए कहा गया। यज़ीद और मुहम्मद ने कहा :

तरजमा : हम किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल पर तुझ से बैअ़त करते हैं।

(तबरी : जिल्द 4, स० 378)

मुस्लिम ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारी इस बात को हरगिज़ न माफ़ करूंगा। मुस्लिम के हुक्म से दोनों कुरैशियों के सर तन से जुदा कर दिए गये। मरवान बिन हकम ने मुस्लिम से कहा :

"सुब्हानल्लाह! दो कुरैशी इसलिए लाए गये थे कि उनको अमान मिलेगी। तो उन्हें क़त्ल करता है?

मुस्लिम ने मरवान की कमर में छड़ी की नोक चुभो कर कहा :

"ख़ुदा की क़सम अगर तू भी वह कलिमा अदा करता जो उन्होंने कहा तो तू भी अपने ऊपर तल्वार की चमक देखता।" (ऐज़न : 378)

मअ़क़ल बिन सिनान पेश किए गये। मुस्लिम ने उनके लिए शहद का

शर्बत दिया, वह प्यासे थे, शर्बत पी कर कहा : अल्लाह तुझे जन्नत में शराब से सैराब करे। मुस्लिम ने जवाब दिया सुनो! तुम्हें हमीमे जहन्नम के सिवा कुछ भी पीना नसीब न होगा। मअ़क़ल ने खुदा और सुलह रहमी का वास्ता दिया। मुस्लिम ने कहा जिस रात तू यज़ीद से रुख़्सत हुआ मक़ामे तबरीया में मुझ से मुलाक़ात हुई थी तू ने कहा था :

"हम ने महीना भर सफर किया और यज़ीद के पास से ख़ाली हाथ जाते हैं। अब हम मदीना जा कर उस फासिक़ को खिलाफ़त से माज़ूल कर देंगे और औलादे मुहाजिरीन में से किसी के हाथ पर बैअ़त कर लेंगे।"

मुस्लिम के पास यज़ीद बिन वहब लाया गया। जब उस से बैअ़त का मुतालबा किया गया तो उस ने कहा "मैं सुन्नते उमर पर तुम से बैअ़त करूंगा।" मुस्लिम ने कहा खुदा की क़सम! मैं तुझे मआफ़ न करूंगा। मरवान की सिफ़ारिश के बावजूद यज़ीद को तहे तेग़ कर डाला गया।

बलद मोहतरम की हुर्मत को यज़ीदी लश्कर ने जी खोल कर पामाल किया। क़त्ल व ख़ूंरेज़ी बेरहमी व शक़ावत और जोर व ग़ारत गरी के जरिआ पूरे मदीना पर यज़ीदी ताग़ूत का साया मुसल्लत कर दिया गया।

मक्का का मुहासरा : मदीना मुनव्वरा की पामाली से फ़राग़त के बाद मुस्लिम बिन उक़्बा ने अपनी फौज के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का ख़ात्मा करने के लिए हरमे इलाही की जानिब पेश रफ़्त की। जब वह मक़ामे अबवा पहुँचा सख़्त बीमार हो गया। उसे ज़िन्दगी की उम्मीद न रही तो हिसीन बिन नुमैर को अपना क़ाइम मक़ाम बना कर मर गया।

हिसीन बिन नुमैर लश्करे शाम को अपनी सरकरदगी में लेकर आगे बढ़ा। 26 मुहर्रम 64 हिजरी को शामी लश्कर मक्का के क़रीब पहुँच गया। अह्ले मक्का को बैअ़ते यज़ीद का हुक्म दिया, लोगों ने इंकार कर दिया। इब्ने ज़ुबैर हिजाज़ में अपनी खिलाफ़त क़ाइम कर चुके थे। अतराफ़े मक्का और खुद मदीना से आने वालों ने इब्ने ज़ुबैर के लश्कर में शिर्कत की। मक्का से बाहर तरफ़ैन ने सफ़्फ़ैन क़ाइम कर दीं, जंग का आग़ाज़ हुआ, शाम तक दोनों लश्कर दादे शुजाअत देते रहे, मगर किसी को ग़लबा हासिल न हो सका। दूसरे दिन हिसीन बिन नुमैर ने जबल बू क़बीस पर मिंजिनीक़ नसब करा दीं जो शब व रोज़ बैतुल्लाह पर संग बारी करती रहीं। कोई शख़्स तवाफ़े काबा की सआदत हासिल न कर सकता था। इसी हाल में मुहर्रम के आख़िरी अय्याम और पूरा माह सफर गुज़र गया।

माहे रबीउल-अव्वल **64** हिजरी की **3** तारीख़ को लश्करे शाम की मिंजिनीक़ों ने काबा पर आग बरसाई जिसकी वजह से बैतुल्लाह की छत, पर्दे जल कर ख़ाक हो गये। मगर जंग का ख़ात्मा न हुआ।

आलमे तसव्वुर में जरा बेअ्सत ख़त्मुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इब्तिदाई अय्याम पर नज़र दौड़ायें। वही कोहे फारान है जहाँ दाइ-ए-हक़ ने कुरैश को मुज्तमा करके जाहिल निज़ाम को शिर्क के अलर्रग्म रब्बे काबा की वहदानियत का सरमदी पैग़ाम सुनाया था जिसकी सदाए बाज़गश्त से पहली बार कुफ़्र व शिर्क के ईवान में इर्तिआश पैदा हो गया था। आज इसी मक़ाम से इब्ने नुमैर यज़ीदी सामराज की बुनियादें मुस्तहकम करने के लिए बैतुल्लाह और मस्जिदे हराम पर बेदरेग़ पत्थर और आग बरसा रहा है। क़ौम किस दरजा सियाह बख़्त है जो इसी मरकज़े हिदायत के इंहिदाम और उसकी इमारत की ईंट से ईंट बजाने की कोशिश कर रही है, जिस तरफ़ रुख़ करके ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की बारगाह में सुजूदे नियाज़ लुटाती रही।

यज़ीदी लश्कर की चीरा दस्तियाँ और हरमे इलाही की पामाली का मज़्मूम व क़बीह शुग़ल जारी था कि यज़ीद की ख़बरे वफ़ात मक्का मुकर्रमा पहुँची जिसने इस्लाम में खानदानी इमारत व शहन्शाहियत का क़स्र तामीर किया, जिसकी बुनियाद ख़ानवाद-ए-रिसालत के मुक़द्दस अफ़राद की लाशों पर रखी गई और जिसके इक़्तिदार व सतवत की जड़ें हरमे नबी में क़त्ले आम और हरमे इलाही के मुहासरा और ख़ान-ए-काबा को नज़्रे आतिश करके मज़्बूत की गईं। मगर शख़्सी सतवत द जबरुत का शीश महल मशीयते इलाही से चूर-चूर हो गया। यज़ीद नुक़रस के अज़ीयतनाक मरज़ में मुब्तला हुआ, इलाज व मुआलजा के बावजूद मरज़ बढ़ता चला गया। बिल-आख़िर **14** रबीउल-अव्वल **64** हिजरी को नाकाम हसरतों और इस्यान व सरकशी का ताबूत अपने सर पर रख कर राही मुल्के अदम हुआ। इब्ने ज़ुबैर को यज़ीद की मौत का हाल मालूम हुआ तो उन्होंने यज़ीदी लश्कर को ख़िताब करते हुए फरमाया, ऐ कम बख़्तो! एक दुश्मानाने हक़! तुम अब क्यों लड़ रहे हो? तुम्हारा गुम्राह सरदार मर गया।

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **133**)

जब हिसीन बिन नुमैर को यज़ीद की मौत का इल्म हुआ तो उस ने जंग मौक़ूफ़ कर दी और इब्ने ज़ुबैर से मक़ामे बतहा में तन्हा मिलने की

ख़्वाहिश ज़ाहिर की। रात की तारीकी में दोनों मिले। हिसीन बिन नुमैर ने कहा, ऐ अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर! तुम ज़्यादा मुस्तहिके ख़िलाफ़त हो और हम तुम्हारी बैअ़त कर लें बादे अज़ां हम और तुम शाम की तरफ चलें, मैं अह्ले शाम का सरदार हूँ। यह लश्कर जो मेरे साथ है उस में शाम के बड़-बड़े सरदार हैं। वल्लाह! मेरी बैअ़त करने से कोई इख़्तिलाफ़ न करेगा और हम दोनों के इत्तिहाद से ख़ूंरेज़ी का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा।

इब्ने ज़ुबैर ने बुलन्द आवाज़ से कहा :

"मैं ऐसा हरगिज़ न करूंगा मुझे उस शख़्स पर किस तरह एतमाद हो सकता है जिस से लोग ख़ाइफ़ हों और जिसने बैतुल्लाह को जला दिया हो और जिस ने उसकी हुर्मत पामाल की? मैं तुम्हारे क़ौल व फ़ेअ़ल का हरगिज़ एतबार न करूंगा।" (ऐज़न : स० 133)

हिसीन बिन नुमैर नाकाम व नामुराद शाम की जानिब लौट गया।

यज़ीद के बाद लोगों ने मुआविया बिन यज़ीद को दमिश्क़ के तख़्त पर बिठाया मगर वह ज़ुल्म व जब्र की बुनियादों पर क़ाइम सल्तनत को नापसन्द करता रहा। बिल-आख़िर अपने बाप की क़ाइम करदा शख़्सी हुकूमत से दस्त बरदार होते हुए लोगों से ख़िताब किया :

ऐ लोगो! मैं तुम पर हुकूमत करने से माज़ूर हूँ, पस मैं उमर बिन ख़त्ताब की पैरवी करता हूँ जैसा कि उन्होंने छः आदमियों को अरबाबे शूरा से ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करने के लिए मुक़र्रर किया था। मैं तुम लोगों को अख़्तियार देता हूँ कि जिसको मुनासिब समझो ख़िलाफ़त के लिए उसे मुन्तख़ब कर लो। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 134)

इस तरह यज़ीद की मौरूसी सल्तनत का हमेशा के लिए ख़ात्मा हो गया। और आज तक इस नस्ल में फरमांरवाई व इमारत न आ सकी।

❖ ❖ ❖

मुख़्तार बिन अबू उबैदा सक़्फ़ी और क़ातिलीने हुसैन का अंजाम

एक खस्ता हाल मुसाफ़िर कूफ़ा से ताइफ़ जा रहा है। मक़ामे वाफ़िज़ा में इब्नुल-अर्क मिला। मुसाफिर और इब्नुल-अर्क़ में क़दीम शनासाई (पुरानी जान पहचान) और दीरीना रवाबित थे। इब्नुल-अर्क़ ने परीशां हाल मुसाफिर की पज़ीराई की। दरमांदा मुसाफिर के चेहरे पर निगाह जमाए उस ने **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।** पढ़ा। उबली हुई मज्रूह आँख की तरफ इशारा करते हुए पूछा, तुम्हारी इस आंख को यह सदमा कैसे पहुँचा? खुदा तुझे हर मुसीबत से बचाए। मुसाफिर ने जवाब दिया, हरामज़ादा उबैदुल्लाह बिन ज़्याद ने असा की जर्बे शदीद से मेरी आंख को मज्रूह और नाबीना कर दिया। इब्नुल-अर्क ने हम्दर्दी का इज़्हार करते हुए कहा। इब्ने ज़्याद ने कैसी ज़ालिमाना हरकत की। खुदा उसके हाथ को शल कर दे। तबाह हाल मुसाफिर ने क़द्रे जोश और भर पूर एतमाद के लेहजे में कहा, अगर मैं उसके हाथ पाँव रग व पै और आज़ा व जवारेह टुकड़े-टुकड़े न कर दूँ तो खुदा मुझे हलाक कर दे। इब्नुल-अर्क़ ने दरमांदा ग़रीबुद्देयार मुसाफिर के चेहरा पर नजर जमाए हुए हैरत व इस्तेअ्जाब के लहजा में दरयाफ्त किया तुम यह दावा किस बुनियाद पर करते हो?

मुसाफ़िर ने जवाब दिया मैंने जो कुछ कहा उसे याद रखना और देख लेना आने वाले अय्याम मेरे कौल की हरफ़ बहरफ़ तस्दीक़ करेंगे। मुसाफिर ने जुबैर के हालात पूछे। इब्नुल-अर्क बोला। उन्होंने बैतुल्लाह की मुजावरी अख्तियार कर ली है, वह कहते हैं अमीरे जाबिर के ज़ुल्म से बचने के लिए रब्बे काबा की पनाह में हूँ। लोगों का ख्याल है कि दर परदा खि़लाफ़त के लिए बैअत ले रहे हैं। जब उनकी क़ुव्वत व जम्ईयत बढ़ेगी तो बग़ावत कर देंगे। मुसाफिर ने कहा, यक़ीनन वह अरब में ऊलुल-अज़्म, बाहौसला, मुअज़्ज़ज शख़्स हैं। अगर वह मेरे नक़्शे क़दम पर चलें, मेरे मशवरों पर अमल करें तो मैं उन्हें ज़हमत से बचा लूँगा। अगर उन्होंने मुझ पर एतमाद न किया तो बखुदा मुझे भी अरब का कोई मुम्ताज़ शख़्स मिल जाएगा।

मुसाफ़िर ने बड़े बावसूक़ अंदाज़ में कहा, ऐ इब्नुल-अर्क़! फित्ना व फ़साद के बादल गरज रहे हैं। वह देखो जंग के शोअ्ले भड़क उठे, उसने सबको अपने लपेट में ले लिया। तुम सुनोगे जहाँ मैं ज़ुहूर करूंगा। लोगों की ज़ुबान पर होगा। मुख़्तार मुसलमानों की फौजों के साथ मज़्लूम शहीद, किश्त-ए-ज़मीन नैनवा, नवासा सैय्यदुल-मुरसलीन, हुसैन बिन अली के ख़ून नाहक़ का इंतिक़ाम लेने के लिए बढ़ा। खुदा की क़सम मैं उन क़ुदसी सिफ़ात बन्दगाने हक़ के इंतिक़ाम में इतने लोगों को क़त्ल करूंगा जितने अफ़राद यहया बिन ज़करिया अलैहिमस्सलाम के इंतिक़ाम में क़त्ल किए गये। इब्नुल-अर्क़ ने हैरत व इस्तेअ्जाब में डूबते हुए कहा, तुम्हारी यह बात भी अजीब है। उसने जवाब दिया, मैं जो कुछ कहता हूँ उसे याद रखना ऐसा ही होगा।

यह दरमांदा, तबाह हाल, साठ साला मुसाफिर ताइफ़ का बाशिन्दा मुख़्तार बिन अबू उबैद सक़्फ़ी था। अरब की रिवायती शुजाअत व जांबाज़ी के साथ फरासत व तदब्बुर, हिक्मत व सियासत और तंज़ीमीम सलाहियतों में मुम्ताज़ था। जो एक अदना सतह से उठ कर हुकूमत व सल्तनत के तख़्त पर मुतमक्किन हुआ।

मुख़्तार का चचा सअद बिन मस्ऊद सक़्फ़ी हज़रत अली के दौरे ख़िलाफ़त में मदाइन का गवर्नर था। मुख़्तार अपने चचा के पास ही रह कर सियासी व समाजी हालात के नशीब व फराज़ का बड़ी गहराई से मुताअला करता रहा। जब 40 हिजरी में हज़रत हसन बिन अली ख़लीफ़ा बनाए गये बअ्दहू लश्करे शाम के मुक़ाबला में हज़रत हसन मदाइन की जानिब बढ़े। अचानक हसनी लश्कर गाह में शोरिश पैदा हुई, नाहंजार लोगों ने हज़रत हसन का ख़ेमा लूट लिया और फ़र्श घसीट लिया। नामुसाइद हालात देख कर आप क़स्रे मदाइन में चले गये।

मुख़्तार सक़्फ़ी ने हज़रत अमीर मुआविया के हक़ में हालात का रुख़ देख कर अपने चचा हाकिमे मदाइन सअद बिन मस्ऊद सक़्फ़ी को मशवरा देते हुए कहा :

तरजमा : अगर तुम को माल व दौलत और इज़्ज़त व इक्तिदार की ख़्वाहिश है तो हसन को गिरफ़्तार कर लो और मुआविया से उसके सिला में अमानत कर लो।

सअद ने जवाब में कहा :

तरजमा : खुदा तुझ पर लानत करे मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे पर हमला करूं और उनको गिरफ़्तार कर लूं। तू कितना बुरा इंसान है।

मुख़्तार के नाज़ेबा मशवरे से यह बात वाज़ेह होती है कि वह आले रसूल का कितना बड़ा दुश्मन था।

इमाम हसन की सिपुर्दगी ख़िलाफ़त के बाद जब इस्लामी हुकूमत व सल्तनत की जमामे इक्तिदार हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु के हाथ आ गई। मुख़्तार कूफ़ा में सुकूनत गुज़ीं हो गया। हवा ख़्वाहाने अह्ले बैत में इस नाज़ेबा मशवरे का चरचा हुआ। जिसकी बिना पर लोग उसे दुश्मने अह्ले बैत समझ कर नफ़रत करने लगे। मुख़्तार के दिल में हुकूमत व इक्तिदार की उमंग अंगड़ाई लेती रही, वह बड़ी ख़ामोशी के साथ कूफ़ा के माहौल और कूफ़ा वालों के मैलाने तबअ् का जाइज़ा लेता रहा, अपने ख़्वाब को शर्मिंदा तअ्बीर करने के लिए हाल के आईना में मुस्तक़्बिल की तस्वीर देखता रहा। उसे जब यकीन हो गया कि शीआने अली और हामियाने अह्ले बैत की हिमायत व नुसरत के बग़ैर वह अपने मंसूबों को जाम-ए-अमल नहीं पहना सकता और अपने ज़हनी जवाबों की अमली शक्ल नहीं पेश कर सकता। तो उस ने अपने दामन से अदावते अह्ले बैत का बदनुमा दाग़ धोने का बन्दोबस्त कर लिया और कूफ़ा की इंक़लाबी तहरीक में शामिल हो गया।

60 हिजरी में जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु ने इंतिकाल फरमाया और यज़ीद मस्नदे ख़िलाफ़त पर बैठा तो अह्ले कूफ़ा की तहरीके इंक़लाब में ज़ोर पैदा हो गया। हज़रत इमाम हुसैन को ख़लीफ़ा बनाने की तज्वीज पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया गया। हज़रत इमाम हुसैन को तलबी के खुतूत पय दर पय इरसाल किए गये। उनके तमाम मुआमलात में मुख़्तार ने नुमायाँ तौर पर हिस्सा लिया। चुनांचे जब हज़रत मुस्लिम बिन अकील इमाम हुसैन के नाइब की हैसियत से कूफ़ा आए तो उन्होंने मुख़्तार सक़्फ़ी के मकान पर क़याम किया। मुख़्तार ने ख़ूब हक़ मेज़बानी अदा किया। बड़े जोश व एहतराम के साथ मुस्लिम के हाथ पर ख़िलाफ़ते हुसैन के लिए बैअ़त कर ली। फिर वह जनाब मुस्लिम के लिए वफ़ादार हुआ ख़्वाह अफ़राद फराहम करने के लिए अपनी जागीर पर चला गया। कूफ़ा की तहरीक के लिए मुख़्तार का यह कदम बड़ा मुस्तहसन था, उस ने दिलों में मुहिब्बे अह्ले बैत की हैसियत से जगह बना ली।

जब मुस्लिम बिन अक़ील और हानी बिन उरवा की शहादत का वाक़या पेश आया तो मुख़्तार कूफ़ा से बाहर था। शहादत की ख़बर पा कर वह कूफ़ा वापस आया। अब्दुल्लाह बिन ज़्याद ने मुनादी करा दी थी कि जो शख़्स जामे कूफ़ा में हाज़िर हो कर रात न गुज़ारेगा उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। लोग वफ़ादारि-ए-अह्ले बैत को अपनी जान व माल की सलामती पर क़ुरबान करके जामे कूफ़ा में जमा रहे थे, मुख़्तार दरयाफ़्ते हाल के लिए मस्जिद के दरवाज़ा पर पहुँचा। उसके एक दोस्त ने पूछा तुम यहाँ कैसे खड़े हो? न वफ़ादाराने हुकूमत की तरह मस्जिद में हो और न अपने घर में महफ़ूज़ हो। मुख़्तार ने कहा ख़ुदा की क़सम! मेरी अक़्ल चर्ख़ हो गई है। कुछ समझ में नहीं आता। ख़ैर ख़्वाह दोस्त ने कहा, बख़ुदा तुम्हारी क़ज़ा तुम को यहाँ खींच लाई है।

इब्ने ज़्याद के नाइब अमर बिन हरीस ने मुख़्तार को पैग़ाम भेजा। अक़्ल के नाखुन को तबाही की दावत न दो। मुस्लिम के हामियों की पोज़ीशन कम्ज़ोर है। अगर तुम मस्जिद में आ जाओगे तो मैं उबैदुल्लाह से सिफ़ारिश करके तुम्हें बचा लूँगा। मुख़्तार को हालात से समझौता करने ही में नजात नज़र आई मस्जिद में दाख़िल हो गया। सुबह के वक़्त जब इब्ने ज़्याद मस्जिद में आया। मुख़्तार को बुला कर पूछा, तुम मुस्लिम की मदद के लिए फौज लेकर आए हो? मुख़्तार ने इंकार किया और क़सम खा कर कहा, मैं मस्जिद में हाज़िर हो गया था और वहीं रात बसर की। उबैदुल्लाह ने तैश में आ कर उसके चेहरे पर इस ज़ोर से छड़ी मारी कि उसकी आंख का ढेला उलट गया। नाइब ने सिफ़ारिश की लेकिन इब्ने ज़्याद ने मुख़्तार को क़ैद खाना में डाल दिया। हालते क़ैद ही में हादसा करबला गुज़र गया। मुख़्तार ने ज़ाइदा बिन क़ुदामा मस्ऊद सक़्फ़ी को हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के पास भेजा कि वह यज़ीद के पास ख़त लिख कर रिहाई की सबील पैदा करें। इब्ने उमर की सिफ़ारिश पर यज़ीद ने इब्ने ज़्याद के पास मुख़्तार की रिहाई का फरमान भेजा और वह क़ैद से इस शर्त पर रिहा किया गया कि तीन रोज़ के अन्दर कूफ़ा छोड़ दे। मुख़्तार कूफ़ा से अपने वतन ताइफ़ रवाना हुआ। रास्ता में उसकी मुलाक़ात इब्नुल-अर्क़ से हुई जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका। उसने पहले मक्का पहुँच कर तवाफ़े काबा के बाद इब्ने ज़ुबैर से मुलाक़ात की इब्ने ज़ुबैर ने कहा, अबू इस्हाक़! बाशिन्दगाने कूफ़ा का हाल बयान करो। मुख़्तार ने कहा :

बज़ाहिर लोग अरबाबे इक़्तिदार के दोस्त हैं मगर बातिन में सबके सब दुश्मन हैं।

(तबरी : जिल्द 4, स० 444)

इब्ने ज़ुबैर ने कहा :

बुरे गुलामों की यही ख़सलत हुआ करती है।

मुख़्तार ने राज़दारी के अंदाज़ में इब्ने ज़ुबैर से कहा :

तरजमा : तुम क्या इंतिज़ार कर रहे हो? हाथ बढ़ाओ मैं तुम से बैअ़त करता हूँ और तुम यहीं खुश किरदार हिजाज़ पर क़ब्ज़ा कर लो। सब तुम्हारे साथ हैं।

इब्ने ज़ुबैर ने बैअ़त लेने से इंकार कर दिया। मुख़्तार ताइफ़ चला गया। एक साल बाद फिर मक्का आया, ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ करके हरमे काबा में एक तरफ़ बेनियाज़ी के साथ बैठ गया। इब्ने ज़ुबैर ने जब उसकी बेएतनाई देखी तो अपने मुशीर को भेजा। मुशीर ने इस गुफ़्तगू के बाद राज़दारी के साथ कहा ?

"तुम जैसा मुदब्बिर इंसान एक ऐसे शख़्स से दूर रहे जिस पर तमाम अह्ले शर्फ़ और क़बाइले अरब, कुरैश व अंसार, सक़ीफ़ इत्तिफ़ाक़ कर चुके हैं। कोई ख़ानदान और क़बीला ऐसा नहीं रहा जिस का रईस उस से आकर बैअ़त न कर गया हो। मुझे तुम्हारी दानिशमन्दी पर तअज्जुब है कि तुम उनके पास न आए और तुम ने उस से बैअ़त न की और उसकी हुकूमत में अपना हिस्सा न लिया। मुख़्तार ने जवाब दिया :

तरजमा : मैं गुज़िश्ता साल उनके पास आया उन्हें मश्वरा दिया। उन्होंने अपने मुआमला को मुझ से छुपाया। मैंने देखा उनको मेरी परवाह नहीं है। मैंने भी दिखा दिया कि मुझे भी उनकी परवाह नहीं है।

मुशीर की इफ़्हाम व तफ़्हीम पर मुख़्तार रात की तारीकी में इब्ने ज़ुबैर से मिला। इब्तिदाई कलाम के बाद मुख़्तार ने कहा :

तरजमा : मैं इस ग़रज़ से तुम्हारे पास आया हूँ कि तुम से इस शर्त पर बैअ़त करूं कि तुम अपने हर काम में मुझ से मश्वरा लो, सब मुलाक़ातियों से पहले मुझे बारयाबी का मौक़ा दो और जब जो ज़ाहिर करो तो हर काम में मुझे शरीक करो, ओहदा से नवाज़ो।

इब्ने ज़ुबैर ने कहा मैं तुम से किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल पर बैअ़त लेना चाहता हूँ। मुख़्तार ने कहा मेरे किसी अदना ग़ुलाम से किताब व सुन्नत पर बैअ़त लेना। मुझ में और ग़ैर में क्या इम्तियाज़ रहा। वल्लाह! मैं तुम

से बैअ़त न करूंगा। अब्बास बिन सहल के मश्वरा पर इब्ने ज़ुबैर ने मुख़्तार की शर्तें कुबूल कर लीं। मुख़्तार ने इब्ने ज़ुबैर की हाथ पर बैअ़त कर ली।

इब्ने ज़ुबैर के साथ : मुख़्तार इब्ने ज़ुबैर का दस्त रास्त बन गया। अपनी ख़ुदा दाद हिक्मत व तदब्बुर से इब्ने ज़ुबैर की हर मोड़ पर रहनुमाई करता रहा। **64** हिजरी में जब यज़ीद की तरफ़ से हिसीन बिन नुमैर ने मक्का का मुहासरा करके क़रीनी पहाड़ों से आतिश व संग की बारिश का हदफ़ बैतुल्लाह और हरमे काबा को बनाया। उस वक़्त मुख़्तार ने जुरअत व हिम्मत और दिलेरी व शुजाअत के जौहर दिखा कर दुश्मनों को मरऊब कर दिया। **30** रबीउल-अव्वल **64** हिजरी की ख़ून आशाम जंग में वह पुकार-पुकार कर कहता था :

तरजमा : ऐ अह्ले इस्लाम! मेरी जानिब आओ मैं अबू उबैद का बेटा हूँ मैं करार ग़ैर फरार का फरज़न्द हूँ मेरे बाप दादा मारका में जम जाते थे कभी क़दम पीछे न हटाते थे। ऐ ग़ैरतदारो! ऐ कमान कशो! मेरे पास आओ।

यज़ीद की मौत के बाद मक्का का मुहासरा उठ गया। पूरे हिजाज़, बसरा, कूफ़ा में इब्ने ज़ुबैर की बैअ़त की गई। इब्ने ज़ुबैर के लिए पूरी तरह फ़िज़ा साज़गार थी। मगर उन्होंने मुख़्तार को कोई मंसब नहीं दिया, जिसकी वजह वह उन से बद-दिल हो गया। एक दिन उस ने इब्ने सफवान से कहा :

वल्लाह! उन्हें एड़ियाँ रगड़ कर मेरे नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए वरना मैं उनके लिए आतिशे जंग मुश्तइल कर दूँगा। (तबरी : जिल्द **4**, स० **447**)

कूफ़े से जो लोग भी आते मुख़्तार उन से कूफ़ा का हाल दरयाफ़्त करता। हानी बिन वदाई बग़र्ज़ उमरा मक्का आया तो मुख़्तार ने हालाते कूफ़ा दरयाफ़्त किये। उस ने कहा, आम लोग इब्ने ज़ुबैर पर मुत्तफ़िक़ हैं मगर एक गरोह है जो उन्हें अपनी राय पर मुत्तफ़िक़ कर लेगा। कामयाब होगा। मुख़्तार ने कहा :

तरजमा : मैं अबू इस्हाक़ हूँ, मैं वल्लाह उन लोगों को अम्रे हक़ पर मुत्तफ़िक़ कर लूंगा। उन्हें साथ लेकर अह्ले बातिल को शहर से निकाल दूँगा और हर जब्बार मुतमर्रद (नाफरमान) क़त्ल कर दूँगा।

मुख़्तार अपने देरीना मन्सूबा की तक्मील के लिए कूफ़ा की तरफ़ रवाना हुआ। राह में सलमा बिन मुर्शिद से मुलाक़ात हुई। मुख़्तार ने हिजाज़ का हाल बयान किया और अह्ले कूफ़ा का हाल पूछा। उसने जवाब दिया :

तरजमा : गोसफ़न्द का हाल है जिसका कोई चरवाहा नहीं।

(तबरी : जिल्द 4, स० 448)

मुख़्तार कूफ़ा में : मुख़्तार कूफ़ा पहुँचा। शहर में दाख़िल होने से पहले एक नहर पर गुस्ल किया, सब्ज़ अमामा बांधा, उम्दा कपड़े ज़ेबतन किए, कमर से तल्वार लटकाई, ऊंटनी पर सवार जुमा के दिन हामियाने अह्ले बैत के महलों से गुज़रता हुआ कूफ़ा में दाख़िल हुआ। वह अह्ले बैत के हामियों के जिस मुहल्ला से गुज़रता सबको सलाम करता और कहा, मैं तुम्हारे लिए फतह, कामयाबी और खुशहाली की बशारत देता हूँ। रास्ता में एक हामिए-अह्ले बैत शाइर अबू उबैदा बिन अमर से मुलाक़ात हुई उस से सलाम के बाद कहा :

तरजमा : तुझे फतह व नुसरत और आसानी की बशारत हो! अपनी मस्जिद के लोगों को यह पैग़ाम पहुँचा देना कि उन लोगों से अल्लाह तआला अपनी ताक़त का वादा ले चुका है। यह हतक करने वालों को क़त्ल करेंगे और पैग़म्बर ज़ादों के ख़ून का इंतिक़ाम लेंगे। और खुदा उनको नूर की तरफ़ हिदायत करेगा।

मुख़्तार अपने मकान पर उतरा। रात के वक़्त हामियाने अह्ले बैत की हिमायत मकान पर आई, बताया गया कि सुलेमान बिन सर्द की क़्यादत में हामियाने अह्ले बैत ने इब्ने ज़्याद के ख़िलाफ़ लड़ने का फ़ैसला किया है। मुख़्तार ने क़्यादत से महरूमी का अंदाज़ा करते हुए हीला व तदब्बुर के तरकश का एक तीर फेंका और लोगों से कहा :

लोगो! वसी के साहबज़ादे मेहदी मुहम्मद बिन अली (इब्ने हन्फ़ीया) ने मुझे आप लोगों के पास अपना अमीन व वज़ीर और अफ़्सर बना कर भेजा है, मुझे मुल्हिदों से लड़ने और अह्ले बैत का इंतिक़ाम लेने और कम्ज़ोरों के हुक़ूक़ की निगरानी का हुक्म दिया है। (क़रने अव्वल का एक मुदब्बिर स० 33)

मुख़्तार का तीर ठीक निशाना पर बैठा। हामियाने अह्ले बैत अब दो गरोहों में तक़्सीम होने लगे, इब्ने सर्द की तहरीक पर कारी ज़र्ब पड़ी, मवाली और ग़ैर अरब जिन्हें अरब अस्बीयत ने अशराफ़ की सफ़ में दाख़िल होने से रोके रखा था। वह मवाली जिनकी गुलामी आज़ाद होने के बावजूद कलंक का टीका थी, उन्हें मुख़्तार अपनी सफ़ में बराबर का दरजा दे कर अपने सियासी मक़ासिद की तक्मील करना चाहता था।

सुलेमान बिन सर्द शामियों से लड़ कर अपने दामन से हुसैन बिन अली

के साथ अपनी बेवफ़ाई का दाग़ धोना चाहता था। मगर मुख़्तार इब्ने हन्फ़ीया का नुमाइन्दा बन कर कूफ़ा आया था। उसकी दावत ने मज़्हबी रूप धार रखा था। चुनांचे लोग सुलेमान की हिमायत से दस्तकश हो कर मुख़्तार के कैम्प में तेज़ी के साथ दाख़िल होने लगे। मुख़्तार इब्ने सर्द के हामियों को तोड़ने के लिए ज़ुबान व बयान का ज़ोर सर्फ़ करते हुए मुअस्सिर लब व लहजा के साथ उन से कहता है :

तरजमा : मैं आपके पास वली अम्रे मअ़दन फ़ज़ीलत, वसीयुल-वसी और इमाम मेहदी के पास से एक ऐसा फरमान लेकर आया हूँ जिसमें शिफ़ा, कश्फ़ ग़ता, क़त्ल आदा और तमाम नेमत है। सुलेमान, ख़ुदा उन पर और हम पर रहम करे निहायत बूढ़े लाग़र और बोसीदा हो गये हैं, न उनको इंतिज़ामी मुआमलात का तजरेबा है, न जंगी तदबीर का, वह खुद भी हलाक होंगे और तुमको भी तबाह करेंगे। इसके बरख़िलाफ़ मैं ऐसे प्रोग्राम पर अमल पैरा हूँ जो मेरे सामने वाज़ेह कर दिया गया है, जिस पर अमल करके आपके दोस्त सर बुलन्द होंगे और आपके दुश्मन सरनेगूँ और आपके दिलों की आग ठंडी होगी। लिहाज़ा मेरी बात सुनिए, इताअत कीजिए, खुश रहिए और एक दूसरे को कामयाबी के मुज़्दे सुनाइए। मैं आपकी आरज़ुओं का बतरीक़ हुस्न कफ़ील हूँ।

सुलेमान बिन सर्द की नाकामी : मुख़्तार की दिल आवेज़ तक़रीरों, उसकी पुरकशिश पेश गोईयों ने सुलेमान की तहरीक को शिकस्त व रेख़्त से दो चार कर डाला। उसके हामियों की 65 हज़ार तादाद घट कर सिर्फ़ एक चौथाई रह गई मगर सुलेमान ने हिम्मत न हारी। अपनी दावत और अज़्मे रासिख़ पर क़ाइम रहे और अह्ले शाम से जंग की तैयारियाँ मुकम्मल कर लीं।

और मुख़्तार का ज़ोर व इक्तिदार बढ़ता रहा। सुलेमान के मुक़ाबला में वह हामियाने अह्ले बैत का लीडर बन चुका था। अगरचे सुलेमान बिन सर्द की ज़ात और उसकी तहरीक से वह मुत्तफ़िक़ न था मगर सुलेमान के अलर्रग़्म वह हुसैनी कैम्प में ऐसी तफ़रीक़ पसन्द न करता था जिस से बाहमी जंग नागुज़ीर हो जाए। वह सुलेमान बिन सर्द की नाकामी का तमाशा देखने के लिए बज़ाहिर ख़ामोश रहा लेकिन दर परदा वह अपनी फ़िल्ड हम्वार करता रहा ताकि इब्ने सर्द की नाकामी व बामुरादी के बाद जो यक़ीनी था हामियाने अह्ले बैत का तन्हा लीडर बन कर पूरी कुव्वत व

ताक़त के साथ मैदान में आएगा, फिर ख़ूने हुसैन का इंतिक़ाम लेने वाले पूरी यक्सूई के साथ उसके परचम के नीचे जमा हो जाएंगे।

सुलेमान बिन सर्द ने माहे रबीउस्सानी 65 हिजरी को अपने लश्कर के साथ नख़िलया में क़याम किया, लश्कर की तादाद सोलह हज़ार थी, नख़िलया में तीन रोज़ के क़याम के बाद बाज़ सरदारों ने कहा, इस वक़्त तमाम क़ातिलीने हुसैन तो कूफ़ा में मौजूद हैं लिहाज़ा उन्हें छोड़ कर कहाँ खाक छानने जा रहे हैं? सुलेमान ने जवाब दिया, यह लोग तो फौजी थे असल सरदार तो इब्ने ज़्याद था। वह मेरे नज़्दीक सबसे बड़ा मुज्रिम है। इब्ने ज़्याद ही बानी फसाद और गुनाहों का सरदार है। उस पर कामयाबी के बाद दूसरों को तबाह करना आसान हो जाएगा, लोग मुत्मइन हो गये और रवानगी का सामान होने लगा।

जब यह लोग क़बरे हुसैन पर पहुँचे। आह व नाला, गिरिया व बुका का ऐसा दिल ख़राश माहौल पैदा हुआ कि गोया हंगाम-ए-महशर बपा हो गया हो। यह लोग रो-रो कर अपनी साबेक़ा बेवफ़ाइयों और पैमान शिक्नियों और निदामत व पशेमानी का इज़्हार कर रहे थे। सुलेमान बिन सर्द ने दुआ की :

तरजमा : ऐ ख़ुदा! हुसैन शहीद बिन शहीद महदी बिन महदी सिद्दीक़ बिन सिद्दीक़ पर रहमत नाज़िल फरमा। तो गवाह रहना कि हम सब उन्हीं के दीन पर हैं, उन्हीं की राह के सालिक हैं, उन के क़ातिलों के दुश्मन हैं, उनके दोस्तों के दोस्त हैं।

और सबके सब बआवाज़ बुलन्द कह रहे थे :

तरजमा : ख़ुदावन्द! हम अपने पैग़म्बर के फ़रज़न्द को छोड़ कर बैठ रहे, जो कुछ हम ने किया उसे मआफ़ कर दे, हमारी तौबा क़ुबूल कर ले तू रहीम व तव्वाब है, हुसैन और अस्हाबे हुसैन शुहदाए सिद्दीक़ीन पर अपनी रहमत नाज़िलकर परवरदिगार तू गवाह है कि जिस राह पर वह क़त्ल हुए हैं हम भी उसी राह पर क़ाइम हैं अगर तू हमारे गुनाह को न बख़्शेगा और हम पर रहम न करेगा तो हम सब ख़ाइब व ख़ासिर और तबाह व बरबाद हो जाएंगे।

अब्दुल्लाह बिन यज़ीद और इब्राहीम बिन मुहम्मद को जब इब्ने सर्द की फौज कुशी का इल्म हुआ तो उसके पास पहुँच कर मश्वरा दिया कि हमें जंगी तैयारियाँ कर लेने दो ताकि हम सब मुत्तहिद हो कर शामियों से मुक़ाबला के लिए निकलें मगर इब्ने सर्द ने राय क़ुबूल न की और अपने

लश्कर के साथ अंबार होते हुए ऐन अल्वरदा की तरफ़ कूच कर दिया।

ऐन अल्वरदा के गरबी किनारे पर सुलेमान का लश्कर फरोकश हो गया। पाँचवें दिन लश्करे शाम की आमद की ख़बर मिली, सुलेमान ने अपने साथियों के सामने यह तक़्रीर की और कहा :

अगर मैं मारा जाऊं तो मुसैय्यिब बिन नजीह को, अगर यह भी मारा जाए तो अब्दुल्लाह बिन सअद तक़ील को, अगर यह भी मारा जाए तो अब्दुल्लाह बिन वाल को और अगर यह भी मारा जाए तो रिफ़ाआ बिन शराद को अमीर बनाना।

26 जिमादिल-अव्वल **65** हिजरी को दोनों लश्करों के दर्मियान मअ्रका कारे ज़ार गर्म हुआ, शामी लश्कर पस्पा होने लगा, रात की तारीकी ने जंग रोक दी। सुबह होते ही अब्दुल्लाह बिन ज़्याद के भेजे हुए आठ हज़ार फौजी शाम में आ मिले। नमाज़े फज्र के बाद जंग का आग़ाज़ हुआ। पूरे दिन घम्सान का दिन रहा, दोनों लश्कर पूरे जोश व ख़रोश के साथ बरसरे पैकार रहे। शाम होते ही जंग बन्द कर दी गई।

दूसरे रोज़ सुबह ही अदहम बिन महर्ज़ बाहली दस हज़ार का दस्ता लेकर शामी लश्कर की कुमुक के लिए आ गया। सुबह से दोपहर तक शदीद जंग होती रही। दोपहर बाद शामी लश्कर ग़ालिब आने लगा। इब्ने सर्द ने लल्कार कर कहा जिसे आज जन्नत में शब बाश होना हो वह हमारे साथ आए। हम्राहियों ने तल्वारें खींच कर शेर की तरह शामी लश्कर पर हमला कर दिया। जंग का नक्शा बदलते देख कर हिसीन बिन नुमैर ने तीर अंदाज़ों को तीर बारी और सवारों को मुहासरा का हुक्म दिया। इब्ने सर्द मुसैय्यिब, अब्दुल्लाह सअद यके बाद दीगरे तीरे अजल का निशाना बन गये। रिफ़ाआ बिन शद्दाद की क़्यादत में तव्वाबीन जंग करने लगे, अभी जंग का फ़ैसला न हुआ था कि रात हो गई, दोनों लश्कर अपनी फरोदगाह में वापस चले गये। रिफ़ाआ ने अपने लश्कर का जाइज़ा लिया तो पता चला कि फौज का अक्सर हिस्सा मैदान में काम आ चुका है बाक़ी लोग ज़ख़्मी हैं। बक़िया लोग हद दरजा ख़स्ता व अब्तर हैं। चुनांचे रात की तारीकी में मैदान छोड़ कर कूफ़ा की जानिब फरार हो गया। इस तरह इब्ने सर्द की नाकामी व नामुरादी ने मुख़्तार के लिए राह का कांटा साफ़ कर दिया।

मुख़्तार की गिरफ़्तारी और रिहाई : सुलेमान बिन सर्द के मुतवाज़ी मुख़्तार की तहरीक ने चन्द ही दिनों में जड़ पकड़ लिया और उसके शाख़

व बर्ग तेज़ी से फैलने लगे। लेकिन अपनी सियासी बसीरत और माज़ी के तजरेबात की वजह से अस्करी तंज़ीम की जानिब ख़ास तवज्जोह न दी क्योंकि वह सुलेमान बिन सर्द की नाकामी और उसके हाशिया नशीनों की शामियों के हाथ से तबाही व हलाकत का मुंतज़िर था।

जब कूफ़ा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन यज़ीद को मुख़्तार की सियासी तंज़ीम और इब्ने हन्फ़ीया की नियाबत में इंक़लाबी तहरीक और उसके अज़ाइम की ख़बर दी गई तो कोतवाल शहर और कुबाई लीडरों ने बताया कि मुख़्तार इंतिहाई ख़तरनाक शख़्स है, उसकी तहरीक सुलेमान बिन सर्द की तहरीक से मुख़्तलिफ़ है। उसका आज़ाद रह कर मवाली और हवा ख़्वाहाने अह्ले बैत का मुनज़्ज़म करना कूफ़ा पर अब्दुल्लाह और उनकी हुकूमत के लिए अज़ीम ख़तरा है, चुनांचे मुख़्तार को क़ैद में डाल दिया गया। क़ैद होने के बाद मुख़्तार की तहरीक को मज़ीद कुव्वत हासिल हुई। उसके नुक़बा बदस्तूर हामियाने अह्ले बैत से बैअत लेते रहे। क़ैदखाना में अपने मिलने वालों से अक्सर मुसज्जअ् उस्लूबे बयान में पेशीन गोई करता :

तरजमा : क़सम है समुन्द्रों, खुजूरों, दरख़्तों, बयाबानों, वीरानों, सालेह फ़रिश्तों और बरगुज़ीदा नबियों के रब की! मैं हर लचक दार नेज़ा और हिन्दी तल्वार से मुसल्लह तजरबा कार और सालेह अंसारे अह्ले बैत के लश्करों की मदद से हर जब्बार को क़त्ल कर दूँगा और जब दीन के सुतून को सीधा और मुसलमानों की परागन्दा हाल को दूर कर लूँगा और अंबिया का इंतिक़ाम ले लूँगा तब न मुझे ज़वाल दुनिया का अफ़सोस होगा और न मरने से डरूंगा।

सुलेमान बिन सर्द की हज़ीमत (शिकस्त) फाश के बाद अब वह वक्त आ गया था कि मुख़्तार बिला शिर्कत ग़ैर हामियाने अह्ले बैत का मरकज़े निगाह बन कर अपने सियासी मक़ासिद हासिल कर सकता था। सुलेमान के बाक़ी मांदा मग़रूर साथी जब कूफ़ा आए तो उस ने उनकी तहसीन आफ़रीं की और क़ैदखाना ही से उनके नाम ख़त लिखा जिस में तहरीर किया :

मैं वही हूँ जिसको मुहम्मद बिन अली (इब्ने हन्फ़ीया) ने बग़र्ज़ मुआवज़ा ख़ूने हुसैन मामूर किया था। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 145)

अगर मैं क़ैद खाना से बाहर आ जाऊं तो तुम्हारे दुश्मनों पर ख़ुदा के हुक्म से शर्क़ व ग़र्ब में तल्वार सूंत लूंगा और उनको फना के घाट उतार दूँगा। (क़रने अव्वल का मुदब्बिर : स० 28)

ख़त पढ़ कर उन लोगों में मुसर्रत की लहर दौड़ गई, इंतिक़ामे हुसैन का हज़ीमत (हार) ख़ूरदा जज़्बा ऊद (वापस) कर आया, सब ने मुख़्तार की बैअ़त कर ली और पैग़ाम भेजा कि अगर हुक्म हो तो हम आपको क़ैद से आज़ाद करा लें, मुख़्तार ने माल अन्देशी व मस्लेहत के ख़िलाफ़ समझ कर उन्हें इस बात से रोक दिया। क्योंकि वह पहले ही अपनी रिहाई के सिफारिश के लिए अब्दुल्लाह इब्ने उमर को लिख चुका था (जिनके बाद मैं उसकी बहन सफ़ीया बिन्ते अबू उबैद सक़्फ़ी थीं) उसे इब्ने ज़ुबैर के परवान-ए-रिहाई का इंतिज़ार था। वह कूफ़ा में किसी क़िस्म की ख़ूंरेज़ी को अपनी तहरीक के हक़ में सख़्त मुज़िर समझा जाता था। अब्दुल्लाह बिन उमर की सिफ़ारिश पर गवर्नर कूफ़ा ने उसे इस शर्त के साथ रिहा किया कि वह आइंदा बग़ावत न करेगा और न आपके ख़िलाफ़ खुरूज करेगा। शराइते शिकनी की सूरत में एक हज़ार ऊंटनियों की कुरबानी हरमे काबा में पेश करनी होगी और उसके तमाम मम्लूक आज़ाद हो जाएंगे। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 145)

तहरीके मुख़्तार कामयाबी की राह पर : अह्ले बैत की मुहब्बत में एक आंख की कुरबानी और दो बार क़ैद व बन्द की आज़माइशों ने हामियाने अह्ले बैत के दिलों में मुख़्तार सक़्फ़ी की सदाक़त और उसकी ग़ैर मुतज़लज़ल शख़्सियत का गहरा नक़्श सब्त कर दिया और उन्होंने हक़ व सदाक़त का दाई, हुब्बे अह्ले बैत का अमीन, ख़ूने हुसैन का सादिक़ व बेलौस मुन्तक़िम समझ लिया। तो रिहाई के बाद मुख़्तार का घर हामियाने हुसैन का मरकज़े अक़ीदत बन गया। अब वह तन्हा शीआ़ने अली और हामियाने अह्ले बैत का मुक़्तदिर लीडर बन चुका था। दर परदा उस ने अस्करी तंज़ीम का आग़ाज़ कर दिया। उसकी दावत के तीन बुनियादी मक़ासिद थे जो उसकी सियासी व हरबी तहरीक का क़वी महवर थे :

(1) किताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह।

(2) अह्ले बैत की हिमायत और उनके क़त्ले नाहक़ का इंतिक़ाम।

(3) मवाली और गुलामों की हिमायत और कम्ज़ोरों के साथ हुस्ने सुलूक।

मुख़्तार ने क़ैद से रिहाई के बाद अह्ले इक़्तिदार की अह्दे शिक्नी शुरू कर दी और उस ने अपने हवा ख़्वाहों से कहा :

यह लोग किस क़द्र अहमक़ हैं समझते हैं कि मैं हलफ़ को पूरा करूंगा हालांकि मैं अपने हक़ में जो बेहतर देखूंगा वही करूंगा। मेरे लिए क़सम का कफ़्फ़ारा आसान है। मेरा खुरूज करना खुरूज न करने से बेहतर है।

अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करूंगा। हज़ार जानवरों का ज़ब्ह करना सहल है। गुलामों की आज़ादी का मुआमला तो ख़ुद ही मेरा इरादा है कि मक़ासिद की तक्मील के बाद किसी को अपना गुलाम न बनाऊं।

(तबरी जिल्द व स० 4 वाक़ेआत 66 हिजरी)

इब्राहीम बिन उश्तर मुख़्तार के साथ : हामियाने अह्ले बैत (मवाली गुलाम) और क़बाइले अज्म जिन्हें इस्लाम के बावजूद अरबी अस्बियत ने इस्लामी तालीमी मसावात के बावस्फ़ मसावी हुकूक़ व मरातिब से महरूम रखा था, पूरे जोश व ख़रोश के साथ मुख़्तार के गर्द जमा हो गये। कूफ़ा का सरकरदा हामि-ए-अह्ले बैत इब्रहीम बिन उश्तर जो शराफ़त, शुजाअत और सियासी शुऊर व तदबीर के लिहाज़ से मुम्ताज़ था, वह ख़ुद शीआने अली की सर गरोही का मुतमन्नी था, अभी तक मुख़्तार का हामी न हो सका था। चुनांचे उस ने बग़ावत व ख़ुरूज में इब्राहीम की हिमायत व इश्तेराक को नागुज़ीर ख़्याल करते हुए शुरफ़ा-ए-कूफ़ा का एक वफ़्द उसके पास भेजा, वफ़्द के नुमाइन्दे यज़ीद बिन अनस ने इब्राहीम को मुख़्तार की तहरीक में शामिल होने की दावत देते हुए कहा :

"हम आप को ऐसी बात की दावत देते हैं जिस पर शीआने अली ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया है और वह यह है कि किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अमल किया जाए, अह्ले बैत का बदला लिया जाए और कम्ज़ोरों की हिफ़ाज़त की जाए।"

(तबरी : जिल्द 4, वाक़ेआत 166 हिजरी)

अहमर बिन शमीत ने इब्राहीम बिन उश्तर से ख़िताब करते हुए उसके वालिद की शराफ़त व सरदारी का वास्ता दिया और दावते मुख़्तार में शिरकत के नतीजे में सरदारी का लालच दिया। इब्राहीम ने तअम्मुल के बाद कहा मैं इस तहरीक में इसी शर्त के साथ शरीक हो सकता हूँ कि मुझे अमीरे तहरीक बना दिया जाए? लोगों ने जवाब दिया। आप इस अम्र के अह्ल ज़रूर हैं मगर मुहम्मद बिन अली (इब्ने हन्फ़ीया) ने मुख़्तार को अपना नाइब बनाया है और उसकी इताअत हम पर लाज़िम है। वफ़्द वापस आ गया। तीन रोज़ बाद मुख़्तार सक़्फ़ी चन्द सरदारों के साथ इब्राहीम के मकान पर आया। मुख़्तार ने इब्राहीम से कहा, मुहम्मद बिन हन्फ़ीया का ख़त आपके नाम आया है जिस में उन्होंने आपको हमारी मदद का हुक्म दिया है। अगर आप हमारी मदद करेंगे तो आपके लिए बेहतरी है। अदमे

तआवुन की सूरत में यह ख़त आपके ख़िलाफ़े हुज्जत है।

मुख़्तार ने इब्ने हन्फ़ीया की जानिब से इब्राहीम के नाम एक जअ़्ली ख़त पहले ही तैयार कर लिया था उसे इब्राहीम के हवाला कर दिया, इब्राहीम ने ख़त पढ़ा जिस का ख़ुलासा यह था :

मैंने अपने वज़ीर मोअ़्तमद अलैह को तुम्हारे पास भेजा है और उन्हें हुक्म दिया है कि वह मेरे दुश्मन से लड़ें और मेरे अह्ले बैत का इंतक़ाम लें। तुम अपने हामियों के साथ उनकी मदद करो यह तुम्हारा मुझ पर एहसान होगा। तुम हरबी लश्कर के अमीर बनाए जाओगे जिन शहरों पर तुम क़ब्ज़ा करोगे। इंकार की सूरत में नाक़ाबिल तलाफ़ी नुक़्सान से दो चार होगे। (ऐज़न)

कूफ़ा पर क़ब्ज़ा : उसी दौरान अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने अब्दुल्लाह बिन यज़ीद और इब्राहीम बिन मुहम्मद को मअ़्ज़ूल करके अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़् को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर कर दिया। 25 रमज़ान 65 हिजरी को कूफ़ा पहुँच कर उन्होंने अवाम से ख़िताब किया। लोगों ने शोर व हंगामा बरपा किया। इब्ने मुतीअ़् ने हिल्म का सुबूत दिया और रिहाइशगाह पर चले आए। इस वाक़या ने मुख़्तार के हवा ख़्वाहों के हौसले बुलन्द कर दिए। उन्होंने ख़ुरूज की तैयारियाँ तेज़ कर दीं और छेः माह की क़लील मुद्दत में अपना लश्कर मुनज़्ज़म कर लिया। इब्ने मुतीअ़् को भी हालात का इल्म हुआ और उन्होंने कूफ़ा की नाका बन्दी कर दी थी ताकि बैरूनी हम्लों का बरवक़्त तदारुक किया जा सके। 14 रबीउल-अव्वल 66 हिजरी को शब में इब्राहीम बिन उश्तुर अपने हम्राहियों को लेकर मुख़्तार की तरफ़ रवाना हुआ। इब्राहीम शारेअ़् आम से बच कर तंग व तारीक गलियों से गुज़र रहा था, इत्तिफ़ाक़न कोतवाल शहर अयास बिन मज़ारिब से मुड भेड़ हो गई। इब्राहीम ने अयास को नेज़ा की ज़र्ब कारी से हलाक कर दिया। उसके हम्राही भाग कर इब्ने मुतीअ़् के पास आए और वाक़या की इत्तिला दी। इब्ने मुतीअ़् ने मुनासिब हिफ़ाज़ती कार्रवाइयाँ शुरू कर दीं।

इब्राहीम मुख़्तार के पास पहुँचा। वाक़या से बाख़बर किया, मुख़्तार ने उसी वक़्त अपने हामियों में आमाद-ए-जंग हो जाने की मुनादी करा दी। इब्राहीम उसी शब अपनी क़ौम के पास आया और एक मुसल्लह फौजी दस्ता को वारिदे कूफ़ा होना चाहा। इब्ने मुतीअ़् के मुक़र्ररह फौजी दस्तों से मुक़ाबला करता हुआ वह जब मुख़्तार के मकान की जानिब बढ़ा तो वहाँ

शिब्त बिन रिब्ई और हिजाज़ बिन अल-ज़ुबैर बरसरे पैकार थे। इब्राहीम ने शिब्त की पुश्त पर हमला करके उसे पस्पा कर दिया। फिर अह्ले मुतीअ् ने इब्ने शिब्ते रिब्ई को तीन हज़ार और रुबुअ् बिन अयास को चार हज़ार सवारों के साथ रवाना किया। मुख़्तार ने इब्राहीम को बारा सौ का दस्ता देकर राशिदीन बिन अयास की जानिब और नईम बिन हबीरा को नौ सौ आदमियों के साथ शिब्त बिन रिब्ई की तरफ़ भेजा। नमाज़े फज्र के बाद लड़ाई शुरू हुई। नईम मअ्रक-ए-जंग में हलाक हुआ और शिब्त बिन रिब्ई ने फतह पाई और इब्राहीम ने राशिद को क़त्ल करके उसके साथियों को हज़ीमत दी तो इब्ने मुतीअ् ने दूसरा लश्कर भेजा। इब्राहीम ने उसे भी शिकस्त दे दी और शिब्त बिन रिब्ई पर जिस ने मुख़्तार का मुहासरा कर रखा था, हमला कर दिया। इब्राहीम के मुक़ाबला की ताब न ला कर शिब्त मैदाने जंग से फ़रार हो कर इब्ने मुतीअ् के पास आया। इब्ने मुतीअ् ने पैहम पस्पाई देख कर हौसला हार दिया। उस ने क़ूफ़ा पर क़ब्ज़ा करना चाहा। इस नाज़ुक सूरते हाल को देख कर अमर बिन हज्जाज ज़ुबैदी ने इब्ने मुतीअ् से कहा :

तुम ख़ुद मैदाने जंग चलो! हुकूमत और बग़ावत की क़ुव्वतों में बहुत बड़ा फ़र्क़ होता है हिम्मत न हारो सब लोग तुम्हारे साथ हैं।

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 157)

हौसला हारने के बावजूद अमर बिन हुज्जाज के मशवरा से इब्ने मुतीअ् को क़ुव्वत हासिल हुई। वह महल से बाहर आया और एक वल्वला अंगेज़ तक़रीर की :

तरजमा : हाज़िरीन! बड़े तअज्जुब की बात है कि आप लोग एक ऐसी जमाअत पर क़ाबू न पा सके जो तादाद में आप से बहुत कम है, जिसका अक़ीदा और मसलक फ़ासिद है जो ख़ुद ही गुम्राह है दूसरों को भी गुम्राह करती है। कमरे हिम्मत बांध कर उस से जंग के लिए निकलो! अपने घर बार को उसकी दस्त बुर्द से बचाओ! अपने शहर और खराज की उस से हिफ़ाज़त करो! अगर आपने ऐसा न किया तो ख़ुदा की क़सम वह ऐसे लोगों को आपके खराज में शरीक कर लेंगे जो उसके मुस्तहिक़ नहीं हैं। मुझे मालूम हुआ है कि बाग़ियों में आपके पाँच सौ आज़ाद करदा ग़ुलाम हैं और उनका लीडर अभी एक आज़ाद करदा ग़ुलाम भी है। ख़ूब याद रखो! अगर उनकी तादाद और क़ुव्वत बढ़ गई तो आपकी इज़्ज़त व इक़्तिदारे दीन सब खाक में मिल जाएंगे।

इस तक़रीर ने लोगों की ग़ैरत को चौंका दिया। गवर्नर ने कई सरदारों की सरकरदगी में फौज के मुख़्तलिफ़ दस्ते मुख़्तार और उसके हम्दर्दों से जंग के लिए रवाना किए, इब्राहीम बिन उश्तुर की बहादुरी, मुख़्तार की हर्बी व जंगी सलाहियत के मुक़ाबला में कूफ़ा की मुहाफ़िज़ फौजें मैदाने जंग में देर तक न ठहर सकीं, यके बाद दीगरे तमाम फ़ौजी दस्ते शिकस्त खा कर राहे फरार अख़्तियार करने लगे, इब्ने मुतीअ़ ने क़स्रे इमारत में पनाह ली, मुख़्तार ने क़स्रे इमारत का मुहासरा कर लिया। अब पूरा शहर कूफ़ा मुख़्तार के ज़ेरे नगीं था। जब तीन शबाना रोज़ मुहासरा क़ाइम रहा तो शिब्त बिन रिब्ई और शुरफ़ाए कूफ़ा के मश्वरा से इब्ने मुतीअ़ क़स्रे इमारत छोड़ कर अबू मूसा के मकान में रूपोश हो गया। मुख़्तार ने कस्र में मौजूद तमाम लोगों को अमान दे दी दरवाज़ा खोल दिया गया। मुख़्तार क़स्रे इमारत में दाख़िल हुआ। इस तरह इराक़ की दारुल-हुकूमत से अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की हुकूमत का ख़ात्मा हो गया।

बैअ़त : मुख़्तार ने रात क़स्रे इमारत में बसर की। सुबह के वक़्त मस्जिदे आज़म और क़स्रे इमारत के इर्द गिर्द ख़ल्क़े ख़ुदा का हुजूम हो गया। मुख़्तार ने मस्जिद में आ कर मज्मए आम से इल्हामी उस्लूब में ख़िताब करते हुए कहा :

तरजमा : उस ख़ुदा का सिपास गुज़ार हूँ जिसने अपने दस्त से कामयाबी का वादा फरमाया और अपने दुश्मन को नामुरादी की धमकी दी, यह उसका एक ऐसा अटल फैसला है जो हमेशा नाफ़िज़ रहेगा। लोगो! हमारे लिए एक परचम बुलन्द किया गया और हमारे लिए एक मंज़िल मुक़र्रर की गई। परचम के बारे में हम से कहा गया इस को बुलन्द रखो और सर नगूं न होने दो। मक़सद के बारे में हम से कहा गया कि उसकी तरफ़ बढ़ते चले जाओ लेकिन इससे तजावुज़ न करो। हम ने दाई की दावत को तवज्जोह से सुना और दिल से क़ुबूल किया। अब देखिए कितने मर्द और औरतें जंग में काम आने वालों को ख़बरे सेहत दे रही हैं। ग़ारत हों सरकश जो हक़ से रूगरदानी करते हैं और सच्चों को झूठा बनाते हैं। हाज़िरीन! हमारी तहरीक में शामिल हो जाइए और हमारी बैअ़त कीजिए जो आपकी दुनियवी व उख़रवी सर ख़ुरूई की ज़ामिन है। उस ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ जिस ने आसमान को बेरोक छत बनाया और ज़मीन को वसीअ़ गुज़रगाह! आप अली इब्ने अबी तालिब और उनके लड़कों के बाद

मेरी बैअ़त से ज़्यादा दुरुस्त और दुनियवी व उख़्रवी कामयाबी को मुतज़म्मिन (मिली हुई) कभी कोई बैअ़त नहीं करेंगे।

तक़रीर के बाद मुख़्तार ने अवाम व ख़्वास से किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह, अह्ले बैत का इंतिक़ाम, ज़ुबैरियों से जंग, कम्ज़ोरों की हिमायत, लड़ने वालों से जंग और सुलह करने वालों से सुलह, बैअ़त की सच्ची पाबन्दी पर बैअ़त ली।

मुख़्तार सक़्फ़ी की देरीना ख़्वाहिशे इक़्तिदार **65** साल की उम्र में पूरी हुई। क़स्रे इमारत और मिंबर उसके नसीब में आए जहाँ से उस ने अपनी जहांगीरी व जहाँबानी के मन्सूबों को जाम-ए-अमल पहनाना शुरू किया। मुख़्तलिफ़ बिलाद व इम्सार पर अपना परचमे इक़्तिदार नसब करने की ग़रज़ से लाइक़, आज़मूदा कार सालारों की क़्यादत में फौजें रवाना कीं।

❖ आरमीनिया	अब्दुल्लाह बिन हर्स बिन उश्तुर
❖ आज़र बाईजान	मुहम्मद बिन उमैर अत्तारद
❖ मूसल	अब्दुर्रहमान बिन सईद बिन क़ैस
❖ मदाइन	इस्हाक़ बिन मस्ऊ
❖ हल्वान	सईद बिन हुज़ैफ़ा बिन अलीमान

बहुत जल्द मुख़्तार ने अपने सियासी तदब्बुर और अस्करी कुव्वत के बल पर हुकूमत को काफी वसीअ़् कर लिया। उसकी हुकूमत के मातहत इलाक़े आरमीनिया, आज़र बाई जान, मूसल, मदाइन, जोख़ी, बहकुबाज़ आला, बहकुबाज़े औसत, हल्वान, अस्फ़हान, कुम (**रय**) पर मुश्तमिल थे जहाँ उसके मुक़र्ररह हुक्काम व उम्माल हुकूमत के इंतिज़ाम व इंसिराम में मस्रूफ़ थे और वह देख रहा था कि इस्लामी दुनिया का एक बहुत बड़ा हिस्सा उसके पाए इक़्बाल पर सर झुका रहा था।

मुख़्तार सक़्फ़ी ने सर-बर-आवुरदा सल्तनत होने के बाद अपनी हुकूमत के दाइरे को उस्अत देनी शुरू की। उसकी दावत की बुनियादी दफ़ा "ख़ूने हुसैन का इंतिक़ाम" बेतवज्जोही का हदफ बनी रही जब कि मअ़्रक-ए-करबला में शरीक होने वाले तक़रीबन तमाम मुज्रेमीने कूफ़ा ही में मौजूद थे जिनके दामन हुसैन या हामियाने हुसैन के ख़ून नाहक़ से दाग़दार थे। उन में बाज़ अकाबिरे कूफ़ा मुख़्तार के हम नशीं, हाशिया बरदार बन गये। शायद मुख़्तार इंतिक़ामी कार्रवाई के रद्दे अमल में होने वाले शदीद बुहरान को महसूस कर रहा था। जिसके नतीजा में पैदा होने वाला इंक़लाब उसके नौ

मौलूद इक़्तिदार की ईंट से ईंट बजा सकता था।

मुख़्तार के ख़िलाफ़ बग़ावत : चुनांचे उस ने बाज़ हामियाने अह्ले बैत की याद दहानी के बावजूद इस तरफ़ तवज्जोह न की बल्कि तौसीअ् व इस्तेहकाम हुकूमत की पैहम जद्दो जहद करता रहा। दूसरी तरफ़ कम्ज़ोर तब्क़ा (मवाली ग़ुलाम) के साथ मुख़्तार के हुस्ने सुलूक बल्कि अरब अशराफ़ के साथ मसावात और बाज़ मवाक़े पर तरजीही सुलूक ने कूफ़ा के अकाबिर को मुख़्तार का मुख़ालिफ़ बना दिया। मुख़्तार ने मवाली और ग़ुलाम को ख़ास फौजी तर्बियत देकर बहुत बड़ा लश्कर तैयार कर लिया था जिसे ख़ज़ान-ए-सरकारी से तन्ख़्वाह मिलती थी। अब तक ख़ज़ान-ए-सरकारी अरबों का मख़्सूस हिस्सा समझा जाता था मगर मुख़्तार की फ़ैय्याज़ी ने ग़ैर अरब मुसलमानों को माला माल कर दिया। इस तरह अरबों के मुक़ाबले में ग़ुलाम और मवाली, सियासी, इक़्तिसादी लिहाज़ से ऊपर उठने लगे और वह दिल व जान से मुख़्तार के मोतक़िद और अदना हुक्म पर सरफरोशी के लिए हर वक़्त तैयार रहने लगे। मवाली के साथ मुख़्तार का हुस्ने सुलूक अरबों के लिए नासूर बन गया। जिसकी दाइमी टेस से वह मुज़्तरिब रहने लगे। अरबों की मुश्तरेका कसक ने उन्हें मुख़्तार की मुख़ालिफ़त पर मुत्तफ़िक़ कर दिया। अरबों के लिए मुख़्तार का एहानत आमेज़ सुलूक नाक़ाबिले बर्दाश्त हो गया। उन्होंने उसके ख़िलाफ़ ग़ुस्सा व नफ़रत का इज़्हार किया जिसके जवाब में मुख़्तार ने कहा, ख़ुदा तुम को ग़ारत करे! मैंने तुमको एज़ाज़ बख़्शा, तुमने ग़ुरूर किया, तुमको वाली बनाया। तुमने खराज की रक़म घटा दी, अज्मी तुम से ज़्यादा मुतीअ् व मुनक़्क़ाद (ताबेदार) और मेर चश्म व आबरू के पाबन्द हैं।

यह जवाब सुन कर अशराफ़े अरब ने कहा, यह कज़्ज़ाब है और बनी हाशिम की हिमायत के पर्दा में अपनी दुनिया बनाना चाहता है। सब उसके ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमदा हो गये। उन अरब सरदारों में वह लोग भी शरीक थे जिन्होंने मअ्रक-ए-करबला में हुसैनी क़ाफ़िला की मुख़ालिफ़त में हिस्सा लिया था। यह सब के सब मुख़्तार के मुख़ालिफ़ बन गये और वक़्त का इंतिज़ार करने लगे।

मरवानियों से मुख़्तार के मअ्रके : मरवान बिन हकम को जब शाम में इक़्तिदार हासिल हो गया तो उसने इब्ने ज़ुबैर के ख़िलाफ़ हिजाज़ की जानिब जैश बिन दल्जा कैनी की क़्यादत में और दूसरी फौज अब्दुल्लाह

बिन ज़्याद की क़्यादत में इराक़ की जानिब भेजी। उबैदुल्लाह बिन ज़्याद ने कूफ़ा के तव्वाबीन को शिकस्ते फाश देने के बाद ज़ुफर बिन हारिस का क़रक़ीसिया में मुहासरा कर लिया। (जिसने इब्ने ज़ुबैर की बैअ़त कुबूल कर ली थी) इब्ने ज़्याद मुसलसल एक साल तक क़रक़ीसिया में रहा मगर उसे ज़ुफर पर फतह नसीब न हो सकी। इसी दौरान अब्दुल-मलिक बिन मरवान शाम के तख़्त पर बैठा। उस ने इराक़ी महाज़ की जानिब इब्ने ज़्याद को पेशरफ़्त का हुक्म दिया। इब्ने ज़्याद क़रक़ीसिया से मूसल पहुँचा। मुख़्तार का गवर्नर मूसल अब्दुर्रहमान बिन सईद मूसल से तिक्रित आया और मुख़्तार को इब्ने ज़्याद के अज़ाइम से बाख़बर किया। मुख़्तार ने यज़ीद बिन अनस की सालारी में तीन हज़ार फौज तिक्रित के लिए रवाना की। इब्ने ज़्याद की जानिब से रबीआ़ बिन मुख़्तार ग़नवी मुक़ाबला पर आया। मक़ामे बाबुल में सफ़ आराई हुई। इस जंग में मुख़्तार की फौज ने शिकस्त खाई और मग़रूर सिपाही कूफ़ा पहुँचे। मुख़्तार ने इब्राहीम बिन उश्तर को सात हज़ार लश्कर का अमीर बना कर इब्ने ज़्याद से मुक़ाबला के लिए रवाना किया। बाबुल की शिकस्त और इब्राहीम बिन उश्तुर की कूफ़ा से रवानगी के बाद अरब उमरा के अन्दर हौसला बग़ावत कुव्वत पा गया। वह लोग शिब्त बिन रिब्ई के मकान पर जमा हुए और मुख़्तार की शिकायत का एआदा किया। शिब्त अकाबिरे अरब की शिकायत लेकर मुख़्तार के पास पहुँचा। मुख़्तार ने कहा मैं उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ सारे काम करूंगा। माले ग़नीमत में हिस्सा दूँगा और उनके ग़ुलामों को छोडूंगा। बशर्तेकि शुरफ़ाए कूफ़ा मेरे साथ हो कर बनू उमैया और इब्ने ज़ुबैर से लड़ें। शुरफ़ाए अरब ने मुख़्तार की शर्त कुबूल न की और पूरी शिद्दत के साथ बग़ावत की सरगर्मियाँ तेज़ कर दीं। उनकी सरबराही व क़्यादत में शिब्त बिन रिब्ई मुहम्मद बिन अश्अस, अब्दुर्रहमान बिन सअद बिन क़ैस, शिम्र बिन ज़िल-जौशन, कअ़ब बिन अबी कअ़ब नख़ई, अब्दुर्रहमान मुहनिक़ अज़्दी थे। बाग़ियों का अंदाज़ा था कि दारुल-हुकूमत कूफ़ा मुख़्तार के सर-बर-आवुरदा सिपह सालार इब्ने उश्तुर और दीगर जंगी माहिरीन से ख़ाली है। फौज का मामूली हिस्सा बाक़ी रह गया है, उस वक़्त कूफ़ा पर क़ब्ज़ा हासिल कर लेना बहुत आसान है। ख़ुद मुख़्तार भी पेश आने वाली नाज़ुक पोज़ीशन को महसूस कर रहा था उस ने बाग़ियों को टालने के लिए उन से नर्म और मीठी-मीठी बातें भी कीं मगर वह बाग़ियों को बेख़ व बन से उखाड़ कर ख़ूने

हुसैन का इंतक़ाम लेना ज़रूरी समझता था। चुनांचे कूफ़ा में दुहुल बग़ावत बजते ही उस ने इब्राहीम बिन उश्तुर को बिला ताख़ीर कूफ़ा की मुराजअत (वापसी) का पैग़ाम भेजा।

कूफ़ा में बग़ावत : बाग़ी क़बाइल अपने सरदारों की क़्यादत में मुख़्तार के ख़िलाफ़े जंग के लिए जमा होने लगे। उन में सर-बर-आवुरदा अब्दुर्रहमान बिन सईद बिन क़ैस हम्दानी, हुर्र बिन क़ैस हम्दानी, मुहम्मद बिन अश्अस, रिफ़ाआ बिन शद्दाद, कअब बिन अबी कअ़ब ख़स्अमी, बशीर बिन जरीर बिन अब्दुल्लाह, इस्हाक़ बिन मुहम्मद, अब्दुर्रहमान बिन मुख़्निफ़, शिम्र ज़िल-जौशन, शिब्त बिन रदीम, उमर बिन हुज्जाज ज़ुबैरी थे। जिस की पुरजोश क़्यादत और वलवला अंगेज़ मुख़्तार मुख़ालिफ़ तरग़ीबात ने बाग़ियों को तूफ़ान बला ख़ेज़ बना दिया था। बाग़ियों ने कूफ़ा की नाका बन्दी कर दी, उनके फौजी दस्तों ने कमान्दारों की क़्यादत में मोर्चा बन्दी कर ली, मुख़्तार ने दिफ़ाई जंग के लिए अपने फौजी दस्ते तैयार कर लिए।

उस ने हम्दानियों के मुक़ाबला के लिए अहमर बिन शमीत बिजली और अब्दुर्रहमान बिन कामिल शाज़ी को फौजें देकर रवाना किया। उधर अब्दुर्रहमान बिन क़ैस हम्दानी, इस्हाक़ बिन अश्अस और ज़ुहर बिन क़ैस ने उनके मुक़ाबला के लिए महाज़ क़ाइम कर लिया। बड़ी ख़ूंरेज़ जंग हुई। मुख़्तार की फौजें हज़ीमत खा गईं। इस शिकस्त ने मुख़्तार को सरासीमा कर दिया मगर उसने हौसला क़ाइम रखते हुए अपनी कुमुक हज़ीमत याफ़्ता फौज को भेज दी और उन्होंने बाग़ियों को मुख़्तलिफ़ महाज़ों पर शिकस्त दी।

इब्राहीम बिन उश्तुर अपनी फौज के साथ मुज़रियों पर हमला आवर हुआ जिसकी क़्यादत शिब्त बिन रिब्ई कर रहा था। इब्ने उश्तुर की हर्बी कुव्वत और जंगी हिक्मते अमली के मुक़ाबला में मुज़री साबित क़दम न रह सके और शिकस्त खा गये। यह फतह मुख़्तार के लिए फाले नेक साबित हुई। अब हर महाज़ पर तरफ़ैन में कश्त व ख़ून का बाज़ार ख़ूब गर्म हो गया। कूफ़ा और अतराफ़े कूफ़ा की ज़मीन मक़्तूलीन व मज्रूहीन के ख़ून से लालाज़ार बन गई।

हम्दानियों ने बड़ी जुरअत व बहादुरी का मुज़ाहरा किया। रिफ़ाआ बिन शद्दाद, अब्दुल्लाह बिन सईद बिन क़ैस, फ़ुरात बिन ज़ुहर, उमर बिन मुहनिफ़ जब जंग में काम आए तो उनके हौसले पस्त हो गये और वह फरार की राह अख़्तियार करने लगे। दारी ऐनैन से पाँच सौ अफ़राद असीर

करके लाए गये। बाग़ियों ने बसरा, मदाइन और दीगर बिलाद व क़रियात में रूपोशी अख़्तियार कर ली।

क़ातेलीने हुसैन का अंजाम : अब मुख़्तार सक़्फ़ी ने अपनी दावत की बुनियादी दफ़ा "इंतक़ाम ख़ूने हुसैन" पर अमल का आग़ाज़ किया, बाग़ी फौज के पाँच सौ क़ैदियों में से ढाई सौ बद बख़्त अफ़राद को जिन्होंने मअ्रक-ए-करबला में शिर्कत की थी बेदरेग़ क़त्ल करा दिया।

जब कूफ़ा की फ़िज़ा से जंग व बग़ावत के बादल छट गये तो मुख़्तार सक़्फ़ी ने ऐलान कर दिया कि हर वह शख़्स जो अपने आपको जंग से रोक लेगा, मामून है। सिवाए उसके जो शरीक ख़ूंरेज़ि-ए-अह्ले बैत हुआ है।

(इब्ने ख़ल्दून : जिल्द 5, स० 164)

"हमारा यह मस्लक नहीं है कि हम क़ातेलीने हुसैन को दुनिया में ज़िन्दा चलता फिरता रहने दें अगर मैं यह करूं तो बखुदा मैं अह्ले बैते रसूल का बड़ा हामी व मददगार साबिर न हूँगा और फिर मैं वाक़ई कज़्ज़ाब कहलाने का मुस्तहिक़ हूँ जैसा कि यह आज मुझे कहते हैं, क़ातेलीने हुसैन के ख़िलाफ़ अल्लाह से एआनत तलब करता हूँ। अल्लाह का शुक्र है कि उसने मुझे इंतक़ाम लेने का जरिया बनाया ताकि उनके ख़ून का बदला लिया जाए, उनके हक़ को क़ाइम किया जाए और अल्लाह के लिए यह बात सज़ावार है कि उनके क़ातिलों को क़त्ल करे और उन लोगों को ज़लील कर दे जो अह्ले बैते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक़ूक़ को समझते नहीं। मुझे इन सब के नाम बताओ फिर मेरे हुक्म से उनको तलाश करके सबको फना के घाट उतार दो।"

अमर बिन हुज्जाज जुबैदी : मुख़्तार के इस एलान से अमर बिन हुज्जाज जुबैदी जो क़त्ले हुसैन में शरीक था ख़ामोशी के साथ निकल गया। हुसैन के ख़ून से खेलने वाले सियाह बख़्त का अंजाम क्या हुआ यह किसी को मालूम नहीं। हाँ इस एलान के बाद किसी ने उस मन्हूस की सूरत न देखी ज़मीन उसे निगल गई या आसमान उसे खा गया कुछ पता नहीं।

शिम्र का अंजाम : शिकस्त के बाद शिम्र ने राहे फरार अख़्तियार कर ली। मुख़्तार के एक ग़ुलाम, दरबी ने तआक़ुब किया मगर शिम्र की तल्वार ने उसे हलाक कर डाला और वह कुल्बानिया में मुक़ीम हो गया। बसरा के गवर्नर मुस्अब बिन ज़ुबैर से अमान तलब की। मुख़्तार का एक फौजी सरदार अबू उमरा बसरियों की इंसिदाद (रोक-थाम) की ग़रज़ से

कुल्बानिया के क़रीब ही में मौजूद था। जब उसे शिम्र का इल्म हुआ तो अपनी फौज लेकर शिम्र की जानिब बढ़ा, रात के वक़्त शिम्र के हम्राहियों पर हमला किया गया, ख़ूंरेज़ जंग हुई। **780** यमनी ख़ाके सहरा का पैवन्द बना दिए गये, मल्ऊन शिम्र क़त्ल कर दिया गया उसकी लाश कुत्तों और मुरदार ख़ोर ज़ानवरों के आगे डाल दी गई। उसक मब्रूस जिस्म वहशी दरिन्दों की इनायतों का मरकज़ बन गया।

ज़रा ठहर कर माज़ी के वाक़ेआत पर नज़र डालिए। अमर बिन सअद की तज्वीज़ें इब्ने ज़्याद के पास पहुँचीं। (1) हुसैन को उनके मुस्तक़िर की जानिब लौटा दिया जाए। (2) किसी सरहद की जानिब भेज दिया जाए। (3) यज़ीद बिन मुआविया के पास रवाना कर दिया जाए। तो इब्ने ज़्याद ने इब्ने सअद की राय से इत्तिफ़ाक़ कर लिया था। ऐसी सूरत में करबला का ख़ोंचकां मअ्रका वजूद में न आता मगर उस मौक़ा पर शिम्र ज़िल जौशन ने इब्ने ज़्याद से कहा था :

क्या तुम इस दरख़्वास्त को कुबूल कर लोगे? हुसैन तुम्हारे मुल्क में आ गया है, तुम्हारे क़ब्ज़ा में है वल्लाह! वह अगर यहाँ से कूच कर गया और उसने तुम्हारे हाथ पर बैअ्त न की तो वह तुम से ज़्यादा कुव्वत व शौकत वाला हो जाएगा और तुम ज़ईफ़ व नातवाँ हो जाओगे, तुम उसे अपने हुक्म के मानने पर मज्बूर करो। उदूले हुक्मी (इंकार) पर तुम्हें उनको सज़ा देने का हक़ हासिल है। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **94**)

इब्ने ज़्याद ने शिम्र ज़िल-जौशन के बातिल मशवरा पर अमल करके इब्ने सअद को फिल-फौर जंग का हुक्म सादिर किया था।

हज़रत हुसैन जब नरग़-ए-आंदा में ज़ख़्मों से चूर बेयार व मददगार नातवाँ खड़े थे, मगर यज़ीदी लश्कर का कोई फर्द नवास-ए-रसूल पर आख़िरी वार करने के लिए आमादा न था। शिम्र ने यह तज़बज़ुब देख कर कहा था :

तुम्हारी माएं मर जाएं, तुम लोग एक प्यादा नहीं मार सकते। तुम्हारी मर्दानगी पर तुफ़ है। अगर तुम लोग एक-एक कंकरी फेको तो हुसैन दब कर मर जाएं। यह बिस्मिलाना हरकत कर रहे हैं, बढ़ो अपने नाम व खानदान को रुस्वा न करो। (इब्ने ख़ल्दून : जिल्द **5**, स० **119**)

आज वही शिम्र अल्लाह की ज़र्ब इंतक़ाम से बचने के लिए मुस्अब बिन ज़ुबैर की पनाह तलब कर रहा है, मुख़्तार के लश्कर से छुपने की कोशिश कर रहा है, मगर क़ज़ाए इलाही ने इस सगे दुनिया को ज़रा मोहलत न दी

और वह किश्त-ए-तेगे अजल हो कर कुत्तों का लुक़्मा बन गया।

अब मुख़्तार क़ातेलीने अह्ले बैत के लिए क़हरे इलाही बन चुका था, यज़ीदी ख़ौफ़े जान से छुपते भागते, मगर इंतक़ाम की ज़द से न ज़मीन छुपा सकी न आसमान अमान दे सका। अब्दुल्लाह बिन असीर जेहनी, मालिक बिन नीयर बदी, हमल बिन मालिक महारबी क़ादसीया चले गये थे। अबू नमर मालिक बिन अमर नहदी ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। इशा के वक़्त यह लोग बेड़ियों में जकड़े हुए मुख़्तार के पास लाए गये। मुख़्तार ने उन से कहा :

ऐ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उसकी किताब और आले रसूल के दुश्मन! हुसैन बिन अली कहाँ है? उन्हें मेरे पास लाओ तुमने उस शख़्स को क़त्ल किया जिस पर नमाज़ में दरूद भेजने का तुमको हुक्म दिया गया था।

सफ़्फ़ाकों ने कहा हम उन्हें पसन्द करते थे आप हम पर रहम करें और मआफ़ कर दें। मुख़्तार ने कहा तुमने नबी के नवासे पर एहसान नहीं किया। जिस पर तुम को रहम न आया उसे तुमने तिश्ना लब रखा। मुख़्तार ने मालिक बिन नैय्यर बदी से कहा, ज़ालिम! तुमने सरे हुसैन से टोपी उतारी थी। मुख़्तार ने हुक्म दिया उस शक़ी के हाथ पाँव काट डाले जाएं। हाथ पाँव क़तअ् कर दिए गए। ख़ून का फ़व्वारा छूटता रहा। पूरे जिस्म का ख़ून बह गया और बदी ज़मीन पर तड़प-तड़प कर हलाक हो गया।

बाक़ी दो यज़ीदियों के सर तन से जुदा कर दिए गये। लाशें कुछ देर तक तड़प कर सर्द हो गईं। ज़्याद इब्ने मालिक जन्ई इमरान बिन ख़ालिद, अब्दुल्लाह इब्ने ख़शकारा बिजली, अब्दुल्लाह बिन क़ैस ख़ौलानी जिन्होंने मैदाने करबला में आख़िरत के बजाए दुनिया की तमअ् में सियाह कारनामे अंजाम दिए थे मुख़्तार की ज़द से मामनों में छुपे मगर गिरफ़्तार करके कूफ़ा लाए गये। मुख़्तार ने इन बदबख़्तों से कहा :

ख़ुदा के नेक बन्दों और जन्नत के नौजवानों के सरदार के क़ातिलो! आज ख़ुदा वन्दे तआला तुम से इंतिक़ाम लेगा, यह सूरज तुम्हारे लिए मन्हूस दिन लेकर आ या है।

मुख़्तार ने सरे बाज़ार उनके क़त्ल का हुक्म सादिर कर दिया। हुक्म की तामील की गई। इसी बाज़ारे कूफ़ा में उनके सर काट दिए गये जहाँ सानह-ए-करबला के बाद हुसैन और शहुदाए अह्ले बैत के सर नेज़ों पर बुलन्द करके यज़ीद की झूठी सतवत का सिक्का जमाने की कोशिश की

गई थी। अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अब्दुल्लाह बिन वहब बिन अमर हम्दानी भी गिरफ्तार करके लाए गये जिन्हें मुख़्तार के हुक्म से क़त्ल कर दिया गया और लोग उन की ख़ाक व ख़ून में तड़पती लाशों का तमाशा देखते रहे।

उस्मान बिन ख़ालिद और अबू अस्मा बशर जिन्होंने क़त्ले हुसैन में शिर्कत की थी और अब्दुर्रहमान बिन अक़ील के क़त्ल में शरीक रहे और उनके लिबास और अस्लहों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। बनी दहमान के किसी बाग़ में रूपोश थे। अब्दुल्लाह बिन कामिल एक दस्ता लेकर उनकी जुस्तजू में निकला। दोनों पकड़ लिए गये। बीरे जअद पर पहुँच कर उनकी गर्दनें मार दी गईं। मुख़्तार को मालूम हुआ तो हुक्म दिया कि उन सियाह रू कातेलीने अह्ले बैत की लाशें नज़्रे आतिश कर दी जाएं ताकि उनका क़त्ल लोगों के लिए नक़्शे इबरत बन जाए।

ख़ौली का अंजाम : ख़ौली बिन यज़ीद अल-अज़्हा एक रिवायत के मुताबिक जिस ने सरे इमाम को जस्दे पाक से जुदा करने की जसारत की और अपने ऊपर फलाह व नजात की राह क़तअ् कर ली थी बदतरीन मौत ने उसके घर का रास्ता ढूँढ लिया। मआज़ इब्ने हानी बिन अदी, अबू उमरा ख़ौली का सर उसके अहबाब व अइज़्ज़ा के रू-ब-रू तन से जुदा कर दिया गया। नापाक जिस्म तड़प-तड़प कर ठंडा हो गया।

इब्ने सअद का क़त्ल : अमर बिन सअद बिन अबी वक़ास दुनियावी हिर्स व तमअ् का पुतला, रिश्त-ए-क़राबत और सिलह रहमी पर दुनियावी जाह व मंसब को तरजीह देने वाला सगे दुनिया, हुकूमत की हिर्स में फलाह व नजात आख़िरत और नसीबे जन्नत को ठुकरा देने वाला सियाह बख़्त, ख़ानवाद-ए-रिसालत के मुकद्दस शुहदा की लाशों पर यज़ीद के क़हरेमानी इक़्तिदार का कस्र तामीर करने वाला फाजिर सिपेह सालार, करबला के मैदान में आग़ाज़े जंग से पहले जब हुर्र ने यज़ीदी लश्कर को ख़िताब करते हुए फरमाया :

अह्ले कूफ़ा ख़ुदा तुम्हें हलाक करे तुमने हुसैन को बुलाया और जब वह आए तो उन्हें छोड़ दिया। उनकी हिमायत में लड़ना चाहते थे मगर उनके मुख़ालिफ़ बन गये। उन्हें हिसार में ले लिया है, ख़ुदा की वसीअ् जमीन में किसी तरफ़ जाने नहीं देते......उस वक़्त उनकी हालत क़ैदी जैसी है जो अपनी ज़ात को न फाइदा पहुँचा सकता है और न नुक़्सान से बचा सकता। तुमने उन पर फ़ुरात का पानी बन्द कर दिया है जिसे सब पीते हैं, फ़ुरात के पानी के लिए हुसैन और उसके अह्ल व अयाल तिश्ना लब

तड़पते हैं, तुम ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उनकी औलाद का क्या ख़ूब लिहाज़ किया। (तबरी : जिल्द 4, स० 336)

हुर्र के मुअस्सिर कलिमात फ़िज़ा में गूंज रहे थे, यज़ीदियों के दिल आवाज़े सदाक़त से मबादाद (ऐसा न हो) कहीं मुतअस्सिर न हो जाएं और यह नक़्श-ए-जंग बदल न जाए, जंगी मन्सूबों की कड़ियाँ बिखर न जाएं। अमर बिन सअद ने अपनी कमान से पहला तीर हुसैनी क़ाफ़िला की जानिब फेंकते हुए कहा था, लोगो! गवाह रहना। सबसे पहले मैंने ही तीर चलाया था और इस ख़ूनी मारका का आग़ाज़ हो गया था, जिसकी यूरिश व यल्ग़ार ने बाग़े रिसालत के बर्ग व बार, गुल व गुंचा को खाके सहरा पर रौंद डाला था।

इब्ने सअद ख़ानवद-ए-रिसालत को तबाह व बरबाद करके विलायत "रय" का मुस्तहिक़ बन गया मगर वह अपने दामन से ख़ूने हुसैन के धब्बों को मिटा न सका। दाइमी शक़ावत उसका मुक़द्दर बन गई, इंक़लाबे रोज़गार ने "रय" की विलायत से महरूम कर दिया मगर ख़ुदाए क़हहार व जब्बार के इंतक़ाम से बच न सका। अगरचे उस ने अब्दुल्लाह बिन जअ्दा की सिफ़ारिश पर मुख़्तार से अमान हासिल कर ली थी, मुख़्तार का अमान काम न आ सका। जब क़ज़ा सर पर आ गई इब्ने सअद ने रूपोश होने का इरादा किया। जब मुख़्तार को इल्म हुआ तो उस ने कहा :

इब्ने सअद अब भाग नहीं सकता। उसकी गर्दन में ऐसी ज़ंजीर पड़ी है जिसने उस पर रास्ते बन्द कर दिए हैं। (तबरी : जिल्द 4, वाक़ेआत 066 हिजरी)

अलस्सबाह अबू उमरा बिन सअद के मकान पर पहुँचा और कहा अमीर ने तुझे बुलाया है चलो! अमर उठो अन्देश-ए-जान ने बदहवास कर दिया। पाँव जुब्बा में उलझ गया और ज़मीन पर गिर पड़ा, उसकी ताब व तवानी जाती रही, जिस्म की ताक़त जवाब दी गई, अबू उमरा ने रहम शक़ी को तल्वार के एक ही वार में वासिले जहन्नम कर दिया और सर काट कर मुख़्तार के रू-ब-रू पेश कर दिया।

दारुल-इमारत कूफ़ा में मुख़्तार मौजूद, अबू हफ़स बिन अमर बिन सअद पास बैठा हुआ है, अबू अमर ने इब्ने सअद का सर पेश किया। मुख़्तार ने पूछा जानते हो यह कौन है? हफ़स ने कहा हाँ! अब उसके बाद ज़िन्दगी का लुत्फ़ नहीं रहा, मुख़्तार ने कहा सच है अब ज़िन्दा न रहोगे और फ़ौरन हफ़्स को भी तहेतेग़ करा दिया। दोनों सर सामने रख दिए गये, मुख़्तार ने इब्ने सअद के सर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, यह सर

हुसैन का बदला है और हफ़्स के सर की जानिब देखते हुए, यह अली बिन हुसैन के सर का एवज़ है।

मुख़्तार ने इब्ने सअद और हफ़्स के सरों को मुहम्मद बिन हन्फ़ीया के पास रवाना कर दिया और तहरीर कराया :

तरजमा : ऐ मेहदी ख़ुदा! मुझे आपके दुश्मनों पर बलाए बेदरमां बना कर भेजा है वह या तो मारे गये या गिरफ़्तार हुए या घर बार छोड़ कर भाग गये। उस ख़ुदा का शुक्र है जिसने आपके क़ातिलों को ठिकाने लगाया और आपके मुआविनों को फतह अता की। अमर बिन सअद और उसके लड़के का सर आपकी ख़िदमत में भेजता हूँ। हुसैन और अह्ले बैत के क़त्ल में शिर्कत करने वालों में जो हमारे हाथ में आया हमने उसको मार डाला है और जो बच गये वह भी हमारे क़ब्ज़ा में आ कर रहेंगे, मैं उस वक़्त तक उनका पीछा न छोडूंगा जब तक मुझे पूरा इत्मीनान न हो जाए कि रू-ए-ज़मीन पर उन में से कोई मुतनफ़्फ़िस बाक़ी नहीं रहा। ऐ मेहदी! आप अपने मशवरों से मुझे नवाज़ते रहा कीजिए मैं उनके मुताबिक़ अमल करूंगा।

हकीम बिन तुफ़ैल ताई : हकीम ने मैदाने करबला में अब्बास बिन अली के लिबास और अस्लहों पर क़ब्ज़ा कर लिया था, हज़रत हुसैन को अपने तीर का निशाना बनाया था, मगर जब हालात ने करवट ली तो अपने जुर्म को हल्का करने के लिए कहा करता "मेरा तीर हुसैन के पाजामे में लगा था मगर उस से उन्हें कोई ज़रर न पहुँचा" अब्दुल्लाह बिन कामिल ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और कुशां कुशा मुख़्तार की तरफ़ ले चले। हज़रत अदी बिन हातिम की सिफ़ारिश का अन्देशा था इसलिए इब्ने कामिल ने अस्नाए राह में एक मक़ाम पर हकीम को खड़ा कर दिया और कहा ऐ फाजिर! तूने अब्बास बिन अली के कपड़े उतार कर उन्हें बरहना किया था अब तैयार हो जाओ हम तुम्हें बरहना करेंगे। लोगों ने उसके जिस्म से एक-एक तार उतार लिया।

फिर उसने कहा, तू ने हुसैन बिन अली को अपने तीर का निशाना बनाया था अब तू तीरे अजल का निशाना बनने के लिए आमादा हो जा, हकीम पर सिर्फ़ एक तीर चलाया गया मगर उसके मुख़्तलिफ़ पैकाने जिस्म में पैवस्त हो गये। नंगे खानदान् तय ख़ाक व ख़ून में तड़प कर सर्द हो गया।

ज़ैद बिन रक़ाद : करबला की आग उगलती ज़मीन, फ़िज़ा में चमकती हुई तल्वारें, सनसनाते हुए तीर, नेज़ों का सीनों में पैवस्त होना। एक

हौलनाक मंज़र हामियाने हुसैन जानें कुरबान कर चले। अब बनी हाशिम के नौनिहालों की बारी आई। मुस्लिम बिन अक़ील के फरज़न्द अब्दुल्लाह सफ़े आदा की जानिब बढ़े। एक यज़ीदी ने अपने तीर का निशाना बनाया, अब्दुल्लाह ने तीर से पेशानी बचाने के लिए हाथ पेशानी पर रख लिया, तीर हाथ से बाहर हो कर पेशानी में पैवस्त हो गया, अब्दुल्लाह ने तीर निकालना चाहा मगर तीर ने हाथ को पेशानी में इस तरह पैवस्त कर दिया था कि उन्हें कामयाबी नहीं हुई। इस वक़्त अब्दुल्लाह की जुबान से निकला।

खुदावन्द हमारे दुश्मनों ने जिस तरह हमें हक़ीर व ज़लील किया है तू भी उनको ऐसा ही ज़लील कर और जिस तरह उन्होंने हमें क़त्ल किया है तू भी उन्हें क़त्ल कर।

बदबख़्त यज़ीदी ने दूसरे तीर से अब्दुल्लाह को शहीद कर डाला। यह ज़ालिम ज़ैद बिन रुक़ाद था। मुख़्तार की इंतक़ामी सर गर्मियों की ज़द से न बच सका। इब्ने कामिल एक फौजी रिसाला के साथ ज़ैद के मकान पर आया, लोगों ने मुहासरा कर लिया, उसने मुक़ाबला के लिए तल्वार उठाई, इब्ने कामिल ने एलान करते हुए कहा, इस शक़ी को तल्वार या नेज़ा से हलाक न करो बल्कि तीर और पत्थर बरसा कर उसे मौत के घाट उतारो। हुक्म की तामील की गई। इस कसरत से संगबारी की गई और तीर चलाए गये कि वह ज़ख़्मों की ताब न ला कर गिर पड़ा। देखा गया तो वह अभी ज़िन्दा था। इब्ने कामिल ने उसे ज़िन्दा आग में डाल दिया। कुछ ही लम्हों में ज़ैद बिन रुक़ाद जल कर ख़ाक सियाह बन गया।

क़ातेलीने हुसैन के मकानों का इंहिदाम : मुख़्तार की इंतक़ामी कार्रवाइयों से ख़ाइफ़ व हरासां यज़ीदी लश्कर के सरबरआवुरदा अफ़राद में से सिनान बिन अनस, मुद्दई क़त्ले हुसैन मुहम्मद अश्अश, अब्दुल्लाह अंज़ी, अब्दुल्लाह बिन उरवा हश्अमी बसरा जज़ीरा चले गये और मुख़्तार की दस्तर्स से निकल गये। मुख़तार ने इन आदाए अह्ले बैत के घरों को मुन्हदिम करके दुनिया वालों पर वाज़ेह कर दिया कि हुसैन का घर बरबाद करने वालों के ख़ानवादे किस तरह इंक़लाबे रोज़गार से वीरान होते हैं।

उमर बिन सबीह का अंजाम : बनी सदा का एक फ़र्द उमर जिसने करबला के ख़ून आशामे मअ्रका में हामियाने हुसैन को अपने तीरों का निशाना बनाया और ऑले रसूल को नेज़ों से ज़ख़्मी किया, वह इस बात को फ़ख़िया बयान करता था। रात के वक़्त उसे गिरफ़्तार किया गया,

सुबह को मुख़्तार के दरबारे आम में पाबजोलां पेश किया गया, उमर बिन सबीह ने दरबारे आम में कहा, अगर मेरे पास तल्वार होती तो तुम को मालूम हो जाता कि मैं निकम्मा और बुज़्दिल नहीं हूँ। इब्ने कामिल ने उमर के बारे में मुख़्तार का हुक्म दरयाफ़्त किया। मुख़्तार ने नेज़ों के ज़र्ब शदीद से क़बील-ए-सदा के बदतरीन शख़्स को हलाक कर देने का हुक्म दिया। चारों तरफ़ से नेज़ों की बाढ़ ने इब्ने सबीह को फना के घाट उतार दिया। उसकी शुजाअत का ग़ुर्रा ख़ाक में मिल गया।

अश्तुर की रवानगी और कुर्सी की कहानी : मुख़्तार ने इब्राहीम बिन अश्तर की एआनत और जंगी तजरेबात से फाइदा उठा कर कूफ़ा के ख़तरात अरब बग़ावत का ख़ात्मा करते ही इब्ने अश्तर को उबैदुल्लाह बिन ज़्याद की तरफ़ रवाना किया और अब्दुल-मलिक बिन मरवान के हुदूद व इक़्तिदार में इराक़ को दाख़िल करने की ग़रज़ से अह्ले शाम का एक लश्कर लेकर मूसल पर क़ब्ज़ा कर चुका था। मुख़्तार अपने माया नाज़ सिपेहसालार को मुहिम पर रवाना करने के लिए बिरे अब्दुर्रहमान उम्मुल-हुक्म तक आया जहाँ मुख़्तार के परस्तार एक करामाती कुर्सी को ख़च्चर पर लाद कर जुलूस की शक्ल में सामने आए, ख़च्चर को पुल पर ठहरा दिया गया जो शब अल-बरसमी क़ाइद जुलूस कुर्सी के सामने दस्त दुआ दराज़ किए हुए कह रहा था :

तरजमा : या इलाही! तू अपनी इताअत के लिए उमरें दराज़ कर, दुश्मनों के ख़िलाफ़ हमारी मदद फरमा। हमें याद रख फरामोश न कर और हम को परद-ए-रहमत में ढक ले।

दूसरे हम्राही हर-हर हमला पर आमीन की सदाएं बुलन्द कर रहे थे।

इब्राहीम जब उन लोगों के पास से गुज़रे बराअत करते हुए कहा :

तरजमा : खुदाया तू उन जाहिल अहमक़ों की हरकतों का हमें ज़िम्मेदाराना क़रार देना। बखुदा उन्होंने तो बिल्कुल बनी इस्राईल की नक़्क़ाली की है जिस तरह बनी इस्राईल गौ साला सामरी के गर्द जमा हो गये थे। (यह कुर्सी के गर्द जमा हो गये हैं)

यह ऐसी कुर्सी थी जिस की तरफ़ अजीब व ग़रीब क़िस्से मन्सूब कर दिए गये थे, लोगों के एतक़ाद को रासिख़ करने के लिए उसका इंतिसाब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हु की जानिब कर दिया गया था, मुख़्तार के साथी और शीआने अली उसे ताबूत बनी इस्राईल की तरह मोहतरम

व मुक़द्दस तसव्वुर करते। दुआओं की कुबूलियत का ज़रिया समझते, आलाम व मसाइब बिल-खुसूस जंगों के वक़्त उसके गिर्द खड़े हो कर दुआएं माँगते।

मुख़्तार ने कुर्सी की दरयाफ़्त के बाद मस्जिद में खुतबा देते हुए कहा था :

तरजमा : गुज़िश्ता क़ौमों में कोई ऐसी बात नहीं जो हमारी क़ौम के अन्दर मौजूद न हो। बनी इस्राईल के पास एक ताबूत था जिस में आल व मूसा और आले हारून की निशानियाँ (बाक़ियात) थीं। इसी तरह हमारे पास भी एक चीज़ मौजूद है।

इस तक़रीर के बाद कुर्सी की नक़ाब कुशाई की गई। मस्जिद में एक हंगामा बरपा हो गया। मगर मुख़्तार ने उस कुर्सी के अदब व एहतराम में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ न आने दिया और अपने बहरूप की मुकम्मल तक़्वियत ख़ूब इस्तेमाल की।

दर हक़ीक़त यह कुर्सी एक मन घड़त अफ़्साना की पैदावार थी। कहा जाता है कि तुफ़ैल बिन जअ्दा बिन हबीरा (हज़रत अली के भांजे का बेटा) एक बार तंग दस्ती व इसरत का शिकार हुआ। उस ने एक तेली के यहाँ से रौग़न ख़ूरदा पुरानी कुर्सी हासिल की, उसे साफ़ करने के बाद मुख़्तार के पास पहुँचा और कहा, मैं एक बात आप से पोशीदा रखता था अब मुनासिब मालूम होता है कि आपको उस से मुत्तला कर दूँ। मेरे पास ऐसी कुर्सी है जिस पर मेरे बाप जअ्दा बनी हीरा बैठा करते थे। लोगों का ख़्याल है कि उसमें हज़रत अली का ग़ैबी व रूहानी इल्म हुलूल कर गया है। मुख़्तार ने खुद आकर कुर्सी तलब की और बारह हज़ार रुपए तुफ़ैल बनी जअ्दा को देकर कुर्सी को अपनी मिल्कियत में दाख़िल कर लिया। इसी तारीख़ से उसके मज़्हबी बहरूप में तौसी हो गई। वह कुर्सी ताबूत की तरह दफ़अ् बला और मअ्रकों में कामयाबी का ज़ामिन बन गई। (ऐज़न : स० 550)

इब्ने ज़्याद का अंजाम : इब्ने अश्तर नहर ख़ारिम पहुँचा जहाँ इब्ने ज़्याद के लश्कर से सामना हुआ। रात पुर सुकून गुज़री। मगर इब्ने अश्तर पूरी रात बेदार रहा। सुबह पेश आने वाले मअ्रक-ए-जंग का ज़ेहनी खाका बनाता रहा। जब नूरे सहर फैल गया और इब्राहीम ने अपने लश्कर को एक आज़मूदाकार अमीर असाकिर की तरह सफ़ बस्ता किया। सुफ़ियान बिन यज़ीद बिन मुफ़स्सल अज़्दी को मैमना पर, अली बिन मालिक जश्मी को मैसरा पर, अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह को रिसाला पर अमीर मुक़र्रर किया, प्यादा दस्ता पर तुफ़ैल बिन लक़ीत को सरदार बनाया और फौज को तुलूअ्

आफ़ताब के वक़्त पेश रफ़्त का हुक्म दिया। जब दोनों लश्कर बिल्कुल आमने सामने हुए तो इब्राहीम बिन अश्तर अपनी सिपाह और अलमदारों में जोशे जंग पैदा करने के लिए सालाराने लश्कर के क़रीब जा जा कर बड़े पुरजोश अंदाज़ में कहता है :

तरजमा : ऐ दीन के मददगारो! ऐ हक़ व सदाक़त के साथियो! ऐ अल्लाह के सिपाहियो! यह उबैदुल्लाह बिन मरजाना हज़रत हुसैन बिन अली और इब्ने फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह का क़ातिल है जो हुसैन और उनकी साहबज़ादियों, औरतों और उनके शीओं के दर्मियान हाइल हो गया और उनके पास नुसरत को आने नहीं दिया बावजूद यह कि दरियाए फ़ुरात उन्हें नज़र आ रहा था मगर उस ने पानी तक हुसैन और उनके हम्राहियों पर बन्द कर दिया। वह अपने चचेरे भाई के पास सुलह करने की ग़रज़ से जाना चाहते थे मगर उस ने उस से आपको बाज़ रखा, आप अल्लाह की ज़मीन में किसी तरफ़ चले ज़ाना चाहते थे मगर उस ने उस से भी आपको रोक दिया और आपको और आपके अह्ले बैत को शहीद कर डाला, खुदा की क़सम! फिरऔन ने बनी इस्राईल के शुरफ़ा के साथ ऐसी बदसुलूकी की नहीं की जैसी इब्ने मरजाना ने अह्ले बैते रसूलुल्लाह से की जो बिल्कुल साफ़ और बेगुनाह थे। अब अल्लाह तुम्हें और उसे एक दूसरे के मुक़ाबले में ले आया है पस खुदा की क़सम! मैं यह तवक्क़ु रखता हूँ कि अल्लाह तआला ने तुम्हें और उसे मैदान में इसलिए जमा किया है कि तुम्हारे कलेजे तुम्हारे हाथों उसके ख़ून बहने से ठंडे हों क्योंकि खुदा ख़ूब जानता है कि तुम अपने नबी करीम के अह्ले बैत की हिमायत में जिहाद के लिए निकले हो।

जंग का अग़ाज़ हुआ, उबैदुल्लाह बिन ज़्याद की फौज ने पामर्दी व जसारत के साथ इब्राहीम के लश्कर पर शदीद हमले किए जिसके नतीजे में इब्नुल-अश्तर के तज्रेबाकार सालार अली बिन मालिक ख़श्मी कुर्रा बिन अली और दूसरे बहादुर जवान काम आए। यह रंग देख कर इराक़ी फौज के हौसले मांद पड़ गये और वह पस्पाई की जानिब माइल हुए। इब्ने अश्तर ने पस्त हौसला जवानाने लश्कर से कहा तुम्हारे लिए बेहतर यह है कि तुम शिद्दत के साथ जवाबी हमला करो। लोग अमीरे लश्कर की जानिब मुतवज्जेह हुए। इब्राहीम ने उन्हें जुरअत व बहादुरी के साथ दुश्मन के बड़े दस्ता पर हमला का हुक्म देते हुए कहा :

अगर हम ने उस हिस्सा फौज के पुरज़े कर डाले तो वह फौजें जो उनके

मैमना और मैसरा पर जंग कर रही हैं हमारे मुक़ाबला से राहे फरार अख़्तियार कर लेंगे जिस तरह कोई परिन्दा ख़ौफज़दह हो कर उड़ जाता है।

(तारीख़ुल-उमम : जिल्द 4, स० 555)

इब्राहीम की हौसला अफ़्ज़ा तक़रीर ने इराक़ी फौज में जोशे जंग पैदा कर दिया और वह आगे बढ़े। दोनों लश्कर एक दूसरे से दस्त व गरीबाँ हो गये और बेजिगरी के साथ शाम तक बरसरे पैकार रहे। इब्ने आज़िब का बयान है :

ख़ुदा की क़सम जब तल्वार पर तल्वार पड़ती थी तू ऐसा मालूम होता था कि गोया यह वलीद बिन उत्बा बिन अबी मुअ़ीत के घर धोबियों के मूसिल हैं जिन से वह कपड़े धो रहे हैं। (ऐज़न : स० 555)

इब्राहीम ने जब यह नक़्श-ए-जंग देखा अलम लेकर खुद जंग में कूद पड़ा और अपनी बेनज़ीर जुरअत व हिम्मत के साथ जिधर रुख़ करते दुश्मनों की फौज दरहम बरहम हो जाती। इब्राहीम के पुर ज़ोर हम्लों से शामियों के पाँव उखड़ गये और वह मुंतशिर हो कर भागने लगे। दूसरी जानिब इराक़ियों के हौसले मज़ीद बढ़ गये और उन्होंने हज़ीमत ख़ूरदा (हारे हुए) सिपाहियों का तआक़ुब करके उन्हें बेदरेग़ क़त्ल करना शुरू कर दिया।

शामी लश्कर ने इराक़ियों का बड़ी जुरअत व हिम्मत के साथ मुक़ाबला किया मगर इब्ने अश्तर की जंगी महारत और उसके जोश व ख़रोश के मुतवाज़िन इम्तिज़ाज ने इब्ने ज़्याद की फौज के पाँव उखाड़ दिए। शामी लश्कर हज़ीमत खा कर मैदाने जंग से फरार हो गया। लश्कर इराक़ की तल्वारों से बचने के लिए हज़ारों शामियों ने नहर उबूर करने की नाकाम कोशिश की और तेज़ व तुन्द लहरों की ज़द में आ कर ग़र्क़ हो गये। वह इब्ने ज़्याद गवर्नर इराक़ जो कारवाने अह्ले बैत और नवास-ए-रसूल के हक़ में नम्रूदी अज़ाइम रखता था, जिस ने अपनी खुरदुराई तक़र्रुब यज़ीद और दुनियावी इक़्तिदार व सतवत की जड़ें मज़्बूत करने के लिए हुसैन बिन अली और अह्ले बैते रसूल पर पानी बन्द कर दिया था और बैअ़त या जंग का हुक्म अमर बिन सअद को मैदाने करबला में भेजा था, जिस ने सुलह के सारे रास्ते मस्दूद कर दिए थे। दुनिया की नीरंगी देखो हुसैन और हामियाने हुसैन ने सब्र व रज़ा के इम्तिहान में कामयाबी हासिल की और जरीद-ए-आलम पर अपनी ज़िन्द-ए-जावेद कुरबानी व ईसार के अनमिट नुक़ूश सब्त करके मेअ़राजे हयात पा गये। मगर करबला के मैदान में इराक़ी गवर्नर की कामयाबी, उसके जाबेराना हुक्म की बालादस्ती ने चन्द

ही दिनों में उसके इक़्तिदार की ईंट से ईंट बजा दी। जब वह इराक़ की जानिब बढ़ रहा था। फ़रिश्त-ए-अजल की गिरिफ़्त से वह शामी लश्कर के मज़्बूत हिसार में पनाह न पा सका, इब्राहीम के शदीद हम्लों से इब्ने ज़्याद का हिसार फौज टूट फूट गया। मग़रूर शामियों के साथ इब्ने ज़्याद भी भागा मगर इब्राहीम बिन अश्तर ने नहर के किनारे तेग़ ख़ारा शिगाफ से उसके दो टुकड़े कर दिए। सर काट लिया गया। लाश नज़्रे आतिश कर दी गई। इस तरह नश-ए-इक़्तिदार में चूर इब्ने ज़्याद जिसने दारुल-इमारत कूफ़ा में हज़रत हुसैन के सरे मुबारक के साथ गुस्ताख़ी की थी आज ख़ुद उसका सर पर ग़ुरूर लोगों की ठोकरों में है। कुदरत का इंतक़ाम था, क़ह्रे इलाही के शिकंजे थे जिनकी ज़द से दुनिया के हरीस कुत्ते बच न सके। हिक्मत व सियासत, जुरअत व शुजाअत के पैकर मुख़्तार बिन अबू उबैद सक़्फ़ी के अल्फाज़ "अगर मैं इब्ने ज़्याद की उंगलियाँ, हाथ, पाँव और आज़ाए जिस्म के टुकड़े-टुकड़े न कर दूँ तो ख़ुदा मुझे ग़ारत करे।" हरफ़ बहरफ़ सच साबित हुए।

इब्ने ज़्याद, इब्ने सअद, शिम्र, ख़ौली और दूसरे तमाम क़ातिलाने हुसैन की चन्द रोज़ा शान व शौकत ख़ाक में मिल गई। वक़्त ने दुनिया के हरीसों और बन्दगाने ज़र व जाह को इस तरह ज़लील व रुस्वा किया कि वह तारीख़ के सफ़्हात पर नक़्शे इबरत बन कर सब्त हो गये, उनके नाम अह्ले हक़ की लानतों का हदफ बन गये। जिस यज़ीदी इक़्तिदार के इस्तेहकाम के लिए उन्होंने दीनी हमीयत और पास नसब व क़राबत को पसे पुश्त डाल कर नवास-ए-रसूल और उनके आवान व अक़्रेबा का बेदरेग़ ख़ून करबला के तप्ते हुए सहरा पर बहाया, उन्हें उसका सिला दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में तो शायद मिल गया मगर वह आख़िरत के दाइमी खुसरान व उक़ाब से हरगिज़ न बच सकेंगे।

ख़ानवाद-ए-रिसालत को ताख़्त व ताराज करने वाले अश्क़िया (बेरहम) का इबरतनाक अंजाम यज़ीद के क़ाइम करदा इक़्तिदार व सतवत की टूटती, बिखरती कड़ियाँ ज़ुबाने हाल से कह रही हैं :

ज़िन्दगी में है बड़ा जोश नमू याद रहे
रंग लाता है शहीदों का लहू याद रहे

❖ ❖ ❖

मुख़्तार सक़्फ़ी का अंजाम

गुज़िश्ता सफ़्हात में पढ़ चुके हैं कि कूफ़ा के अरब शुरफ़ा ने मुख़्तार के ख़िलाफ़ एलानिया बग़ावत कर दी जिसे उस ने अपने चालीस हज़ार अज्मी हवा ख़्वाहों की फौजी कुव्वत से कुचल कर रख दिया फिर इंतिक़ामे ख़ूने हुसैन की रू में कूफ़ा के अन्दर बेदरेग़ ख़ूरेज़ी करके अपने इस क़ौल को पूरा किया :

"मैं शहीद मज़्लूम मुसलमानों के सरदार नबीर-ए-रसूल हज़रत हुसैन का इंतक़ाम लेकर रहूँगा और उनके बदले में इस क़द्र आदमियों को क़त्ल करूंगा जितने यह्या बिन ज़करिया अलैहिमस्सलाम के ख़ून के एवज़ में मारे गये थे।" (तबरी)

मुख़्तार के बेदरेग़ कश्त व ख़ून ने कूफ़ा में अरबों के इश्तेआल को ठंडा कर दिया लेकिन अब वह कूफ़ा छोड़ने लगे और रफ़्ता-रफ़्ता तक़रीबन दस हज़ार अशराफ़े अरब बसरा की तरफ़ कूच कर गये और वहाँ मुख़्तार के ख़िलाफ़ नफ़रत व इश्तेआल के जज़्बात भड़काने लगे।

67 हिजरी की इब्तिदा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने वालि-ए-बसरा हारिस बिन अब्दुल्लाह बिन रबीआ को मअ्ज़ूल करके अपने भाई मुस्अब बिन ज़ुबैर को बसरा का अमीर मुक़र्रर किया, चूंकि मुख़्तार ने इब्ने ज़ुबैर की बैअत तोड़ कर कूफ़ा के ज़ुबैरी हाकिम अब्दुल्लाह बिन मुतीअ् को हटा कर कूफ़ा पर क़ब्ज़ा कर लिया था और अपनी खुद मुख़्तार इमारत क़ाइम कर दी थी। इस बात से नाराज़ हो कर अरब शुरफ़ा मुस्अब बिन ज़ुबैर के गिर्द जमा होने लगे। ताकि वह मुख़्तार की हुकूमत का ख़ात्मा कर दें, कूफ़ी अरबों ने मुस्अब से दर्ख़्वास्त की कि आप इस कज़्ज़ाब के मुक़ाबले में क्यों नहीं निकलते? उसने हमारे अशराफ़ को क़त्ल किया, हमारे घरों को मुन्हदिम किया, हमारी जमाअत का शीराज़ा मुन्तशिर किया, अज्मियों को हमारे सर चढ़ाया, हमारा माल व मताअ् उनके लिए मुबाह कर दिया।

एक अरब सरदार सिब्त बिन रिब्ई इस हैयत में मुस्अब बिन ज़ुबैर के पास पहुँचा कि जिस ख़च्चर पर वह सवार था उसके कान और दम के

किनारा कटे हुए थे और उसकी कुबा चाक थी, दारुल-इमारत के दरवाज़ा पर पहुँच कर या ग़ौसान या ग़ौसान पुकार रहा था। जब मुस्अब के साम्ने पहुँचा तो मसाइब की दास्तान बयान करते हुए कहा :

"हमारे ही ग़ुलाम और मवाली हम पर चढ़ आए हैं, अब आप हमारी एआनत कीजिए और हमारे साथ मुख़्तार पर फौज कुशी कीजिए।"

इसी दौरान मुहम्मद बिन अश्अश भी बसरा आ गये और उन्होंने मुस्अब बिन ज़ुबैर को जंग के लिए आमादा करने की कोशिश की।

मुस्अब को कूफ़ा के अरब क़बाइल की हिमायत हासिल हो गई तो उन्होंने मुख़्तार के ख़िलाफ़ जंग का क़तई फ़ैसला कर लिया।

मुख़्तार को जब मुस्अब की जंगी तैयारियों का इल्म हुआ तो उसने अपने हामियों को जमा करके ख़िताब किया :

"ऐ कूफ़ा के दीनदारो! हक़ के मुआविनो! कम्ज़ोरों के मददगारो! रसूल और आले रसूल के जांनिसारो! तुम्हारे शहर के बाग़ी भाग कर अपने जैसे फासिक़ों के पास चले गये और उनको तुम्हारे ख़िलाफ़ भड़काया ताकि हक़ व रास्त बाज़ी मिट जाए और किज़्ब व बातिल का बोल बाला हुआ और औलिया-ए-हक़ मारे जाएं, ख़ुदा की क़सम! अगर तुम तबाह हो गये तो इस ज़मीन पर उन लोगों की बन आएगी जो इबादत करते हैं और अह्ले बैत पर हमेशा लानत व मलामत होती रहेगी। अहमर बिन शमीत की क़्यादत में निकल जाओ। अगर अह्ले बसरा से पहले तुम्हारा मुक़ाबला हुआ होता तो वह क़ौमे आद और इरम की तरह तबाह हो चुके होते।"

(तबरी जिल्द पंजुम वाक़या पंजुम वाक़या 67 हिजरी)

मुख़्तार ने इब्ने शमीत की क़्यादत में अपनी फौज को जंग के लिए रवाना किया, लश्कर की तादाद चालीस हज़ार थी। मुख़्तार का लश्कर बसरा से शुमाल मग़्रिब में बमक़ाम निदार फरोकश हुआ, वहीं मुस्अब बिन ज़ुबैर का लश्कर भी आ गया।

जंगे निदार : अहमर बिन शमीत ने अपने लश्कर को इस तरह तरतीब दिया कि मैमना पर अब्दुल्लाह बिन कामिल शाकरी को, मैसरा पर अब्दुल्लाह बिन वहब नक़्ला ख़श्मी को, सवारों पर ज़र बिन अब्दुस्सलूल को और पैदल सिपाह पर कसीर बिन इस्माईल कुन्दी को मुक़र्रर किया, अबू उमरा केसान को मवालियों की जमाअत का अफ़्सर बनाया।

मुस्अब की फौज इस तरह मुरत्तब थी कि मैमना पर उमर बिन

अब्दुल्लाह बिन मुअम्मर, मैसरा पर मुहलिब बिन अबी सफरा अमीर थे।

जंग शुरू हुई, तरफैन के दस्ते ज़ोर आज़माई करने लगे, मुहलिब ने इब्ने कामिल की फौज पर हमल किया जिस से उन में अब्तरी पैदा हो गई, मगर वह बदस्तूर मैदाने जंग में जमे रहे फिर दोबारा मुहलिब ने अपनी फौज को फैसला कुन हमला का हुक्म दिया : कहा "दुश्मन तुम्हारी शुजाअत का मजा चख चुका है।"

क्योंकि उन में सख़्त बद-नज़्मी पैदा हो चुकी थी। मुहलिब के शदीद हमला की ताब न लाकर इब्ने कामिल की फौज भाग खड़ी हुई और वह काम आया।

उमर इब्ने उबैदुल्लाह बिन मुअम्मर ने अब्दुल्लाह इब्ने अनस पर हमला किया और थोड़ी देर जंग के बाद वह वापस लौट आया, फिर पूरी फौज ने इब्ने शमीत पर सख़्त हमला कर दिया, इब्ने शमीत लड़ते हुए मारा गया। मुहलिब ने इब्ने शमीत की पैदल फौज पर धावा बोल दिया, पैदल सिपाही बेतरतीबी के साथ पस्पा होने लगे और बयाबान की सिम्त भाग खड़े हुए, मुस्अब ने उबादा बिन हिसीन को रिसाला देकर उनके तआकुब में रवाना किया और कहा, जो क़ैदी तुम्हारे हाथ आ जाए उसकी गर्दन मार देना, इसी तरह मुहम्मद इब्ने अश्अश को भी इब्ने शमीत की फौज के तआकुब के लिए भेज दिया। इस जंग में मुख़्तार के हामियों की बहुत बड़ी तादाद मैदाने जंग या राहे फरार में मक़्तूल हुई।

जंगे मजार की शिकस्ते फाश ने मुख़्तार सक़्फ़ी के उरूज व इक़्बाल की बुनियादें हिला दीं, उस ने सिर्फ सियासी व फौजी हज़ीमत ही नहीं खाई बल्कि यह उसकी अख़्लाक़ी व इल्हामी शिकस्त भी थी, अब तक वह नबी और काहीन का मुमस्सिल बना हुआ था, बक़ौल ख़ुद उसके तसर्रुफ़ में माफौकल-इसान कुव्वतें थीं, उसके साथ फरिश्तों के लश्कर लड़ते थे, उसकी बात हमेशा सच साबित हुआ करती थी मगर जंगे मज़ार ने उसकी झूठी नुबुव्वत का पर्दा चाक कर दिया।

फौज की रवानगी के वक़्त उस ने पेशीन गोई की थी :

"कसम है उस खुदा की जिस ने अबुल-क़ासिम (इब्ने हन्फ़ीया) को इज़्ज़त अता की है! इब्ने शमीत सलामती के साथ बसरा में दाख़िल होगा, खुदा का यह अटल फैसला है।

इसमें शक करने वाला नामुरादी का मुँह देखेगा, मैंने उसके साथ एक परचम

कर दिया है जिसको न किसी हाथ ने काता है न किसी बुनने वाले ने बुना है।"

मुख़्तार ने उस फरेरे को एक कपड़े में बाँध दिया था और उस पर मुहर लगा दी थी, अहमर बिन शमीत को हिदायत थी कि दिन के एक मुक़र्ररह वक़्त में फरेरे का बन्डल खोले और उसका झण्डा बना ले, जूंही दुश्मन की नज़र उस फरेरे पर पड़ेगी वह शिकस्त खा कर भाग जाएगा।

(अंसाबुल-अशराफ़ : जिल्द 5, स० 255)

मुख़्तार ने कूफ़ा की हस्सास फ़िज़ा में जिस शद्द व मद्द के साथ अपने दजल व फरेब और कहानत का बाज़ार गर्म किया और कमज़र्फ़ ज़ईफुल-एतक़ाद लोगों को अपना गिरवीदा बना लिया था जो उराको बातों को वह्य व इल्हाम का दरजा देते थे, मगर मज़ार की शिकस्ते फाश ने उनके दिलों से मुख़्तार की अक़ीदत का रंग साफ़ कर दिया था और अज्मी यह कहने लगे थे इस बार मुख़्तार की पेशीन गोई झूठी साबित हुई।

मुख़्तार सक्फ़ी को जंगे मज़ार में जब अपनी फौज की नाकामी की ख़बर आई तो उस ने कहा यह ग़ुलाम इस तरह क़त्ल कर डाले गये जिसकी नज़ीर से मेरे कान आशना नहीं, फिर उस ने इब्ने शमीत इब्ने कामिल और दूसरे सूरमाओं का तज़्किरा करते हुए कहा, बख़ुदा उन में से एक-एक बड़ी जमाअत से भी बेहतर था।

"मौत से तो चारा नहीं इब्ने शमीत जिस तरह मैदाने जंग में बहादुरों की मौत मरा है इस मौत से ज़्यादा कोई और मौत मुझे महबूब नहीं मैं भी चाहता हूँ कि इसी तरह अपनी जान दूँ।" (तबरी : जिल्द 5, स० 67)

अब मुख़्तार आख़िरी जंग की तैयारियों में मस्रूफ़ हो गया।

जंगे हरूरह : मुस्अब बिन ज़ुबैर की फौजें मज़ार से कूफ़ा की तरफ़ पेश रफ़्त करने लगीं, मुख़्तार ने अपनी फौज को मुनज़्ज़म किया और मक़ामे हरूरह में ख़ेमा ज़न हो गया, मुस्अब भी हरूरह आ गये, जंग का आग़ाज़ हुआ, तरफ़ैन शिद्दत के साथ नबर्द आज़मा रहे, सूरज ग़ुरूब होने लगा मगर जंग इसी उनवान से होती रही, मुख़्तार के लश्कर में कम्ज़ोरी के आसार ज़ाहिर हुए और वह कूफ़ा की जानिब हटने लगा, कूफ़ा के क़रीब पहुँच कर जंग ने फिर शिद्दत अख़्तियार कर ली और पूरी रात जंग होती रही। इस जंग में मुख़्तार के माए नाज़ सरदार क़त्ल किए गये, जिन में आसिम बिन अब्दुल्लाह अज़्दी, अय्याश बिन हाज़िम हम्दानी, अहमर बिन हुदैह हम्दानी भी थे। आख़िरी शब मुस्अब की फौज अपने कैम्प में लौट गई

और मुख़्तार भी कस्र में चला गया।

कस्र का मुहासरा : दूसरे दिन मुस्अब बिन ज़ुबैर ने आगे बढ़ कर महल का मुहासरा कर लिया और शहर की नाका बन्दी कर दी और महल के अन्दर गिज़ा और रसद ले जाने की मुमानिअत कर दी। उस ने फ़ैसला कर लिया था कि मुहासरा की तंगी से या तो मुख़्तार बिला शर्त हथियार डाल देगा या उसकी फौज भूख और प्यास से हलाक हो जाएगी, चूंकि शहर के कुवों का पानी खारी था लोग दरियाए फ़ुरात का पानी पीते थे पानी की रोक ने महसूरीन की मुश्किलात बढा दी, मुख़्तार के तमाम तरग़ीबी कोशिशें राइगाँ साबित हुई। अगरचे मुख़्तार ने कस्र के अन्दर खुर्द व नोश का ज़ख़ीरा जमा कर लिया था मगर मुहासरा की दराज़ी से यह अन्दोख़्ता तेज़ी से ख़त्म हो रहा था, एक दिन मुख़्तार ने अपने लश्कर को ख़िताब किया :

"याद रखो! जूँ-जूँ मुहासरा होगा तुम्हारी ताक़त जवाब देती जाएगी इसलिए बेहतर है कि बाहर निकल कर खुले मैदान में हम दादे शुजाअत दें और लडते-लडते इज्ज़त से जानें दे दें, अगर तुम बहादुरी से लड़े तो मैं अब भी फतह की तरफ़ से मायूस नहीं हूँ।"

मगर दिल शिकस्ता फौज जंग के लिए आमादा न हुई, चालीस दिन तक मुख़्तार महसूर रहा उसकी फौज में न अज़्म था न हिम्मत, वह तक़रीरें करता, इज्जत व शराफत का वास्ता देता मगर उनमें अमली गर्मी पैदा न होती, अकीदत का वह तिलिस्म जो उनकी कुव्वत इरादी पर हुक्मरां था टूट चुका था, जब वह अपने हामियों की हिमायत से मायूस हो गया तो दुश्मन से लड़ कर जान देने का कतई फैसला कर लिया और फ़िदाइयों की मुट्ठी भर जमाअत लेकर कस्र से बाहर निकला और मुस्अब के सिपाहियों से लडता हुआ मारा गया। मुस्अब ने मुख़्तार का सर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के पास मक्का भेज दिया और उसके दोनों हाथ कटवा कर जामे कूफ़ा के दरवाज़ा पर आवेज़ा करा दिए जिन्हें हज्जाज बिन यूसुफ़ ने अपने ज़माना में उतरवाया।

कूफ़ा पर कब्ज़ा से लेकर जंगे मूसल की कामरानी तक हर महाज़ पर मुख़्तार की कामयाबी इब्राहीम बिन अश्तर की रहीने मिन्नत थी। इसकी जुरअत व हिम्मत और हौसला व शुजाअत ने मुख़्तार को उरूज व इक़्बाल की मंज़िलों तक पहुँचाया मगर जब मुस्अब बिन ज़ुबैर ने मुख़्तार के ख़िलाफ़ महाज़ आराई की और पै दर पै शिकस्त देकर मुख़्तार का ख़ात्मा

कर दिया तो इब्ने अश्तर मूसल में ख़ामोश बैठा मुख़्तार की ज़िल्लत व बरबादी के तमामशे देखता रहा, ऐसा क्यों हुआ?

अल्लामा अब्दुल-क़ाहिर बग़दादी ने इस राज़ को इस तरह बेनक़ाब किया है :

"जब इब्राहीम को मालूम हुआ कि मुख़्तार ने अलल-एलान नुबुव्वत और नुज़ूले वह्य का दावा किया है तो वह न सिर्फ़ उसकी एआनत से दस्तकश हो गया बल्कि अपनी खुद मुख़्तारी का एलान करके बिलादे जज़ीरा पर भी क़ब्ज़ा जमा लिया, मुस्अब बिन ज़ुबैर को इन हालात से फाइदा उठाने का मौक़ा हाथ आया।" (अइम्मा तल्बीस : स० 76)

मुख़्तार सक़्फ़ी क्या था : मुख़्तार सक़्फ़ी ने क़स्र से निकलते वक़्त अपने हम नशीन व राज़दार साइब बिन मालिक अश्अरी से कहा चलो शराफ़त के नाम पर लड़ो। साइब ने कहा कि लोगों का ख़्याल यह है कि आपने अहयाए दीन के लिए तहरीके अह्ले बैत उठाई थी, मुख़्तार ने कहा बिल्कुल नहीं, अह्ले बैत की दावत मैंने दुनिया की ख़ातिर दी। मैंने देखा कि अब्दुल-मलिक शाम पर, इब्ने ज़ुबैर हिजाज़ पर, नज्दा यमामा पर, और अब्दुल्लाह बिन ख़ाज़िन ने खरासान पर क़ब्ज़ा कर लिया है तो मैंने भी उन्हीं की तक़्लीद की, मैं उन में से किसी एक से कम नहीं हूँ, मैंने इंतिक़ामे हुसैन की तहरीक इसलिए उठाई कि उसके बग़ैर मैं अपने मक़्सद में कामयाब नहीं हो सकता। (अख़्बारुत्तवाल : स० 313)

यह वह राज़ था जिसे मुख़्तार ने अपनी मौत से क़ब्ल ज़ाहिर किया, मुख़्तार की हवस इक़्तिदार ही थी जिसकी तक्मील के लिए उस ने हीला व मकर और किज़्ब व इफ़्तरा से काम लिया, मुहिब्बे अह्ले बैत, नियाबत इब्ने हन्फ़ीया और इल्हामी शख़्सियत का रूप धार कर सादा लौह, ज़ईफ़ुल-एतक़ाद मुसलमानों को अपना फ़िदाकार बना लिया जिनकी मदद से वह एक वसीअ् रक़्बा पर हुक्मरां बन गया।

सच यह है कि न तो वह मुहिब्बे अह्ले बैत था और न मुहम्मद इब्ने हन्फ़ीया का नाइब और न कुछ और बल्कि वह चालबाज़ सियासत दाँ था, मौक़ा शनास और बहुत बड़ा कज़्ज़ाब था जिसकी पेश गोई खुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाई :

तरजमा : अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़बीला सक़ीफ़ में एक कज़्ज़ाब और एक

ख़ूंरेज़ शख़्स होगा।

तरजमा : कहा जाता है कि कज़्ज़ाब से मुराद मुख़्तार बिन अबी उबैद और ख़ूंरेज़ से मुराद हज्जाज बिन यूसुफ़ है।

साहब अक़्दुल-फ़रीद ने बयान किया :

"उस ने नुबुव्वत का भी दावा किया था कि मेरे पास जिब्रीले अमीन वह्य लेकर आते हैं।" (अक़्दुल-फ़रीद : जिल्द 2, स० 319)

ज़ईफुल-एतक़ाद इराक़ी मुख़्तार की इल्हामी शख़्सियत का एतक़ाद रखते थे और उसकी पेशीन गोइयों को वह्य इलाही से ताबीर करते थे।

एक फासिक़ व फाजिर शख़्स मुख़्तार बिन अबी उबैद सक़्फ़ी ने चमनिस्ताने रिसालत ताख़्त व ताराज करने वालों से इबरतनाक इंतिक़ाम लिया। यह मशीयते ईज़्दी थी अल्लाह जिस से चाहता है दीन का काम लेता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

तरजमा : बेशक अल्लाह तआला ज़ालिम के ज़रिया दीन को ताक़त पहुँचाता है। (मुस्लिम : जिल्द अव्वल, स० 72)

◆